सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

स्तर: अगुवा / पास्टर

अध्ययन पुस्तक क्रमांक : 9

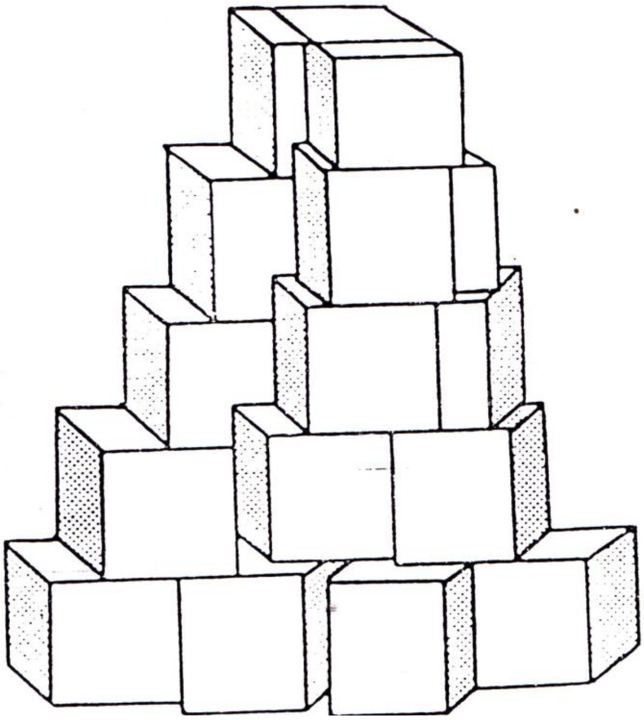

स्तर:

5. सेवक

4. अगुवा / पास्टर

3. समूह या सेल अगुवा

2. चेला

1. नौसिखिया

मसीह में हर विश्वासी को एक सेवक बनाते हुए आत्मिक परिपक्वता में विकसित होने और एक प्रभावशाली और कुशल सेवकाई में बढ़ने के लिए बाइबल अध्ययन कोर्स !!!

स्वयं-अध्ययन और दूसरों को सिखाने के लिए सरलता से इस्तेमाल करने योग्य !!!

सेवकाई और अगुआई प्रशिक्षण कोर्स

<u>उद्देश्य:</u>

- उसे जानना, जो एक मात्र सच्चा परमेश्वर है

  (विकसित होना / परिपक्व होना)

  - यहोशू 1:8 "व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रखना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने को तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।"

  - 2 पतरस 3:18 "पर हमारे प्रभु और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अभी भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।"

  - 2 तीमुथियुस 2:15 "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।"

  - कुलुस्सियों 1:27-28 "मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है, जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"

- और उसके बारे में दूसरों को बताएँ!

  (गुणा / पुनरुत्पादन)

  - 2 तीमुथियुस 2:2 "और जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो दूसरों को भी सिखाने के योग्य हों।"

  - 2 तीमुथियुस 3:16-17 "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

  - इफिसियों 2:10 "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।"

  - 2 पतरस 1:8 "क्योंकि यदि ये तुम में वर्तमान रहें और बढ़ती जाएँ, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह की पहचान में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।"

सिद्धान्त : "क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिए सब कुछ है।" (रोमियों 11:36)

(ज्ञान में बढ़ना; चरित्र में परिपक्व होना; आत्मिक वरदान इस्तेमाल करना)

सूची अध्ययन पुस्तक क्र.: 9

पृष्ठ

क्रमाँक

- पवित्र शास्त्र के अनुसार अगुवाई जो पवित्र शास्त्र के पुस्तकों से स्पष्ट किया गया है 1258
- प्रचारक का व्यक्तिगत जीवन/ पादरी चरवाहे की सेविकाई 1264
- आपका चरवाहा/ एक चरवाहे का निर्णय 1269
- चरवाहों को जो काम करना और नहीं करना चाहिए 1279
- प्रश्न जो चरवाहों को जानना है और प्रभावशाली सेविकाई के लिए गिनना है 1285
- चरवाहे की भेंट करने की क्रिया – एक व्यावहारिक मार्गदर्शक 1286
- एक अगुवे का अधिकार : उसका कार्य और सीमाऍं 1290
- आत्मिक अगुवों का विशिष्ट गुण/अगुवों के लिए सूची देखें 1292
- सेविकाई में सही आचरण का महत्व/अगुवों के लिए निग्रह सूची 1298
- उॅचे दर्जे की श्रेष्ठता – प्रमाण की जरूरत 1304
- आचरण और उसके सार्मथ का खम्भा 1306
- ईमानदारी – एक पवित्र शास्त्रीय विचार 1314
- एक अगुवे का सबसे ऊॅंचा लक्ष्य ईमानदारी होना चाहिए 1324
- क्यों सेवक असफल होते हैं: कारण और सीखने के लिए अध्ययन 1334
- सेविकाई में २२ फुसलाने की विधियों को त्यागना 1336
- अगुवाई में किस तरह कठिन परिस्थितियों में विजय पाना 1349
- आत्मिक सुरक्षा को समझना 1352
- मसीहियो में भेद – भाव के साथ किस तरह व्यवहार करना 1372
- सामकालिक विषयों पर पवित्र शास्त्र की श्रेष्ठत को समझना 1376
- सेविकाई और अगुवाई की उत्पत्ति/ खोज/ गिनती 1379
- कलीसिया बढ़ोत्री के सिद्धांत 1389
- वर्णन करना/ लेखा देना/ स्वयं – परीक्षा 1395
- विश्वास के वर्णन का नमूना बनना 1407

पवित्र शास्त्रीय सेविकाई का स्पष्टीकरण – बाइबल के पुस्तकों से

बाइबल मनुष्य के छुटकारे की कहानी है, अगुवापन जो उसने खो दिया था और किस तरह परमेश्वर ने उसे छुडाया ताकि वह अनन्तकाल तक परमेश्वर के साथ राज करे । यहाँ अगुवापन पर अध्ययनों का एक संकलन है जो बाइबल के हर एक पुस्तक से लिया गया है ।

उत्पत्ति
अधिकार के आधीनता में रहने वाले ही अधिकार का प्रयोग कर सकते हैं । आदम ने अपने अधिकार को खो दिया जब उसने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंधन किया और एक – दूसरे पर दोष लगाने का खेल खेला
(१ : २६, २८; ३ : १२, १७ – १९)

निर्गमन
जितना जल्दी एक अगुवा अधिकार नियुक्त करता है और जिम्मेदारियों को बॉटता है उतना ही उसके लिए और उसके आधीन में रहने वालों के लिए अच्छा है । परन्तु असुरक्षितता का भय कई अगुवाओं को ऐसा करने से रोके रखती है ।
(१८ : १३ – २७)

लैव्यव्यवस्था
अगुवाओं को परमेश्वर के समीप पर्याप्त रूप से समय बिताना चाहिए ताकि वे लोगों के लिए आशीष का कारण बन सके । परमेश्वर में बहुत कुछ होने के लिए एक को परमेश्वर के साथ बहुत समय तक रहने की जरूरत है (९ : २३)

गिनती
जब तक अगुवे नम्र और यथार्थता में परमेश्वर के सामने टूटे रहते हैं, तब तक उन्हें सहकर्मियों द्वारा नाश करने वाले समालोचना और बलवा की चिन्ता नहीं करना चाहिए (१२ : १-९, १६ : १-४, २० – २१)

व्यवस्थाविवरण
कार्य करने की क्षमता, भौतिक साधन एक अगुवे का सामर्थ उसके निपुणता, से नहीं बल्कि परमेश्वर के साथ उसका चलन से निर्णय लगाया जाता है । (१७ : १४ – २०)

यहोशू
अगुवों को विजय की उत्तेजना, लोगों के साथ बॉटना चाहिए । यहोशू ने उसके सह-अगुवों और इस्राएल के लोगों को बुलाकर उनके पैर पराजित राजाओं के गर्दन पर रखने के लिए आदेश दिया । एक अच्छा अगुवा अपने लोगों को चिल्लाने लगाता है, यह “हमारा” विजय है !! (१० : २४ – २५)

न्यायियों
यह काफी नहीं है कि अगुवा सिर्फ लोगों को सिखाए क्या करना है । उन्हें यह कैसे करना भी दिखाना है । लोग नमूना और उदाहरण ढूँढ रहे हैं (७ : १६ – १८)

रूत
अगुवों को अपना जीवन जवानों का मार्गदर्शन और निरीक्षण में लगा देना चाहिए । नाओमी ने कभी नहीं सोचा होगा कि रूत यीशु मसीह के वंशावली में जगह पाएगी (मत्ती १ : ५)

१ शमूएल
इस्राएल का पहला राजा तिरस्कृत किया गया जब वह अपने ही आदर और प्रसिद्धि के लिए चिन्तित था । वह और भी भ्रष्ट हो गया जब वह अपने उत्तराधिकारी की प्रशंसा को बर्दाशत नहीं कर पाया ।
(१३ : ११; १५ : १२, २२ – २४, ३०: १८:७-१०)

२ शमूएल
प्रभावशाली अगुवों का हृदय चरवाहे के समान होता है । वे अपने आप को लोगों से अलग नहीं करते बल्कि उनके साथ पहचाने जाते हैं । (५ : १ – २; ८ : २ –४)

१ राजा
“अगर आप आज लोगों के लिए सेवक बनते हैं; उनकी सेवा करते हैं, और उनको जवाब देते हैं, और उनके साथ अच्छी बातें करते हैं, तब वे सदा के लिए आपके सेवक बन जाएँगे ।” (१२ : ७)

२ राजा
जब एक अगुवा अपने सहकर्मियों के महत्वपूर्ण कार्य सौंपता है तब वे अपने आप को सम्मानित महसूस करते हैं । एलीशा भविष्यद्वक्ता ने अपने एक चेले को तेल की कुप्पी देकर येहू को राजभिषेक करने को कहा । इसी तरह यीशु मसीह ने अपने चेलों को बपतिस्मा देने का अधिकार दिया । (९ : १-६; यूहन्ना ४:२)

१ इतिहास
एक अगुवा अपने स्वयं- बलिदान की सीमा तक ही लोगों को चुनौती और उत्साहना दे सकता है । (२९: ३-९)

२ इतिहास
एक अगुवा बनने के लिए कोई छोटा नहीं होता अगर परमेश्वर ने उसे यह जिम्मेदारी के लिए बुलाया हो ।
(३४ : १-७; ३५ : २५-२७)

एज्रा
अगुवे पुनःस्थापन के लिए परमेश्वर के सेवक होते हैं । प्रार्थना और वचन के अध्ययन का एक उचित तोल होना चाहिए जो बुलाहट को परिपूर्ण करने के लिए उन्हें स्थिरता और सामर्थ देता है ।
(७ : ८-१0; १0 : १,६)

नहेमायाह
एक अगुवे को लोगों के कृतध्नता पर हताश नहीं होना चाहिए । परन्तु उसे परमेश्वर पर भरोसा रखकर अच्छे कार्य करते रहना चाहिए । (५: १९; १३ : १४,२२,३१)

एस्तेर
अगुवों की पत्नियॉं उनके पतियों को उनके आदर्श स्वभाव द्वारा सहारा देना चाहिए चाहे वो गुप्त रीति से हो या जनता के सामने (१: १५-२0)

अय्यूब
परमेश्वर बलवन्त है फिर भी वह किसी को भी तुच्छ नहीं समझता । अगुवों को किसी की शिक्षा, व्यक्तित्व, धन, सभ्यता, योग्यता या किसी भी ऐसे चीज को तुच्छ नहीं जानना चाहिए । उनका हृदय दुर्बल और सताए हुए लोगों के साथ होना चाहिए । (३६: ५-७)

भजन संहिता
जब अगुवे सत्यता, नम्रता और धर्म के वस्त्र को पहनेंगे तो उनके ओठों से अनुग्रह बहेगा । उनका सुगंध लोगों को खींच लाएगा । (४५: १-९)

नीतिवचन
जब दूसरे पाप एक अगुवे को कमजोर बना सकते है तो लैंगिक व्यभिचार का पाप उसे घात कर सकता है (७: २५-२६)

\# सभोपदेशक
“यदि कुल्हाड़ा थोथा हो और मनुष्य उसकी धार को पैनी न करे, तो अधिक बल लगाना पड़ेगा; परन्तु सफल होने के लिए बुद्धि से लाभ होता है ।” (१०: १०)

\# श्रेष्ठगीत
अगुवे जो अपनी सेविकाई में इतने व्यस्त हैं की अपनी निज जीवन का ख्याल नहीं कर सकते हैं, उन्हें आखिरकार दुःखी होना पड़ेगा । (१: ६ब)

\# यशायाह
जब अगुवे अपने आप को हीन भावना, श्रेष्ठ भावना, कुटिलता और विषमता से स्वतंत्र करते हैं तो वे लोगों के लिए प्रधान सड़क बन जाते हैं ताकि वे परमेश्वर की महिमा को देख सके (४०: ३-५)

\# यिर्मयाह
अगुवों को आज्ञा का उल्लंघन करने वालों के लिए गुप्त में विलाप करना चाहिए इससे पहले कि वो अनुशासन का चाबुक अपने हाथों मे ले लें । (१३: १७; ९:१)

\# विलापगीत
समस्याएँ एक अगुवे के उत्साह को उत्साह हीन कर सकता है परन्तु पाप ही उसके आनन्द और प्रसन्नता का नाश कर सकता है । “हम अपने चाल चलन का ध्यान से परखें, और यहोवा की ओर फिरें ।”
(३: ४०; ५:१५-१८)

\# यहेजकेल
घमण्ड अगुवे को गिरा देता है । जितना ऊँचा हमें परमेश्वर उठाता है उतना ही नम्र हमें बनना चाहिए । दूसरा और कोई सुरक्षा नहीं (२८: १७)

\# दनिय्येल
एक अगुवा जो अच्छा अन्तःकरण रखता है परमेश्वर के सामने उसे किसी भी षड्यन्त्र का ड़र नहीं होना चाहिए ।
(६: २२)

\# होशे
अगुवे के लिए यह दुःख की बात होती है जब पाप में गिरने में असावधान होता है । (७: ९)

\# योएल
बेदारी अगुवों से शुरू होती है । कुछ भी नहीं होता जब तक परमेश्वर के सेवक अपने पापों के लिए प्रायश्चित और अपने लोगों की परिस्थितियों पर विलाप नहीं करते । (१: १-२अ, १३-१४)

\# आमोस
हाय उन अगुवों पर जो अपने आनन्द और आराम के लिए लोगों का बलिदान कर देते हैं ।
(६: १,३-६; उत्पत्ति ३७:२४-२८)

\# ओबद्याह
अगुवों को साकारात्मक रूप से प्रेम दर्शाना चाहिए ऐसे लोगों के लिए जो संकट में हैं और उनके साथ पहचाने जाना चाहिए । (आयत १२-१४)

#	योना

एक अगुवा कितना ही गुणी क्यों न हो वह परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा नहीं कर सकता है अगर वह _____ के बीमारी से ग्रस्त है । (४:१-५)

#	मीका

"उसके प्रधान धूस ले लेकर विचार करते और याजक दाम ले लेकर व्यवस्था देते हैं; और भविष्यद्वक्ता रूपए के लिए भावी कहते हैं; तौभी वे यह कहकर यहोवा पर भरोसा रखते हैं, यहोवा हमारे बीच में है, इसलिए कोई विपत्ति हम पर न आएगी । लालच अगुवेपन को भ्रष्ट कर देता है । (३:११)

#	नहूम

अगुवे, परमेश्वर की ओर से नियुक्त उसके भेड़ों के रखवाले होते हैं । जब वे सुस्त होकर सो जाते हैं, तब परमेश्वर के लोग आसानी से लोमडियों के शिकार में गिर जाते हैं जो भेड़ का वस्त्र पहने आते हैं । (३:१८)

#	हबक्कूक

एक अगुवे की सफलता लोगों को उसका दर्शन समझाने की योग्यता पर निर्भर होता है । (२:२)

#	सपन्याह

अगुवे असफल हो सकते हैं, परन्तु परमेश्वर नहीं (३:३-५)

#	हाग्गै

डर अगुवों को । निराशावादी अच्छे अगुवे नहीं बनते । किसी भी युग के लिए परमेश्वर का वचन है, "हियाव बान्ध, डर मत ।" (२:३-५)

#	जकर्याह

शिक्षा और प्रशिक्षण अगुवे के कुशलता को बढ़ाता है, परन्तु पवित्र आत्मा के सामर्थ और प्रभाव का कोई जगह नहीं ले सकता है । (४:६-७)

#	मलाकी

जो अपनी पत्नी को स्वयं जैसा प्रेम नहीं करता है उसने यीशु मसीह जैसे अगुवापन का क, ख, ग नहीं सीखा है । (२:१३-१६; इफि ५ : २५ – २९)

#	मत्ती

एक अगुवे की सेविकाई लोगों को स्थापित करना है, उन्हें तोड़ना नहीं, उन्हें सचेत करना, उन्हें चुप नहीं कराना; उन्हें सामर्थ देना, उन्हें थकाना नहीं उन्हें सिखाना चाहिए, उन्हें चिढ़ाना नहीं, उन्हें समर्थन देना, उन्हें बर्बाद करना नहीं । लोग ऐसा एक अगुवे पर "भरोसा" (दृढ़ विश्वास) रहता है ।

#	मरकुस

अगुवों को दूसरे सेवकों की प्रशंसा करना और उनके विजय पर आनंद करने की कला में बढ़ना चाहिए । यह एक तरीका है जिससे हम स्वार्थी होने या असंतुलित होने से स्वयं को रोक सकते हैं । (९:३८-४१)

#	लूका

अगुवे की सबसे बड़ी परीक्षा है प्रदर्शन करना और सामर्थी दिखाना है । ऐसे दबाव के पीछे जो बुराइयाँ हैं अगर वो जान गए तो वे कभी परमेश्वर की इच्छा को विफल नहीं होने देंगें । (४:५-१४)

यूहन्ना
यीशु मसीह ने पैर धोकर सच्चे सेवक का अगुवापन दर्शाया । जल स्वच्छ करता है और ताजगी देता है । अगुवे का दो महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है लोगों को पवित्र और प्रसन्न करना । (१३:३-१५)

प्रेरितों के काम
सच्चे अगुवे कोई कसर नहीं छोड़ते दूसरे अगुवों की उत्पत्ति करने में । (९:२६-२८; ११:२५-२६)

रोमियों
अगुवाई में परमेश्‍वर की श्रेष्ठ इच्छा मिली रहती है । कोई भी मनुष्य हमें ऐसी जगह तक नहीं उठा सकता जो परमेश्‍वर के उद्देश्य के बाहर हो और ना ही कोई हमें गिरा सकता है जहाँ परमेश्‍वर ने हमें रखा हो । इसलिए, शान्त हो जाएँ । (९:१६-१७)

१ कुरिन्थियों
यीशु मसीह ने हमें शिष्य बनाने के लिए बुलाया है ना कि अपने ईद-गिर्द भक्तों को इकट्ठा करने । अगुवे ऐसा कोई भी कार्य करने से अपना आप को रोकना चाहिए जिससे लोगों को आकर्षण मसीह के बदले उनपर हो । (१:१२-१६)

२ कुरिन्थियों
आर्थिक जवावदारी एक अत्यन्त आवश्यकता है उन लोगों के लिए जो अगुवाई में हैं । ऊँचे दर्जे के अगुवे अपने आर्थिक विषयों को विश्‍वासयोग्य लोगों के हाथ छोड़ देना चाहिए ताकि वे निर्दोष रहें (८:१८-२३)।

गलतियों
सभी को खुश रखना असम्भव है । किसी को भी हमेशा खुश रखना असम्भव है । सिर्फ परमेश्‍वर को ही खुश रखा जा सकता है, वो भी हमेशा । इसलिए अगुवों को अपना समय और योग्यता असम्भव कार्यों को करने में वर्वाद नहीं करना चाहिए । (९:१0)

इफिसियों
भले ही वे, प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, सुसमाचार सुनानेवाले, रखवाले या उपदेशक क्यों न हो, एक प्राथमिक आवश्यकता अगुवे के लिए विश्‍वासियों को सेविकाई के लिए प्रशिक्षण देना है । (४:११-१२)

फिलिप्पियों
पौलुस के दिनों में सांसारिक सेवकों की गिनती अनन्तकाल का बोध रखनेवालों से ज्यादा था । क्या आज की स्थिति अलग है ? अगुवे, तुम्हारा हृदय कहाँ है ? (३:१७-२१)

कुलुस्सियों
पौलुस विश्‍वासियों से कहता है : "मैं उन दुःखों के कारण आनन्द करता हूँ, जो तुम्हारे लिए उठाता हूँ ।"
(१:२४)

१ थिस्सुलुनीकियों
एक सच्चा अगुवा उसके लोगों को अपने हृदय में उठाए रखता है । उसके प्रार्थना सूची में सबसे ऊपर लोगों को सिद्ध करना होता है और वो अपनी सफलता की विल्कुल भी चिन्ता नहीं करता है । (३: ७-१0)

२ थिस्सुलुनीकियों
आत्मिक अगुवे अपने न्यायपूर्वक अधिकारों को भी त्याग देते हैं ताकि वे लोगों के लिए एक उदाहरण बनें । (३: ७-९)

१ तीमुथियुस
पहला परमेश्‍वर; दूसरा परिवार; और तीसरी सेविकाई । कई अगुवे गडवड़ी में पड़ जाते हैं क्योंकि उन्होंने इस प्राथमिकता के □म को बदला है । (३: ५)

२ तीमुथियुस

एक अगुवा जो उसके समय में दूसरी पीढ़ी के अगुवों को तैयार नहीं करता है वह स्वार्थी और अल्प दर्शन रखता है । (२: १-२)

तीतुस

"सब बातों में अपने आप को भले कामों का नमूना बना : तेरे उपदेश में सफाई, गंभीरता और ऐसी खराई पाई जाए, कि कोई उसे बुरा न कह सके" । (२: ७-८)

फिलेमोन

सिद्धान्त और अनुशासन के विषय से हटकर अच्छे अगुवे लोगों को आज्ञा देने के बजाय उनसे प्रेम से विनती करते हैं । (आयत ८-९)

इब्रानियों

अगुवों को हमेशा सीखते रहना चाहिए (५ : ८-९)

याकूब

अगुवे, जो अमीर और समृद्ध (परिपूर्ण) लोगों के पीछे हो लेते हैं उनका अन्त निराशाजनक है । गरीब साधारण तौर से एक धनी से ज्यादा विश्वासयोग्य रहता है । (२ : १-७)

१ पतरस

छोटे अगुवे अपने प्राचीनों के आधीन रहना चाहिए और परमेश्वर के बलवन्त हाथों के नीचे नम्र रहना चाहिए । परमेश्वर उन्हें उचित समय पर बढ़ाएगा । (५ : ५-६)

२ पतरस

"जो बिना कीमत के पाया, उसे बिना कीमत के दो ।" अपनी सेविकाई पर मूल्य के कागज न लगाएँ । यह बिलाम का मार्ग है जिससे परमेश्वर घृणा करता है । वह उसे मूर्खता कहता है । (२ : १४ब-१६)

१ यूहन्ना

अगुवे को यह काफी नहीं है कि वह सिर्फ सच्चाई सिखाए । उसे परमेश्वर के लोगों को सच्चाई की आत्मा और भ्रम की आत्मा को पहचानने का प्रशिक्षण देना चाहिए । (४ : ५-६)

२ यूहन्ना

कागज कार्य के शासन द्वारा कई कार्यो की पूर्ति नहीं हो सकती । व्यक्तिगत संबध और संगति ऐसे परिणाम को उत्पन्न करेगें जो स्थिर रहेंगे । (आयत १२)

३ यूहन्ना

एक अगुवे के लिए इससे बढ़कर और कोई आनन्द नहीं कि उसने दियुत्रिफेसियों (जो बड़ा बनना चाहते हैं) से अधिक देमेत्रियुसियों (जो सत्य पर चलते हैं) को उत्पन्न किया है । (आयत ३, १७)

प्रकाशितवाक्य

जो अपनी बुलाहट में विश्वसनीय हैं वे प्रभुओं का प्रभु और राजाओं के राजा के साथ हमेशा के लिए राज करेंगे (१७:१४)

एक प्रचारक का व्यक्तिगत जीवन

नबूवत	और	व्यावहारिक
सही	और	आदरणीय
उत्सुक	और	सहनशील
उत्तरदाई	और	प्रभाव वाला व्यक्ति
साहसी	और	समर्पित
ईमानदार	और	नम्र
उत्साहित	और	प्रबल
मौलिक सिद्धान्त का	और	राजकीय

भेंट करने का कार्ड (१ तिम. ६:११-१६)
एक प्रचारक होने के नाते आप परमेश्वर के भेंट करने का कार्ड हैं । तुम उसके मुँह के नाल हो, उसके राजदूत हो । जो कुछ भी तुम करते हो उसे गंभीरता से तौला जाएगा और परमेश्वर का दास होने के नाते तुम्हारी राय का प्रभाव भेड़ों पर पड़ता है । इसलिए तुम्हें उस अद्‌भुत जिम्मेदारी को जानना चाहिए । इसलिए अपने बुलाहट के अनुसार योग्य जीवन बिताओ । विश्वास, प्रेम, सहनशीलता, आनंद, नम्रता, विश्वासयोग्यता, करूणा, बुद्धि वगैराह गुण हैं जो तुम्हारे जीवन और परमेश्वर के साथ संगति को दर्शाना चाहिए ।

वरदान और बुलाहट
तुम अपने आप को प्रचारक नहीं बना सकते । कलीसिया, बाईबल-अध्ययन या प्रचारकों की सभाएँ आपको सेवक नहीं बना सकता । बाईबल कहता है, "परमेश्वर ने कुछ लोगों को प्रेरित, नबी करके चुना हुआ है । परमेश्वर स्वयं हमें बुलाता है और हमारे जीवन में उसकी बुलाहट को स्थिर करता है । उसकी बुलाहट हमारे जीवन में पूरा नहीं होता अगर आप उन वरदानों का इस्तमाल नहीं करते । पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, "जो वरदान तुझमें है, उन बातों को सोचता रह उन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह ।" परमेश्वर ने उसे बीज के तरह बोया है, पर आपके समर्पण से वह बीज बढ़ेगा और फलदायक होगा ।

अधिकार
एक राजदूत होने के नाते आप एक राजा के अधिकार से बोलते हैं । यह इसलिए है क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें बुलाया और उसने तुम्हें अधिकार भी दिया है । जिस नाप से तुम अपने आप को परमेश्वर में समर्पित करते हो उसी नाप से परमेश्वर के अधिकार का प्रगटीकरण तुम्हारे जीवन और सेविकाई में होगा । इसलिए तुम्हें पहले मसीह के देह में कार्य करना जरूरी है, इससे पहले कि हम दुनिया के लिए प्रभावशाली सेवक बनें । (फिलि – प्रेरितों के काम ६ – ८)

प्रार्थना
परमेश्वर के वचन का ऐलान करने से पहले, आपको स्वयं पहले परमेश्वर का वचन सुनने की आवश्यकता है । परमेश्वर का वचन सुनने की आवश्यकता है । परमेश्वर का वचन सुनने के लिए सबसे पहले आपको परमेश्वर के धडकन को सुनने की जरूरत है । इसलिए प्रचारक के जीवन में प्रार्थना का बहुत महत्व है ।

पारिवारिक – जीवन
दुर्भाग्य से ऐसे सेवक भी हैं जिन्होंने सेविकाई को मूर्ति बना लिया है । कुछ सेवकों ने अपने परिवार को इस मूर्ति के वेदी पर बलिदान कर दिया है । यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है । हमारा पारिवारिक – जीवन हमारे सेविकाई का नींव होना चाहिए । जो भी हम प्रचार करते है, उसका व्यावाहारिक रूप परिवार में होना चाहिए ताकि हमारा संदेश हमारे नित जीवन से अधिकार प्राप्त कर सके ।

वक्ता
एक प्रचारक होने के नाते आप सबसे पहले एक वक्ता हैं, इसलिए आपको परमेश्वर का वचन प्रभावशाली रूप से बॉटने के लिए तैयार होना पडेगा ।

प्रश्न : आपकी बुलाहट क्या है और किस तरह आप इसकी उन्नति कर सकते हैं ?

अभिलाषा	-	परमेश्वर का वचन प्रचार करने की इच्छा
ध्यान करना	-	विचार – विर्मश, परमेश्वर के वचन का प्रतिबिम्ब होना
व्याख्या करना	-	अर्थ स्पष्ट करना, घोषणा करना, समझाना, व्याख्या करना।
तैयार करना	-	तैयार होना, संक्षिप्त लेख, उदाहरण, नीतिवचन इत्यादि।
ईश्वर-प्रेरणा	-	अभिषेक, मुहर लगाना, पवित्र आत्मा की योग्यता।
प्रस्तुतिकरण	-	एक तरीका, संदेश को प्रस्तुत करने का तरीका
दृष्ढान्तचित्र	-	कहानी के द्वारा विषय का स्पष्टीकरण, कथा, चित्र के द्वारा
घोषणा	-	प्रचार करना, घोषणा करना, पुकारना, ज्ञात कराना
सामना करना	-	जो गलत है वह दिखाना, पश्चाताप के लिए पुकारना
बातचीत	-	ऐसी भाषा बोलना जो सुनने वाले समझ सके
उत्साहित करना	-	निश्चय कराना, डॉटना, आश्वासन देना, प्रेरणा देना
प्रदर्शन करना	-	आने वाले राज्य के ताकत को दिखाना

प्रचार करना

सामर्थी	-	प्रस्तुतिकरण में कुशलता दिखाना
सच्चा	-	कुछ वर्णन करते समय वास्तविक होना
उत्साह से भरे	-	अपने शब्दों को चुनते समय सादगी बरतें
आकर्षक	-	अर्थ स्पष्ट करते समय सरल होना
उत्पादक	-	उदाहरण देते समय व्यावहारिक होना
पवित्र	-	व्याख्या करते समय राजकीय होना
प्रेरणा देना	-	अपने श्रोताओं के साथ एकीकरण
स्वाभाविक	-	समाप्ति के समय समतोलन करें
यथार्थता/खरापन	-	अपनी उपस्थिति में मार्गदर्शक बनें

एक चरवाहे की सेविकाई

पढ़ें : इफि ४ : ११ – १३

जब परमेश्वर ने अलग – अलग सेविकाईयों को मसीह के देह में रखा तो उसने यह बहुत ध्यानपूर्वक किया, और ऐसा करने से उसने अलग – अलग प्रकार के लोगों का प्रयोजन कराया । परमेश्वर को कई प्रकार के जरूरतों का एहसास था जो उसके लोगों के बीच में था और वह इस बात का ख्याल रखता है कि हर जरूरत की पूर्ति हो ।

एक चरवाहे का कार्यस्थान उसके लिए ऊँचा बुलाहट है और इसमें जो सफल होते हैं उनके लिए बड़ा प्रतिफल प्रतिक्षा कर रहा होता है । यह एक ऐसा कार्यस्थान है जहॉ कई मॉग होते हों ।

उदाहरण – किसे पूछा जाता है जब किसी पर बीमारी आती है या विपत्ति टूट पड़ती है ?
- किसकी अपेक्षा की जाती है जब वियोग में पड़े हुए को आश्वासन देना हो जब मृत्यु उसके घर से प्रियजन को उठा ले जाती है ?

I एक चरवाहे की योग्यताएँ

क. चरवाहे को अपनी भेडों की अगुवाई करने की योग्यता होनी चाहिए । (यूहन्ना १० : ४)

१. अगर चरवाहे को परमेस्वर के लोगों की अगुवाई करना है तो उसे एक ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो परमेश्वर के बातों के अनुसार भेड़ों के आगे चला हो ।

२. अगर उसने मूल सच्चाइयों का अनुभव नहीं किया हो तो वह दूसरों की अगुवाई करने में सक्षम नहीं होगा ।

उदाहरण - क. अगर वह चाहता है कि उसके लोग प्रार्थना करें, तो पहले उसे स्वयं प्रार्थना योद्धा बनना पड़ेगा ।
ख. अगर वह चाहता है कि लोग दश्वांस डाले तो पहले उसे स्वयं दश्वांस डालना पड़ेगा ।

३. भेड़ उसक पीछा कर सकें ऐसी एक जीवनशैली चरवाहे को प्रदर्शित करनी पड़ेगी ।

ख. चरवाहे को अपने भेडों को चराने और उनके लिए प्रयोजन करने की क्षमता होनी चाहिए –
यिर्म. २३:४; १ पत. ५:२-३; प्रेरितों के काम २०:२८

१. उसे भेड़ों को जरूरी रोटी और जल का प्रयोजन करने की क्षमता होनी चाहिए जो भेड़ के लिए पोषण, सामर्थ और उनकी बढ़ोत्री होगी
क. उसे निरंतर व्यक्तिगत तैयारी करते रहना है और परमेश्वर के वचन से खाते रहना हैं ।
ख. उसे अपने आप को परमेश्वर का वचन और प्रार्थना में लगा देना चाहिए । (प्रेरितों के काम ६ : ४)
ग. उसे सही मौसम मे परमेश्वर के लोगों को मांस खिलाना चाहिए ।

२. उसे रोटी (वचन) को टुकडों में तोड़कर अलग – अलग प्रकार के लोगों को खिलाना आना चाहिए । यूहन्ना १६:१२, यशा ४०:११, २९

३. उसे हर प्रकार के वर्गो से बातचीत करने की क्षमता होनी चाहिए जवान से लेकर बूढ़े तक ।
- हर साधारण झुंड (भेंडों के) के पास भेड़ रहेंगे हर वृद्धि के स्तर पर ।

ग. एक चरवाहे को अपने भेड़ों के साथ व्यक्तिगत संपर्क रखना चाहिए ।

१. एक चरवाहे को लोगों के नाम याद होना चाहिए । यूहन्ना १० : ३

२. चरवाहे को भेड़ों के नाम सिर्फ याद ही नहीं बल्कि अपने आप को उन्हें ज्ञात कराना चाहिए ।

क. इसका मतलब है लोगों के साथ पहचान बनाना ।

ख. इसका मतलब है जहॉ भेड वैठते हैं वहीं उसे भी बैठना है ।

ग. इसका मतलब है उसे लोगों को बताना है कि वह स्वयं भी एक भेड़ है । हेज.३:१५; फिलि.१:२८-३०

घ. एक चरवाहे को अपने भेड के लिए अपना प्राण त्याग देने की इच्छा होनी चाहिए

यूहन्ना १0:१५; १ यूहन्ना ३ : १६

१. इसका मतलब यह है कि चरवाहे को भेड के प्रति समर्पित और सच्चा होना चाहिए ।

क. जरूरत के समय अपने भेड़ का ध्यान रखना इसमें शामिल है । यूहन्ना १0: १३

ख. अपने जीवन और सामर्थ को उँडेलना इसमें शामिल है । यूहन्ना १0: ११

ग. भेड़ के घर जाना इसमें शामिल है ।

घ. अपने भेड़ की सुरक्षा के लिए निरंतर ध्यान देना इसमें शामिल है ।

२. इसका मतलब है कि सच्चा चरवाहा वह है जो अपने जीवन और सेविकाई से ज्यादा महत्व अपने भेड़ की अच्छाई में लगा देता है ।

II. एक चरवाहे का कर्त्तव्य और जिम्मेदारियॉ

क. चरवाहे को विष्पक्ष होना चाहिए ।

१. वह सिर्फ अमीर या प्रभावशाली लोगों का ही देखभाल नहीं करता । उसे "पौलुस" के तरह होना चाहिए सभी कार्यो में ताकि वह आत्माओं को जीत सके ।

२. वह पाप को डॉटने में कभी पीछे नहीं हटेगा । १ तीमु ५ : २0

ख. एक चरवाहे का चरित्र दोषरहित होना चाहिए ।

१. वह जो अभ्यास करता है वही प्रचार करना चाहिए ।

२. सभी मायने में उसे अपने भेड़ और अपने समाज के लिए एक उदाहरण वनना चाहिए ।
१ तीमु ४ : १२; तीतु २: ७

३. उसे शैतान के प्रकटीकरण से दूर रहना चाहिए ।

उदाहरण – गपशप की जीभ हमेशा पाई जाती है ।

ग. एक चरवाहे को हमेशा शिष्ट होना चाहिए ।

१ पतरस ३ : ८; रोमि २ : १0

१. एक चरवाहे को मिलनसार और स्नेहिल होना चाहिए ।

२. उसे उसके भेड़ की भलाई में हार्दिक दिलचस्पी रखनी चाहिए ।

ध. एक चरवहे को समयपालक होना चाहिए

१. उसे अपने वादे के अनुसार स्थान पर पहुँचना चाहिए ।

२. उसे सावधानी से समय का उपयोग अपने लाभ के लिए करना चाहिए ।
उदाहरण :- किसी से मिलने जाते हैं तो जल्दवाजी नहीं करना चाहिए ।

ड. एक चरवाहे को उसका विश्वास उसके धर ले जाना चाहिए ।

१. यह उसका काम है कि उसे सही सहयोगी को चुनना चाहिए ।

क. एक गलत विवाह लोहे का जाल सावित हो सकता है ।

ख. एक बुद्धिमान और विवेकशील पत्नी परमेश्वर के दास के लिए मूल्यवान हो सकती है ।
उदाहरण :- जब एक मनुष्य कठिन परिस्थितियॉ से गुजरता है तो एक विश्वासयोग्य पत्नी उसे सामर्थ देती है, सहयोग और उत्साह के साथ ।

च. एक चरवाहे को शुरूवात से विश्वास का जीवन के विषय में सीखना चाहिए ।

१. उसे हमेशा परमेश्वर की ओर देखना चाहिए ना कि मनुष्य की ओर । परमेश्वर ने हर एक आवश्यकता को पूरा करने का वायदा किया है । फिलि ४ : १९; भजन संहिता २३ : १

२. उसे अपने समूह से कुछ उधार में लेकर परीक्षा में पड़ने से सावधान रहना चाहिए ।

III. **चरवाहों के लिए चेतावनी**

क. चरवाहों को अपनी आत्मिक वढ़ोत्री की उपेक्षा नहीं करना चाहिए ।
एक व्यस्त कार्य□म के कारण उसे परमेश्वर के साथ संबंध करने सें उपेक्षा आसानी से होता है ।
प्रेरितों के काम ६ : २ – ४; यिर्म १० : २१

ख. चरवाहे को यह नहीं भूलना चाहिए कि सेविकाई के सफलता के लिए उनका अच्छा स्वास्थय होना एक महत्वपूर्ण बात है ।

१. आराम आवश्यक है । मरकुस ६ : ३१
२. व्यायाम जरूरी है । १ तीमु ४ : ८

ग. चरवाहे को अस्थायी लाभ के लिए काम नहीं करना चाहिए । १ पतरस ५ : २
यीशु मसीह ने झूठे चरवाहों के विषय में सावधान किया । यूहन्ना १०
क. तीनों दृष्टान्त धन के विषय में कहता है ।
ख. उसने चोर, डाकू और भाड़े पर काम करने वालों के विषय में सावधान किया ।
- चोर वह है जो होशियारी से चोरी करता है ।
- डाकू वह है जो हिंसात्मक रूप से चोरी करता है ।
- एक कार्य कराने के लिए भाड़े पर काम करनेवाले को पैसा दिया जाता है ।

निष्कर्ष :- प्रेरितों के काम २० : २८ – ३५

तीन कठिन सालों के अन्त में एक चरवाहे की तबादली हो रही थी । विदाई के कार्यक्रम के बीच में, कई सदस्यों ने चरवाहे को उसके गुणों के लिए प्रशंसा किया ।
उसके प्रतिउत्तर में चरवाहे ने कहा, "काश ऐसा होता कि कोई मुझे पहले से ही आधी बात जो आपने आज कही है, वो सुना या होता ।"

चार दशक से ज्यादा चरवाहों के साथ अनुभव के बाद, मैं यह हियाव के साथ बोल सकता हूँ कि यहाँ ऐसा कोई काम नहीं होगा जो माँग करता हो, फिर भी निराशाजनक हो । बहुत कम ही ऐसे व्यवसाय हैं जो हार के लिए कई मौके देता है । चरवाहों के कई अनुपम समस्याएँ होती हैं । भले ही उनका कार्य संतुष्ट और लाभप्रद हो, इसमें अत्यन्त कठिन, निराशाजनक और निरूत्साहित करने वाले अनुभव हैं जो एक समर्पित परमेश्वर के दास को भी हताश कर सकता है ।
आरंभ काल की कलीसिया में, चरवाहों को संगति के प्रौढ़ व्यक्तियों में से चुना जाता था । चरवाहा, एक बुजुर्ग व्यक्ति होता था आत्मिक प्रौढ़ता में और सेविकाई में एक निरीक्षक होता था । कलीसिया में, एक से ज्यादा चरवाहा था बुजुर्ग पाया जाता था ।

इस पीढ़ी में चरवाहे का कार्य कठिन है । यह मेहनती काम है । किसी ने कहा : "एक अनुशासन है कि ऐसे शब्द बोलना सीखना जो कल्पना को जागृत करे और ध्यान को आकर्षित करे ।" यह सिर्फ प्रचार ही नहीं जिसमें चरवाहे का शक्ति और सहनशीलता की जरूरत है परन्तु शारीरिक थकावट और धबराहट से जो थकान होती है उससे चरवाहे और सभा के रिश्ते में तनाव हो सकता है ।

चरवाहे को भेड़ के प्रति संयमी होना चाहिए, उसे पैसे के लिए लालची या विवादी नहीं होना चाहिए; उसे लालच से मुक्त होना चाहिए, मसीह और कलीसिया को जीवन में प्रधानता देना चाहिए । उसे अविश्वासी के बीच भी अच्छी गवाही रखनी चाहिए, ताकि उसका बुरा कीर्ति कलीसिया के गवाही को नहीं चीर-फाड़ करें । यह दुःखद हो जाता है जब चरवाहे कर्ज या अपने किए हुए वादे को पूरा नहीं करते । यह कलीसिया के गवाही को चोट पहुँचता है । चरवाहा अपने ही पापी चरित्र के कारण सिर्फ परीक्षा में नहीं पड़ता परन्तु अपवित्र कलीसिया के सदस्यों की आलोचना और पापियों के नफरत का भी सामना करना पड़ता है । जिनसे चरवाहा प्रेम करता है उन्हें प्रसन्न करने की अयोग्यता और ऐसे लोग जिनपर वह नैतिक सहारे के लिए निर्भर था उनके द्वारा विरोध से निराश होने से वह पीछे हटने में प्रेरित हो सकता है ।

प्रेरित यूहन्ना लिखता है : "एक मनुष्य परमेश्वर की ओर से आया; उसका नाम यूहन्ना था । वह गवाही देने आया कि वह ज्योति की गवाही दे, जिस से सब उसके द्वारा विश्वास लाएँ । वह स्वयं ज्योति न था, परन्तु उस ज्योति की गवाही देने के लिए आया था । (यूहन्ना १ : ६ – ८) चरवाहा एक मनुष्य है इसलिए जिस प्रकार सदस्य उसके सिद्ध नमूने की अपेक्षा रखते है वह सम्भव रूप से अनुकूल नहीं है । उसमें दोष है, और सीमित है । परन्तु उसमें दैविक प्रधिकार है । उसके गलतियों और कमजोरियों के बावजूद भी वह सभा को वचन का प्रचार करने का माध्यम है । परमेश्वर की बुद्धि में, उसने विशेष राजदूत की सृष्टि नहीं किया जो उसके संदेश को प्रचार करे । उसने स्वर्गदूतों को भी वचन की सेविकाई करने नहीं भेजा । एक ऐसा मनुष्य जिसपर परमेश्वर की बुलाहट है उन्हें परमेश्वर के दास समझकर आदर और सम्मान देना चाहिए । आप सहयोग और प्रार्थना के द्वारा सेविकाई को प्रभावशाली बना सकते हैं ।
कई लोग कलीसिया में चरवाहे से अत्याधिक अपेक्षा करते हैं, इसलिए वे निरन्तर आलोचना करते हैं । वे चरवाहे से अलौकिक गुणों की अपेक्षा करते हैं । अपने चरवाहे को सिद्ध और सेविकाई के हर क्षेत्र में श्रेष्ठ होने की अपेक्षा नहीं करें । वह प्रमुख शास्त्रशिक्षक, अच्छा वक्ता, उत्साहित प्रचारकर्त्ता, सलाहकार, प्रेरणादायक उपदेशक, योग्य प्रबंधकर्त्ता, एक चालाक उद्योगपति, एक करूणामय, रचनात्मक, नवीन व्यक्ति जिसके पास सुलैमान की बुद्धि हो – इन सभी गुणों का मिश्रण नहीं है । चरवाहे का हृदय सही होने के बावजूद भी वो गलतियाँ करता है । परन्तु ऐसा कौन है जो गलतियाँ नहीं करता ?

परमेश्वर के दासों से अकारणवश माँग किया जाता है । एक लेख के उपाधि के अनुसार "अच्छे चरवाहे की योग्यताएँ ।" एक चरवाहे में, "बैल का बल, एक बुलडॉग (कुत्ते की प्रजाति) की दृढ़ता, शेर की दिलेरी, उल्लू की बुद्धि, कबूतर की हानि न पहुँचाने की प्रवृत्ति, ऊदबिलाव के खोदने की प्रवृत्ति, भेड़ की कोमलता, गिरगिट की बहुमुखी प्रतिभा, उकाब की दूरदर्शिता, गेंडे की चमड़ी, जिराफ का दृष्टिकोण, ऊँट की सहनशीलता, कंगारू की चपलता, घोड़े का पेट, स्वर्गदूत की व्यवस्था, प्रेरित की वफादारी,

भविष्यवक्ता की विश्वासयोग्यता, एक चरवाहे की कोमलता, सुसमाचार प्रचार करनेवाले की उमंग, और एक माँ की श्रद्धा । फिर भी, वह सबको प्रसन्न नहीं कर सकता ।”

कुछ सदस्य कलीसिया के “प्रमुख” होना चाहते हैं । उन्हें हर कार्य में पहला और प्रकृष्ट होना बहुत अच्छा लगता है । वे चरवाहे की अगुवाई को स्वीकार करने से नाकारते हैं । जब भी कोई कलीसिया का सदस्य के स्थान या प्रतिष्ठा चाहिए रहता है । तो वह चरवाहे को एकांत में था खले में आक्रमण करता है । साधारणतः वे “फुसफुसाहट अभियान” से शुरू करते हैं और चरवाहे के चरित्र को फीका करने की कोशिश करते हैं और उसकी सेविकाई को कमजोर कर देते हैं । ऐसे सदस्य कलीसिया को नष्ट कर देते हैं । ताकत और अधिकार के इच्छुक, वे सच्चाई को कुचल कर, पवित्र शास्त्र को अनदेखा कर, पवित्र आत्मा को शोकित कर, भेड़ को तितर-बितर कर देते हैं । कलीसिया के सदस्य को यह याद रखना चाहिए कि वे उनके चरवाहे के विरूद्ध दोषारोपण को नहीं सुने जब उनके गवाह वहाँ मौजूद नहीं हैं; यह गपशप की समस्या को सुलक्षा सकता है (१ तीमु ५ : १९) हर दोषारोपण दो गवाहों के सहयोग में होना चाहिए । इस बात को सही मूल्यांकन देना चाहिए और इसमें पक्षपात नहीं होना चाहिए । सिर्फ यीशु मसीह को ही प्रकृष्टता मिलनी चाहिए । (कुलु १ : १८)

कुछ लोग यह सोचते हैं कि उनका चरवाहा कोई सही काम कर ही नहीं सकता है । सभा के हामी के लिए कई कोशिशों के बाद भी, और उनको इतने विश्वासयोग्यता और मेहनत से चराने के बावजूद भी ऐसे कई सदस्य होते हों जो चरवाहे में बुराई ढूँढ़ते हैं और उनकी आलोचना करते हैं । सभा में कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो चरवाहे की कमजोरियों को खुले रूप से बयान करते हैं । इसकी वजह से कई चरवाहे कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं । किसी ने ऐसा निम्नलिखित वर्णन किया है :

- अगर चरवाहा जवान हो, तो उसे अनुभव की कमी है; अगर उसके बाल पके हैं, तो वह जवानों के लिए बहुत ही बूढ़ा है ।
- अगर उसके पाँच बच्चे हैं, तो उसके पास बहुत हैं; अगर उसके कोई भी बच्चे नहीं हैं, तो वह गलत उदाहरण दर्शा रहा है ।
- अगर वह लिखित से प्रचार करता है, तो जो प्रवचन बाँट रहा है तो बेकार है, अगर वह बिना तैयारी के प्रचार करता है तो वह वचन के गहराई में नहीं गया है ।
- अगर वह सबको खुश नहीं कर सकता तो वह कलीसिया को चोट पहूँचाता है और उसे कलीसिया छोड़ देना चाहिए; अगर वह सबको खुश रखता है, तो उसपर दोष नहीं लगता ।
- अगर वह कलीसिया के गरीबों की देखरेख करता है: तो उनको खुश करना चाहता है ।

  अगर वह अमीर की ओर ध्यान देता है, तो वह कुलीन बनने की कोशिश कर रहा है ।
- अगर वह कई उदाहरण देता है तो वह पवित्र शास्त्र की उपेक्षा कर रहा है; अगर वह वचन से कहानियाँ नहीं सुनाता है तो वह स्पष्ट नहीं है ।
- अगर वह बुराई को दोषी ठहराता है तो वह चिड़चिड़ा है; अगर वह पाप के विरूद्ध प्रचार करता है, तो वह समझौता करने वालों में से है ।
- अगर वह सच्चाई का प्रचार करता है, वह बहुत अप्रिय है; अगर वह “पूरे परमेश्वर के सलाह को” प्रस्तुत नहीं करता है तो वह पाखंडी है ।
- अगर वह पुराने घर में रहता है तो वह सभा को लज्जित करता है; अगर वह नया घर खरीदता है तो वह पृथ्वी के चीजों से प्रीति रखता है ।
- अगर वह हमेशा प्रचार करता है, तो सभा उसकी सुनके थक जाती है; अगर वह मेहमानों को कलीसिया में प्रचार करने कहता है तों वह अपनी जिम्मेदारियों से पीछे हट रहा है ।
- अगर उसे बहुत बड़ा वेतन मिल रहा है, तो वह लालची है; अगर उसे छोटा वेतन मिलता है तो वह ज्यादा वेतन के योग्य नहीं है, ऐसा साबित होता है ।”

सदस्यों को चरवाहे के विरूद्ध व्यक्तिगत धर्मयुद्ध नहीं करना चाहिए । कोई भी समस्या को शांति से, प्रेमपूर्वक और अलग से चरवाहे और परमेश्वर के कार्य के लिए करना चाहिए । जो भी कदम उठाया जाता है उसे प्रार्थना से और अत्यंत सावधानी से करना चाहिए । जैसे की आपको "शाबाशी" की जरूरत है किसी अच्छे कार्य के लिए, आपका चरवाहा भी उसी तरह आपके कृतज्ञता और आपके नैतिक सहयोग का आश्वासन चाहता है - उसके अहं को बढ़ाने के लिए प्रशंसा नहीं चाहता, परन्तु उसके विश्वासयोग्य सेविकाई के लिए सच्ची कृतज्ञता चाहता है । इसके बदले, कुछ लोग चरवाहे के साथ गलत व्यवहार करते हैं ।

आपके चरवाहे का एक परिवार होता है और उसे कई जरूरतों के लिए सहयोग चाहिए । "एक मजदूर भाड़े के योग्य होता है ।" कोई भी सिपाही स्वयं का भरण-पोषण नहीं कर सकता, परन्तु सरकार उसे वेतन और जरूरतों को पूरा करती है । यह मसीही के लिए सही और उचित है कि जो भी उससे प्रभु की सेविकाई करे उसे वह आर्थिक रूप से सहयोग दे । स्थानीय कलीसिया को आत्मिक आशीषों के लिए प्रभु के सेवकों को भौतिक रूप से मदद करते हुए चरवाहे को सराहना चाहिए (१ कुरि. ९ : १३ – १४) ताकि वह परिवार को पालन – पोषण कर सके । अगर स्थानीय कलीसिया ऐसा नहीं कर सकती तो यह जिम्मेदारी संस्थान को लेना चाहिए । इसके बिना, चरवाहे अपने आप को असहाय और असुरक्षित पाते हैं । औषधी और वृद्ध होने पर चरवाहे के लिए प्रार्थना करें और पर्याप्त रूप से उसे वेतन दें ।

हर चरवाहा, जो परमेश्वर का भेजा हुआ है, वह खुशी से कार्य करेगा । परन्तु हमें यह देखना चाहिए कि उसे प्रार्थना करने या वचन के अनुसार रहने में कोई रूकावट तो नहीं है । सदस्यों को यह अपेक्षा नहीं करना चाहिए कि उनके छींकने पर चरवाहा वहाँ पहुँच जाए । इसके अतिरिक्त, चरवाहे को कलीसिया का छोटा-मोटा काम करनेवाला नहीं समझें ।

पहली शताब्दी में बढ़ती कलीसिया में, सेविकाई के जिम्मेदारियों के कारण, प्रेरितों ने पैसा रखने, के मामले को नाकारा । उन्होंने लोगों से यह घोषित किया कि उनका प्रमुख कर्तव्य आत्मिक सेविकाई में शामिल होना है; प्रार्थना और परमेश्वर के वचन की सेविकाई में । (प्रेरित ६ : ४) जब भी कोई सेवक अपने सदस्यों के अस्थायी चिताओं की उपेक्षा करता है, तब वह अपने दैविक बुलाहट में नाकामयाब रहा है । एक चरवाहे अपने कर्त्तव्यों को "बनाए रखने" में शामिल हो सकता है जब कलीसिया जीना शुरू करती है परन्तु यह बिना सेवक या कलीसिया को चोट पहुँचाए बगैर शायद ही कभी लंबे समय तक चल सकती है । यह बढकिस्मती की बात है कि कई-चरवाहे ऐसा सोचते हैं कि प्रशासकीय कार्यों में स्पर्धा करने से सेविकाई में तरक्की मिलती है, एक सामूहिक सीढ़ी चढ़कर लोगों पर शासन करना । जब वे ऐसा करते हैं तो वे सदस्यों की आत्मिक सेविकाई के लिए पीठ दिखाते हैं । चरवाहे का कार्य है सदस्यों के सामने परमेश्वर का पूर्ण सलाह रखना । (प्रेरित २०:२७) अक्सर यह देखा गया है कि चरवाहे, दैविक बुद्धि, प्रेम और सामर्थ की योजना जिसमें प्रभु का पूर्ण महिमा दिखती है, सदस्यों को दिखाने में क्षमता नहीं रखते । यह चरवाहे को आवश्यक है जॉचना कि पवित्र शास्त्र की महान बातें जो परमेश्वर के बारे में बताता है, उसमें भी यीशु मसीह का ऐलान हो रहा है या नही ।

प्रेरितों ने हल निकाला और अफसर की योग्यताओं का विवरण दिया : नेकनामी, आत्मीयता; व्यावहारिकता । अफसरों को चुनने की जिम्मेदारी कलीसिया पर थी । यह झुंड के अगुवों के बीच एकता और शांति का चित्र दर्शाता है । कलीसिया को मालूम था कि उनमें से कौन उत्तम, विश्वसनीय और अपक्षपाती है । ऐसे अफसर इसाइयों पर लाभ लाएंगे और उनके नीचे मसीह का कारण फलवन्त होगा । इस तरह चरवाहे अस्थायी और सभय लेनेवाले चिन्ताओं से आजाद होंगे और वे प्रार्थना और वचन की सेविकाई में निरंतर लगे रहेंगे । अगर स्थानीय कलीसियाएँ अपने चरवाहों को प्रार्थना, प्रचार और क्षिक्षा के लिए समय देंगे तो हम आत्मिक सामर्थ और लोगों की संख्या में बढ़ोत्री देखेंगे ।

चरवाहों को वचन का जानना दो वजह से आवश्यक है : सदस्यों की सेविकाई के लिए और गलत शिक्षकों को पहचानने के लिए । वे परमेश्वर के प्रेरित वचन से सदस्यों को फटकारते, ताडना देते और उँचा उठाते हैं ।
(२ तीमु ३ : १६ – १७) एक चरवाहे को वचन और आत्मा से कभी अलग नहीं होना चाहिए । कुछ चरवाहों को पवित्र आत्मा पर बहुत विश्वास है परन्तु वे वचन को न ही पढ़ते हैं और न ही उसकी विस्तारपूर्वक व्याख्या करते हैं । दूसरे वचन के बड़े-बड़े विद्यार्थी होते हैं । उनके मेज पर बहुत किताबों का ढ़ेर लगा रहता है । परन्तु वे शायद ही कभी परमेश्वर को ज्योति और सामर्थ के लिए पुकार उठते हैं । इस संदर्भ में एक प्रश्न पूछा जा सकता है : "जो परमेश्वर ने जोड़ा है उसे अलग क्यों किया जाना चाहिए ? चरवाहे को वचन की विस्तार-पूर्वक जानकारी होनी चाहिए, संदर्भ और मूलपाठ का विशेष ध्यान रखते हुए । एक सच्चा मसीही-

विश्वास को विद्वता या पवित्र शास्त्र के आलोचनात्मक अध्ययन से डर नहीं लगता है । जो प्रश्न हमारे दिमाग पर छाया रहता है उनका खोज करके श्रद्धालु चरवाहे हमेशा लाभ प्राप्त करते हैं । एक अच्छा सेवक वचन से खाता है (मनन करता है) ताकि वह दूसरों को उसमें से खिलाए (सिखाए) । सुनने से और ऐसे परेशानियाँ जो लोगों को विश्वास करने से रोकते हैं उनसे संघर्ष करने से चिरस्थायी लाभ प्राप्त होता है । बलवन्त विश्वास के गहरे नींव होते हैं ।
कई चरवाहे परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसके राज्य के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं । परन्तु, कुछ ऐसे हैं जो ऐसा नहीं करते हैं; उन्होंने अपना दर्शन खो दिया है और सिर्फ दिखावटी काम करते हैं । व फंस जाते हैं, आर्थिक और दूसरे कारणों से और छोड़ कर जाने में क्षमता नहीं रखते हैं । वे आत्मिक रूप से थक जाते हैं और सदस्यों को देने के लिए उनके पास कुछ भी नहीं होता है । जो थोमा- प्रेरित ने मसीह के बारे में कहा था, वही अभी दुनिया कलीसिया के बारे में कह रही है । दुनिया हर प्रचारक से कह रही है: "जबतक हम तुम्हारे हाथों में कील का छाप नहीं देखते, हम विश्वास नहीं करेंगे ।" एक महान पवित्र शास्त्र के व्याख्याता ने कहा है : "सिर्फ वही इन्सान जो मसीह के साथ मरा हो वही मसीह के क्रुस के विषय में प्रचार कर सकता है ।"

ऑगस्टीन के सेविकाई में एक ऐसा समय था जब उसके ऊपर इतना बोझ था कि वह निराश होकर भाग गया । विशिष्ट पोप ग्रेगरी ने उसे निम्नलिखित बातें लिखा : "क्योंकि यह बेहतर होता कि कोई कार्य जो अच्छा है वह शुरू नहीं करना ना कि पीठ दिखाकर भागना, मेरे प्रिय पुत्र, तुम्हें अच्छा कार्य पूरा करना है, प्रभु की मदद से जो तुमने शुरू किया है । फिर, यात्रा की थकावट या बुराई करनेवाले जीभ तुम्हें हतोत्साहित न करे; परन्तु प्रार्थना और पूरे जोश और प्रार्थना के साथ जो परमेश्वर के निर्देशन में प्रारंभ किया है उसे करो, यह जानते हुए कि घोर परिश्रम के उपरांत "अनन्तकाल के वरदान की महिमा" होती है । यह चरवाहे के लिए आनंद की बात है कि जिसने उसे बुलाया है नाम दिया है और आशीष दिया है उसकी ओर वह विश्वासयोग्य रहे ।

भले ही एक व्यक्ति को अच्छा जानकारी हो, उसने चरवाहे को पहचाना नहीं है; उसके महान बुलाहट और आत्मिक योग्यताओं के बावजूद वह इन्सान नहीं था; एक मानव जाति दूसरों की तरह और उस कारण वह शायद ही सिद्ध तरीके से जैसा विश्वासी ने उसके लिए सोच रखा है वैसा बन सका । इस वजह से, जब एक व्यक्ति को कलीसिया चलाने के लिए बुलाया जाता है, उससे अतिमानवीय योग्यताओं की अपेक्षा की जाती है, जैसे :

- वह अच्छा वक्ता होना चाहिए ।
- वह पवित्र शास्त्र का विद्यार्थी होना चाहिए ।
- वह धनी सुसमाचार प्रचारक होना चाहिए ।
- वह करूणा से भरा चरवाहा होना चाहिए ।
- उसमें सुलैमान की बुद्धि होनी चाहिए ।
- उसका व्यक्तित्व प्यारा और दिखने में अच्छा होना चाहिए ।
- वह होशियार व्यापारी और प्रभावशाली और उत्तम प्रबंधकर्ता होना चाहिए ।
- वह सृजनात्मक और मौलिक होना चाहिए ।

और यह सूची बढ़ती जाती है । उस गरीब प्रचारक पर हाय जो इन आवश्यकताओं के अनुसार नहीं जी पाता है । उसके बारे में ऐसा कहा जाएगा, "ओह उसके अच्छी बातें है, परन्तु ...." कुछ समय पहले मैं एक लेख पढ़ रहा था, जिसका शीर्षक था, "एक अच्छे चरवाहे की योग्यताएँ, "और वह बेवजह माँगो को अधोरेखांकित करती है जो परमेश्वर के दासों पर लगाया जाता है । वह निम्नलिखित है :
"एक अच्छे चरवाहे की जरूरतें :"

- बैल का बल,
- बुलडॉग (कुत्ते की प्रजाति) की दृढ़ता,
- शेर की दिलेरी,
- उल्लू की बुद्धि,
- कबूतर की हानि न पहुंचाने की प्रवृत्ति-ऊदबिलाव के खोदने की प्रवृत्ति,-भेड़ की कोमलता,
- गिरगिट की बहुमुखी प्रतिभा,

- उकाब की दूरदर्शिता,- गेंड़े की चमड़ी,- जिराफ का दृष्टिकोण,- ऊँट की सहनशीलता,- कंगारू की चपलता,- घोडे का पेट,- स्वर्गदूत की व्यवस्था,- प्रेरित की वफादारी,- भविष्यवक्ता की विश्वासयोग्यता,- चरवाहे की कोमलता,
- सुसमाचार प्रचार करनेवाले की उमंग,
- मां की श्रद्धा,
- और फिर भी, वह सबको प्रसन्न नही कर सका ।"

ऐसे लोग होते हैं जो कहते हैं, "ओह, वह ठीक है, परन्तु ...." याद रखें पवित्र शास्त्र कहता है, "एक मनुष्य था ।" और मनुष्य होने के नाते हमारा चरवाहा सभी बातों में निपुण नहीं हो सकता, ना ही वह सभी कार्य सिद्धता में कर सकता है । उसकें कमियॉ और कमजोरियॉ होती हैं क्योंकि वो ऐसे मनुष्य का उपयोग करना भाता है, और कई मुददों में वह मनुष्यों में सबसे कमजोर का चुनाव करता है । प्रेरित पौलुस यह घोषित करता है : "जब तुम्हें परमेश्वर ने बुलाया तब तुम क्या थे ? मनुष्य की दृष्टि से तुम में से बहुत लोग न ज्ञानवान थे, और न सामर्थी थे । तुम न बहुत कुलीन व्यक्ति ही थे । परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खो को चुन लिया है वह ज्ञानवानों को लज्जित करें । परमेश्वर ने जगत के निर्वलों को चुन लिया है वह बलवानों को लज्जित करें । परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को, वरन् जो हैं भी नहीं, उनको भी चुन लिया है कि उन्हें जो हैं, व्यर्थ ठहराए । जिस से कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड न करने पाए ।" (१ कुरि. १ : २६-२९) । इसलिए अपने प्रचारक को हर क्षेत्र में श्रेष्ठता या सिद्धता की अपेक्षा न करें । और जब आपको पता लगता है कि वह प्रमुख पवित्र शास्त्रीय शिक्षक, धनी सुसमाचार-प्रचारक, करूणामय चरवाहा, प्रेरणा देनेवाला प्रचारक, योग्य प्रबंधकर्ता, और चतुर व्यापारी – ये सभी गुणों का मिलावट उसमें नहीं है तो धक्का लगने की प्रतिक्रिया न करें । परमेश्वर स्वयं इतनी मांगे नहीं करता है । प्रेरित पौलुस ने लिखा है "इसलिए मैं इसी रीति से दौड़ता हूँ, परन्तु बेठिकाने नहीं दौड़ता ! मैं भी इसी रीति से मुस्कों से लड़ता हूँ, परन्तु उसके समान नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है । मैं अपनी देह को मारता-कूटता और वश में लाता हूँ । ऐसा न हो कि मैं दूसरों को प्रचार करूँ और स्वयं ही पुरस्कार पाने के लिए अयोग्य ठहरूं । (१ कुरि. ९ : २६-२७) ये सभी बातें ध्यान में रखते हुए, मैं आपको आपके चरवाहे के लिए प्रार्थना करने के लिए उत्साहित करूँगा । अगर, फिर भी, आप अपने शिकायतों को स्वयं में नहीं रख सकते और ऐसा लगता है कि किसी के साथ बांटे, तो परमेश्वर से बातचीत करें । और जब आप ऐसा करते हैं, तो चरवाहे के लिए प्रार्थना करें । अगर किसी को आज के दिन परमेश्वर के लोगों की प्रार्थना की जरूरत है तो वे – चरवाहे के कार्य में जो लगे हैं उनके लिए है । मैं ऐसा कोई पेशा नहीं जानता जिसमें इतनी मांग है फिर भी निराशाजनक है । और मैं कम कार्यो के विषय में सोच सकता हूँ जो विफलता के लिए कई मौके देता है ।

चरवाहा सिर्फ अपने ही पापी स्वभाव या दुनिया के कारण परीक्षा में नहीं पड़ता परन्तु पापियों की नफरत और अधूरे परिवर्तित कलीसिया के सदस्यों की नुक्ताचीनी के कारण परीक्षा में पड़ते हैं । इस कारण, वह विशेष रूप से शैतान के ज्वलंत शस्त्र का लक्ष्य बन जाता है । इसलिए उसके लिए प्रार्थना करें और उसे उत्साहित करें । आपने कब आपके चरवाहे का हाथ थामकर उसके सेवकाई के लिए अपनी कृतज्ञता को व्यक्त किया है ? आपको धक्का लगेगा या आश्चर्यचकित हो जाएंगे अगर आपको पता चलेगा कि कितने चरवाहों को हफ्ते या महीनों में कोई उत्साहना नहीं मिलती है । किसी तरह लोग यह सोचते हैं कि प्रचारक को दूसरों की तरह अच्छे शब्दों की जरूरत नहीं है । परन्तु जिस तरह एक अच्छे कार्य के लिए "शाबाशी" को सराहा जाता है उसी तरह आपका चरवाहा उसके विश्वासयोग्य सेवकाई के लिए आपकी कृतज्ञता और नैतिक सहयोग – न कि प्रशंसा चाहता है । मैं आशा करता हूँ कि यूहन्ना १ : ६ में जिस तरह उपदेश दिया गया है, "एक मनुष्य था" उस अध्याय को आप जरूर याद रखेंगे ।

चरवाहे का निर्णय

१. मैं अपने भेड़ को अधिकार से नहीं परन्तु उदाहरण से मार्गदर्शन करूँगा । मैं यह कोशिश करूँगा कि द उपर दिए बात के अनुसार जिऊँगा और दूसरे लिंग से थोड़ा दूर ही रहूँगा । मैं आलोचनाओं से हताश नहीं हूँगा परन्तु निष्पक्ष भाव से उनका सामना करूँगा और स्वयं को इमानदारी से जाचुँगा ताकि मैं खुद को सुधार सकूँ । मैं स्वेच्छापूर्वक उतरदायित्व के लिए आत्मिक अगुवों को खुद को समर्पित करूँगा । (यूहन्ना १0 : ४; १ पतरस ५ : ३; १ कुरि ११ : १; १ तीमु ३ : १-२; ५:२; तीतु २:३-४; २ शमु १२: ७-९)

२. मैं कलीसिया के सदस्यों के लिए हर दिन प्रार्थना के लिए समय निश्चित करूँगा । जिस तरह इस्राएल के बारह गोत्र के नाम महायाजक के कवच पर तराशा गया है मैं उसी तरह अपने भेड़ के बोझ को उठाऊँगा ताकि मैं परमेश्वर के उद्देश्यों में उनको बढ़ता देख सकूँ । अगर एक भी सदस्य पीछे हटता है तो मैं उदासीन नहीं हूँगा । मैं ऐसे लोगों को प्राथमिकता दूँगा जो बीमार है और पीडित हैं । (१ थिस. १ : १२- ४; निर्गमन २८ : २९; फिल १ : ३- ६; २ कुरि. ११ : २८-२९; लूका १५:४; याकूब ५: १४)

३. मैं पवित्र शास्त्र के अध्ययन के लिए रोज २ धंटे व्यतीत करूँगा । मैं पवित्र शास्त्र का अध्ययन, विवरण और दूसरे अध्ययन संबंधी बातों का परामर्श लूँगा । मैं शैतान के झूठ को विश्वास नहीं करूँगा कि अगर मैं लिखित नोट से प्रचार नहीं करता तो मैं महान हूँ । छोटे-शीर्षक को प्रचार करने के बजाय, मैं अपने लोगों को परमेश्वर का उद्देश्य सिखाऊँगा और उन्हें संतुलित आहार दूँगा । मैं व्यवसाय के समस्याओं को अपने अध्ययन समय से दूर ही रखूँगा ।
(मला २ : ७; लूका ९ : १0-११; मत्ती १0 : २७; प्रेरित २0 : २0,२७; ६:२- ४)

४. मैं कलीसिया के हर सदस्य को सेवक बनने के लिए धोर प्रयास करूँगा । मैं हर सदस्य को उसके आत्मिक भेंट को पहचानने में मदद करूँगा । मैं अकेले काम नहीं करूँगा बल्कि जिम्मेदारियाँ बाँटूंगा । मैं लोगों पर भरोसा रखूँगा और उनके गलतियों को बर्दाश्ता करूँगा । मैं विश्वासियों के लिए पवित्र शास्त्र अध्ययन का प्रस्तुति करूँगा । मैं अगुवा होकर भी दास बनूँगा । मैं सुधार के लिए अपने आप को खुला रखूँगा और भले के लिए नए विचार और बदलाव का स्वागत करूँगा । मैं जवानों के लिए मित्र ठहरूँगा ।
(इफि ४ : ११-१३; रोमियों १२ : ४-८; मर. ३ : १४; यूहन्ना १३: १३-१५; १ कुरि ३:२१- २३; प्रेरित ६:१४; १ यूहन्ना २ : १४)

५. मैं अमीरों और गरीबों में पक्षपात नहीं करूँगा, चाहे पढ़े-लिखें हों या अनपढ़, चाहे संपन्न हो या पीडित हो । मैं भेंट के आकार से प्रभावित नहीं होता । मैं विधवाओं और पीड़ितों का विशेष ध्यान रखूँगा । मैं जाति संबंधी बातों में मरकर अपने कार्यो में राजनीति नहीं लाऊँगा । (याकूब २ : १-५; लूका २१ : १-४; याकूब १ : २७; कुलु ३ : ११-१४)

६. मैं आर्थिक मामलों में इमानदार रहूँगा । मैं हर पैसा, आर्थिक भेंट जो दशवांस या भेंट के द्वारा प्राप्त हुआ हो या सहयोग जो भी है उसका लेख दूँगा और सरकार को लेखा-परीक्षण दूँगा । मैं कलीसिया के पैसों का इस्तेमाल मेरे व्यक्तिगत या परिवार के सदस्यों के नाम से किसी भी चाल या अचल संपत्ति के लिए इस्तेमाल नहीं करूँगा । मैं अनुरक्षण पगार या महीने का वेतन लूँगा और हर आर्थिक मामलों को विश्वसनीय समिति को सौंप दूँगा । (२ कुरि ८ : २0-२१; रोमि १३ : ६-७; मत्ती २२ : २१)

७. मैं कलीसिया के अगुवेपन को साथी चरवाहों के साथ बांटूँगा, यह याद रखते हुए के अकेला-चरवाहे का तरीका पवित्र शास्त्र के अनुसार नहीं है । (चरवाहे और प्राचीन विनिमय के योग्य शब्द हैं) भले ही सदस्य कम हो मेरे साथ एक सहकर्मी चरवाहा जरूर होगा । मैं अपने अंह को सामूहिक निर्णयों के साथ नहीं जोड़ूँगा । मैं किसी भी साथ कार्य करने वाले अगुवे को रूकावट नहीं बनने दूँगा अगर उसको मुझसे ज्यादा बड़ाई मिलती हो ।
(तीतुस १ : ५; प्रेरित २0 : १७,२८; १ पतरस ५ : १; प्रेरितों के काम १५ : २२,२८; १ शमु १८:७- ९)

८. मैं दूसरे कलीसिया के चरवाहों के साथ संपर्क रखूँगा । मैं उनके साथ खुशी से हाथ मिलाकर कार्यक्रम करूँगा । मैं अपने सदस्यों को दूसरे कार्यक्रम के लिए भेजूँगा; ताकि उन्हें "अन्दर और बाहर" चारा मिले । मैं दूसरों के विजय में खुश हूँगा और खुले रूप से स्वीकार करूँगा । मैं अपने लोगों को झूठे सिद्धांतों से सावधान करूँगा ।
(इफि ४ : ११-१६; १ कुरि . ३ : ५-९; यूहन्ना १० : ९; लूका ९ : ४९-५०; फिलि ३:२; १ यूहन्ना ४:१)

९. मैं अपनी कलीसिया को मिशन-संबंधी कार्यों में लगाना चाहता हूँ । मैं अपने विश्वासियों के गुट को अलग-अलग मिशन-क्षेत्र में जाने का प्रोत्साहन दूँगा । मैं समयानुसार मिशनरी और अगुवाओं को न्यौता दूँगा और सदस्यों को चुनौती दूँगा । मिशनरी का सहयोग करना हमारे कलीसिया के आय-व्ययक में प्रमुख स्थान दिया जाता है । मैं अपने जवानों में उत्साहित करूँगा कि वो मिशनरी बनकर कठिन जगहों में जाएँ । मैं उत्तम कार्यकर्ताओं को मिशनरी काम पर जाने से नहीं रोकूँगा ।
(रोमि १० : १३-१४; १५:२०; मत्ती १० : ३५-३८; इफि ६ : १९-२०; प्रेरित १३ : १- ३)

१०. मैं अपने परिवार के साथ पर्याप्त समय बिताऊँगा । मैं अपनी पत्नी को घरों में भेंट करने ले जाता हूँ । मैं अपनी पत्नी और बच्चों को हफ्ते में एक दिन बाहर घुमाने ले जाता हूँ । जब मैं कलीसिया या सेविकाई के बारे में उनसे कुछ बात नहीं करता । मैं सोमवार या किसी एक हफ्ते के दिन में आराम और विश्राम करता हूँ और सदस्यों को इसके बारे में बता देता हूँ ।

सही में महत्वपूर्ण क्या है ?

करीबन दो साल से मैं कथन के वाक्यों की बनावट करने की कोशिश कर रहा हूँ। मैंने इसे "अनिवार्य" कहा है। यह अप्रधान रचना जो २५ साल से ज्यादा लगा, मेरे ध्यान को केंद्रित करने में, इसमें एक प्रश्न उठता है : "एक चरवाहे अगुवे को अनिवार्य शिक्षा क्या होनी चाहिए ताकि एक विश्वासी जिसका मन सेवकाई में लगा हो और आत्मिक रूप से प्रौढ़ होने वाली कलीसिया को सही रूप दिया जा सके ?

इसलिए, यह मेरी सूची है "अनिवार्य" पवित्र शास्त्रीय मूल कुंजियाँ जो ऐसे लोगों को शिक्षा देती है जो वचन में आज़ाद किए गए हों और पूर्णता तथा फलवन्त होने में मार्गदर्शन करता हो।

१. अलौकिक प्रकाशन

क. पवित्र शास्त्र का प्रेरणा और अधिकार : लोगों को अलौकिक स्रोत के विषय में समझने का प्रयत्न करना; उसके सम्पूर्ण अधिकार; उसके बढ़ोत्री और आज़ादी का स्रोत।

ख. परमेश्वर की उपस्थिति और स्वभाव और ईश्वरत्व : महान परमेश्वर का चरित्र - हमारा सृष्टिकर्ता और हर चीज को बनाए रखनेवाला - उसकी योग्यता, उसके तरीके और उसके कार्य।

ग. उसका प्रकाशन और परमेश्वर के पुत्र का अवतार : यीशु मसीह का परिचय, हमारा छुडानेवाला, पहले भविष्यदवक्ताओं के झलक से उसके जन्म तक, उसकी सेवकाई और उसका उद्धार करने वाला कार्य।

घ. मनुष्यजाति के लिए पवित्र आत्मा की गवाही : लोगों को पहचानने में मदद करता कि किस तरह पवित्र आत्मा को आत्माओं को परमेश्वर के लिए जागृत करने और मसीह की करीब लाने के लिए भेजा गया है।

२. मसीह में छुटकारा

क. दुनिया के लोगों के लिए सुसमाचार का संदेश : परमेश्वर के प्रेम के विषय में प्रचार जो यीशु मसीह के द्वारा लहू से मनुष्यों के पापों की प्रायश्चित कि उसके लहू के द्वारा हमारा परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप हुआ है, और "जो कोई भी उसपर विश्वास करेगा उसका नाश नहीं होगा परन्तु अनन्त जीवन पाएगा।"

ख. अपराध और दोषभावना से आज्ञा दी : विश्वासियों को मसीह पर निश्चित विश्वास : परमेश्वर के न्यायी अनुग्रह, सम्पूर्ण क्षमा, प्रेम में बने रहना और पूर्ण रूप से स्वीकृत।

ग. परमेश्वर के बच्चे बनने का अर्थ और महत्व : मसीह में हमारे लिए परमेश्वर की आशा; हमारे सृजे गए उद्देश्य को फिर से प्राप्त करना, हमको अधिकार सौंपना और विजय की ओर ले जाना।

घ. शुद्धीकरण और छुटकारे के मुददे :
आजाद और पवित्र जीवन की ओर पालन करना; कानून और अनुग्रह के टीका-टिप्पणी से बचकर; हर मलिनता जो मांस और आत्मा में है उसका शुद्धीकरण।

३. मौलिक अनुशासन

क. पवित्र शास्त्रीय धर्मविधि के उद्देश्य व प्रयोग : रीति-रिवाज के परे शिक्षा जो पानी के बपतिस्मा का साभिप्राय है और परमेश्वर के मेज पर हमारा विश्वासयोग्य अनुपालन।

ख. परमेश्वर के वचन द्वारा पालन-पोषण : परमेश्वर के पवित्र वचन के व्यावाहारिक उपयोग का मार्गदर्शन करना, पढने की आदत डालना, वचन का अध्ययन और स्मरण करना ।

ग. विश्वास के साथ प्रार्थना के वाढ़े और मार्ग : किस तरह यीशु मसीह के साथ प्रतिदिन घनिष्ठ संबंध शक्तिमय प्रार्थना के साथ कैसे प्रेम के मौसम को विकसित करती है – परमेश्वर के वायदों को हियाव, नम्रता और पवित्र शास्त्रीय पूर्णविश्वास के साथ काम में लाना ।

घ. परमेश्वर के इच्छानुसार कार्य करने आज्ञाकारिता का ज्ञान : ऐसे सिद्धांत सिखाना जो हर एक के जीवन के लिए पिता का व्यक्तिगत उद्देश्य है जैसे उसके वचन, इच्छा और मार्ग का स्वागत किया जाता है ।

ङ. सिद्धांत और सेविकाई का अभ्यास करना और देना : परमेश्वर की बुलाहट को जानना ताकि हम बहुमूल्य वस्तु उत्पन्न कर सके जैसे :- समय, दशवांस, भेंट और सेवा के ज़रिए प्रतिभा को बताना; उसके हितकर तरीके जो दूसरों के लिए आशीष का कारण है उसे भरपूरी से जानना ।

४. आत्मिक अधिकार प्राप्त करना :

क. बुलाहट और पवित्र आत्मा के बपतिस्मा की सेवकाई : हर विश्वासी को "स्वर्ग से बुलाहट" को प्राप्त करने को मार्गदर्शन करना; प्राचीन कलीसिया के जैसे उत्कट प्रेम और अपेक्षा के अनुभव की सेवकाई की शिक्षा देना ।

ख. पवित्र आत्मा के भेंट और फल : उस स्थान और आत्मिक भेंट के कार्य के लिए जब आत्मिक फल की प्रौढ़ता और अनुग्रह में बढ़ते हैं; यीशु मसीह के चरित्र को सेवकाई, प्रभाव और जीवन में करिश्मा को प्रतिबिंबित करना ।

ग. भविष्यावाणी के वचन के उद्देश्य और नमूने : ज्ञान को विकसित करने और पवित्र आत्मा के "वचन" के वरदान के अस्थायी प्रोत्साहन के लिए प्राप्त और पवित्र शास्त्र के अनुसार प्रतिउत्तर देने में संतुलन ।

घ. स्वास्थय और चंगाई के लिए वादे और सेवकाई: पवित्र शास्त्रीय प्रेम, अनुग्रह और विश्वास से मार्गदर्शन देते हुए जिस प्रकार हम सम्पूर्ण व्यक्ति - आत्मा, प्राण और शरीर के लिए परमेश्वर के चंगाई का वाचा और मसीह के चंगाई की सेवकाई को दर्शाते हैं ।

ङ. परमेश्वर के राज्य का क्षेत्र और सेवकाई: जीवन के विकार में जो यीशु मसीह का बुलाहट है "पश्चाताप करो ...... परमेश्वर का राज्य निकट है"; उसके निरन्तर "जीवन में राज" के बुलाहट के समझ के लिए निर्देशन देना ।

५. कलीसिया

क. कलीसिया का मिशन और बनावट : यीशु मसीह ने कलीसिया किस तरह स्थानीय रूप से या विश्वव्यापी रूप से उनके नियुक्त अगुवों के द्वारा जो उसके देह के सदस्यों की सेवकाई के बढ़ोत्री के लिए था, उसको दर्शाना ।

ख. पवित्र आत्मा से परिपूर्ण आराधना का अभ्यास और प्रमुखता : पवित्र शास्त्रीय, जीवंत, व्यक्तिगत और सामूहिक आराधना जो सनादरपूर्ण, नम्रता और आनंद से भरा आज़ादी से उसके उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए है, उसमें मार्गदर्शन करना ।

ग. अधिकार और समर्पित होने के सिद्धांत : समर्पित कार्य में संतुलन ढूंढना, किस तरह परमेश्वर के दिए हुए अधिकार से जीवन में सम्पूर्ण आज़ादी और सामर्थी जीवन प्राप्त होता है ।

घ. प्रेम का सामर्थ और उसके प्रबल मूल्य: परमेश्वर के प्रेम को जानने और उसमें बढ़ने की शिक्षा देना; उसके स्वभाव में मेहराब बनाने की विशेषता का अनुग्रह, जो मनुष्य के विभेढकारी बातों को मूल्य देता है, जो मनुष्य के सीमाओं को स्मरण करता है और मनुष्य के गलतियों की ओर करूणा और धीरज दिखाता है ।

६. आत्मिक विरोध

क. शैतान और राक्षसी स्वभाव के स्रोत : दुष्टात्मा से सामना करने के लिए लोगों को मदद करना, दृढ़गढ़ों को तोड़ना और दुष्ट को भगाना-बिना अनुमान लगाए, अंधविश्वास, डर या गडबड़ी के ।

ख. स्वर्गदूतों और अनदेखे की सच्चाई ः मसीह के विषय में सिखाना जैसे "हर देखी और अनदेखी चीजों का सृष्टिकर्ता," कार्यशील विश्वास, और समझ की ओर जो दोनों ही क्षेत्र को सच्चाई के साथ ग्रहण करता है ।

ग. आत्मिक युद्ध की ओर बुलाहट और उसके उपाय : पवित्र आत्मा में सामर्थ मध्यस्थी की प्रार्थना के लिए तैयार करना : समझदारी की ओर मार्गदर्शन करना, सदियों से चलती आ रही "स्वर्गस्थानों में युद्ध" में पवित्र शास्त्र के अनुसार जुटे रहना ।

घ. अनन्त जीवन और अनन्त हानि के मुददे : परमेश्वर के प्रेम और हितकारी उद्देश्य की ओर बुलाहट और आवश्यकताओं को देखना अनन्तकाल तक उसकी आज्ञा या तिस्कार के उलझाव के साथ ।

७. प्रतिदिन के मुददे

क. वर्तमान के भविष्यवाणी – संबंधी चलन : आशा के भविष्यवाणी के वचन की शिक्षा जो उसके मसीह के द्वारा परमेश्वर के उद्देश्य के अन्तिम विजय का प्रकाशन देता हो - उसके वापसी, सहस्राब्दी शासन और अनन्त वादा ।

ख. एक विश्वासी की पेशा और सेवकाई: परमेश्वर तैयार किया हुआ रूपरेखा और सृजे जाने के उद्देश्य के बुलाहट को, हर एक को दिया हुआ भेंट के सम्मान की शिक्षा देना ताकि परमेश्वर का जीवन हर मनुष्य के जोखिम उठाने में और अनुभव में हो ।

ग. एक गवाह का अर्थ और जिम्मेदारी : यीशु मसीह के आज्ञा को सुनना जो कहता है अपने पड़ोसी से प्रेम करो, सुसमाचार घोषित करना, ज्योति की तरह चमकना और सच्चाई को बर्दाशत करना; दुनिया के हर क्षेत्र को "नमकीन" बना देना : जिसमें व्यवसाय, राजनीति, माध्यम, शिक्षा और कला शामिल है ।

घ. परमेश्वर का अलौकिक उद्देश्य जो इस्राएल और यहूदी के लिए है : परमेश्वर के "चुने जन" को अंगीकार करना जिसको उसने पहले से ही अपने छुटकारे की योजना और घनिष्ठ संबंध के लिए उनके पूरे इतिहास के लिए चुना है; पवित्र शास्त्रीय संवेदनशीलता उनके प्राचीन, वर्तमान और भविष्य से संबंध रखते हुए ।

८. व्यक्ति और परिवार

क. अलौकिक बुलाहट पवित्र शास्त्रीय मानवजाति के लिए : दोनों भी लिंग को पिता का अद्वितीय बुलाहट के विषय में शिक्षा देना और दोनों लिंगों के विश्वासियों के लिए मार्ग बताना कि कैसे ऐसे एक समाज में जीना जहाँ सच्ची मानवता को गलत या उपेक्षित हाता है ।

ख. परमेश्वर से नियुक्त व्यवस्था जो मानवजाति के यौन-संबंधी स्वभाव के लिए है : हर किसी को शिष्य बनाना, मानवजाति के यौनभाव के लिए जो भेंट परमेश्वर ने रखा है उसका मान रखते हुए; बढ़ोत्री की जिम्मेदारी की शिक्षा देते हुए जो उम्रभर पूर्ति या विनाशक असंयमी स्वभाव के लिए है ।

प्रचारकों को क्या नहीं करना चाहिए

पिछले दशकों में हमारे देश में कई सेवकाईयाँ उठ खड़ी हुई हैं । जब हम इस वास्तविकता पर खुश होते हैं कि सेवकाइयों के ज़रिए कई लोग सुसमाचार प्राप्त कर रहे हैं परन्तु गडबड़ी और छिछलापन के विषय की ओर ध्यान जरूरी है । इस अध्ययन में मैं प्रचारकों से वही बांट रहा हूँ जो प्रभु ने मुझे सिखाया है । मैं लिखने की जोखिम इसलिए नहीं उठा रहा क्योंकि में सिद्ध हूँ परन्तु मैं चाहता हूँ कि हमारे सेवकाई के द्वारा प्रभु के नाम को महिमा मिले ।

१. **दूसरे सेवकाईयों का नकल न करे हम सभी को एक ही**
बगीचे में कार्य करने बुलाया गया है परन्तु परमेश्वर के कार्य सेवकाई के लिए भिन्न-भिन्न हैं । कुछ ऑख बनने के लिए बुलाए गए हैं – जैसे नबी । "यदि सारी देह आंख ही होती तो हम कैसे सुनते ? (१ कुरि १२:१७) कुछ को हाथ बनना है – जैसे मदद करने वाले । टांग या पैर पथप्रर्दशक मिशनरियों का काम कर सकता है, इत्यादि । "......... जो कोई जिस दशा में बुलाया गया हो, वह उसी दशा में परमेश्वर के साथ रहे ।" (१ कुरि ७:२४) दौड़ में अपनी दिशा को न बदलें । चूँकि एक प्रत्येक सेवकाई बहुत मशहूर, सफल या लोगों के लिए आकर्षक है, इसमें दुनिया के व्यवसायी के जैसा कूदे नहीं । आपके सामने एक दौड़ है जो निश्चित किया गया है और वह दौड़ आपको "सहनशीलता" – धीरज, ढ़ृढ़ निश्चय, स्थिरता, घोर परिश्रम, समाधान, साहस और ढ़ृढ़ता से दौड़ना है । (इब्रानी १२:१) दूसरे सेवकाईयों से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं परन्तु जो मौलिकता परमेश्वर ने हमें दिया है उसे नहीं खोना चाहिए । जब हम ऐसा कोई काम करते हैं जो परमेश्वर की ओर से नहीं है तब हमें थोड़ा बहुत आशीष मिल सकता है परन्तु परमेश्वर के उत्तम बातों से हम वंचित रहेंगे । परमेश्वर अनेकरूपता से प्रसन्न होता है । उसके पसन्द को सराहना हो तो उसके सृष्टि को देखो । "क्या सभी प्रेरित हैं ? क्या सभी शिक्षक हैं ? क्या सभी आश्चर्यकर्म का काम करते हैं ?" (१ कुरि १२:२९) जवाब है "नहीं ।" हमें आवाज होना चाहिए, न कि प्रतिध्वनि ।

२. **अपने सीना को पार न करें**
मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से यह कहता हूँ जितना तुम्हें स्वयं को समझना चाहिए, उस से बढ़कर कोई भी व्यक्ति अपने-आप को ऊँचा न समझे । जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार बांट दिया है वैसा ही सुबुद्धि के साथ वह अपने को समझे । तोडे के दृष्टांत में, हम देखते हैं कि सभी को एक समान तोड़े नहीं बांटे गए थे । एक को पॉच, दूसरे को दो और तीसरे को सिर्फ एक तोड़ा दिया गया था । परमेश्वर की मांग हमको जिस प्रकार दिया गया है उसके अनुसार है । बड़े –बड़े परियोजना बनाना अच्छा है परन्तु पवित्र शास्त्र हमें चेतावनी देता है कि "पहले बैठकर उसकी कीमत निकालें, भले ही हमारे पास उसे पूरा करने के लिए काफी है । मैंने कई विश्वास के सुसमाचार प्रचारकों को दूरदर्शन में देखा है यथातथ्य रूप से लोगों से भीख मांगते हुए देखा है उधार पुर्जो के लिए या बैंक उधारी लेने की वजह से । यह परमेश्वर को महिमा नहीं देता है । एक प्रसारण देने वाले अभिकरण ने कुछ सुसमाचार प्रचारकों के विषय में कहा है कि वे विश्व राणी की कीमत के लिए बार-बार पूछे जाने के बावजूद भी जवाब नहीं देते हैं । एक व्यक्ति को सभी कार्य करने की कोशिश नहीं करना चाहिए ताकि वह कई समस्याओं से घिर जाए । फैलाव परमेश्वर की ओर से आशीष है, परन्तु हम हमेशा उसके पहले दौड़ सकते हैं । कभी-कभी बडे-बडे लक्ष्यों की हम घोषणा करते हैं जो प्रभु की ओर से मार्गदर्शित नहीं हैं, फिर हम हमारे चेहरे को लोगों के सामने बचाने के लिए स्वर्ग और पृथ्वी को पलट कर शारीरिक तरीकों से कार्य करने पर उतर आते हैं । सहानुभूति का निवेदन करने से बचें जो वास्तव में परमेश्वर को नीचे गिराता है ।

३. **दूसरे सेवकाईयों के साथ स्पर्धा नहीं करें**
हमें दूसरे सेवर्कायों के उन्नति से प्ररणा लेना चाहिए, परन्तु यह बोध होना चाहिए कि हम सब एक ही प्रभु की सेवा कर रहे हैं और एक ही लक्ष्य के लिए कार्य कर रहे हैं जो हमें अस्वस्थ स्पर्धा से दूर रखेगा । यीशु मसीह का उदाहरण देखें यूहन्ना ४ : १-३ में, "फरीसियों ने सुना कि यीशु यूहन्ना से अधिक लोगों को चेले बनाते और बपतिस्मा देते हैं । यद्यपि यीशु स्वयं नहीं, बल्कि उनके चेले बपतिस्मा देते थे । जब प्रभु ने यह बात सुनी तब वह यहूदा प्रदेश को छोडकर गलील प्रदेश को फिर चले गए । "क्या शिक्षा है ! एक सम्मेलन में मिशन के अगुवे ने पूछा कि कितने कार्यकर्ता हैं आपके साथ ?

उस समय हमने अपना संख्या बताया । दूसरे मिशन का अगुवा मेरे साथ था और बिना किसी के पूछे उसने कहा, "हमारे पास पचास हैं !" यह चूहों की स्पर्धा को रोक देना चाहिए । हमें संख्या और सफलता की डींग मारने में अपने आप को मरना चाहिए ।" बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर घमण्ड न करे, न वीर अपनी वीरता पर, न धनी अपने धन पर घमण्ड करे; ……… ताकि जैसा धर्मशास्त्र में लिखा है, वैसा ही हो, "जो घमण्ड करे, वह प्रभु में घमण्ड करे ।" हमें दूसरों के सेवकाई यों के विजय पर खुश होना चाहिए ।

"आनंद करनेवालों के साथ आनंद करो ।" (रोमियों १२:१५) परमेश्वर एक बडे मिशन को उपमार्ग कर एक छोटे मिशन को आशीष दे सकता है, जैसे शाऊल और दाऊद के बात में । परन्तु आपको कभी भी इर्ष्या के लिए जगह नहीं देना चाहिए । इर्ष्या के लिए जगह नहीं देना चाहिए । इर्ष्या हड्डी की बीमारी है ! (नीतिवचन १४:३0)

४. **नियमों का उल्लंधन न करें**

मसीही जीवन और सेवकाई के खेल-कूद, सेना, एक इमरत वगैराह से तुलना किया है । यह सब निश्चित नियम और आधिकारिक आदेश से शासित है । पौलुस प्रेरित ने सही कहा है, "फिर अखाडे में लड़नेवाला योद्धा यदि विधि के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं पाता ।" (२ तीमु २:५) आज की सेवकाई दुनिया का धुन है कि अन्त आधार को न्यायोचित करता है । कुछ भी करो, जब तक वह लोगों को आशीषित करता है और प्रचारक का फायदा होता है । यह प्रभु और उसके प्रेरितों की शिक्षा के विरूद्ध है । पवित्र शास्त्रीय सिद्धांतों का उल्लंधन किसी भी परिस्थिति में नहीं होना चाहिए । परमेश्वर ऐसे काम का आदर नहीं कर सकता । हम अपनी इमरत को खड़ा करने में जिस प्रकार की चीजों का इस्तेमाल किए हैं उन चीजों का परीक्षण होगा उस दिन – आग के द्वारा प्रभु का वचन भी (१ कुरि. ३:१२-१३; यिर्म.२३:२९) प्रचारकों का नया किस्म आ गया है जो अपने तौर – तरीकों के बपतिस्मे का नुस्खा इस प्रकार से देते हैं, "परमेश्वर ने मुझे बताया लोग सोचने या समझने से डरते हैं ।

यह स्पष्टता से स्थापित करना चाहिए कि परमेश्वर अपने लिखित वचन को इन्कार नहीं करता है । आर्थिक बढ़ोत्री और पदोन्नति के तरीकों को विकसित होने से सावधान रहें कि यह पवित्र शास्त्र के सिद्धांत पर आधारित है या नहीं । दूसरी दुख की बात है सेवकाई में कार्यकर्ताओं की दल-बदली जो बहुत साधारण हो गया है । परन्तु दूसरी सेवकाईयों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दल-बदलुओं को प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए । अगुवों को ऊँचे नैतिक आधार को बनाए रखना चाहिए । १0 वी आज्ञा कहती है, तू किसी के घर की लालच न करना; और न तो किसी की स्त्री का लालच करना; और न तो किसी के दास-दासी अथवा बैल-गदहे का, न किसी की किसी वस्तु का लालच करना । (निर्गमन २0:१७) इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो; (मत्ती ७:१२)

५ **बढ़ा – चढ़ाकर नहीं बोलें**

"तुम्हारी बात 'हॉ की 'हॉ हो; और नहीं की 'नहीं' हो; क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता है वह 'बुराई' से होता है । कई ऐसी सेवकाईयॉ हैं जिनके पत्रिका में उनके खतरों का विवरण होता है । हमें संवाद देने में इमानदार होना चाहिए । हम किस प्रभाव को पढ़ने वालों पर डालते हैं इसका परमेश्वर न्याय करेगा । अगर ६00 लोग हमारे शिविर में भाग ले रहे हों तो हम परमेश्वर की महिमा ऐसा ऐसा कहते हुए नहीं करते "करीबन १000 लोग भाग लिए ! क्योंकि यह झूठ है, और ऐसा करने से हम शैतान का आदर करते हैं, जो झूठा है और झूठ का पिता है । प्रभु की प्रार्थना में पहला निवेदन है, "तेरा नाम पवित्र माना जाए ।" कितनी बार हमने प्रभु के नाम को अपवित्र किया है बढ़ा – चढ़ाकर या घुमाकर विवरण देने के द्वारा । हमारे लोगों के लिए कुछ भी थोड़े हज़ार से ज्यादा एक सौ हज़ार बन जाता है । प्रचारकों को यह कारनामा नहीं करना चाहिए । यदि एक आधुनिक पत्रिका ५ रोटी और २ मछलियों का विवरण देती है तो वह उसमें दो और अंक ५000 में जोड़ देगी और चित्रित कौशल इसे सच्चा साबित करेगी । कुछ अभिकरणों द्वारा भेजा गया चित्र पूरा गलत, झूठा प्रतिनिधित्व दिखाता है । ऐसी गलत प्रभाव डालने के लिए हम पश्चाताप करें ।

६. **लोगों को खुश रखने को लक्ष्य न**

बनाऍं पौलुस की गवाही एक बड़ी चुनौती है । "यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो मसीह का सेवक न होता ।" (गल.१:१0) हम लोगों को आशीष देने के लिए बुलाए गए हैं, न कि उनको खुश करने । यीशु मसीह को "ठेस

लगने का पत्थर और ठोकर खाने की चट्टान कहा गया है ।" (रोमि ९:३३) पौलुस "क्रुस की ठोकर" के विषय में कहता है (गल.५:११) कई बार हम सुसमाचार में पढ़ते हैं कि लोग यीशु के विषय में ठोकर खाते हैं (मत्ती.१३ :५७; मरकुस ६:३) एक बार यीशु मसीह के शिष्य आए और उनसे कहने लगे, "क्या आप जानते हैं कि फरीसियों को आपकी यह बात बुरी लगी है ? यीशु ने उत्तर दिया, हर पौधा जो मेरे स्वार्गिक पिता ने नहीं लगाया उखाड़ा जाएगा । उनको जाने दो । वे अन्धे मार्गदर्शक हैं ।" (मत्ती १५:१२-१४) सच्चाई को नहीं छुपाएँ ताकि कुछ अमीर और प्रभावी लोग आपके साथ रहें । प्रचार करते हुए बहुत ही कोमल न हों ताकि आपको विश्‍व भर में स्वीकृति मिले । यूहन्ना बपतिस्मादाता ने फरीसियों और सददूकियों का स्वागत करते हुए यह नहीं कहा कि, "कितने सौभाग्य कि बात है कि आप भी हमारे अभियान में शामिल हैं ।" उसने उनको "सर्प के संतान" कहा और उनको पश्‍चाताप करने को कहा । प्रेरित पौलुस ने गलतियों से पूछा, "तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा शत्रु बन गया हूँ ?"

७. **अपने आप को प्रस्तुत न करें**

यूहन्ना बपतिस्मादाता ने कहा, "उसे बढ़ना चाहिए, परन्तु मुझे घटना चाहिए ।" (यूहन्ना ३:३0) और यीशु मसीह ने यूहन्ना के विषय में कहा, "मैं तुमसे सच कहता हूँ, जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमे से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ । पर जो स्वर्ग राज्य में छोटे से छोटा है, वह यूहन्ना से बड़ा है ।" कुछ पत्रिकाओं में एक व्यक्ति को कई बार प्रस्तुत करना उबाऊ बात है । सुसमाचार प्रचारक को सिनेमा सितारों के समान अलग-अलग मुद्राओं में चित्रित किया जाता है । एक पत्रिका भेजने के बाद या एक संदेश सुनने के बाद हमें यह चिल्ला उठना चाहिए, "हमारा रक्षक कितना महान है ।" न कि ऐसा "वह कितना सामर्थी प्रचारक है ।" ऐसें उपाधि से दूर रहें जैसे "आदरणीय" जैसी बातें । "उसका नाम पवित्र और भय योग्य है" (भजन संहिता १११:९) आखिरी दशक के महान प्रेरित स्वयं को भाई बुलाते थे । यीशु मसीह ने कहा, "यीशु मसीह ने कहा, "परन्तु तुम गुरू न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरू है; और तुम सब भाई हो ।" (मत्ती २३:८) उपाधियों बहुत सस्ते हो गए हैं ।

८. **आर्थिक समस्याओं में संदेहास्पद न बनें**

पौलुस कुरिन्थियों को लिखता है, "हम इस बात में सावधान रहते हैं कि इस उदारता के काम के विषय में जिसकी सेवा हम करते हैं, कोई हम पर दोष न लगाने पाए ।" (२ कुरि. ८:२0-२१) कुछ कलीसियाओं में जो बड़े – बडे रकम प्राप्त होते हैं लोगों से दशवांस के रूप में, उनका लेखा नहीं किया जाता । जिस पैसे का लेखा नहीं होता वह काला धन होता है । मिशन और कलीसियाओं को अपना लेखा-परक्षिण और सरकार को समर्पित रहना चाहिए । आर्थिक लेखा देना जरूरी है क्योंकि हम लोगों का पैसा परिचालन कर रहे हैं । एक सेवक को अपनी पत्नी या किसी रिश्तेदार को खजांची नहीं बनाना चाहिए । हमें उपर कहे गए बातों के अनुसार जीना चाहिए । प्रेरित अपने व्यवसाय के तौर-तरीकों को जिसमें पैसा शामिल या वह "सात पुरूषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण थे" उनका चुनाव किया (प्रेरितों के काम ६:३) बिली ग्रहम गवाही देता है, "हमारे संस्था में व्यवस्था के संचालक हर आर्थिक तौर-तरीके को सभालते हैं और ऐसे कार्यो को हम नियंत्रित नहीं करते । दूसरे सुसमाचार प्रचारक जो हमारे कार्यकर्त्ता हैं उनके साथ मुझे एक वेतन मिलता है । मैंने कभी कोई व्यक्तिगत भेंट स्वीकार नहीं किया है । हमारे आर्थिक बातों का लेखा-परीक्षण किया जाता है......... और जो विवरण है उसे हमारे समर्थन देनेवालों को प्राण्य किया जाता है" कई अगुवों के लिए परमेश्‍वर को धन्यवाद देते हैं जो इस बात की गवाही देते हैं । अपने-आप को जॉचे ।

९. **स्वार्थी न बनें**

"ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें ।" (१ कुरि. १२:२५) "प्रत्येक मनुष्य अपने ही हित की नहीं वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे ।" (फिलि २:४) दूसरे सेवकाईयों को मदद करने का मौका देखें । अपने स्रोत और बुद्धि को उनके साथ बॉटे यह नहीं मायने रखता है चावल के खेत में कौन हल चला रहा है परन्तु उसमें से चावल बनना यह मायने रखता है । और आपके सेवकाई में, अपने परिवार और बच्चों को सामने न लाएँ । दूसरों को मौका दें और उन्हें बढाने का श्रम करें । जैसे हम बडे होते जाते हैं, "जवान लोग उठकर हमारे सामने मुकावला करो ।" (२ शमू २:१४) उन्हें हमारे मृत्यु तक रूकना नहीं चाहिए । उन्हें अगुवाई करना चाहिए और हम हमेशा उनको पीछे से सुझाव दे सकते हैं ।

१०. **बुरी खबर न फैलाएँ**

“जो अपने पड़ोसी को तुच्छ जानता है, वह निर्बुद्धि है, परन्तु समझदार पुरूष चुपचाप रहता है । जो लुतराई करता फिरता वह भेद प्रकट करता है, परन्तु विश्वास योग्य मनुष्य बाते को छिपा रखता है ।” जब आप किसी प्रचारक के विषय में बुरा सुनते हैं तो एक ही काम जो आप कर सकते हैं, वो है उसके लिए प्रार्थना, उसके पुनर्स्थापन के लिए और उसे व्यक्तिगत रूप से उपदेश दे सकते हैं । सिद्धांत-संबंधी गलतियों, अपधर्म और बातें जो बातें शास्त्र से जुड़ी न हों उनका खुलासा करके लोगों को सावधान कर देना चाहिए । मनुष्य के चरित्र की हत्या के लिए मंच का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए । जब शाऊल की मृत्यु हुई तो दाऊद ने कहा, “गत में यह न बताओ, और न अश्कलोन की सड़कों नें प्रचार करना; न हो कि पलिश्ती स्त्रियां आनन्दित हों, न हो कि खतनारहित लोगों की बेटियां गर्व करने लगें ।” (२ शमूएल १:२०) पवित्र शास्त्र की दो बातें इसमें शामिल है : “हम कई बातों में ड़गमगा जाते हैं ।” “हम सब उपदेश करते समय बहुत बार चूक जाते हैं । सब से श्रेष्ठ बात यह है कि एक-दूसरे से अधिक से अधिक प्रेम करो, क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढ़ांप देता है । (याकूब ३:२,१ पतरस ४:८)

प्रचारक के लिए महत्वपूर्ण बातें

प्रचारकों को क्या नहीं करना चाहिए, इस अध्ययन के बाद, मैं सेवकों के लिए दस सकारात्मक सलाह देना चाहता हूँ । मैं अपने प्रचारकों से यह निवेदन करना चाहता हूँ कि वे निश्चित जानें कि मैं स्वयं स्तंभाधार पर खड़ा नहीं, बल्कि उनके साथ पहचाना जाता हूँ जो कुछ भी मैं लिखता हूँ ।

१. **प्रार्थना की आत्मा को बनाएँ रखें**

सफल सेवकाई के लिए तीन रहस्य हैं – पहला प्रार्थना, दुसरा प्रार्थना, तीसरा प्रार्थना । क्योंकि, न बल से, और न शक्ति से, परन्तु भरे आत्मा के द्वारा होगा, ताकि परमेश्वर का सच्चा कार्य पूरा हो ।

(जक ४:६) यह सम्भव है कि आत्मा से शुरू करें और शरीर में खत्म (गल ३:२१); परमेश्वर उसके जन को अभिषेक करता है न कि उसके तरीके या यंत्रसमूह । यीशु मसीह ने तीन साल और छह महीने में बहुत कुछ पूरा किया परन्तु उसने दूसरे किसी काम को प्रार्थना पर हावी होने नहीं दिया । हममें से किसी को भी उससे ज्यादा व्यस्त नहीं होना चाहिए । एक सेवक के पास ताज़गी रहती है जो प्रार्थना के सुगंध की सांस लेता रहता है । अगर हम अपने सेवकाई के बोझ को प्रार्थना में नहीं रखेंगे तो हम पिस जाएगें उस बोझ से और ध्वस्त हो जाएंगे । प्रार्थना का मतलब है कि हम अपने भारी बोझों को यीशु मसीह के हल्के जुआ के साथ अदल-बदल करना । (मत्ती १२:२८-३०) कार्य हमेशा बड़ा होता है और कटनी भरपूर परन्तु यीशु मसीह की आज्ञा है, पहले “प्रार्थना करो” फिर “जाओ” (मत्ती ९:३८;२८:१९)

*प्रचारक व्यक्तिगत प्रार्थना की उपेक्षा करके, लोगों को उनके लिए प्रार्थना करने को कहकर खतरनाक स्थिति में हैं । एक सेवक जो प्रार्थना नहीं कर रहा होता है वह ठहरा रहता है । यात्रा करना जरूरी है परन्तु घोर परिश्रम करना उससे भी ज्यादा । * पौलुस ने कहा, “मैं घुटने टिकाता हूँ” और उसने लोगों से अनुरोध किया, “मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो । (इफि ३:१४; रोमियों १५:३०)

२. **अनुशासित अध्ययन जीवन व्यतीत करें**

प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस जो जवान सेवक था, उसे फटकार कर कहा, “धर्मशास्त्र का पाठ करो” (१ तीमु ४:१३) “क्योंकि याजक को चाहिए कि वह अपने ओठो से ज्ञान की रक्षा करे, और लोग उसके मुँह से व्यवस्था पूछें, क्योंकि वह सेनाओं के प्रभु का दूत है ।” (मलाकी २:७) प्रातःकाल का समय गहरे अध्ययन और मनन के लिए उत्तम है । पवित्र शास्त्र के ऊपरी ज्ञान से सम्भव है कि आप संदेश प्रचार कर सकें । अध्ययन में मदद के जरिए हमें वचन की गहराई में जाना चाहिए । “मैं किसी अध्ययन में मदद या भाष्य का अभिदेश नहीं लेता परन्तु प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर से सीखता हूँ ।” – इस तरह मैंने एक से ज्यादा व्यक्तियों को बताते हुए सुना है । भले ही यह आत्मिम दिखता हो, यह शास्त्र के अनुसार नहीं है । पौलुस ने तीमुथियुस को निर्देशन दिया कि वह जो कुछ : पौलुस से सीखा हो वह विश्वासयोग्य लोगों को प्रशिक्षित करे और यह प्र्िया चलती रहे । (सच्चा शिष्यत्व) (२ तीमु २:२) और परमेश्वर ने “शिक्षकों” को कलीसिया के वढ़ोत्री और आत्म-सुधार के लिए स्थापित किया है । (इफि ४:११) शिक्षकों को सुना या पढ़ा जा सकता है । प्राचीन

काल या दूर देश के शिक्षकों का लाभ उठाना हो तो उनके लेख को पढ़े । इसलिए भाष्य और अध्ययन शास्त्र को खुलकर इस्तेमाल करें । कोई भी आपको उनसे आगे बढ़ने में रोक-थाम नहीं करेगा । जितना सम्भव हो उतना पढ़ें । लोगों को आपसे कुछ न कुछ सीखना चाहिए जब भी वे आपकी सुनते हैं । यात्रा करने के समय में पढ़ने से लाभ उठाया जा सकता है ।

३. अपने परिवार के साथ पर्याप्त समय बिताएं

हर सेवक को प्राथमिकता के □म को बनाए रखना चाहिए – पहले परमेश्वर, दूसरा परिवार, और तीसरा सेवकाई । इस □म को उल्टा करने का मतलब है गंभीर नतीजा । कोई प्रचारक ऐसा न कहे कि, "मैं अपने परिवार को सेवकाई के लिए त्याग दे रहा हूँ ।" परमेश्वर का वचन क्या कहता है देखें : "यदि कोई विशप अपने घर ही का प्रबन्ध करना न जानता हो तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे कर सकेगा ?" (१ तीमु ३:५) पत्नी को घर पर प्रचारक की नहीं परन्तु एक पति की जरूरत है, और बच्चों को शिक्षक की नहीं परन्तु एक पिता की जरूरत है । अपने परिवार के साथ विशेष समय बिताएँ और घरेलू मामले जैसे – बाजार, बागवानी, घर-सफाई, इत्यादि । पतरस अपने सास का विशेष ख्याल रखता था । यीशु मसीह को मालूम था कि कितना कर देना है । शिष्यों को इत्र कितने का है यह मालूम था । अपने परिवार के साथ घर के अन्दर के और बाहर के खेल खेलें । नित्य अवकाश पर जाएँ । हमेशा कलीसिया या सेवकाई के विषय में न कहें, परन्तु अपने बच्चों के साथ हास्य का आंनन्द लें । मिल-जुलकर खाना खाएँ । और खाना खाते समय विश्रमित बातें कहें । अगर सम्भव हो तो अपने पत्नी को लेकर सेवकाई के लिए निकलें और जितना हो सके लम्बे अवधि तक अलग न रहें । अपनी पत्नी की कमजोरियों के विषय में दूसरी स्त्रियों के साथ न बॉटे । आप मुसीबत में पड जाएँगे । जब आप चिट्ठी लिखते हैं, तो पति का नाम या दोनों के नाम लिखें । आपकी पत्नी को स्त्रियों को व्यक्तिगत चिटिठयों भेजने की अनुमति दें । अगर आपकी पत्नी ऐसा नहीं कर सकती तो उन्हें स्त्री सेवकों के तरफ मार्गदर्शन करें । "विवेक तुझे सुरक्षित रखेगा; और समझ तेरी रक्षक होगी ।" (नीतिवचन २:११)

४. अपने शरीर को तन्दरूस्त रखें

शरीर परमेश्वर का मन्दिर है और उसे ढंग से बनाए रखना चाहिए (१ कुरि ३:१६) संतुलित आहार खाएँ और अत्याधिक खाना न खाएँ । समय पर खाना और अच्छा विश्राम आपको कार्य करने के लिए ज्यादा काल देगा । जल्द सोए और जल्द उठें । नित्य व्यायाम करें । चलें फिरें और साइकिल चलाएँ । मोटर गाडियों की आदत न डालें । प्रचारकों को ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि साईकिल चलाना उनके गौरव के नीचे है । यह गलत प्रतिष्ठा है । तीस साल तक यीशु मसीह व्यस्त बढ़ई या और दूसरे साढ़े तीन साल तक वह काफी चला-फिरा और पर्वतों पर चढ़ा । उसने अपना □स स्वयं उठाया । उसने अपना शरीर चुस्त और तन्दरूरत रखा । आराम के लिए परमेश्वर की स्तुति हो परन्तु उनके आदी न हो जाएँ । साधारण जीना-ऊँचा सोचना – यह हमारा संकेत – शब्द होना चाहिए । इस प्रकार से ही हम पौलुस के साथ गवाही दे सकते है, "मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूँ कि में सब मनुष्यों के लहू से निर्दोष हूँ । मैं परमेश्वर के सम्पूर्ण अभिप्राय को तुम्हें पूरी तरह बताने से कभी नहीं झिझका ।" (प्रेरितों के काम २०:२६-२७) अगर हम स्वास्थयकर खाना लोगों को नहीं देते हैं जो हमें नित्य सुनते हैं, हम उन्हें भेज देते है हल्के रंग के साथ और यह मसीह के देह की बढ़ोत्री में हानि पहुँचा सकता है । सुसमाचार प्रचारकों और बेदारी की सेवकाइयों को स्वयं को स्थानापन्न न समझते हुए पूरक समझना चाहिए स्थानीय कलीसियाओं के लिए । कलीसिया एक इमारत और नीचे की सब-कलीसियाएँ एक ढॉचा है ।

८. लोगों के लिए प्रेम वास्तविक होना चाहिए

परमेश्वर ने संसार से प्रेम किया कि एकलौता पुत्र दे दिया (यूहन्ना ३:१६) मसीह कलीसिया से इतना प्रेम करता था कि उसने स्वयं को दे दिया । (इफि ५:२५) कई चंगाई की सेवकाइयॉ जो करूणा से शुरू होती है वे समय के साथ व्यापार का रूप ले लेते हैं । पवित्र आत्मा के आश्चर्यजनक भेंट का प्रगढीकरण बिना किसी वास्तविक प्रेम के सम्भव है । यह विस्मयकारी सम्भावना को १ कुरि १३:१-३ में बयान किया गया है "यदि मैं तुम्हें सब से उत्तम मार्ग बताता हूँ : "यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएं बोलूं और प्रेम न करूं तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झनझनाती हुई झांझ हूँ । यदि मैं भविष्यवाणी कर सकूँ और सब भेदों और सब प्रकार के ज्ञान की समझ लूं, और मुझे यहाँ तक पूरा विश्वास हो जाए कि मैं पहाड़ों को हटा दुं, परन्तु प्रेम न करूं तो मैं कुछ भी नहीं । यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति गरीबों को दान कर दूं, या अपनी देह जलाने के लिए दे दूं, और प्रेम न करूं तो मैं कुछ भी लाभ नहीं ।" (१ कुरि १३:१-३) अगर हम अमीर लोगों

को प्रेम और आदर देते हैं गरीबों से ज्यादा, तो यह धन का प्रेम है। याकूब की पत्री ३:१-४ पढ़े और सच्चाई को समझें। कुछ प्रचारक आशीष पाए होते हैं प्रार्थना में आँसू बहाते हुए (प्रेरितों के काम २0:३१) और यदि आपको यह अनुग्रह न हो, तो कृपया दूसरे सुननेवालों और पढनेवालों को यह न बताएँ कि मैं आपके समस्याओं के लिए "आसूँओं के साथ" प्रार्थना करूंगा। आज हम लोगों को धोखा दे सकते हैं, परन्तु बुलाहट का समय करीब है। लोगों के लिए परमेश्वर के प्रेम पर मनन करने से हमें उन्हें प्रेम करने में आसानी होगी। हमें कलवरी पर निरंतर मनन करना चाहिए ताकि हम टूटे हृदयों और दैविक प्रेम से भर दिए जाएँ।

९. **समयानुसार अपने जीवन और सेवकाई को जांचे**

हर महीने में एक दिन और एक साल में दो या तीन बार स्वयं का परीक्षण और मूल्यांकन बहुत स्वास्थकर और व्यावहारिक रूप से मदद करता है। भजन लिखनेवाले ने गाया है, "पवित्र होने के लिए समय लें।" यीशु मसीह ने कहा, अलग आ जाओ।" दाऊद ने प्रार्थना किया, "हे परमेश्वर, मुझे जॉच कर जान ले। मुझे परखकर मेरी चिन्ताओं को जान ले। और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर।" (भजन संहिता १३९:२३-२४) खोज, पूछ-ताछ, निरीक्षण। सफलता और आशीष हमें आसानी से परमेश्वर के उद्देश्यों और योजनाओं से अंधा बना सकता है। एक झटके की तबाही हमें समयानुसार मरम्मत करने की लापरवाही को महसूस करने में जागृत कराएगा। प्रचारकों के लिए खुला और स्पष्टवादी संगति और विश्वसनीय अगुवों की जरूरत है। एकांतप्रिय न बनें। जब परमेश्वर हमें दोषी ठहराता है किसी कार्य या किसी मार्ग में जिसमें हम चल रहे होते हैं; तो हमें इतनी हिम्मत होनी चाहिए कि लोगों को बताएं कि में गलत हूँ। यह इन्सानियत है। परमेश्वर हमारी मदद करेगा। प्रेरित यूहन्ना यीशु मसीह के सबसे करीब रहता था और उसे प्रकाशन मिलते थे। परन्तु उसने दो बार स्वर्गदूत की आराधना की और दोनों बार उसे सुधारा गया। उसने इस मौलिक गलती को नहीं छुपाया बल्कि विश्वासपूर्वक अभिलिखित किया। (प्रकाशित १९:१0;२२:८-९)

१0. **अनन्तकाल को नजर में रखते हुए हर कार्य करें।**

यीशु मसीह ने ्रुस को सहा, लज्जा की चिन्ता न करते हुए "अपने सम्मुख रखे हुए आनन्द के लिए" (इब्रानि १२:२) पौलुस ने कहा, ... परन्तु यह एक काम मैं करता हूँ : जो बातें पीछे रह गई हैं, उनको भूलकर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। मैं निशाने की ओर दौड़ा चला जा रहा हूं ताकि वह इनाम पाऊं जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।" (फिल ३:१३-१४) उसने सेवकों को सावधान किया, "हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रददा रखता है। तो हर एक का काम प्रकट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा। वह आग के साथ प्रकट होगा। वह आग हर एक का काम परखेगी कि कैसा है।" (१ कुरि ३:१0,१३) यहाँ सफलता की प्रशंसा की जाएगी, परन्तु विश्वासयोग्यता वहाँ मिलेगा।

चरवाहों को सोच-विचार करने के लिए प्रश्न और मूल्यांकन प्रभावशाली सेवकाई के लिए

१. क्या प्रार्थना जीवन में मैं नियमित हूँ ? (प्रेरितों के काम ३:१; लूका ५:१५-१६)

२. क्या मैं पवित्र शास्त्र के मनन में व्यवस्थित हूँ ? (एज्रा ७:१०; लूका ४:१६-१७)

३. क्या मैं विचार के शुद्धता में गंभीर है? (नीति ४:२३; मत्ती १५:१८-१९)

४. क्या मैं अपने शब्दों के लिए सावधान हूँ ? (याकूब ३:१-२; इफि. ५:४)

५. क्या मैं खाने की आदतों में स्वयं नियंत्रित हूँ ? (नीति २:१-२; १ कुरि.६:१२-१३)

६. क्या मैं साधारण जीवनशैली से तृप्त हूँ ? (१ तीमु ६:६-८; फिलि ४:११-१३)

७. क्या मैं अपनी पत्नी की ओर विश्वासयोग्य हूँ ? (१ तीमु ३:२; रोमि २:२)

८. क्या मैं पिता बनकर कर्त्तव्यशील हूँ ? (१ तीमु ३:४-५; व्यवस्था ६:६-७)

९. क्या मैं नागरिक नियमों का आज्ञाकारी हूँ ? (मत्ती १७:२५-२७; रोमि १३:१-७)

१०. क्या मैं आर्थिक मामलों में पारदर्शी हूँ ? (२ कुरि ९:२०-२२; पेंरितों २०:३३-३४)

११. क्या मैं अपने भेड के प्रति स्नेही हूँ ? (२ कुरि १२:१५; १ कुरि १३:१-२)

१२. क्या मैं लोगों को प्रशिक्षण देने में समर्पित हूँ ? (लूका ११:१-२; इफि ४:११-१३)

१३. क्या मैं गरीबों के प्रति करूणामय हूँ ? (गल २:९-१०; पेंरितों के काम २०:३५)

१४. क्या मैं निष्पक्ष हूँ ? (१ कुरि ५:२१; २ इति १९: ५-९)

१५. क्या मैं जातिवाद, प्रांतीयता, भतीजावाद की ओर मर गया हूँ ? (कुलु ३:९-११; प'का. ७:९-१०)

१६. क्या मैं सुसमाचार प्रचार और मिशन कार्य के लिए उत्साहपूर्ण हूँ ?
(यूहन्ना १०:१६; मत्ती ९:२६-२८)

१७. क्या मैं संवाद देने में सच्चा हूँ ? (रोमि १५:१८; मरकुस ६:५)

१८. क्या मैं दूसरों के प्रति उत्तरदायी हूँ ? (२ कुरि ८:१८-१९,२२-२४; पेंरितों के कार्य १५:२२)

१९. क्या मैं सुधार के लिए खुला हूँ ? (गल २:११-१४; सभोपदेशक ४:१३)

२०. जब मेरे विरोध में बात किया जाता है तो क्या मैं शांत रहता हूँ ?
(१ पतरस २:२१-२३; मत्ती ५:११-१२)

२१. क्या मैं दूसरों के नेकनामी का आदर करता हूँ ? (नीतिवचन १७:९; २ शमु १:१९-२०)

२२. क्या मैं अपने सह-कर्मियों के साथ मित्रता करता हूँ ?
(यूहन्ना १५:१५; पेंरितों के काम २०:१७,३६-३८)

२३. क्या मैं दूसरी सेवकाईयों के साथ सहयोगात्मक हूँ ? (लूका ५:५-७; गल २:७-९)

२४. क्या मैं कठिन परिश्रम करता हूँ ? (१ कुरि.१५:१०,५८; यूहन्ना ९:४-५)

२५. क्या मैं स्वयं-इन्कार का अभ्यास करता हूँ ? (लूका ९:२३; यूहन्ना ३:३०)

चरवाहे का लोगों से भेंट करना-एक व्यावाहारिक मार्गदर्शक

क्या लोगों से भेंट करना जरूरी है ?

कलीसिया का रखवाला चरवाहा होता है जिसे अपने भेड़ को जानने की जरूरत है, और लोगों को उसके द्वारा परमेश्वर को ज्यादा जानने की जरूरत है रविवार की सुबह कलीसिया के दरवाजे पर खड़े संक्षिप्त रूप से हाथ मिलाना, इर्द—गिर्द सदस्यों से घिरे हुए, इतना मौका नहीं मिलता कि किसी समस्या को सुन सके । जिस चरवाहे को हम सिर्फ रविवार को देखते हैं, और हफ्ते में दूसरे छह दिनों में जब वह अदृश्य हो जाता है, जल्द हो लोगों की जरूरतों में साथ नहीं रहता, वह ध्यान न देने की कीर्ति प्राप्त करता है । लोगों के लिए उसका ध्यान दो तरीकों से दिख पड़ता है, आराधना का नेतृत्व करते हुए, परमेश्वर का वचन हर रविवार बाँटते हुए और दूसरे समय उनसे नित्य भेंट करते हुए ।

लोगों से भेंट करने का उद्देश्य

परमेश्वर की आराधना करते हुए कलीसिया संगति का भी ख्याल रखता है । चरवाहे का लोगों से भेंट करना मसीही लोगों के घरों में कलीसिया की संगति को बढ़ाता है । सिर्फ लोगों से भेंट करने से ही चरवाहा लोगों की वास्तविक परिस्थितियों जिनमें वह रह रहे हैं, उनकी समस्याएँ, खुशियाँ और गुणों को जान सकते हैं । लोगों से भेंट करने से आशीषों के पुनरावलोकन का मौका मिलता है, उपदेश स्वीकार करते हैं और जब उचित हो, मार्गदर्शन देना । चूँकि कई लोगों को खातिरदारी के बोध का मतलब है कि वे नाश्ते का प्रबंध करें, ताकि ऐसा करने से उन्हें बातचीत करने में आसानी हो । जैसा भी हो, भेंट के समय खाने-पीने की जरूरत नहीं है, न ही ऐसा कोई खातिरदारी उस घर के लिए बोझ बनना चाहिए ।

पैसे जमा करने के लिए चरवाहा लोगों से भेंट नहीं करता है, इसलिए भेंट, पैसे की प्राप्ति की अपेक्षा करते हुए नहीं किया जाए । फिर भी, कुछ लोग जो कलीसिया नहीं आ सके, स्वास्थय या किसी और वजह से, वे अपने भेंट को चरवाहे के जरिए कलीसिया के कोष में डालना चाहेंगे । यह चरवाहे के लिए बुद्धिमानी की बात होगी कि उसके पास खाली लिफाफे भेंट की सूची-किताब में हो, ताकि ऐसे भेंट उसमें डाल दिए जाएँ और देनेवाले का नाम बाहर लिखा हुआ हो । इससे चरवाहे को याद रहेगा कि पैसा कहाँ से आया है और उसे व्यक्तिगत पैसों के साथ मिलाने की गड़बड़ी से दूर रखेगा । इस बात का ध्यान रखें कि उचित और हस्ताक्षर किया हुआ रसीद दिया जाए ताकि इन भेंटों या दान की स्वीकृति कलीसिया का खजांची या लेखाकार से हो ।

जितना सम्भव हो, हर भेंट पवित्र शास्त्र को पढ़ने, प्रार्थना करने में, अगर क्षमता हो ले पूरा परिवार एक साथ जाएँ । हमेशा शास्त्र के थोड़े आयत निकाल कर रखें ताकि जिन लोगों से आप भेंट करें, उनके ऊपर ये वचन लागू हों ।

भेंट करने की पद्धति

जबतक एक चरवाहे के पास भेंट के लिए कोई निश्चित पद्धति न हो, तो ऐसे घर में आकृष्ट होना आसान है जहाँ पर उसे आराम मिले और कठिन सदस्यों से भेंट करने में दूर हटे – जिन्हें अगर ज्यादा भेंट किया जाए तो ज्यादा सहयोग मिलेगा । हमेशा ऐसे भी लोग होंगे जिनकी परिस्थितियाँ यह दर्शाती है कि उनके घर में भेंट करना मुख्य है । जो घर से नहीं निकल सकते बीमारी, जिम्मेदारी, या कोई अमान्य वजह से, तो उन्हें खास ध्यान की जरूरत है । जो संकट के समय या दुविधा में हो उसे कुछ समय तक सलाह और नित्य भेंट करने की जरूरत है । आपात-स्थिति या संकटपूर्ण बीमारी का मतलब हो सकता है कि चरवाहे को कुछ परिवारों के लिए ज्यादा समय देने की जरूरत है । नए लोग जो आराधना करने आते हैं उन्हें जितना सम्भव हो, जल्द ही मिलें ताकि वे यह जानें कि आप उनमें दिलचस्पी रखते हैं । आपके भेंट में अविश्वासी मित्र भी शामिल होना चाहिए । यह समुदाय के बीछा पुल बनाता है और पड़ोसियों में दिलचस्पी न रखने की और मसीही समुदाय को द्वपिीय दिखने से रोकती है । विशेष जरूरतों की अनुमति देते हुए, मैं एक भेंट पद्धति का सुझाव निम्नलिखित रूप से देना चाहता हूँ । हफ्ते की सूची बनाते हुए, दो संध्या को अगर संभव हो तो वही दो संध्या हर हफ्ते की, अलग रखी जाए एक सामान्य भेंट के लिए । दूसरे दो अवधियों को “मुख्य भेंट करने का समय” हटाकर रखें यह याद रखते हुए कि जो बीमार या अस्पताल या घर में हैं, उन्हें दिन में भेंट करना उचित रहेगा । कभी-कभी पूरा सुबह एक विशेष भेंट के लिए दिया जा सकता है परन्तु सामान्य रूप से, यह बेहतर है कि पहले घंटों में जब एक व्यक्ति स□ और सचेत

रहे परमेश्वर के वचन के अध्ययन और प्रार्थना के लिए । २ धंटे के अध्ययन, प्रार्थना और तैयारी में बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है और मध्य-सुबह और खाने के बीच के समय मे अस्पताल और दूसरे घरों में भेंट कर सकते हैं ।

घर में रहनेवाले और बींमारों को मन में रखते हुए, मैंने पाया कि शनिवार की दोपहर को लोगों से भेंट करने के साथ-साथ उन्हें सेवकाई के क्रम की प्रतिलिपि भी बताया जाए । इसमें आराधना के समय लिए जाने वाले गाने, पवित्र शास्त्र पाठन कभी उसमें संदेश का भी संक्षिप्त रूपरेखा होगा और भविष्य में कलीसिया में होनेवाले कार्यक्रमों की सूचना । इस तरह, बीमार व्यक्ति यह जानेगा कि कलीसिया में क्या हो रहा है और कलीसिया के कार्यो में अपने आप को शामिल पाएगा । अगर एक व्यक्ति के पास रेडियों या टेप –रिकॉर्डर है, तो सम्भव है कि जो पिछले हफ्ते का कार्यक्रम का रिकॉर्डिंग हो उसे उस व्यक्ति को दे दिया जाए । रेडियो के कार्यक्रमों में मसीही कार्यक्रम के समय और तरंगदैर्ध्य का ज्ञान भी सहयोगी रहेगा कई बार जब अस्पताल में एक बीमार व्यक्ति से भेंट करता हूँ और उनके साथ प्रार्थना करता हूँ, तो पडोस के खाट का मरीज भी प्रार्थना के लिए पूछता है । कभी भी ऐसे आमंत्रण का इन्कार नहीं करना चाहिए । जब अस्पताल में मरीजों के साथ प्रार्थना करते हैं, उसमें अविश्वासी मरीज़ और वहॉं के कर्मचारी शामिल हैं । कुछ लोग वहॉं सुन रहे होंगे जो प्रार्थना को सराहेंगे जो आत्मविश्वास के साथ "यीशु मसीह के द्वारा" या "यीशु मसीह के नाम" में होगा । मौका उठाएं कि मरीजों को "प्रचार" न करते हुए उन्हें यीशु मसीह के प्रेम को दर्शाएँ जिसके नाम से आप प्रार्थना करेंगे और उस मरीज को कलीसिया में आमंत्रित करें जब वह ठीक हो जाए, ताकि आप सुसमाचार प्रचार विस्तृत रूप से कर सकें ।

नित्य भेंट के दो संध्या के विषय में निर्णय लेने के बाद आपको एक पद्धति की जरूरत जहॉं आप निश्चित जान सकते हैं कि हर सदस्य को बराबर ध्यान मिल रहा है या नहीं । मुझे एक पद्धति जो बहुत सहयोगी लगा वह है वह है भेंट का किताब रखना । यह एक साधारण किताब है, जिसमें कई सारे पन्ने जोड़े जा सकते है । इन पन्नों का विभाजन किया जा सकता है अलग-अलग गलियों और फ्लॅटों में । ऐसा एक किताब लिखने में कुछ समय जाएगा परन्तु मेरे अनुभव में यह योग्य साबित होगा । हर परिवार के बाजू में थोड़ा जगह छोडें ताकि उसमें बच्चों के नाम भी लिखे जा सकें और जन्म तिथि भी उनके नाम के बाजू में, यह और उनके फोन नं. (दोनों घर और कार्यालय के), और साथ में ई-मेल का पता भी ।

बच्चों को उनके नाम से बुलाए जाना पसंद है, इसलिए भेंट की किताब में एक नज़र घुमाना, एक घर में जाने से पहले, जो चरवाहे को सिर्फ नाम ही नहीं बल्कि उनके जन्म तिथि का भी याद दिलाएगा । दूसरी बात मैंने बहुत उपयोगी पाया कि कलीसिया के सदस्यों का नाम नीले रंग के स्याही में लिखकर दूसरे जो कलीसिया में जुडने के हैं या अन्य दोस्त जो पड़ोस में हैं उनके लिए अलग रंग का इस्तेमाल करें । उपर दिए गए रूपरेखित पद्धति को अपनाने से, अलग-अलग क्षेत्रों में लोगों से भेंट करने से आप कलीसिया को पिछले रविवार को सूचित कर सकते हैं कि आने वाले हफ्ते में आप किधर लोगों से भेंट करने जा रहे हैं । न्यौता देनेवाले आपके भेंट की योजना को निराश न होने दें । आप उन्हें पहले की परियुक्तियों को बता सकते हैं । सिर्फ सही आपात-स्थिति में ही अपने भेंट को रद् करें और ऐसा करने से पहले उन्हें बता दें जो आपकी अपेक्षा कर रहें हैं । आपके खेद के बारे में उनसे बताएँ और उन्हें जितना जल्दी हो सके मिलें ।

लोगों से भेंट कब नहीं करना चाहिए

कई बार ऐसा होता है जब चरवाहों का स्वागत नहीं होता है । उदाहरण के तौर पर, अगर घर में मेहमान या विशेष पारिवारिक उत्सव मनाया जाता हो । गृहकार्य चालू रहेगा, परीक्षा समय में या परिवार रात का खाना खा रहे हों । ऐसे मामलों में थोड़े संवेदनशील हो जाएँ । दूसरे भेंट के समय जाएँ और यह बताकर जाएँ कि दूसरे दिन आप फिर आएंगे । परिस्थिति में ऐसी संवेदनशीलता यह दर्शाती है कि आप परिवार और भेंट के समय का ख्याल रखते हैं ।

फिर से, जब बच्चे घर पर अकेले होते हैं, या एक जवान अकेले होती है तो सबसे उत्तम यह होता है कि किसी भी नम्र आमंत्रण का इन्कार करें । इसके बजाय, यह पूछें कि माता-पिता वापस कब आएंगे । जब अकेली काम करनेवाली महिला जिसको चरवाहे की भेंट की जरूरत हो, या शादीशुदा औरत जो घर पर हो जिसका पति बाहर हो तो ऐसे मौकों पर उचित व्यक्ति को साथ ले जाएँ और आपके कलीसिया के सदस्यों को पड़ोसियों की सम्भावित गपशप से बचाएँ । (यह एक ऐसी परिस्थिति है जहॉं चरवाहे को उसकी पत्नी के साथ भेंट करना उत्तर हो) ।

लोगों को ज्ञात दिलाना

कुछ परेशानियॉं जो उपर दी गई हैं उसे रोका जा सकता है अगर लोग पहले से ही आपके भेंट के बारे में अवगत हों । एक विज्ञापित कार्यक्रम कलीसिया के बोर्ड या कलीसिया की सूचनाओं के साथ यह अनुमति देगा कि जो कोई उस क्षेत्र में भेंट किए जाने चाहिए उन्हें असुविधा न हों । तीन या चार घर आप संध्या के समय में ले सकते हैं और लोग यह सराहैंगे कि आप उनसे एक विशेष संध्या मिलनेवाले हैं । यह आपके निराशापन जो दरवाजा खटखटाने से होती है जब लोग घर पर नहीं होते और आपके समय का भी बचत होता है । फिर भी, ऐसे समय होंगे जब घर पर फोन करेंगे और वहॉं किसी को भी न पाएँगे । दरवाजे पर लिखित नोट या कार्ड लगाकर रखें ताकि वे जाने कि आपने उन्हें भेंट किया था । थोडे कार्ड छाप कर रखना योग्य होगा । लोगों यह जानकर सराहेंगे कि उन्हें भूला नहीं गया है, भले ही वे आपको स्वीकार करने घर पर न रहे हों ।

लोगों से भेंट करने में बाधाएँ

मैं एक ऐसा सहकर्मी को जानता हूँ जो किसी के घर भेंट करने जाता हो तो और अगर टी वी चालू दिखे तो एक कुर्सी लेकर टी.वी के सामने बैठ जाता था, ताकि किसी को कुछ दिख न सके । मेरे लिए ऐसा करना टी.वी चालू रखने के बराबर क्रूर है और भेंट करने का तरीका भी नहीं है । यह हो सकता है कि अगर कार्यक्रम थोड़े ही देर में खत्म हो रहा हो तो चरवाहे को परिवार के साथ बैठकर टी.वी का कार्यक्रम खत्म होने तक देखने की अनुमति दे देना चाहिए । दूसरे समय, थोडी देर के लिए टी.वी बन्द करने का नम्र निवेदन स्वीकार किया जाता है । परन्तु अगर जानबूझ कर टी.वी का कार्यक्रम नहीं बन्द करते हैं तो उत्तम यही है कि बिना कुछ कहे, अभिवादन देकर दूसरे घर पर जाएँ जहॉं लोग भाग्यशाली है क्योंकि वे टी.वी कार्यक्रम नहीं देख रहे होते हैं ।

कुत्तों के विषय में । अगर आप कुत्तों से डरते हों तो यह उन्हें बोध हो जाता है और वे आपका अच्छा स्वागत नहीं करते । कई कुत्ते हानि नहीं पहुंचाते हैं, परन्तु अगर कोई कुत्ता आपको अनचाहा अजनबी के रूप में देखता है, तो यह उत्तम है कि वहीं खड़े रहें जबतक परिवार का कोई सदस्य आकर आपको छुडा न ले । पलटकर दौड़े नहीं, क्योंकि जानवर यह खेल समझकर आपको काट सकता है ।

बच्चों के विषय में ! इन्हें बाधा नहीं कहा जा सकता है परन्तु जब बच्चे उपस्थित रहते हैं तो कुछ बातें हैं जिससे आपको सतर्क रहना है । यह खुशी की बात है कि जब परिवार से भेंट करने हों तो बच्चे भी साथ हों, परन्तु यह जानें कि जो कुछ भी कहा जाता है बच्चे उसे सुनते हैं और कुछ-कुछ शब्दों को दोहराकर गलतफहमी पैदा कर सकते हैं विश्वस्त समझकर बतलाई जाने वाली बातें दूसरे समय के लिए रखें, या सोच समझकर बात करें । बच्चों को कही गई बात उन्हें चोट पहॅंचा सकती है । एक बार जब मुझे परिवार से परिचय दिया जा रहा था, घर की महिला ने मुझसे कहा, “यह मेरा बेटा है, देखो कितना काला है !” ऐसे बिना सोचे दिया गया टिप्पणी बच्चों को चोट पहुँचा सकती है और चरवाहे को उन्हें जल्दी प्रत्युत्तर देते हुए कहना चाहिए, “मुझे लगता है काले लोग अच्छे होते हैं,” या परमेश्वर का धन्यवाद, कि वह हमसे प्रेम करता है, भले ही हम किसी भी रंग के क्यों न हों,” या पवित्र शास्त्र से बॉंटे और कहें, “श्रेष्ठगीत में सुलैमान काले व्यक्ति को खुबसूरत बताता है ।”

यह बच्चों के अन्दर चोट के डक को हटा देगा और वह अपने विषय में साकारात्मक रूप से सोचेगा । यीशु मसीह जो हर किसी के प्रेम करते हैं उसका प्रतिनिधित्व करते हुए आपकी उदारता हमेशा याद रखा जाएगा ।

ऐसे लोगों से भेंट करना जो बीमार हैं “पिता क्या मैं मरनेवाली हूँ ? “एक जवान लड़की ने अस्पताल की शैय्या पर पड़े मुझसे प्रश्न किया । उस समय मैं आशा रखता था वह ठीक हो जाएगी और मैं उसे आश्वासन देने लगा । परन्तु जैसे ही मैंने पवित्र शास्त्र से कुछ आयतें पढ़ी मैंने उसे याद दिलाया कि यीशु मसीह ने अपने लोगों के साथ रहने का वादा किया है, भले दिन हो या रात, हम होश में हो या सोए हुए हों, हम हमेशा अपने प्रभु के साथ हैं । बाद में मैं पवित्र आत्मा को धन्यवाद दे रहा था जिसने मुझे ऐसा कहने में मार्ग दर्शन किया था, क्योंकि वह जवान लड़की भेंट करने के कुछ चंद घंटों के बाद चल बसी । बीमार से भेंट करते समय यह प्रवृत्ति रहती है की मृत्यु की सम्भावना का इन्कार करें । यह बिल्कुल जरूरी है कि हम सकारात्मक रूप से हर बात को देखें, प्रार्थना करें, और हम कोशिश करते हैं कि मरीज को विश्वास और आशा में उत्साहित करें । (१ पतरस २ : २४) परन्तु मृत्यु की संभावना का इन्कार है यह उपदेश देना कि विश्वास इस बात में सहयोग नहीं देता । हम अच्छे स्वस्थ को मूल्यांकित करते हैं और दवा तथा दुआ के साथ ठीक होने का भरोसा करते हैं परन्तु हमारा बचानेवाला फिर से जी उठा और इस तरह उसने मृत्यु पर जय पाया । कभी-कभी आखिर के क्षणों में हम लोगों के साथ होना चाहिए और सेवक को उनके साथ निगरानी रखकर उन्हें मसीह को सौंप देना चाहिए जो मृत्यु के इस पार और उस पार रहता है ।

इस संबंध में हम देखते हैं कि अलग-अलग पृष्ठभूमि के लोगों के अलग-अलग मानसिकता होती है दाखरस और रोटी स्वीकारने में जब वे बीमार होते हैं । कुछ लोग इसे आखिरी के विधि के बराबर समझते हैं जब वे बीमार होते हैं । दूसरे इसे परमेश्वर के मेज की संगति में बढ़ोत्री पाते हैं, कलीसिया की सदस्यता में स्वयं को शामिल पाते हैं और दाखरस और रोटी से मसीह की अदृश्य उपस्थिति और सामर्थ को पाते हैं । यह आखिर का दृश्य वही दृश्य है जो मेरे पास है, और जो बीमार है उन्हें उत्साहित करूँगा कि परमेश्वर की मेज पर नित्य सहभागिता करें, परन्तु हमें सावधान रहना है ऐसे लोगों के लिए जो इसे कुछ भी नहीं परन्तु सुख-सुविधा समझते हैं ।

यह बीमारों को मदद तथा उत्साहित करती है यह जानने में कि कलीसिया उनके लिए प्रार्थना करती है । अगर सम्भव हो तो, एक सूचना दें रविवार के आराधना समय में और प्रार्थना के लिए निवेदन करें । पवित्र शास्त्र में अंकित आयत उपयोगी साबित होंगे जो बीमार या अस्पताल में हों । मरीज के साथ साकारात्मक विश्वास में हमेशा प्रार्थना करें जो पवित्र शास्त्र के पवित्र वचन के वायदों के उपर आधारित हैं । ज्यादा देर न रूके । सामान्य रूप से दस से बीस मिनट का भेंट ज्यादा होता है कि आपके कलीसिया का सदस्य थक जाए । अगर एक अनजान मरीज प्रार्थना के लिए निवेदन देता है, हमेशा इसके लिए समय बनाएँ ।

शोकाकित लोगों से भेंट करना

कभी-कभी चरवाहे को ही किसी प्रिय की मृत्यु के विषय में खबर देना पडता है । भले ही यह आसान नहीं है, मसीही भाई से बेहतर इसे कौन कर सकता है ? हम न तो अपने सामर्थ या विवेक से, परन्तु पवित्र आत्मा द्वारा बोलने का मार्गदर्शन पाते हैं । चरवाहे को परिस्थिति की गंभीरता या सदमा जो रिश्तेदार के मृत्यु के वजह से पहुँची है उसे भूलना नहीं चाहिए । पहले लोगों को उनके प्रियजन की मृत्यु की वास्तविकता पर भरोसा नहीं होता है । उनके मनों में यह बात समझने को समय लगता है । फिर, रोना और विलाप करने की अपेक्षा की जाती है । ऐसे समय में चरवाहे की उपस्थिति सांत्वना देती है, भले ही वह ज्यादा कुछ न कहे । निश्चय ही, शांति बेहतर होता है न कि अविचारपूर्ण कहे गए शब्द जैसे, "अब कुछ नहीं किया जा सकता है" या "घबराओ मत, सब ठीक हो जाएगा" जिससे चोट खाए व्यक्ति को और भी चुभ सकता है । शांत बैठकर दूसरों को बात करने की अनुमति देना उस मौके के लिए सबसे अच्छी सेविकाई होगी । उसके बाद पवित्र शास्त्र से बॉट सकते हैं ताकि शोकांकित को सांत्वना मिले ।

व्यावहारिक रूप से ख्याल रखा जाना चाहिए । ऐसे शाकाकित समय में, लोग सीधा सोचने की सामर्थ को खो सकते हैं । कुछ लोग दफनाने की क्रिया के बाद ही खाना खाते हैं, परन्तु उदारता से खाने-पीने के लिए समझाया जाना चाहिए ताकि बेहोशी की हालत को टाला जा सके । परिवार के सदस्य या घनिष्ठ मित्र को ढूँढकर जो दफनाने की तैयारी कर सके – यह जरूरी है । ऐसे समय में चरवाहा सही व्यक्ति होता है जिसे मालूम रहता है कि किसे संपर्क किया जाना चाहिए । रिश्तेदारों को संदेश भेजना और जवान बच्चों का ख्याल रखना जरूरी है । यह सब कार्य के लिए चरवाहे की अपेक्षा नहीं करना चाहिए, परन्तु परिवार को मार्गदर्शन करना है जब वे ऐसे समय में इतने विस्तृत रूप से सोच नहीं सकते । दफनाने की क्रिया से पहले परिवार वालों में से किसी एक को याद दिलाना कि वे दरवाजे और खिडकियॉ बंद कर दें ताकि किसी बेईमान को फायदा उठाने का मौका न मिले । कभी-कभी चरवाहा परिवार को पत्रकार के घुसपैंठी और जिज्ञासु पड़ोसियों के विरूद्ध ढ़ाल बन सकता है । यह हमेशा बुद्धिमानी की बात होती है कि संवाददाताओं और देखनेवालों से परिवार वालों को सुरक्षित रखें । दफनाने की क्रिया और रिश्तेदारों के घर से जाने के बाद ही कभी और अकेलेपन का बोध होता है । ऐसे समय में चरवाहा, उसकी पत्नी और कलीसिया के सदस्य परिवार वालों के साथ संपर्क बनाए रख सकते हैं । ऐसी सेवकाई, कलीसिया स्थापित करने में मदद करती है, और एक-दूसरे के साथ संगति करने से सदस्य करीब आते हैं ।

एक अगुवे का अधिकार : उसके क्षेत्र और सीमाएँ

एक अटूट नींव

यहेजकेल ३७	यहेजकेल की मृतक हडिडयों पर नबूवत करना पड़ा
इफि २ : २०	प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं के नींव पर निर्मित
इफि ३ : ३-५	परमेश्वर अपने परामर्श-समिति को उसके प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रकट करता है ।
२ इतिहास २०:२०	उसके भविष्यवक्ताओं पर विश्वास करो और आप उन्नति प्राप्त करेंगे ।
मत्ती १० : ४१	एक भविष्यद्वक्ता को जो स्वीकार करता है, उसके मजदूरी को पाता है ।
१ पतरस २ : १	प्रेरित और भविष्यद्वक्ताओं ने नींव डाला सन्त जीते-जागते पत्थर हैं ।

भविष्यद्वक्ताओं का कार्य

यिर्म १:१०	सुन, मैं ने आज के दिन तुझे जातियों और राज्यों पर अधिकारी ठहराया है; उन्हें गिराने और ढा देने के लिए, नाश करने और काट डालने के लिए, या उन्हें बनाने और रोपने के लिए ।
आमोस ३:७	इसी प्रकार से प्रभु परमेश्वर अपने दास भविष्यद्वक्ताओं पर अपना मर्म बिना प्रकट किए कुछ भी करेगा ।

कार्य जो आजकल परमेश्वर कर रहा है ।

१. तूफान जो वर्तमान कलीसिया के ढ़ॉचे को बर्बाद करता है ।
२. संस्थाओं और अगुवों की सेवकाई का टूटना
३. स्वयं के इमानदारी और धीरज की परीक्षा ।
४. सच्चे विश्वासियों में एकता की नई जागृति ।
५. नबूवत के सामर्थ और प्रवलता में कलीसिया का पुनर्स्थापन ।
६. नबूवत और प्रेरितों की सेवकाई में पुनर्स्थापन ।
७. सताव, धार्मिक और खासतौर पर पीछे हटे हुए विश्वासी ।
८. परमेश्वर के पुनर्स्थापित देह पर उसकी महिमा का नया प्रकाशन ।
९. फिर प्रभु उसकी दुल्हन को शादी के भोज में ले जाने आएगा ।

परमेश्वर तूफान आने पर भी बातचीत करता है । (एलियाह, १ राजा १९:११-१३)

१. ऑधी – जो पत्थर और पहाड को नष्ट कर देता है ।
२. भूकम्प – जो हर नींव जो हिलता है उसे हिला देता है ।
३. आग – जो बचा है उसे भस्म कर देता है ।
४. ठण्डी हवा – जिसमें परमेश्वर बातचीत करता है ।

यशायाह ५ : ८-२४	छ : बातें-"हाय ! उनपर जो इत्यादि ।
यशायाह ६ : ५	७ बातें –"हाय ! मुझपर मै ....इत्यादि । उसके बाद उसके ओंठ आग से शुद्ध किया गया और वह परमेश्वर की अधिकार में बातें करने लगा (आग का बपतिस्मा) परमेश्वर की योजना थी कि इन्सान पृथ्वी पर राज करे, परन्तु जब उसने पाप किया, वह परमेश्वर के प्रति अनाज्ञाकारी हो गया, परन्तु शैतान की और आज्ञाकारी होकर उसके अधिकार के नीचे आ गया । फिर, परमेश्वर अपने मौलिक योजना को हमारे जीवन में पुनर्स्थापित करेगा । (उत्पत्ति १:२६)

पवित्र शास्त्रीय सिद्धांत जहॉ परमेश्वर हमें और हमारे उपर अधिकार देता है ः

परमेश्वर का राज्य	परिवार	कलीसिया	समाज
परमेश्वर	परमेश्वर	परमेश्वर	परमेश्वर
आदमी	यीशु मसीह	यीशु मसीह	राजा
परिवार	आदमी	चरवाहा	राज्यसभा
कलीसिया	पत्नी	बड़ा	पुलिस
समाज	बच्चे	डकिन	शिक्षक
राष्ट्र	जानवर	सदस्य	नियोजक इत्यादि

जब तक हम जीवित रहते हैं हमें हर प्रकार के अधिकारियों के साथ व्यवहार करना पड़ता है। जिन अधिकारियों को परमेश्वर हमारे उपर नियुक्त करता है हमें उनकी आज्ञा मानना है। (रोमि १३:१-७) यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम समर्पित रहें वर्ना हम परमेश्वर की आज्ञा को नहीं मानते।

नोट करें : मनुष्यत्व के अधिकार में आज्ञाकारिता का मतलब यह नहीं है कि सम्पूर्ण समर्पण या उसकी ओर समर्पित, क्योंकि यह उपर कहे गए अनुसार नहीं है, यह गिर सकता है। ऐसा सर्मपण सिर्फ परमेश्वर के लिए आरक्षित किया जा सकता है। हमें उसकी आज्ञा माननी चाहिए, न कि आराधना। (२ शमु २३:१६-१७; १ पत २ : १३; रोमि १३ : १०)

रोमि ५ : १९, "जैसे एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेगे।"

कैसे ? - पाप परमेश्वर के लिए किस तरह काम करते हैं ? (२ शमु ६ : ६)
- हमें परमेश्वर का काम परमेश्वर के समय में करना चाहिए (मूसा)
- हमें परमेश्वर का काम उसके तरीके से करना चाहिए (अब्राहम, दाऊद)
- हमें परमेश्वर का काम परमेश्वर के जगह पर करना चाहिए (पौलुस)

क्या ? - परमेश्वर के लिए यह महत्वपूर्ण नही कि हम क्या कर रहे हैं परन्तु क्यों और कैसे हम वह कार्य करते हैं। जो भी कार्य करें प्रभु के लिए करें ! (कुलु ३ : १७)

विश्वास ? विश्वास प्रेम के द्वारा कार्य करता है (गुणों का दृष्टांत)
- मैं परमेश्वर के लिए कार्य करता हूँ क्योंकि मैं उससे प्रेम करता हूँ
- मैं परमेश्वर से प्रेम करता हूँ क्योंकि मैं उसपर विश्वास करता हूँ।
- मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ क्योंकि वह मुझसे प्रेम करता है।

<u>अध्याय के लिए प्रश्न</u>

१. मुझे क्या करना चाहिए, परमेश्वर के कार्य ? (यूहन्ना ६ : २९)
२. आप परमेश्वर के लिए या उसके साथ कार्य करते हैं ? (२ कुरि ६: १)
३. परमेश्वर के लिए कार्य करने के पीछे क्या बात है (१ तीमु १ : ५)
४. क्या आप परमेश्वर के प्रेम के लिए या परमेश्वर के प्रेम के द्वारा कार्य करते हैं ? (२ कुरि ५: १४)
५. क्या आप अपने नित्य के कार्य में परमेश्वर के घनिष्ठ सहयोगी बनाते हैं (इफि ६ : ५-८)
६. क्या आप परमेश्वर का कार्य परमेश्वर के समय और उसके तरीके से करते हैं ?
७. आप अपने कार्य से किसको महिमा देते हैं ? परमेश्वर या स्वयं को ? (१ कुरि १० : ३१)

आत्मिक अगुवों के चरित्र

चरित्र	उदाहरण	पवित्र शास्त्र आयत
सराहने योग्य	निकुदेमुस	यूहन्ना १९ : ३८-४२
ध्यान देकर सुननेवाला	बरनबास	प्रेरितों के काम ९ : २७;११ : २२
अधिकारपूर्ण	शमूएल	१ शमू ७ : ३,१५
सुलभ	लुदिया	प्रेरितों के काम १६ : १५
साहसी	कालेब	गिनती १३ : ३0
करिश्मा (व्यक्तिगत)	शाऊल	१ शमू १0 : २३-२५
समर्पित	मरियम	लूका १ : ३८; २ इति ३१:२१
सूचना देनेवाला	अपुल्लोस	प्रेरितों के काम १८ : २४-२६
विश्वास व्यक्ति	एलिय्याह	१ राजा १८
साहसी	स्तिफनुस	प्रेरितों का काम ७; यहोशु १ : ९
स्थिरता	दानिय्येल	दानि ६ : १0
धारणा	एस्तेर	एस्तेर ४ : १६
सृजनात्मक	दाऊद	भजन संहिता २२, २३, २४, १0३
निर्णायकता	यहोशू	यहोशू २४ : १५
प्रतिनिधि बनाना	मूसा	निर्गमन १८ : १७-२३
दृढ़ निश्चय	पौलुस	फिलि ३ : १३-१४
समर्पित	योशिय्याह	कुलु ३ : २३
तत्पर	नूह	उत्पति ७ : ५
समझ	दबोरा	न्यायि ४ : ९
प्रोत्साहन देना	फिलेमोन	फिले १ : ४-७
सहनशील	अय्यूब	अय्यूब ४२
उत्साहपूर्ण	पतरस	यूहन्ना १८ : १0
उदाहरण	कालेब	नीतिवचन ४ : ११
(पीछे हो लेने के लिए)		
विश्वास	अब्राहम	इब्रानियों ११ : ६,८
विश्वासयोग्य	यिर्मयाह	यिर्मयाह ३३ : १-३; २ तीमु २:२
स्थिर	मूसा	१ कुरि १५ : ५८; निर्ग ३२ : २६
लचीला	रूत	रूत १ : १६
अनुगामी	मरियम मगदलीनी	मत्ती २७ : ५६,६१
फलवन्त	लूका, मरकुस	२ तीमु ४ : ११
कृपालु	तीमुथियुस	इफि ४ : ३२
शुद्ध हृदय से	अक्विला व प्रिसका	१ कुरि १६ : १९
दयालु	अबीगैल	१ शमु २५
ईश्वरीय	आरोन	भजन संहिता १२ : १
पवित्र	एलिय्याह	२ राजा २ : ११
नम्र	दानिय्येल	दानि २ : २७-३0; याकूब ४:६
अगुवाई करना	योआव	१ इति ११ : ६
प्रेरणा देनेवाला	गिदान	न्यायि ७ : १७-१८
ईमानदारी	दानिय्येल	दानिय्येल १ : ८
प्रवल	शिमशोन	न्यायि ७ : २६-३0

आन्नंदित	दाऊद	भजन संहिता २१ : १-६
बुद्धिमान	एज़्रा	एज़्रा ७ : १0
प्रेमी (कृपालु)	यूहन्ना	१ यूहन्ना ४ : ७
वफादार	योनातान	१ शमु २0
उत्साहक	पौलुस	फिलि ३ : १७
आज्ञाकारी	जक्कई	लूका १९; यूहन्ना १४ : २१
आशावादी	पौलुस	१ कुरि १५:५७; २ कुरि ४: १६
संघटित करना	युसुफ	उत्पत्ति ४१ : ३८-४१
आदर्श स्थापक	उरियाह	२ शमु ११ : ११
धीरज	होशे	होशे ३, इब्रानी १0:३६
निरंतर परिश्रम करना	एलीशा	२ राजा २ : ९
भरोसेमंद	याकूब	याकूब १ : १-८; फिलि २ : २0-२१
आदरणीय	बोअज	रूत ४ : ११-१२
आत्मसंयम	युसुफ	उत्पत्ति ३९ : ८
संवेदनशील	युसुफ (मरियम)	मरकुस ८ : १-३; मत्ती १
सेवक	मार्था	यूहन्ना १२:२; २ कुरि ४ : ५
सच्चा	मरियम (मार्था)	यूहन्ना १२ : ३-७
एकाग्रचित	तीमुथियुस	२ तीमु ४ : ६-८
पवित्र आत्मा से भरा	फिलिप्पुस	प्रेरितों के काम ८
शिक्षा के योग्य	यहोशु	निर्गमन २४ : १३
स्पष्टवादी	पतरस	मत्ती २६ : ६९-७५
सच्चा	अंधा व्यक्ति	यूहन्ना ९ : २५
समझौता नहीं करना	मोर्दकै	एस्तेर ४
समझदार	लूका	कुलि ४ : १४
दार्शनिक	यशायाह	यशायाह ५३; नीति २९:१
बुद्धिमान	सुलैमान	नीति ३ : ५-६

<u>परमेश्वर के लोग जो उदाहरण के लायक हैं</u> उनके विशेष वरदान और क्षमताएँ

डी.एल मूडी	-	महान सुसमाचार प्रचारक
चार्ल्स फिनी	-	आग और चमत्कार
जॉर्ज व्हाईटकील्ड़	-	जीवित रहते तक सुसमाचार प्रचार
जॉन नॉक्स	-	जब प्रार्थना करते थे तो राजा हिल जाते है
हडसन नॉक्स	-	चीन में मिशनरी अग्रगामी
जॉर्ज मुलर	-	अनाथाश्रम चलाने के लिए विश्वास
ब्रेनर्ड	-	मसीह के लिए भारतीय
स्मिथ विगल्सवर्थ	-	२३ लोगों को मृत्यु से जिलाया
विल्यंम कॅरी	-	मुझे भारत दो नही तो मर जाऊँगा
ओस्वाल्ड़ जे. स्मिथ	-	ऐसे लोगों तक पहुँचना जहॉ पहुँचा न जा सके
नॉरमन ग्रब	-	दरार में खड़ा होना; मध्यस्थी प्रार्थना-योद्धा
कॉरीटन बूम	-	परमेश्वर के लिए भिखारी, असीकित क्षमा
भाई एण्ड्रू	-	परमेश्वर के लिए कोई बन्द दरवाजे नहीं
डेविड विल्करसुन	-	टीन चैलेंज के संस्थापक

सेवक और अगुवो के लिए व्यक्तिगत जॉच – सूची

क. <u>अगुवों के लिए अभिप्रेरणा</u>

१. क्या आपको महत्वपूर्ण महसूस करने के लिए एक ऊँचे पद की चाहत थी ? क्या आप वर्णन कर सकते हैं कि यह क्यों और कैसे हुआ ?
२. क्या आपने अगुवेपन की खोज आर्थिक सुरक्षा के लिए किया ?
३. आप परमेश्‍वर की स्तुति के बजाए, व्यक्तिगत स्तुति से कैसे बाज़ आएँ ?
४. किन व्यक्तिगत जरूरतों के लिए आप परमेश्‍वर पर भरोसा नहीं करते ? किसी एक की सूची बनाएँ ।
५. क्या आपको ऐसा महसूस हुआ है कि आप अपना काम दोषभावना या विवशता से कर रहे है बजाए खुशी से । ऐसे एक मौके का वर्णन करे ।
६. क्या आपने दूसरों के वरदानों में, पृष्ठभूमि और बुलाहट में अपने आप की तुलना की है ? क्या यह आपको हताश करती है ?
७. क्या आप खुद को दूसरों के तुलना करने में समय बिताते हैं ? किसके साथ ?
८. आप अपनी तुलना इस व्यक्ति के साथ क्यों करते हैं ?
९. क्या बडी/छोटी संख्या आपके अगुवेपन पर प्रभाव डालती है ? क्या ऐसा होना चाहिए ?

ख. <u>अगुवाई - शैली, प्रेरित करने वाला रोमि १२ : ८; प्रशासक – १ कुरि. १२ : २८</u>

१. क्या आप विशेष कार्य के बजाय लोगों के साथ कार्य करना पसंद करते हैं ?
२. क्या आप खुद को दूसरों को प्रेरित करनेवाला या संस्थापक समझते हैं ?
३. क्या आप अपने अगुवेपन में दूसरों का ख्याल करने की इच्छा रखते हैं ?
४. क्या आप तुरंत की जरूरतों को पूरा करने की इच्छा रखते हैं जब भी ऐसा होता हो ?
५. क्या आप दवाव और परेशानी में जल्दी निर्णय ले सकते हैं ?
६. क्या आप बातों के लिए खुद को जिम्मेदार महसूस करते हैं ? क्या आपको सबकुछ करना पड़ता है ?
७. क्या आप दिखा सकते हैं कि आप किस प्रकार के अगुवा हैं ? क्यों ?

ग. <u>बातचीत</u>

१. क्या आप प्रार्थना में परमेश्‍वर के साथ रोज बातचीत करते हैं ?
२. क्या आप अपनी पत्नी के साथ बातचीत करने को समय निकालते हैं ?
३. क्या लोग बिना आपके साथ संबंध में प्रभाव डाले असहमत होते हैं ?
४. क्या आप दूसरों के दृष्टिकोण को सराहते हैं ? आप इसे किस प्रकार दिखाते हैं ?
५. क्या आप लोगों से ऑख मिलाकर उनसे प्रत्यक्ष रूप से बात करते हैं ?
६. क्या आप अपने गलतियों को दूसरों के सामने मानने के लिए राजी हैं ?
७. क्या आप अपने सेवकाई में असफलता के लिए दोष लेने को राज़ी होंगे ?
८. क्या आप नए विचारों के लिए खुले हैं क्या आप अपना दृष्टिकोण बदल सकते हैं ?
९. क्या लोगों को नित्य “धन्यवाद” देते हैं ?
१0. क्या आप ज्यादा बात करते हैं और दूसरों को सुनने के लिए समय नहीं देते ?
११. क्या आप स्पष्ट दिशा दिखाते हैं, जब भी आप किसी कार्य को सौंपते हैं ? (क्या, इत्यादि)
१२. क्या आप अपने वक्तृत्व शक्ति से अवगत हैं ? क्या आपको लगता है कि यह दूसरों पर प्रभाव डालता है
१३. क्या आप दूसरों को नीचा दिखाते हैं ताकि अपने महत्व को बड़ा दिखा सके ?
१४. क्या आप बढ़ा-चढ़ाकर बात करते हैं ताकि आपको दूसरों से अच्छा प्रतिउत्तर मिले ?
१५. क्या आप छोटे बातों की अलोचना करते है बड़ी बातों की नजर न रखते हुए ?
१६. क्या आप अपने कथन की सच्चाई बिना सावित किए मान लेते हैं ?

१७. क्या दूसरे आपको हमेशा सच्चा मानते हैं ?

१८. क्या आपको गपशप न करते हुए बातों को गुप्त रखने में भरोसा किया जा सकता है ?

१९. क्या लोग आपसे खुलकर बात करते हैं, बिना किसी ड़र के कि आप क्या सोचेंगे, कहेंगे या करेंगे ? क्या वे आपको खुला समझते हैं ?

घ. दूसरों से प्रेम करना

१. क्या कोई कलीसिया या सेविकाई में है जिसे प्रेम करना कठिन हो ?
यह कौन है और इससे आप किस तरह व्यवहार करते हैं ?

२. क्या आप स्वयं को बहुत ज्यादा व्यस्त समझते हैं अपने इर्द-गिर्द के लोगों से प्रेम करने के लिए ?

३. अगर आपके पास कई जिम्मेदारियाँ हैं तो क्या आप दूसरों को कुछ बोझ उठाने कि अनुमति देंगे ?
कुछ जिम्मेदारियों की सुची बनाएँ ।

४. क्या आप लोगों के साथ सहनशील हैं ? आपको क्या बेचैन करती है ?

५. क्या आप अपने जीवन में कुछ असुरक्षा के लक्षण का नाम बताएँगे ?

६. क्या आप आलोचना के लिए अति-संवेदनशील होते हैं ? आप इसपर किस प्रकार विजयी होते हैं ?

७. क्या आप दूसरों के साथ करीबी संबंध स्थापित करने के लिए समय निकालते हैं ? आप यह किस प्रकार करते हैं, और कितना समय देते हैं ?

८. क्या आपके लोग जानते हैं कि आप उन्हें बिना शर्त के प्रेम करते हैं, बजाय उनके स्वभाव या पिछले असफलताओं के ?

ड. प्राधिकार की शैली

१. आप जिन लोगों का मार्गदर्शन करते हैं क्या उनके प्रति समझ और संवेदनशील हैं ?

२. क्या लोग आपके जीवन इस बात को समझने की क्षमता रखते हैं ? कैसे ?

३. आप दूसरों के सेवक बनने के लिए कितना राज़ी हैं ?

४. क्या दूसरे आपके उदाहरण के कारण आपके अधिकार में साकारात्मक प्रति[illegible]या दिखाते हैं ?

५. क्या आप दूसरों के निवेदन पर जल्दी उत्तर देते हैं ?

६. क्या आप अपने निर्णयों को स्पष्ट करने में समय देते हैं जब यह दूसरों को प्रभावित करती है ?

७. क्या आप पक्षपात करते हैं ? ऐसे एक मौके का बयान करें ।

८. क्या आपने बजाए दावा किए माँगने के स्वभाव को विकसित किया है ?

९. क्या आप और आपके कार्यकत्ताओं के लिए स्पष्ट कार्य - विवरण है ? क्या वे इस विवरण को स्पष्ट रूप से समझते हैं ?

१0. क्या आप परमेश्वर को सभी अधिकार का स्रोत समझकर संबंध बनाए रखने में संघर्ष करते हैं ?

११. क्या कुछ लोग आपके अधिकार का प्रतिरोध करते हैं ? कौन, कैसे और क्यों ?

१२. जो आपके अधिकार का प्रतिरोध करते हैं उनसे आप किस तरह पेश आते हैं ?

१३. क्या आप अपने आत्मिक उन्नति के लिए परमेश्वर को महिमा देते हैं ?

च. उदाहरण स्थापित करना

१. आप अपने कार्य को मूसा के कार्य के साथ किस प्रकार तुलना करेंगे ? (निर्ग.१८:१४-२४)

२. क्या ऐसी जिम्मेदारियाँ हैं जिन्हें आप स्वयं करने की कोशिश करते हैं ?

३. क्या आपने आपके इर्द - गिर्द के मुख्य लोगों को प्रशिक्षित किया है ? (२ तीमु २ : २)

४. क्या आपने अधिकार में दैविक सिद्धांतों का उल्लंधन किया है ?

५. क्या आप दूसरों के अनुकरण के लिए स्वयं को परमेश्वर के लिए जीने का उदाहरण दिया है ?

६. क्या आप दूसरों को उनके उदाहरण के बनकर स्वयं को निरीक्षण करने की अनुमति देते हैं ? कैसे ?

७. आप मुख्य लोगों के लिए स्वयं को किस तरह स्पष्टवादी बनाते हैं ?

८. क्या आप विश्वास करते हैं कि दूसरे आपके उदाहरण का अनुकरण करें ?

९. आप ऐसा क्यों विश्वास करते हैं ?

छ. <u>अगुवाई की जॉच – सूची (१ तीमु ३ : १-२; तीतुस १ : ५-९)</u>

१. क्या आपके हृदय में अगुवाई के लिए नित्य इच्छा होती है ? वर्णन करें ।

२. क्या आप नए, अभी-अभी नया-जन्म प्राप्त किए हुए विश्वासी हैं ?

३. क्या आप अपने शादी के साथी के साथ बेझिझक समर्पित हैं ?
अपने साथी के लिए आप जो महसूस करते हैं उसका वर्णन करें ।

४. क्या आपके बच्चे (स्वाभाविक या आत्मिक) आपके अगुवाई को सुनते हैं ? आपके अगुवाई की ओर वे क्यों सुनते/नहीं सुनते हैं ?

५. क्या आप कठिन परिस्थितियों में स्थिर रहते हैं ? हाल के एक उदाहरण का वर्णन कीजिए ।

६. क्या आप अपने गुणों और वरदानों का मूल्यांकन करने में सच्चे हैं ?

७. क्या आप परिस्थितियों से आसानी से दब जाते हैं ?

८. क्या आप लोगों के साथ सहनशील होते हैं या जल्दी ही चिडचिडे हो जाते हैं ? ऐसे एक व्यक्ति का नाम बताएं ?

९. क्या आप दूसरों के सामने झुकते हैं या फिर हमेशा ही सही होते हैं ?

१0. क्या आप अगुवा होने के लिए संदेहास्पद बातों को त्याग देने को राजी होते हैं ? ऐसे कुछ बातों की सूची बनाएँ जिन्हें आपने अगुवा बनने के लिए त्याग दिया हो ।

११. अब भी क्या ऐसी बाते हैं जिन्हें आपके त्यागने की जरूरत है ? आप ऐसा कब करेंगे ?

१२. दिए गए क्षेत्रों में स्वयं को जॉचे : (स्वयं को मूल्यांकित करें : १ – कमजोर; २-सामान्य; ३-अच्छा; ४-उत्तम (१ तीमु ३))

क. एक शुद्ध हृदय ....
ख. सचेत और जागृत ....
ग. संयमी और गंभीर ....
घ. एक अच्छी जीवनशैली ....
ड. एक अच्छा शिक्षक ....
च. खातिरदारी ....
छ. आत्मिक प्रौढ़ता ....
ज. पीने से परहेज करना ....
झ. तत्पर (जो आलसी न हो) ....
ञ. लोभी न होना (पैसे के लिए) ....
ट. धैर्यवान ....

ठ. आसानी से जिसके पास जा सके ....
ड़. स्पष्ट रूप से यीशु मसीह के साथ एक...........
(उसे अंगीकार करना)
ढ. परिवार का अध्यक्ष ....
(जब आप आदमी होते हैं)
ण. अपने पति की ओर समर्पित..............
(जब आप औरत होते हैं)
त. अनुशासन में बच्चे

१३. जब निष्कर्ष थोड़ा बहुत होता है, क्या आप जानते हैं क्यों ?

१४. क्या आप आलोचना को बिना कडुवाहट या निरूत्साहित होकर बर्ताव कर सकते हैं ? एक परिस्थिति के विषय में सोचें और उससे किस प्रकार आप बर्ताव करते हैं ? एक परिस्थिति के विषय में सोचें और उससे किस प्रकार आप बर्ताव करते हैं ।

१५. आप अपने जीवन में अकेलेपन के साथ किस तरह व्यवहार करते हैं ?
१६. क्या आप मित्रता के आवश्यकता को महसूस करते हैं ?
१७. वास्तविकता में आपके साथ कितने अच्छे मित्र हैं ? उनका नाम बताएँ ।
१८. क्या आप जानते हैं कि वे आपके सबसे अच्छे मित्र हैं ?

समापन

मैं प्रार्थना करता हूँ कि पवित्र आत्मा आपके हृदय को जॉचे, और इन प्रश्नों के द्वारा आपके अभिप्रेरणा को शुद्ध करें और जो निष्कर्ष है वह आपको प्रभु, उसकी देह और कलीसिया का बेहतर सेवक बनने के लिए चुनौती दें ।

सेवकाई में सही मनोवृति का महत्व (इब्रानी ११:२३-२७)

"मनोवृति" की परिभाषा : 'किस प्रकार आप किसी वात को महसूस करते हैं और किस प्रकार यह आपको विश्वास दिलाती है ।'

हम इस विषय को ३ अलग भाग में बॉटेंगे :

१. सेवकाई का मूल्य
२. अधिकार और समर्पण
३. एक सही आत्मा

परमेश्वर का हर व्यवहार हम में और हमारे द्वारा, वह हमारे मनोवृत्ति की परीक्षा कर हमें विकसित करने की मूल इच्छा रखता है । गलत मनोवृत्ति सेवकाई में हमारे आशीषों को चुरा लेगा जबकि अच्छा मनोवृत्ति हमें कठिन परिस्थितियों में उठाकर ले चलेगा, ताकि हम सेवकाई करना न छोडें । ऐसी सेवकाई परमेश्वर को भाती है और मनुष्य के लिए लाभान्वित होती है ।

कई बातों में सफलता और विफलता के बीच कई मनोवृति का कार्य होता है और हर समय मनोवृतियों की रक्षा करने की चुनौती का ध्यान देना चाहिए अगर हमें परमेश्वर में सेवकाई को विकसित करना है । इस अध्ययन का रूपरेखा इसलिए दिया गया है ताकि कठिनाई के मुख्य क्षेत्र को दर्शाया जाए और अच्छे मनोवृतियों में विकसित होने के लिए हमें तैयार किया जाए ताकि सेवकाई की पूर्ति के लिए हमें भेजा जाए ।

१. सेवकाई का मूल्य
मूसा की सेवकाई का क्या मूल्य हुआ ?

क. मिस्रि देश के सुख-सिवाधाएँ
सुरक्षा के हर लक्षण : समाज का सुख सामाजिक स्वीकृति साथी और स्थायी रूप से बसना
जीविका और भविष्य
(वायदा करता हुआ)

किसलिए ? रेगिस्तान और भेड़ की भीड़ ? नही !! परमेश्वर के उद्देश्यों का अनुसरण करना ।
एक वेतुका गलती नही बल्कि विश्वास का कदम; अंधा विश्वास नहीं; निराशाजनक नहीं/निष्फलता; जुआ खेलना नहीं; कोई कार्य नहीं जो अनिवार्य हो (निश्चित रूप से ऐसे दायित्व से वह भाग सकता था)

परन्तु परमेश्वर के उद्देश्यों में एक निश्चित कदम
आप क्या सोचते हैं कि उस समय उसे क्या महसूस हुआ ? उसके मन के प्रश्न ? चालीस साल जो बाद में परिणाम स्वरूप धटित हुआ ? विश्वास की ऑखों इन सालों को महत्वपूर्ण जाना और आनेवाले दिनों के कार्य के लिए बहुमूल्य तैयारी किया । तैयारी नही ? कार्य नहीं !!

पिछला सबकुछ त्याग दिया : स्थान; सामर्थ और प्रभाव; मित्र; परिवार; सुख-सुविधाएँ; इच्छाएँ घर । यह सब कुछ किया ताकि परमेश्वर जिस काम के लिए बुला रहा हो उसे पूरा करने । हम अक्सर मूसा के एक मिस्री को मारना, एक क्षणभर के गलती की मूर्खता समझते हैं – मैं विश्वास करता हूँ कि यह वास्तविकता में योजना किया हुआ, पहले से मनन किया हुआ कार्य जो मूसा विश्वास करता था कि परमेश्वर उसे चुने हुआ छुड़ानेवाले के रूप में स्थापित करेगा - उस समय का मनुष्य ! इसमें हमें सावधान किया जाता है कि परमेश्वर के अपने तरीके होते हैं और हमारे लिए यह उत्तम है कि हम कार्यो को जल्दबाजी में करने से पहले पता लगाएँ । यशायाह ५५ : ८ – ९ स्मरण करें । परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों के लिए उसका इस्तेमाल किया – मूसा अपनी सेवकाई में नहीं आ सका – जो मूल्य नहीं चुकाया था । इसलिए परमेश्वर ने उसका मागदर्शन किया – धीरे – धीरे, बहुमूल्य मार्ग की ओर ।

अगर आपको समझ में न आया हो तो

सेविकाई में कोई छोटा रास्ता नहीं – वास्तविकता में छोटे रास्ते ज्यादा समय लेता है, इसलिए अगर आप सोचते हैं कि आपने ढूंढ निकाला है, तो उसे त्याग दें ।

इब्रानी ११ : २४ – २७ आयत २४, २७ :

इन्कार किया :- विश्वास के लिए

आयत २५ : चुनाव किया :- विश्वास के लिए

आयत २६ : लेखा लिया :- विश्वास के लिए

विश्वास का नमूना देना :

१. परिस्थिति का लेखा – सही मूल्यों की विशेषता को थाह लेना
२. वही कार्य का चुनाव करना जो सही है (या मूल्यवान है)
३. चुनाव के साथ चलें - उसके मूल्य की चिन्ता नहीं करते हुए । वजह ? आयत २७ : इन सबमें उसने परमेश्वर के उद्देश्यों को देखा ।

ख. चालीस साल की बाट जोहना

अन्तहीन बार जोहने में उसकी आशाएँ और अभिलाषाएं सब मिट गई थी । हममें से कई को बॉट जोहना सबसे कठिन कार्य है, परन्तु जिनके जीवन परमेश्वर के लिए मायना रखता हो उन्हें बाट जोहना सीखना पड़ा है ।

बाट क्यों जोहना : परमेश्वर मूसा को सिखा रहा था :

१. उसका समय ही सबसे महत्वपूर्ण था । भजन संहिता ३१:१४ में दाऊद
२. उसका रास्ता ही सच्चा है; रोमि ११ : ३३-३६
३. वही एक सुसज्जित करता है : निर्गमन ४: १२
४. उसकी बुलाहट मायने रखती है : निर्गमन ३ : १0
५. उसके उद्देश्य कभी निराश नहीं करते : सभोपदेशक ३

उसके समय में मूसा ने पत्नी पाया : कुछ नई सुरक्षा; मित्र और परिवार

परन्तु इस समय वह स्वेच्छा से हर बात को एक तरफ रखता है ताकि परमेश्वर की दिशा में परमेश्वर के तरीकों में उसका अनुसरण कर सके ।

ग. लोगों का सामना करना

इस समय उसके घमण्ड का मूल्य चुकाना पड़ा

उसे सामना करना पडा : क) तिरस्कार का जोखिम उठाना
ख) स्वरूप को खो देने का जोखिम उठाना
ग) उसका भूतकाल - उससे भाग नहीं पाना

* उसकी पिछली गलतियों को स्मरण रखने का चोट और जानना कि यह बात दूसरे जानते थे, वह ज्यादा भाग नहीं सका ।
* परमेश्वर की सेवा करने का मतलब है था, उचित रीति से और इमानदारी से पिछली बातों का सामना करना । फिलि ३ : १३ - १४

सभोपदेशक ७ : ३, "हंसी से खेद उत्तम है, क्योंकि मुँह पर के शोक से मन सुधरता है ।" (विस्तृत वृत्तांत) "खेद हंसी से उत्तम है; यह चेहरे को शोकित वो करता है, परन्तु समझ को तेज करता है ।"

२ कुरि.७:१0, "परमेश्वर भक्ति का दुख ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है । फिर उससे पछताना नहीं पड़ता । परन्तु सांसारिक दुःख मृत्यु उत्पन्न करता है ।"

परमेश्वर में ऐसी कोई परिस्थिति नहीं जिस पुन : प्राप्त नहीं किया जा सके । हमें मालूम है कि परमेश्वर नियंत्रण करता है ।

- ❖ हमें मालूम है कि हमने गलती किया है
- ❖ हमें पता है कि परमेश्वर ने हमारे लाभ के लिए ऐसी अनुमति दिया है ।
- ❖ पिछली बातें हमें जीने नहीं देती जब हम उससे भागते रहते हैं और उसका सामना नहीं करते । उसका सामना करने का मतलब है – जो वह सिखाना चाहता है वह पाठ सीखना ।
- ❖ स्मृतियॉं परमेश्वर को समर्पित करें
  - उन्हें हमें पीडित करने से इन्कार करना, हमने चुनाव किया । जब स्मृति मन में आती है परमेश्वर को उसके लिए और उसके पाठ के लिए धन्यवाद देना ।
  - साकारात्मक और रचनात्मक ढंग से पाक के विषय में सोचना, न कि गलतियों के विषय में ।
- ❖ परिणामों को स्वीकार करना जो अपेक्षित है परमेश्वर को उसके मदद के लिए विश्वास करते हुए ।
- ❖ फिर से शुरू करने के लिए तैयार होना । फिलि ३ : १३-१४ देखें; जीवन में लक्ष्य और उद्देश्य ।

सभोपदेशक ७ : ३,५; २ कुरि ७:१० –दर्दनाक बातों का उद्देश्य

यह मूल्यवान है – परन्तु यह जीत का मूल्य है और परमेश्वर में आगे बढ़ने का । परमेश्वर यह वादा नहीं करता कि यह आसान है – वह यह कहता है कि ये सब उसके योग्य है ।

घ. सारांश

अगर आप परमेश्वर के साथ व्यवसाय करना चाहते हैं तो सम्भव रूप से आपको कुछ मूल्य चुकाना है :

उदाहरण – सुख-सुविधा, परिवार, मित्र, सुरक्षा, समय, आसार ....

अगर आप परमेश्वर के लिए कार्य करना चाहते हैं तो आपको एक मूल्य चुकाना है । यही प्रभावशाली, अर्थपूण, परमेश्वर के साथ सफल चलन की ओर रास्ता है । यही सेवकाई का मूल्य है ।

२. अधिकार और समर्पण

२:१ हर अधिकार का स्रोत भजन संहिता १०३ : १९; यूहन्ना १ : ३

हर अधिकार परमेश्वर की ओर से स्थापित है : कुलु १ : १६; रोमि १३ : १

सृष्टि में महान विवाद अधिकार से जुड़ा हुआ होता है ।

यशायाह १४ : १३; उत्पत्ति १ : २६, २९; २ : ८-९,१५, १९-२४; ३:८

मनुष्य या तो परमेश्वर के या शैतान के अधिकार में है – विविध अंत के नतीजों के साथ । शैतान का अधिकार परमेश्वर के ज्ञान में वह अनुमति देता है परन्तु अंत में वह प्रबल नहीं होता ।

२:२ अधिकार की जरूरत और उसका लाभ

- ❖ हम परमेश्वर के साथ सही होते हैं जब हमारे उपर जो अधिकार में है उन्हें समर्पित होते हैं; रोमि १३ : १-७
- ❖ हम धोखे के लिए खुले हैं यदि हम अधिकार को समर्पित नहीं हैं : प्रेरितों के काम २० : २८-३१
- ❖ जीवन की कुंजी : इफि ६ : १-३
- ❖ परमेश्वर अधिकार नियुक्त करता है उसके लोगों के लाभ के लिए : १ इतिहास १७ : ६; इब्रानी १३:२०; यशायाह ४०:११
- ❖ सही मनोवृत्तियॉं अधिकार के प्रति एकता को बढ़ावा देना है जो सामर्थ को उत्पन्न करता है और बदले में अभिषेक को बढ़ाता है । मरकुस ३ : २४-२५; भजन संहिता १३३

२:३ गुणवत्ता : जो नियुक्त अधिकार का इस्तेमाल करते है उन्हें नीचे दिए गए बातों का प्रदर्शन करना चाहिए :

- ❖ अधिकार में समर्पित : लूका १७ : ७-१0; यूहन्ना १३:१२- १७
- ❖ यह पहचानना की अधिकार परमेश्वर की ओर से है : रोमि १३ : १
- ❖ नम्रता : परमेश्वर की समझ के बगैर शांत रहना; गिनती १२
  (प्रकल्पित विचारों को सामने रखने के बजाय)
- ❖ परमेश्वर के साथ अर्थपूर्ण संगति
- ❖ अधिकार स्थापित करने में परमेश्वर की अनुमति के इच्छुक
- ❖ कृपालु गिनती १६ : ४१-५0
- ❖ प्रेम को प्रेरणा मानना : यूहन्ना १0 : १-१५; १५:१३

२:४ **समर्पण का मूल बुद्धिमत्ता के कारण आज्ञा का चुनाव होना चाहिए** : लूका १४ : २८-३२; यहोशु २४:१-२५ बिना बुद्धि के यंत्रमानव प'तिउत्तर नहीं । समर्पण विधिवाद में नहीं, बाहरी 'आज्ञाकारिता' में नहीं जो अन्दर के बदले की भावना को ढॉप देता है । <u>समर्पण हृदय की मनोवृत्ति है और इसलिए पूर्ण है ।</u> आज्ञाकरिता की रूपरेखा बिना अन्दरूनी समर्पण के एक समर्पित हृदय का बाहर कार्य है जो खोखला और अंतत: गलत है ।

ईश्वरत्व में समर्पण का प्रकाशन है : यूहन्ना ५ : १९-२३; १२:४९; १६:१३-१५

यीशु मसीह समर्पण का नमूना है : फिलि २ : ५-८

२:५ समर्पण के लाभ :

क. समर्पण अधिकार को प्रवलित करता है और पुनःस्थापन को बढ़ावा देता है ।

ख. समर्पण परमेश्वर के राज्य को स्थापित करता है ।

ग. समर्पण विद्रोह को दूर करता है ।

घ. परमेश्वर की ओर से प्रकाशन लाता है : प्रेरितों के काम ५ : ३३; यूहन्ना १६:१३-१५

ड. प्रकाश आजाद़ी और एकता को उत्पन्न करता है : यूहन्ना १ : ६-७

२:६ समर्पित आत्मा की विशेषता

क. अधिकार को ढूँढता है और पाता है (उदाहरण रूत)

ख. कोमल, सौम्य और गलती से डरना

ग. अधिकार में रहना पसन्द नहीं है, दूसरों को नियंत्रण में रखते हुए ।

ध. ध्यान से बात करता है, स्वयं-अनुशासित : याकूब ३ : १-२

ड. अव्यवस्था और विद्रोह से संवेदनशील

२:७ क्या हम समर्पित हैं :

क. नियुक्त अधिकार की ओर हमारी क्या प्रति□ा रहती है – विशेष रूप से जव हम उस व्यक्ति को नहीं चाहते हैं ?

ख. हम परमेश्वर के आदेशों का किस प्रकार प्रतिउत्तर देते हैं ?

ग. क्या हम अप्रवर्तनीय क्षेत्रों की आज्ञा करते हैं – जैसे हमारे विचार ।

२.८ अधिकार और समर्पण के पवित्र शास्त्रीय उदाहरण :

क.	आदम	:	परमेश्वर को समर्पण पत्नी या परिवार के प्रेम से पहले होना चाहिए ।
ख.	हव्वा	:	जो अधिकार के ढ़ॉप से बाहर आ जाते हैं वे धोखे के लिए खुले होते हैं ।
ग.	हेम	:	हमें जो अधिकार में है उनके गलतियों को प्रकट नहीं करना चाहिए ।
घ.	अव्राहम	:	परमेश्वर उन लोगों को आशीष देता है जो प्रेम और नम्रता में नियुक्त अधिकार का व्यायाम करते हैं । : उत्पत्ति १२-१४
ड.	युसुफ	:	समर्पण (भले ही इसका मतलव पीड़ा हो) यह अधिकार के स्थान तक पहुँचाता है ।

च. नादाब व अबीहू : आत्मिक अधिकार परमेश्वर के बुलाहट पर आधारित है :
लैव्यव्यवस्था १0:१-२; इब्रानी ५ : ४

छ. आरोन व मिरियम : हमें परमेश्वर के नियुक्त अधिकार को "छुना" नहीं चाहिए (निंदा करना, नीचे गिराना किसी भी तरह) : भजन संहिता १0५ : १५; गिनती १२

ज. कोराह, दातान, अविराम: परमेश्वर नियुक्त अधिकार पर विद्रोह के साथ व्यवहार करेगा ा
गिनती १६ – आज्ञाकारिता नर्क के फाटकों को बंद कर जीवन प्रदान करता है ा
विद्रोह फैलता है ा आयत १-४0; अगुवों ने विद्रोह किया; आयत ४१ – ५0 : लोगों ने विद्रोह किया

झ. रूत : परमेश्वर ऐसे लोगों को आशीष देता है जो अधिकार में रहने का खोज करते हैं ा

ञ. एली : परमेश्वर अधिकार में जो हैं उनका न्याय करता है जो पाप से अपने आप को नियंत्रण में नहीं रखते ा

ट. दाऊद :
i) अधिकार की स्थापना को परमेश्वर के ऊपर छोड़ दिया
१ शमू २६ : ९ – ११
ii) जल्दबाज़ी नहीं दिखाया – हिब्रोन में ७ साल तृप्त रहा जबतक परमेश्वर सारे इस्राएल को उसतक नहीं लाया ा
iii) नम्रता – परमेश्वर के सामने : २ शमु ७ : १८ –२0
लोगों के सामने : २ शमु ६ : १४ – २३
iv) अधिकार का गलत इस्तेमाल, परमेश्वर के दुश्मन को निंदा करने का समय दिया, न्याय लाया, परमेश्वर के आशीषों को रोके रखने का मौका दिया ा
२ शमु ११ – १२
v) अनुमान लगाना और उसका मूल्य चुकाना जो उसके नीचे है :
२ शमु २४ : १ – २८

ठ. नामान : परमेश्वर के वचन की और आज्ञाकारी (भले ही कितना ही अजीब क्यों न हो) उसके नियुक्त अधिकार चंगाई लाता है ा पुनस्थापन लाता है : २ राजा ५ : १ – १९

२.९ जो अधिकार का गलत इस्तेमाल करते हैं :

क. परमेश्वर न्याय करेगा : यहेजकेल ३४ : १ – १0; जकर्याह ११:१७

ख. परमेश्वर से मॉगे की परिस्थिति के साथ व्यवहार करें, निश्चय जानें कि अधिकार के प्रति खुला और सही मनोवृति रखें ा कडुवाहट विद्रोह को बढ़ाएगा, उदाहरण २ शमु १ : १७ – २७

ग. सावधान रहें कि किस अधिकार के नीचे आप आते हैं क्योंकि उस आत्मा की प्रेरणा की आत्मसात करते हैं ा १ शमु ३१ : योनाथान मर गया क्योंकि उसने ऐसा नहीं किया ा

३. <u>एक सही आत्मा</u>

कभी-कभी हमारे मसीही जीवनों में, कठिन धटनाओं के विषय में बहुत बातें होती हैं ा इन बातों के लिए हमारी प्रति�ा महत्वपूर्ण हैं ा नीतिवचन १६:२ में क्या सही है और क्या गलत है वह संवद्धित नहीं है, परन्तु एक सही आत्मा हमेशा मायने रखता है ा

इब्रानी १२ : १५ कहता है कि हम समझ से देखें, ताकि कडुवाहट कि किसी जड़ को हटा दें ा हमें अपने आप को सुरक्षित रखना है, यह निश्चित करने की दूसरे हमारे साथ क्या वर्ताव रखते हैं, हम अपने आप को परमेश्वर के आशीषों से अयोग्य न करें ा भजन संहिता ५१:१७; यशायाह ६६:२

३.१ <u>विश्वसनीयता स्थापित करना</u>

उत्पत्ति ३२ : २४ : क) याकूब दूसरों के साथ संघर्ष में

ख) परमेश्वर याकूब के साथ व्यवहार करता है ।

ग) परमेश्वर का याकूब के साथ व्यवहार :

i) याकूब को परमेश्वर के साथ सामर्थ देता है ।

ii) याकूब को मनुष्य के साथ सामर्थ देता है ।

याकूब ने सालों तक वही करने की कोशिश किया जो परमेश्वर ने कहा वह करेगा । याकूब विफल हो गया जब तक परमेश्वर आकर उसके जीवन में कार्य करे । उपर का □म हमेशा क, ख, ग होना चाहिए । कोई भी दूसरा □म संघर्ष को लाती है ।

३.२ <u>विरोध और ईर्ष्या के साथ व्यवहार करना सीखना</u> :

उहारण : निंदा, न्याय, दुश्मनी, कमज़ोर कर देना, झूठ बोलना, टांग अडाना इत्यादि में प्रकट होता है ।

- ❖ ईर्ष्या एक मनुष्य को दूसरे दुष्टात्मा के कार्य में खोल देती है । इर्ष्या दूसरों की ओर देखने से होती है बजाय परमेश्वर की ओर । २ कुरि १० : १२ बिना समझे : यूहन्ना २१ : २१ – २२ : यह आपके लिए क्या है ! (फिलि ३ : ७ सबकुछ बेकार ठहराती है – तो चिन्ता किस बात की)
- ❖ एक अधार्मिक मनोवृति एक ईर्ष्यालु व्यक्ति की ओर अत्याचार, दवाव, शारीरिक और आत्मिक दवाव को लाती है ।
- ❖ क्षमा : मत्ती १८ : २३ : अगर देखा न जाए तो पीड़ा उत्प□ करती है ।
  स्वयं – न्याय, स्वयं - बचाव, और क्षमा न करने की आदत को दर्शाती है ।
- ❖ परमेश्वर न्याय करेगा जो अंत तक सही है, भले ही ऐसा लगे कि समय लग रहा है – बशर्ते हम लोगों और बातों में सही मनोवृत्ति रखें । नीतिवचन २४ : १७ – १८; मत्ती २० : १ – १४
- ❖ <u>नम्र रहना और परमेश्वर पर निर्भर होना ही सिर्फ सही मनोवृत्ति है</u> ।

एक ऊँचे दर्जे की उत्तमता की जरूरत है

“अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इससे पहले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएं, जिन में तू कहे कि मेरा मन इन में नहीं लगता ।” सभोपदेशक १२ : १ हमारी दुनिया में कलंक और अत्याचार बहुतायत रूप से साधारण हैं । जब हम राजनीतिक क्षेत्र में अनैतिकता के विषय में या व्यवसयाय की दुनिया में बैमानी को देखते हैं तो यह हमें आश्चर्यचकित नहीं करता, परन्तु हम पाते हैं कि वही मनोवृत्ति हमारे घरों और कलीसियाओं में हावी हो रहे हैं । किसी भी तरह की ईमानदारी बहुत ही कम दिख पड़ता है।
मसीही होने के नाते, हम आत्मिक इमानदारी के लोग कहलाते हैं हमारे वातावरण के बावजूद । पवित्र शास्त्र हमें फिलि ३ : १४ में यह बताती है, “मैं निशाने की ओर दौड़ा चला जा रहा हूँ ताकि वह इनाम पाऊं जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु मैं ऊपर बुलाया है ।” वह ऊँची बुलाहट क्या है ? यह एक चुनौती है जो पवित्र शास्त्र में हममें से हर एक को आत्मिक इमानदारी में चलना । यही ऊँचा दर्जा है उत्तमता का, परन्तु यह सम्भव है, और यही अधिकार परमेश्वर हमें प्रदान करता है ।

शब्दकोष इमानदारी की इस तरह परिभाषा देता है : “नैतिक उत्तमता, इमानदारी, या विश्वासयोग्यता,” पवित्र शास्त्रीय इमानदारी और आगे बढ़ती है, हम जोड़ सकते है : सही काम करना क्योंकि परमेश्वर का वचन यह चाहता है और हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उसे खुश रखना चाहते हैं ।

पवित्र शास्त्र हमें बताती है कि परमेश्वर ने शैतान को क्या बताया अय्यूब के विषय में । “...क्या तू ने मेरे दास अय्यूब पर ध्यान दिया है कि पृथ्वी पर उसके तुल्य खरा और सीधा और मेरा भय माननेवाला और बुराई से दूर रहनेवाला मनुष्य और कोई नहीं है ? और यद्यपि तूने मुझे उसको बिना कारण सत्यानाश करने को उभारा, तो भी वह अब तक अपनी खराई पर बना है ।” (अय्यूब २ : ३) परमेश्वर ने ‘खराई’ शब्द का इस्तेमाल किया मनुष्य के विषय में वर्णन करने के लिए ।

इमानदारी मैं भरोसा होता है । हम चाहते हैं कि परमेश्वर हम पर भरोसा करे, परन्तु यह आगे चलकर कलीसिया में हमारे एक-दूसरे के संबंध तक जाती है । हमें कलीसिया और बाहर के हर सदस्य को यह कहते सुनना चाहिए कि “भाई, हम आप पर भरोसा करते हैं ।” यह तभी हो सकता है जब हम नियमों के अनुसार चलते हैं और अपने आप को परमेश्वर के वचन की उत्तमता में पाते हैं । सार्वजनिक क्षेत्र में खराई के तीन परिक्षाएँ है : पैसा, सामर्थ और लैंगिक संबंधी व्यक्तिगत तौर पर भी आत्मिक इमानदारी को इन क्षेत्रों का सामना करना पड़ता है । मसीही होने के तौर पर, हमें आर्थिक इमानदारी में भी जीना है । मसीहियों और कलीसिया के काम की परीक्षा अधिकार का उपयोग या दुरूपयोग से होती है । और यदि कुछ शैतान आखिरी दिनों में चुनौती दे रहा है तो वह है हमारा नैतिक दर्जा । कुछ लोग एक क्षेत्र के लिए अत्यंत सतर्क हैं, और दूसरों के प्रति असावधान । फिर भी, अगर हम उत्तमता के लिए घोर प्रयास कर रहे हैं तो हम प्रभु के मदद से हर क्षेत्र में उभरेंगे ।

दाऊद ने कहा, “हे परमेश्वर, मुझे जॉच कर जान ले । मुझे परख कर मेरी चिन्ताओं को जान ले ।”
(भजन संहिता १३९ : २३ – २४) हमें परमेश्वर के सम्मुख खुला होना चाहिए और परमेश्वर के खोज-बत्ती को चमकने देना चाहिए, हमें क्या करना चाहिए इसका प्रकाशन देते हुए ताकि हमारा आत्मिक खराई बना रहे । यह जरूरी है, सिर्फ परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत चलन में ही नहीं परन्तु सुसमाचार के फैलाव में भी । हमारे स्वयं की आत्मिक खराई कलीसिया की एकता पर प्रभाव डालेगी; हमारी एकता कलीसिया होने के नाते, हमारे सुसमाचार फैलाने की कोशिश में प्रभाव डालेगा । इसलिए आपका और हमारा इमानदारी महत्वपूर्ण है।
अगर कभी भी पवित्र शास्त्र में व्यक्तिगत और आत्मिक इमानदारी की कहानी है तो वह है युसुफ की, जो उत्पत्ति के किताब में पाई जाती है । हम पाते हैं कि वह तीन क्षेत्रों में परखा गया : आर्थिक अधिकार, अधिकार के क्षेत्र में इमानदारी, और उसका नैतिक इमानदारी । इमानदारी हमेशा अच्छे रूप से स्वीकारा नहीं जाता । यूसुफ को पोतिफुर की पत्नी द्वारा परखा गया ताकि वह व्यभिचार में पकड़ा जाए, और जब उसने इन्कार किया, तो उसे बन्दीगृह में डाला गया । आपको खराई में रहने के लिए तड़पना पड़ सकता है । कुछ लोग सोचते हैं, ओह अगर में सही काम करता तो जीवन में हर कार्य

अच्छा चलता, परन्तु यूसुफ बन्दीगृह में चला गया क्योंकि उसने सही काम किया । यूसुफ को अधिकार और सामर्थ के इस्तेमाल के क्षेत्र में भी परखा गया । जब उसके भाई मिस्र देश आएं उनके परिवार के लिए अन्न मोल लेने के लिए, यूसुफ के पास हर कारण था कि वह उनपर □ध करे, परन्तु उसने अपने स्थान का गलत इस्तेमाल नहीं किया ताकि बदला किया जाए । बदले में उसने उनको माफ कर दिया । वास्तविकता में पवित्र शास्त्र में लिखा है कि वे भूमि पर गिरकर दण्डवत किए । उसने कहा, "इस कारण परमेश्वर ने मुझे यहाँ भेजा है । अपने आप को कम मत समझो ।" उसकी आत्मिक खराई ने उसे मार्गदर्शन किया कि वह सही कार्य करे, क्योंकि वह सही था ।

जब हम पवित्र शास्त्र की खोज करते हैं, हमें स्त्रियों और पुरूषों के कई ऐसे उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने आत्मिक खराई को बनाए रखा । उनके उदाहरण से, हम सीखते हैं कि हमें विजय भी प्राप्त हो सकता है; कि हमें पृथ्वी के चाल-चलन पर आत्मिक खराई मिल सकती है । जैसे भी, यह अच्छा है कि हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करें ताकि हम आत्मिक खराई के विषय में सीखें, और उसका सबूत व्यवहार में पाया जाता है । हम कितना भी क्यों न सीख लें, यह कोई मूल्य नहीं रखता जबतक हम उसको अपने जीवन में लागू नहीं करते ।

उदाहरण के तौर पर, आर्थिक इमानदारी के विषय में सोचें । हम ऐसा सोच सकते हैं कि हमारे आर्थिक तैयारियाँ किसी और का व्यवसाय नहीं है, परन्तु परमेश्वर के प्रतिनिधि होने पर हम एक – दूसरे का और कलीसिया के प्रतिनिधि बनते हैं । दुनिया यीशु मसीह के प्रतिनिधियों को व्यवसाय और आर्थिक व्यवहार में जाँचती है । यह हमें बताता है कि हमें बहुत सावधानी से कार्य करना चाहिए । हम अपने आर्थिक बातों से सुसमाचार या मसीही भाइयों और बहनों को निंदा का कारण नहीं बनाना चाहिए । हमें इमानदारी से जीना चाहिए क्योंकि आर्थिक इमानदारी हमारे गवाही का महत्वपूर्ण भाग है जो दुनिया देखती है ।'

नैतिक पवित्रता अलग-अलग क्षेत्रों में चुनौती को बनाए रखने से होता है । हमारा पहनावा, हमारे जाने का स्थान, एक-दूसरे से हमारी मनोवृति, और हमारा स्वभाव सब इस श्रेणी में आता है । हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जिसमें बहकाव है । व्यभिचार हमारे समय का पाप है । परमेश्वर हमारे नैतिक इमानदारी को बनाए रखने में मदद करता है । परमेश्वर के पास अच्छी योजना है । उसने लैगिंक संबंध बनाया, परन्तु यह पति और पत्नी के बीच बनाया । हम परमेश्वर के सामने शपथ लेते हैं कि हम एक दूसरे के प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे जब तक हम जीवित रहते हैं, और आत्मिक इमानदारी चाहता है कि हम इन शपथों का पालन करें । हम उस वाचा को सुरक्षित रखते हैं जो स्त्री और पुरूष को विवाह में एक करता है । दुनिया ऐसे लोगों को दोषी ठहरा सकती है जो ऐसा कहते हैं कि विवाह के बाहर लैंगिक संबंध रखना । व्यभिचार करना या समलिंगरीति गलत है, परन्तु पवित्र शास्त्र हमें यह बताता है कि यह सब गलत है । हमें आत्मिक इमानदारी का बोध होना चाहिए जो हमें उत्तमता के दर्जे को बनाए रखने में मदद करता है ।

कुछ देशों में निर्धारित समय पर स्त्री-पुरूष का मिलन जवानों में स्वीकृत चलन है । फिर भी यह स्त्री-पुरूष मिलन, ऐसे लोगों को परीक्षा में डाल सकती है जो आत्मिक इमानदारी में अपने आप को बनाए रखने की कोशिश करते हैं । आत्मिक इमानदारी दिल के मनोवृत्ति से शुरू होता है, और हमें दूसरे लिंग के प्रति सावधानी बरतने की जरूरत है । नैतिक इमानदारी को बनाए रखने का एक भाग है गंभीर रूप से पवित्र शास्त्रीय चेतावनी को लेना कि हम शालीनता से वस्त्र पहनें । जो चीज बेचने के लिए नहीं है उसका विज्ञापन न करें । दुनिया के निर्लज्य शैली और फॅशन फिसलकर कलीसिया में आ सकते हैं अगर हम सावधान न हो; हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि निर्लज्जता ऐसे लोगों पर प्रभाव डालती है जहाँ लोग अपने आत्मिक इमानदारी को बनाए रखने की कोशिश करते हैं । पुराने जमाने से जो उपदेश चला आ रहा है कि दूसरे लिंग से थोड़ा दूरी बनाए रखो, यह आज तक हमारे लिए सच है ।

मैं पूरा विश्वास करता हूँ कि इन अंतिम दिनों में सुसमाचार प्रचार एक-एक व्यक्ति से होगा । इसमें आप पड़ोसी से, आपके रिश्तेदारों से, या दूसरों काम करने वाले लोगों से बातचीत करने के दौरान होगा । ऐसे सुसमाचार प्रचार की सफलता आपके इमानदारी पर निर्भर करती है । जब आप किसी को कलीसिया आने की न्यौता देते हैं, वे अच्छे गाने या विशेष कार्य□म का आनंद उठाने के लिए या जवानों के साथ बास्केटबॉल खेलने के लिए इत्यादि आ सकते हैं परन्तु वे उद्धार पाएंगे जब वे आपके आत्मिक इमानदारी को देखेंगे ।
इसलिए, हम इस बात के लिए समय लेकर अपने आप को जाँचे कि हम सही में जीवन में परमेश्वर के ऊँचे

चरित्र और सामर्थ के खम्भे

(विश्वासयोग्यता, आदर, जिम्मेदारी, सही बर्ताव, ख्याल रखना और नागरिकता)
विश्वासयोग्यता, आदर, जिम्मेदारी, सही बर्ताव, ख्याल रखना और नागरिकता – यह छः मूल नीतिशास्त्र-संबंधी मूल्य, जिन्हें “चरित्र के खम्भे” कहलाया जा सकता है ताकि हम अपने चुनाव का मार्गदर्शन करें । कार्य का दर्जा जो उन मूल्यों से उठता है वे मूल नैतिक नियमों को स्थापित करता है, और नीतिशास्त्र-संबंधी निर्णय-लेना भी सिखाता है । यह छः खम्भे पवित्रता पर निर्भर नहीं होते । ये नीतिशास्त्र-संबंधी विशेष विचारों जो नैतिक सच्चाईयों का कार्य करते है उनका प्रतिनिधित्व करते हैं । जो सिद्धांत इन विचारों का प्रतिनिधित्व करता है वे शुद्धीकरण का कार्य करते है जिसमें निर्णय-लेने की एक क्रिया हो । इसलिए विश्वासयोग्यता काफी नहीं, हमें ध्यान रखने की भी जरूरत है ।

सिर्फ व्यवस्था से चिपके रहना काफी नहीं – हमें अपनी निष्क्रियता के लिए जिम्मेदारी स्वीकार करना चाहिए । आखिरकार, मूल नैतिक – संबंधी मूल्यों का इस्तेमाल सिद्धांतों पर आधारित तर्क-शक्ति पर होता है जहॉ हम परिस्थितियों को परखकर एक नैतिक सिद्धांत की ओर ध्यान केंद्रित करते हैं और दूसरे का बलिदान कर देते हैं । जहॉ दूसरों को हम जवाबदेह ठहराकर, हम दयालु की ओर अपने कर्त्तव्य को भूल जाते हैं; जहॉ हम एक कार्य को पूरा होता हुआ देखना चाहते हैं, बिना यह सोचे कि यह कैसे होगा ।
संक्षिप्त में, छ: खम्भों का व्यविस्थत इस्तेमाल, नाटकीय ढंग से निर्णय लेने और चरित्र के नैतिक-संबंधी मूल्यों की उन्नति करेगा ।

<u>पहला खम्भा : विश्वासयोग्यता</u>

जब हमपर भरोसा किया जाता है, हमें दूसरों से ज्यादा आश्रय मिलता है, क्योंकि उन्हें ऐसा नहीं लगता कि उन्हें करारनामे की जरूरत है यह आश्वासन देने के लिए कि हम अपाना कर्तव्य निभाएँगे । वे हमपर विश्वास रखते हैं । यह हमें सांत्वना देता है । परन्तु एक उतार है : हमें दूसरों की अपेक्षा में निरंतर जीना है और स्वयं की स्पर्धात्मक सेवा से बचे रहना है जो हमारे चरित्र में दाग लगा देती है और संबंधो को बर्बाद कर देती है, जीविका और व्यक्तिगत रूप में ।

सिर्फ झूठ और धोखे से अपने आप को बचाए रखना काफी नहीं है । विश्वासयोग्यता, छ: नैतिक मूल्यों में सबसे पेचीदा है और स्वाभाविक गुणों की चिन्ता करती है – गुण जैसे : इमानदारी, खराई, विश्वसनीयता, और वफादारी ।

<u>इमानदारी</u>
इमानदारी से बढ़कर और कोई बुनियादी नैतिक – संबंधी मूल्य नहीं है । हम इमानदारी को आदर के लोगों के साथ जोड़ते हैं, और हम उनकी प्रशंसा करते है और उनपर भरोसा करते हैं जो इमानदार हैं । परन्तु जो लोग महसूस करते हैं, इमानदारी इससे कहीं बढ़कर है । बातचीत में इमानदारी अच्छे-विश्वास का इरादा रखता है ताकि सच्चाई का प्रचार हो जितना अच्छा हम उसे जानते हैं ताकि धोखा देने या गुमराह करने की बातचीत से दूर रहें । इसमें तीन विस्तार हैं :

क. सच्चाई
सच्चाई का कर्तव्य जानबूझकर दिया गया गलतविवरण को रोक देती है । इरादा, सच्चाई और सच के बीच का निर्णायक विभेदीकरण करता है । गलत होना, झूठे होने के बराबर नहीं है, भले ही इमानदारी से की गई गलतियॉ भरोसे को चोट पहुॅचा सकते हैं जहॉ तक वे लापरवाह न्याय का संकेत करता है ।
ख. सद्भाव/बिना धोखे का
सद्भावने का कर्त्तव्य हर वास्तविकता को संभव होने नहीं देता जैसे आधा-सच, संदर्भ के बाहर कथन और शांति भी, जो ऐसे विश्वास को या छाप छोड़ जाता है जो झुठे या गलतफहमी पैदा करते हैं ।

ग. स्पष्टवादिता

ऐसे संबंध जिसमें विधिसम्मत भरोसे की अपेक्षा है, इमानदारी में स्पष्टवादिता, और खराई की जरूरत है, और कर्त्तव्य को प्रभावपूर्ण बनाता है ताकि दूसरे व्यक्ति को जरूरी सूचना मिल सके ।

कार्य में इमानदारी चोरी, छल-कपट, धोखाधड़ी, छलछंद और दूसरे प्रकार के छल-कपट को रोकती है । छल – कपट बेईमानी का खराब रूप है क्योंकि इसमें एक व्यक्ति सिर्फ धोखा ही नहीं बल्कि जो छल-कपट नहीं कर रहा है उसका फायदा भी उठाता है । उसके दो परिणाम : भरोसा और अच्छाई का उल्लंधन । हर झूठ अनैतिक नहीं होता, भले ही हर झूठ बेईमान होता है । यह सही है, इमानदारी अनुल्लंघवीय सिद्धांत नहीं होता । कभी – कभी इमानदारी को नैतिक रूप से न्याय दिया जा सकता है जैसे जब पुलिस चोरी – छिपे कार्य करती है या जब अपराधी या आतंकवादी से झूठ बोला जाता है जीवन बचाने के लिए । परन्तु स्वयं को मूर्ख न बनाएँ : कभी – कभी नैतिक रूप से झूठ बोलने की क्रिया बहुत ही कम होता है और इसमें एक बड़े उद्देश्य को पूरा करने की जरूरत है – ऐसा नहीं कि संचालन पर वार करना – या किसी बिक्री के लक्ष्य की प्राप्ती, कोई खेल या किसी उग्रीवाद को रोकना । हम जीवन बचाने की बात कर रहे हैं ।

<u>खराई</u>

खराई 'इन्टिगट' शब्द से आता है, जिसका अर्थ है : "एक या पूर्ण" इसका मतलब है इसमें व्यक्ति के जीवन के नैतिकता में कोई विभाजन नहीं है, कोई भी अलगाव नहीं है जिस तरह वह निर्णय लेता है हर परिस्थिति में जब वह घर में कार्य कर रहा होता है, जनता के साथ या अकेले में । एक या दूसरे समय में, हम सबने हमारे विवेक से अपने स्वभाव को अलग करने की अनुमति दिया है या धटनास्थल के अनुसार बदला है । इसके बावजूद भी, हममें से हर किसी की एक सीमा है; हमारी चुनौती है इन छः खम्भों में ईर्द-गिर्द रेखा खींचना ।

क्योंकि उसे जानना है कि वह कौन है और उसका मूल्य क्या है, एक इमानदार व्यक्ति स्वयं की प्रतिबिंब को देखने में समय देता है, ताकि कार्यक्रम, संकटकाल और जरूरतें दिन की उसके नैतिक जीवन के क्रम को निर्धारित नहीं करता है । वह नियंत्रण में रहता है । वह शिष्ट हो सकता है, और मनोहर भी, परन्तु कभी भी स्वयं के मान को नहीं घटाता और जो उसे अच्छा लगता है उसकी ओर ढ़ोंग करने का स्वभाव नहीं रखता । उसपर भरोसा किया जाता है क्योंकि आपको मालूम है वह कौन है : जो आप देखते हैं वही आप पाते हैं ।

इमानदारी के चार दुश्मन : १) स्वार्थ - जो चीजें हमें चाहिए; २) स्वयं-बचाव – जो चीजें हमें नहीं चाहिए; ३) स्वयं धोखा – एक परिस्थिति को स्पष्ट रूप से देखने को इन्कार करना; ४) स्वयं – धार्मिकता – "अंत जो है वह साधन का न्याय करता है" ऐसी मनोवृति ।

विश्वसनीयता (वायदा-निभाना)

जब हम वायदा करते हैं या वचन देते हैं जो दूसरे व्यक्ति में विधिसम्मत बुनियाद बनाता है ताकि कुछ कार्य करने में हमपर भरोसा किया जाए, हम ऐसे कार्यो को लेते हैं जो कानूनी कर्त्तव्यों के बाहर है । वादा निभाने का नैतिक क्षेत्र जिम्मेदारी डालता है ताकि वचनबद्धता को निभाया जा सके । कुयोंकि वादा निभाना विश्वासयोग्यता का महत्वपूर्ण पहलू है, यह सब महत्वपूर्ण है :-

\# **बहानेबाजी से दूर रहें**

आदरणीय लोग उनके कार्य को अच्छे और वाजिब तरीके से करते हैं न कि कार्य की रूप – रेखा इस प्रकार करते हैं ताकि कार्यो से भागने का न्यायसंगत रचना करें ।

\# **मूर्ख वचनबद्धता से दूर रहें**

ऐसे वचन देनें में सावधान रहें जो नैतिक कर्त्तव्यों को रचती है । एक वादा करने से पहले यह ठान लें कि आप उसे पूरा कर सकते हैं या नहीं अज्ञात या भविष्य के कार्यक्रमों के विषय सोचें जो इसे पेचीदा, या असंभव बना सकता है । कभी – कभी हम सबसे अच्छा कार्य करने का वादा दे सकते हैं । ऐसे कार्यो से दूर रहें जो स्पष्ट नहीं है । चुँकि दूसरे आपसे वही अपेक्षा करेंगे जिनका आपने उनसे वादा किया है, यह निश्चित जानें कि दूसरा व्यक्ति समझता है कि आप वादे के अनुसार क्या करेंगे ।

<u>वफादारी</u>

वफादारी एक खास नैतिक जिम्मेदारी है कुछ लोगों के रूचि को बढ़ाने और सुरक्षा देने के लिए । यह कार्य सामान्य कर्तव्य के सीमा के बाहर है जो हम सब दूसरों को ध्यान देने के लिए बॉटते हैं । कुछ संबंध जैसे – पति-पत्नी, नियोक्ता-कर्मचारी, नागरिक-देश, नियोक्ता - कर्मचारी, नागरिक – देश, राजविष्ठा, सच्चाई और श्रद्धा की अपेक्षा करते हैं ।

<u>वफादारी की सीमाएँ</u>

वफादारी एक पेचीढा कार्य है । यह मित्र, कर्मचारी, सहकर्मी और दूसरों के लिए असाधारण नहीं है कि वे हमारे ऊपर उनके इच्छाओं की प्रमुखता का दावा करते हैं हर नैतिक सोच-विचार के लिए । वफादारी एक आपसी विचार है, फिर भी, किसी को यह अधिकार नहीं कि दूसरे नैतिक सिद्धांतों का बलिदान करे । एक व्यक्ति को वफादारी के ढावे का इतना बड़ा जुर्माना देना पड़ता है ताकि संबंध को बनाए रखे ।

<u>वफादारी को प्रमुखता देना</u>

चूँकि कई व्यक्ति और गुट हमारे ऊपर वफादारी का दावा करते हैं, यह असंभव है कि सभी को एकसाथ, एक समय में आदर दें । परिणामस्वरूप, हमें वफादारी के कर्तव्य को तर्कशील रूप से लेना चाहिए । हमारे व्यक्तिगत जीवनों में, उदाहरण के रूप में, कई लोग हमसे अपेक्षा करते हैं कि सबसे उँचे दर्जे का वफादारी निभाएँ । यह सिद्ध रूप से वाजिव है और नैतिक भी कि बच्चों के पिता और पति के रूचि को देखें, भले ही हमारे कर्तव्यों को बच्चे, पड़ोसी, सहकर्मियों के अधीन हो ।

<u>गुप्त बातों का बचाव करना</u>

वफादारी का कर्तव्य हमसे गुप्त में कही गई बातों को रहस्यमयी रूप से रखने की मॉग करता है ।

<u>परस्पर विरोधी रूचियों को दूर रखना</u>

कर्मचारी और सार्वजनिक नौकरों के जुडे हुए जिम्मेंदारियॉं है ताकि विशेषता पर व्यावसायिक निर्णय लिया जा सके, जो व्यक्तिगत रूचियों के परस्पर विरोध में बाधा न डालता हो । उनका लक्ष्य है जनता के विश्वास को सुरक्षित और बनाए रखना; जिनपर वे चरम वफादारी के आभारी हैं ।

<u>दूसरा खम्भा : आदर</u>

जिस प्रकार एक व्यक्ति आदर दिखाता है, वह भिन्न है, परन्तु उसका सार आदर कों योग्य लोगों के लिए दर्शाना है, स्वयं को मिलाकर । हमारे कोई नैतिक कार्य नहीं कि हम हर लोगों को ऊँचा सम्मान दें परन्तु नैतिक रूप से हमारा कर्तव्य है कि हम हर व्यक्ति को आदर दें, भले ही वे जो भी हों और उन्होंने क्या किया है – भले ही वे आदर के योग्य न हों, वजह यह नहीं कि वे आदर के योग्य नहीं बल्कि इसलिए क्योंकि हम मनुष्य हैं । हमें उत्तम जिम्मेदारी निभाना है हर परिस्थिति में, भले ही जब हम बहुत बुरे लोगों के साथ व्यवहार करें ।

आदर नैतिक कर्तव्य पर केंद्रित है, कि योग्यता और व्यक्ति के सम्मान का आदर करें । आदर-हिंसा, अपमान, नियंत्रण में रखना, शोषण इत्यादी को दूर रखता है । वह सम्यता, शिष्टता, सम्मान, स्वायत्तता, बर्दाश्त और स्वीकृत्तता जैसे विचार को प्रतिविंबित करती है ।

<u>सभ्यता, शिष्टता, शालीनता</u>

आदरणीय व्यक्ति ध्यानपूर्वक सुनने वाला होता है भले ही उसका धीरज अशिष्ट व्यक्ति के साथ हो (आदर दोनों तरीके से कार्य करता है) फिर भी, आदरणीय व्यक्ति दूसरों का लिहाज़ कर मर्यादा और रूचि के स्वीकृत विचारों के अनुरूप होता है, और धमकी, सताव और हिंसा का श्रय नहीं लेता, जबतक कोई असाधारण या सीमित परिस्थिति न हो ताकि अनुशासन, □म या समाजिक न्याय को बनाए रखें । सजा का उपयोग मर्यादित करने और सामाजिक लक्ष्यों और उद्देश्यों के महत्व को बढ़ावा देने में होता है ।

स्वायत्तता

एक नैतिक व्यक्ति व्यक्तिगत पद-संबंधीय और प्रबंधक-संबंधी अधिकार का प्रयोग करता है जो दूसरों को सूचना का प्रयोज़न देता है और उनके व्यक्तिगत जीवन में सूचित निर्णयों को बनाने में मदद करता है ।

बर्दाश्त

एक नैतिक व्यक्ति, व्यक्तिगत भेद – भावों और यकीन को स्वीकार करता है बिना कुभाव के या किसी का न्याय करता है ।

तीसरा खम्भा : जिम्मेदारी

जीवन चुनाव से भरा है । जिम्मेदार होने का मतलब है : हमारे जीवन और चुनाव का कार्याधिकारी होना । इसका मतलब है हम जो भी कर रहे हों या जो भी हैं, उसका उत्तरदायी होना । इसका यह भी मतलब है कि हम क्या कर रहे हैं उसे पहचाने, और हम जो नहीं कर रहे हैं वह मायने रखता है और नैतिक रूप से जिम्मेदार होते हैं परिणामों के लिए । जिम्मेदारी हमसे दावा करती है । यह हमपर ऐसे कार्यो को लादती है जो हम कर सकते हैं, इसलिए नहीं कि हमें तनख्वाह मिलती है, परन्तु इसलिए कि हमें सहना पडेगा अगर ऐसा नहीं किया तो । जिम्मेदारी का सार निरंतर जागृति है हमारे चुनाव करने की आज़ादी और विवेक की क्षमता हमारे नैतिक स्वभाव को स्वायतशासन बनाता है और, हमारे स्वायत्तता के प्रयोग के लिए हमें जवाबदेह ठहराता है भले ही हम नैतिक सिद्धांतो का आदर या निरादर करते हैं जो जीवन को अर्थ या उद्देश्य देता है । विश्वासयोग्यता, आदरणीय, अच्छा और ध्यान रखने की जिम्मेदारी के बावजूद, नैतिक लोग उत्तरदायी होकर, उत्तमता में चलकर और आत्म – संयम का प्रयोग करते हुए जिम्मेदारी दर्शाते हैं । दूसरे शब्दों में, कार्यो की उम्मीद का प्रत्युत्तर देते हुए वे क्षमता को दर्शाते हैं ।

उत्तरदायित्व

एक उत्तरदायी व्यक्ति पीडित नहीं होता और दोष या दावा नहीं डालता दूसरों के कामों द्वारा । वह अपने स्वभाव और संघ के परिणाम का विचार करता है । वह साधारण मिलीभगत, दुष्ट के विजय को पहचानता है जब उसे रोकने के लिए कुछ नहीं किया जा सकता है । वह उदाहरण से मार्गदर्शन करता है ।

उत्तमता का पीछा करना

उत्तमता का पीछा करना एक नैतिक दिशा है जब दूसरे ज्ञान, क्षमता या कार्य करने की क्षमता को करने में सुरक्षित और प्रभावी रूप से राज़ी होते हैं ।

तत्परता

गलतियॉं करना और "उत्तमता" से भी कम होना मुश्किल से अनैतिक है परन्तु एक नैतिक कर्तव्य है सबसे अच्छा करना, तत्पर होना, विश्वसनीय होना, सावधान रहना, तैयार होना और सूचना रखना ।

परिश्रम करना

जिम्मेदार लोग जो शुरू करते हैं उसे खत्म भी करते हैं, कभी भी परशानी में समर्पण न करते हुए उसपर विजय प्राप्त करते हैं ।

निरंतर सुधार

जिम्मेदार लोग तरीके ढूँढते है ताकि वे अपना कार्य बेहतर रूप से कर सकें ।

आत्म – संयम

जिम्मेदार लोग आत्म – संयम का प्रयोग करते है, उत्कट प्रेम और इच्छा - रूचि बातों से दूर रहते हैं (कामुकता, घृणा, पेटूपन, लालच, डर, इत्यादि) वजह की पूर्ति के लिए, दूरदर्शित और एक अच्छा उदाहरण बनने के लिए । वे तृप्ति को जरूरी नहीं समझते या "किसी भी मूल्य में जीतना" वे महसूस करते हैं कि वे वैसा बनें जिस प्रकार वे चुनाव करते हैं, हर दिन ।

चौथा खम्भा : निर्मलता

निर्मलता और न्याय में समभावना, पक्षपाती न होना, समानुपात, खुलापन और ि□आ शामिल है इससे कई लोग सहमत हैं । कई लोग यह समझते हैं कि ऐसा सजा देना जो अपराध के अनुसार न हो वह गलत है । निर्मलता दूसरा कमजोर विचार है जो विधिसम्मत तर्क - निर्तक और अनुवाद के ज्यादा अधीन हो जाता दूसरे किसी भी नैतिक महत्व की तुलना में । असहमत दल के लोग स्वयं को अच्छा बताते हैं । परन्तु जब कुछ परिस्थितियॉं और निर्णय लेना गलत होता है, निर्मलता न्यायोचित नतीजे का उल्लेख करता है न कि एक अच्छे उत्तर की खोज ।

ि□आ

मतभेदों को ठीक करने में, किस तरह एक व्यक्ति न्याय की ओर बढ़ता है वह महत्वपूर्ण होता है क्योंकि परिणाम से एक व्यक्ति अपक्षपाती और खुले तरीकों को अपनाएगा ताकि जरूरी निर्णय लेने के लिए सूचना को इकट्ठा कर उसका मूल्यांकन करें । सही लोग सच के लिए रूकते नही हैं, वे वाजिब सूचना की खोज करते हैं एक महत्वपूर्ण न्याय करने से पहले ।

अपक्षपाती

निर्णय बिना किसी के साथ पक्षपात किए लिया जाना चाहिए ।

न्यायसंगति

ईमानदारी एक व्यक्ति, कंपनी, समाज से गलतियों के सुधार की मांग करती है, तत्परता और स्वेच्छापूर्वक रूप से ।
कमजोर या नासमझी का फायदा उठाना गलत है ।

पॉंचवां खम्भा : ध्यान देना

ख्याल रखना नैतिक मूल्यों का दिल है । सच्चे रूप से नैतिक होकर और दूसरों के हित के विषय में शुद्ध हृदय से ख्याल नहीं रखना, शायद ही संभव है । यह इसलिए है क्योंकि नैतिक मूल्य दूसरों के प्रति जिम्मेदारी के विषय में ही है ।
अगर आप जगत में अकेले जी रहे होते तो नैतिक मूल्यों की जरूरत नहीं और आपका दिल पत्थर जैसा ठण्डा होता किसी के बारे में सोचकर ।

दूसरों से प्रेम करने से आसान "मनुष्यत्व" को प्रेम करना है । जो लोग स्वयं को नैतिक समझकर, दूसरों के प्रति ख्याल रखने की मनोवृति नहीं रखते, वे दूसरों के साथ अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार करते हैं । वे इमानदार होना, तत्पर होना, निर्मल या आदरणीय होने के कर्तव्य को महसूस नहीं करते इसके अलावा कि इनका पालन करना उनके लिए समझदारी है ।

जो व्यक्ति सही में ख्याल रखता है वह दूसरों के शोक और खुशी में भावुक प्रत्युत्तर देता है । यह भले ही थोड़ा अलग लगे, यह लोगों के लिए असाधारण नही है कि वे उल्लेखनीय रूप से रूखा, अक्षम्य, या असहनशील हो अपने प्रियजन के प्रति – जबकि उसी समय एक उदार आत्मा रखते हैं आपने सहकर्मियों या अजनबियों के प्रति । कुछ निर्णय नैतिक होने पर भी चोट पहुॅंचा सकते हैं । परन्तु जानबूझकर किसी को भी चोट एक व्यक्ति अपना कर्तव्य निभाए ।

ख्याल रखने का ऊॅंचा रूप आदर देने का इमानदार अभिव्यक्ति है । इसे परोपकार की भावना कहते हैं, इसे सहायता के साथ मिलाया नहीं जा सकता । सहायता के लिए "भेंट" ताकि अपने व्यक्तिगत रूचियों को बढ़ावा देना – कपट करना है । इसका मतलब ये सब भेंट देना नहीं है । वे लगाई हुई पुॅंजी है, या टॅक्स कटने का तरीका ।

छठवां खम्भा : नागरिकता

नागरिकता हमें बताता है कि समाज का भाग होकर हमें लोगों के साथ किस तरह बर्ताव करना चाहिए और इसमें नागरिक – संवंधी सद्‌गुण और कर्तव्य मौजूद है । एक अच्छा नागरिक कानून जानता है और उसकी आज्ञा करता है, हॉं परन्तु यह काफी नहीं । वह दिन – भर के मुददों से सूचित रहता है, ताकि वह उसके कर्तव्य का प्रयोजन कर सके – एक स्वचालित लोकतंत्रीय समाज का सदस्य बनकर । इसका मतलब वह सिर्फ उसका ही कार्य समाज के लिए नहीं करता परन्तु आज और भविष्य के वंशों के लिए करता है । कानून की आज्ञा करने के बावजूद वह अपराध के संवंध में लिखित विवरण देता है, निर्णायक मंडली की सेवा करता है,

मतदान देता है और टॅक्स (कर) भरता है। एक अच्छा नागरिक वातावरण को सुरक्षित रखता है – कूडा – कर्कट साफ कर, सार्व जनिक वाहन का इस्तेमाल कर, साधनों का संरक्षण करता है। वह देने से ज्यादा लेता नहीं है।

नेकनामी या चरित्र ?

- जिन परिस्थितियों में आप रहते हैं वह आपके नेकनामी का निश्चय करती है।
  जिस सच्चाई का आप विश्वास करते हैं। वह आपके चरित्र को निर्धारित करती है।
- आपके नेकनामी पाना चाहिए;
  चरित्र वह है जो आप सही में है।
- नेकनामी चित्रण है;
  चरित्र चेहरा है
- नेकनामी बाहर से आती है;
  चरित्र अंदर से बनता है
- नेकनामी तब आती है जब आप एक नए समाज में आते हैं;
  चरित्र तब होता है जब आप चले जाते हैं।
- नेकनामी क्षणभर में बनती है;
  चरित्र जीवनसमय में बनता है
- नेकनामी कुकुरमुत्ते के समान बढ़ता है; चरित्र शाहबलूत के समान बढता है
  चरित्र शाहबलूत के समान बढता है
- एक समाचारपत्र का संवाद आपको नेकनामी देता है;
  एक परिश्रमी जीवन आपको चरित्र देता है।
- नेकनामी आपको अमीर या गरीब बनाता है;
  चरित्र आपको आनन्द या दुःख देता है।
- नेकनामी वह है जो लोग आपके विषय में समाधि – शिला पर खड़े बोलते हैं;
  चरित्र वह है जो स्वर्गदूत आपके विषय में परमेश्वर के सिंहासन के सामने बोलते हैं।

ईमानदारी के बिना जीवन

"जो कोई यह दावा करता है, कि वह उसमें जीवन बिताता है, उसे चाहिए कि वह स्वयं भी वैसा ही आचरण करे जैसा यीशु का था" (१ यूहन्ना २:६)

परमेश्वर के राज्य में इमानदारी का जीवन जीना एक पवित्र और धार्मिक बिताना होता है । यह एक मसीही के लिए संभव है यीशु के कार्य के लिए । हर समय हम विफल होते हैं, तब हमें अपना पाप परमेश्वर के सामने अंगीकार करना चाहिए, (उसका पश्चाताप करना चाहिए) (इसका मतलब है उस पाप से मुड़कर परमेश्वर की ओर चलना), और परमेश्वर ने हमसे वायदा किया है कि वह हमें स्वच्छ कर हमारा पुनरूद्धार करेगा (१ यूहन्ना १ : ७ – ९) अगर हम किसी पाप को हमारे जीवन में पालते हैं और पश्चाताप करने के लिए तैयार नहीं, फिर यह हमारे और परमेश्वर के बीच दीवार बन जाएगा और हम परमेश्वर की सेवा करने के लिए उत्साह खो देंगे । हमें लगेगा कि परमेश्वर हमसे दूर है क्योंकि हम उस तरह जी नहीं रहे होते हैं जिस तरह परमेश्वर चाहता है । वास्तविकता में पाप के साथ जीना बहुत खतरनाक है । हम बाहरी रूप से अच्छे से कार्य कर पाएँगे, परन्तु पाप हमें खा जाएगा और उसका पकड़ हमपर जोरदार होगा कि हमारा जीना दूभर हो जाए । इमानदारी हमारे सच्चे भावनाओं और अभिप्रेरणा को पहचानता है और सच्चाई से व्यक्त करता है । मसीही होने के नाते, हमे ऐसे जीवन बिताना चाहिए जो सच्चा हो, परमेश्वर और हमारे बीच (आखिर हम उससे कुछ नहीं छिपा सकते !) इमानदारी का विरोधी ढोंगीपन होता है । यीशु इस बात का हमेशा ख्याल रखता था (मत्ती ६:५, १६; मत्ती २३ : १३ – ३६; मत्ती २४ : ५१) दुर्भाग्य से कलीसिया में ढ़ोगीपन ने जड़ पकड़ लिया है और वह रूप ले लिया है । इसका कारण है कि लोग अपने आप से छुप रहे हैं या फिर होश सन्न हो गया है । ढोंगीपन एक व्यक्ति के मूल्य को बर्बाद कर देता है । "सबसे अधिक, अपने मन की रक्षा कर; क्योंकि जीवन का मूल स्रोत वही है ।" (नीतिवचन ४ : २३)

जीवन का दूसरा पहलू बिना इमानदारी के, लागू होती है उन अगुवों पर जो शिक्षा प्रदान करते हैं । हमें ऐसा कुछ भी नहीं सिखाना चाहिए जो हमने अपने जीवन में शुरू न किया हो । जो हम शिक्षा दे रहे हैं, अगर हमारे अन्दर वह कार्य न हो रहा हो तो लोगों को यह सच्चाई स्वीकार करना कठिन होगा (कुछ होंगे भी क्योंकि परमेश्वर हमारा इस्तेमाल कर सकता है, भले ही हम कैसे भी हो) यह और सच्चा साबित होता है जब हम ऐसा जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं जो सच्चाई का विरोधी हो । फिर भी, यदि हम जिस सच के विषय हम कहते हैं वह हमारे लिए कार्य करती है, तो दूसरे लोग यह देखेंगे और वे वही चाहेंगे जो हमारे पास है । वह हमारे शिक्षा को विश्वसनीयता देगा, और दूसरों को सच्चाई स्वीकार करने और उसपर कार्य करने की क्षमता देगा । कई मसीही अगुवों को जब वे प्रचार करते हैं तो "अच्छी बाते कहने के लिए" दबाव महसूस करते हैं, तो ऐसी स्थिति में वे किसी भी सच को पकड़ कर उस पर शिक्षा देते हैं । इस प्रकार की शिक्षा को थोडे समय के लिए अच्छा प्रतिउत्तर मिल सकता है, परन्तु लोग ऐसे संदेश को भूल जाते हैं जैसे ही वे दूसरा उपदेश सुनते हैं । जो अगुवे ऐसा करते हैं वे पाते हैं कि उनकी सभा में लोग बदलते नहीं हैं परन्तु आत्मिक रूप से एक ही जगह ठहरे हैं । ऐसी बातें होने पर उत्साहना कि कमी पाई जाएगी ।

हमें मसीही होने पर इमानदारी का जीवन व्यतीत करना चाहिए । स्वयं से झूठ बोलना या कोशिश करना कि आसानी से कार्य किया जाए, तो यह सब अल्प-कालीन सफलता ठहरेगा, परन्तु आगे चलकर हमें पता चलेगा यह कार्यशील नहीं और परमेश्वर की सेवा केलिए हमें अभिप्रेरणा की जरूरत है । हमें सावधान रहना है कि हम किस तरह जी रहे हैं और स्वयं और परमेश्वर के बीच इमानदार होना चाहिए; और ऐसा जीवन जीना चाहिए जो परमेश्वर को महिमा दे । हमें परमेश्वर का ध्वज चाहिए हमारे जीवनों के लिए, और जिस प्रकार लोग चाहते हैं वैसा नहीं क्योंकि कलीसिया में लोगों का ध्वज परमेश्वर से अलग हो सकता है । सामान्य बातें जरूरी नहीं कि हमेशा सही हो ! हमें परमेश्वर को अनुमति देना है कि क्या सही है वह निश्चय करें और उसे समझाने का मौका

प्रौढ़ होता हुआ ि□ा

परमेश्वर अपने लोगों को दूसरों के साथ डालता है ताकि आत्मिक अनुग्रहों का विकास हो । वह जो जल्दी कार्य करता हो उसे धीरे कार्य करने वाले के साथ, जो शांत हो उसे बातूनी के साथ : ताकि जो शीध्र हो वह बातूनी के साथ धीरज धरे ।
वह एक जो व्यवस्थित रहता है उसको एक ऐसे व्यक्ति के साथ रखेगा जो सफाई न रखता हो, ताकि दोनों को सबक मिले ।

<u>हमारा वातावरण हमारे प्रार्थनाओं का उत्तर होता है ।</u>
हम धीरज के लिए प्रार्थना करते हैं, और परमेश्वर ऐसे लोगों को भेजता है जो हमारी परीक्षा लेते हैं, क्योंकि "दुःख से धीरज" उत्प□होता है । (रोमि ५ : ३)
हम समर्पण के लिए प्रार्थना करते हैं, और परमेश्वर हमें दुःख देता है, क्योंकि हम पीडित होने से आज्ञाकारी होना सीखते हैं । (इब्रानि ५ : ८)
हम उदार होने के लिए प्रार्थना करते हैं, और परमेश्वर हमें स्वयं को बलिदान करने का मौका देता है "दूसरों के हित" के विषय में सोचने द्वारा । (फिलि २ : ४)

हम विजय के लिए प्रार्थना करते हैं, और संसार की हर परेशानियाँ हम पर आती हैं क्योंकि "वह विजय जिस से संसार पर जय प्राप्त होती है, हमारा यह विश्वास है कि यीशु ही परमेश्वर के पुत्र हैं । (१ यूह□५ : ४-५)
हम नम्रता और सामर्थ के लिए प्रार्थना करते हैं, और शैतान का दूत हमें परेशान करता है जबतक हम मिट्टी में नहीं होते और परमेश्वर को नहीं पुकारते । (२ कुरि १२ : ७-८)

हम परमेश्वर के साथ एकता के लिए प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर हमारे उत्तम दोस्तों में गलतफहमी पैदा करता है । **(यूह□१५ : २)**
हम अधिक प्रेम के लिए मांगते हैं, और परमेश्वर अजीब पीडा भेजता है और हमको ऐसे लोगों के साथ मिलाता है जिनके मुँह खोलने से हमको चोट लगता हो, क्योंकि प्रेम धीरजवन्त है । प्रेम कृपालु है । प्रेम ईर्ष्या नहीं करता । प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और घमण्ड से फूलता नहीं । वह अनरीति नहीं चलता । वह अपनी भलाई नहीं चाहता । वह झुंझलाता नहीं । वह बुरा नहीं मानता । वह कुकर्म से आनन्दित नहीं होता है । वह सब बातें सह लेता है । वह सब बातों का विश्वास करता है । वह सब बातों की आशा करता है । वह सब बातों में धीरज रखता है ।
(१ कुरि .१३ : ४-८; यूह□१५:९-१0)

हम यीशु मसीह के पीछे चलने मांगते हैं, और वह हमें हमारे घर और जाति से अलग कर देता है, क्योंकि उसने कहा है, "जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता ।" (लूका १४ : ३३)

हम मेमने के जीवन के लिए मांगते हैं, और हमें सबसे निचला कार्य दिया जाता है, या सताया जाता है, क्योंकि "वह सताया गया, तो भी वह सहता रहा और अपना मुँह न खोला; जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय या भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला ।" (यशायाह ५३ : ७)

हम शांति के लिए प्रार्थना करते है, और सबकुछ हमारे अन्दर और ईद-गिर्द गड़बड़ी उत्प□होती है, ताकि हम सीखें कि "जब वह चैन देता है तो उसे कौन दोषी ठहरा सकता है ?" (अय्यूब ३४ : २९)
हम चुनाव करते हैं कि परमेश्वर हमें यीशु मसीह के स्वरूप में बदलें ।

इमानदारी – एक पवित्र शास्त्रीय धारणा

आज हमारी दुनिया झूठ, धोखा, ढ़ोंगीपन और छल-कपट से भरी है । यहॉ तक कि हमारे देश को अनौपचारिक रूप से देखने वाला भी देख सकता है कि जीवन के हर क्षेत्र में, राजनीतिज्ञ, अधिकारी, वर्ग, व्यवसायी, और सड़क पर चलने वाला व्यक्ति में ईमानदारी का मौत हो रहा है । सच्चाई और ईमानदारी अगुवों और कुछ मसीही संस्थाओं से निकल गई है । दुर्भाग्यवश, मसीहियों का नैतिक मूल्य अविश्वासियों से हटकर नहीं है, इसमें कई अपवाद हैं । मसीही, दूसरे लोगों की तरह नगर-पालिका संबंधी अधिकारियों को घर-निर्माण के अनुमति-पत्र के लिए घूस देते हैं । हम आयकरों को झुठला देते हैं, कार्यालय का समय चुराते हैं दूसरों की तरह । दूसरों की तरह हम अपना वचन नहीं रखते । प्रेरित पौलुस मनुष्य के नीतिभ्रष्तता के विषय कहता है "उनका गला खुली हुई कब्र है । उन्होंने अपने जीभ से छल किया है ।" (रोमि ३ : १३) यह कितना सच है ।

हर बच्चा पॉच वर्ष तक इमानदारी में चलता है जबतक वे बालिग दुनिया के प्रभाव का शिकार बनते हैं । यहॉ से उनकी शुरूवात होती है अनजाने रूप से सच्चे प्रतीत होनेवाले अभिनेता बनने की । इस प्रिक्रया के उत्पादन को प्रौढ़ता कहते हैं ।

ईमानदारी का अर्थ है संघटित होना, एक व्यक्ति का बाहरी कार्य अन्दरूनी कार्य से जुड़ा होना, उसका कार्य हृदय से होना चाहिए । एक ईमानदार व्यक्ति "अपने हृदय से होना चाहिए । एक ईमानदार व्यक्ति "अपने हृदय से सच ही बोलेगा" (भजन संहिता १५ : २) हमारा बाहरी जीवन हमारे अन्दरूनी परिस्थिति के साथ एकरूप होना चाहिए । यही मसीही ईमानदारी का सार है – "मसीह में परिपूर्ण, "जहॉ मनोवृत्ति, अभिप्रेरणा, इरादा, सोच, स्वभाव और बोलचाल मसीही प्रभुता में एकत्रित है । यह सिर्फ खराई के लिए दूसरा शब्द ही नहीं, पवित्र शास्त्रीय ईमानदारी परिपूर्णता के लिए बुलाती है । (सम्पूर्ण रूप से, परिपूर्णता) जो परमेश्वर की ओर से आती है । परमेश्वर में जरा भी बदलाव नहीं । वह स्थिर और एकरूप है । ईमानदारी ज़ोर देता है कि हम परमेश्वर और लोगों के बीच का लेखा बनाए रखें । एक व्यक्ति जो परमेश्वर के वचन को मूल्य देता है वह अपने वचन का मूल्य रखेगा । खराई का व्यक्ति जिम्मेदार होता है जो भी वह करता या बोलता है उन बातों में । जब वह गिरता है, वह पाप का अंगीकार करता है । ईमानदारी दो शब्दों से बना है, "अन्दरूनी ढ़ृढ़ निश्चय ।" सामर्थ अन्दर से आता है । ढ़ृढ विश्वास मसीह –अधिकृत पर निर्धारित है जो पवित्र है न कि बहाव के विरूद्ध जाना । दाषभावनाओं को प्रकट होने के लिए कई परीक्षाओं से गुजरना पड़ता है । ईमानदारी परमेश्वर के चरित्र का पूर्ण और मौलिक रूप है । इसलिए, हमें ईमानदारी को हानिकर रूप से नहीं दर्शाना चाहिए क्योंकि हममें ईमानदारी की कमी है । विश्वासयोग्य दासों के लिए महत्वपूर्ण बात स्वयं का आदर नहीं है, परन्तु सिद्धांत, चट्टान जैसा खडा रहना, स्वाद के मामले में, प्रवाह के साथ तैरना ।"

एक ईमानदार व्यक्ति अपनी वाचा को रखता है भले ही उससे चोट पहूँचता हो (भजन संहिता १५ : ४-५) न्याय और भले के लिए खड़े होने के लिए उसे अपनी नेकनामी और सफलता को न्योछावर करने के लिए तैयार है । योनाथान ने अपना जीवन कई बार दॉव पर लगा दिया दाऊद के बचाव में जो शाऊल के विरूद्ध खड़ा था । ऐसी वचनवद्धता कीमती होती है । ऐसे मित्र भी कम होते हैं । इब्रानी लड़कों ने मूर्ति के सामने झुकने का इन्कार किया जो राजा नबूकदनेसार के सामने रखी गई थी : परमेश्वर ने उन्हें जलते भट्टी से बचाया । कई बार विश्वास और ईमामदारी की परीक्षा का अंत तात्कालिक खुशी नहीं देता ।

अगर हमें ईमानदार लोग बनना है तो सबसे पहले हमें अच्छा बनना है । एक अच्छा पेड़ ही अच्छे फल उत्पन्न कर सकता है । ईमानदारी में सच्चे लोग उनकी दुर्बलताओं को पहचानते हैं और यह भी जानते हैं कि वे पापी हैं । फिर भी, समस्या यह है कि कई लोगों में ईमानदारी की कमी है, इसलिए अपने पाप से अनजान हैं । जब धार्मिक लोगों में ईमानदारी नहीं पाई जाती, तो परिस्थिति और भी दुःखद हो जाती है । यीशु मसीह फरीसियों के ढ़ोंगीपन को दोषी ठहराता है (मत्ती २३) उनकी समस्या यह थी कि वे धार्मिक थे । परन्तु, उनका धर्म बाहरी था, अन्दरूनी नही : यह लोगों को प्रभावित करने के लिए था, ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए नहीं । वे ऐसे दिख पडते थे जैसे वे परमेश्वर के वचन में जी रहे हों, परन्तु वे कब्रें के समान थे : बाहरी रूप से अच्छे, परन्तु अन्दर से मृत हडिडयॉ । वे पवित्रता और धार्मिकता का अभ्यास की उपेक्षा करते थे और ढ़ोंगी रूप से अपने विश्वास को घोषित करते थे । उनके पास ईश्वरत्व का रूप था, परन्तु कोई सामर्थ नहीं (२ तीमु ३ : ५) वे परमेश्वर के नियम के उद्देश्य को नहीं समझते थे । नियम हमारे घमण्ड को पिसने के लिए होता है, यह दर्शाता है कि अगर हममें ईमानदारी होता, तो हम सलाखों के पीछे होते । इसके बजाए, वे नियम का इस्तेमाल अपने घमण्ड की अतिप्रशंसा करने के लिए करते थे, स्वयं को शावाशी देने के लिए । इस तरह हम भी करते हैं ।

ईमानदारी कमताई में पाया जाने वाला गुण है आजकल, यह कठिन हो गया है कि हम इस गुण को बनाए रखें । धोखा करना, हर जगह पाया जाता है, परीक्षा स्थलों में भी यह पाया जाता है जहाँ विद्यार्थी निरीक्षकों के मिलीभगत में दूसरों का नकल करते हैं । जब अपराधी पकड़े जाते हैं, तो उन्हें पकड़े जाने का खेद होता है नकल करने से ज्यादा । एक बात में गिरना आसान है ।

फरीसी यीशु मसीह को फँसाने निकल पड़े । वे उनके पास आए और कहने लगे, "हे गुरू हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं । आप परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाते हैं । आप किसी की परवाह नहीं करते; क्योंकि आप मनुष्य का मुँह देखकर बातें नहीं करते ।" (मत्ती २२:१६) (अगर वे यह जानते थे, तो उसकी शिक्षा का आज्ञा क्यों नहीं करते थे ?) यह महसूस किए बिना, उन्होंने हमें ई मानदारी के तीन गुणों का परिभाषा दिया ।

- लोगों को खुश करनेवाला नहीं – एक ईमानदार व्यक्ति जनसंख्या पर आधारित निर्णयों को या सुविधों को नहीं देखता । वह दूसरों को दिखाने के लिए कार्य नहीं करता । उसका स्वभाव एक-सा रहता है भले ही उसके उपर नजर हो या नहीं । हमारे हृदयों में हमें लोगों की चिन्ता होती है कि वे हमारे विषय में क्या सोचते हैं, न कि परमेश्वर हमारे विषय में क्या सोचता है । प्रभु के प्रस□रखने के लिए, न कि लोगों को, हमारा प्रमुख चिन्ता होना चाहिए । हमें कोई भी काम डर, प्रेम या कृपादृष्टि में होकर नहीं करना चाहिए ।

- लोगों के दबाव में नहीं आना – बुद्धिमानों या अमीरों बलवन्त दबदबे में आना आसान है । गरीब को डाँटना आसान है या भददे या दुर्बल को । यीशु मसीह को हिरोद राजा का शान, या भावना का सामरी स्त्री की दुर्दशा पर तिरस्कार नहीं आया । प्रेरित पतरस जो गैर-यहूदी के साथ बैठकर खाना खाने में मगन था, वह यहूदियों के डर से संगति से उठ गया । (गल २ : ११) प्रेरित पौलुस ने उसे ईमानदारी के इस मुददे पर फटकार कर कहा, "मनुष्य का भय खाना फन्दा हो जाता है ।" (नीति २९ : २५)

- सच्चाई का शिक्षक बनना – हमारे वचन और जीवन जो सच्चा है उसकी ओर इशारा करना चाहिए । हमें स्वयं को सच बोलने के लिए अनुशासित करना पडेगा – जो हम बिना सोचे करते हैं । एक ईमानदार व्यक्ति को धमकी या घूस नहीं दिया जा सकता । यीशु मसीह शत्रु के सामने झुक नहीं सकता, भले ही शैतान ने उसे धरती के सभी राज्यों को देने के लिए फुसलाया था । न ही उसने स्वर्गदूतों को □स पर बाद के पीडा के समय उन्हें बुलाया ।

आधुनिक, "शिष्ट" दुनिया में सच्चा जवाब बहाने का जगह ले लेते हैं । यह बात कलीसिया को रोगी बना दिया है । प्रार्थना का वायदा हमारे अन्तःकरण को सांत्वना देता है, भले ही हमें समय न मिले कि हम ईमानदार रूप से दूसरों की मदद करें जो जरूरत में हैं । हमें वचनबद्धता की कमी के बजाए, झूठ बोलना ज्यादा अच्छा लगता है । हम प्रार्थना- निवेदन के बजाए गपशप में ज्यादा समय बर्बाद करते हैं । हमें अपनी जीभ पर नियंत्रण करना कठिन लगता है । स्वयं-धार्मिक □ध के तेज धार में हम आलोचना और दोष लगाते हैं । हम उन्हें काट डालते हैं, जो हमपर भरोसा करते हैं, "प्रेम में सच बोलने" के दिखावे में । हमें दुनिया और जनसंचार माध्यम ने यह सोचने पर मजबूर किया है कि झूठे वादे और मीठी बातें ढोंगीपन के पहाड़ को ढाँप देगी । क्या हम अपने वचन में सच्चे हैं ? कलीसिया में प्रगति नहीं हो सकता अगर उसके सदस्यों में धोखा दिखता हो । कलीसिया को ऐसे लोगों की जरूरत है जो ढोंग से दूर हों । कई लोग विश्वास को गले लगाएँगे अगर मसीही जीवनों में ईमानदारी का प्रस्तुतीकरण होगा ।

ईमानदारी बोल में सच्चाई की माँग करती है । "झूठों से प्रभु को घृणा आती है, परन्तु जो विश्वास से काम करते हैं, उन से वह प्रस□होता है । (नीति १२:२२) एक ईमानदार व्यक्ति धोखा या चोरी नहीं करता । "घटती – बढ़ती बटखरे और घटते – बढ़ते नपुए इन दोनों से प्रभु धृणा करता है ।" (नीति २०:१०) इस नई सदी में सुविधाजनक मसीही एक नमूने बन गए हैं / या तो फिर वे बहुत ही थके या अनजान बन गए हैं कोई भी भि□ता के लिए । वे सबसे निचले सामान्य गुण की ओर इतने आकृष्ट हो जाते हैं यह बहाना बनाकर कि हर कोई यह कर रहा है । छोटी – छोटी बातों में समझौता करना आसान है क्योंकि उनसे समाज में फर्क नहीं पड़ता । परन्तु, हर बात महत्वपूर्ण है क्योंकि वह विषय-वस्तु को निश्चित करता है ।
याकूब की फटकार मसिहियों में ईमानदारी की कमी की आलोचना किया है यह हमारे दिलों को झंझोड़ना चाहिए । इसके वावजूद कि धार्मिक बनें, उन्होंने पक्षपात किया (२:९), करूणा के बदले सिर्फ बातें (२:१४-१६), एक-दूसरे को शापित करते

हैं (३:९-१२) डाह और विरोध को अनुमति देते हैं ताकि बखेड़ा और हर प्रकार का दुष्कर्म हो । (३:१६) हमारे कलीसियाओं की यही लेखा है । लोगों को विश्वास नहीं होता कि हम बचाए गए हैं, अगर वे हमारे जीवनों में बदलाव नहीं देखते । मसीही बनना होंठ से बोलना नहीं: इसमें वे बातें शामिल हैं जो हम अपने जीवनों में करते हैं ।

अय्यूब ने धन, उसके बच्चे, मित्रों का आदर यहाँ तक कि पत्नी का सहयोग भी खो दिया । फिर भी वह निराश नहीं हुआ । उसने अपने ईमानदारी को छोडने का इन्कार किया । उसने नम्रता का दिखावा या मित्रों की चेतावनी से सहमत नहीं हूआ । बजाए, उसने घोषित किया, "........ जब तक मेरा प्राण न छूटे तब तक मैं अपनी खराई से न हटूंगा । (अय्यूब २७:५) हमें भी यही घोषणा करना चाहिए । जब हम ऐसा एक जीवन व्यतीत करते हैं जो यीशु मसीह को प्रतिबिंचित करता है, हमारे जीवन में उसकी ज्योति पाप और विद्रोह के अन्धियारे को दर्शाती है।

ईमानदारी जोखिम से भरा होता है । अय्यूब के मित्रों ने सोचा कि वह जिददी है और कोई गुप्त बात छुपा रहा है । एक ई मानदार व्यक्ति से शायद लोग घृणा करें । ईमानदारी में कई बार उपहास और गलतफहमी होती है । सुलैमान राजा कहता है, "हत्यारे लोग खरे पुरूष से बैर रखते हैं; और सीधे लोगों के प्राण की खोज करते हैं ।" (नीति २९:१0) दानिय्येल हमारे लिए एक नमूना है । उसका नित्य का कार्य आत्मिक मूल्यों के साथ एकरूप था । दुनिया में उसका चलन परमेश्वर के चलन के साथ ताल-मेल रखता था । फिर भी, उसके दुश्मन कम नहीं थे । वह सिहों की गुफा में फेंका गया । करूणात्मक रूप से, खराई बिना पाप के सिद्धता को बराबर नहीं मानती । परमेश्वर के सम्मुख दोषरहित रहने के लिए, हमें हमारे पापो के साथ व्यवहार करना चाहिए जो परमेश्वर या लोगों के बीच हो, सच्चाई और एकरूप होकर, और दूसरों को नम्रता और विश्वसनीयता से प्रेम करना चाहिए । लोगों को मालूम है कि हम गलती करेंगे । उन्हें यह जानना है कि क्या हममें इतनी खराई है कि हम इन गलतियों का अंगीकार करें । परमेश्वर चाहता है कि हम खराई में सच्चे बनें ।

खराई का व्यक्ति सिद्धांतों के अनुसार चलता है । वह सच्चाई, से धार्मिकता से, सच्चाई से चलता है । "जो कोई ऐसी चाल चलता है वह कभी न डगमगाएगा ।" (भजन संहिता १५: ५) व्यावहारिक रूप से परमेश्वर के वचन की ओर आज्ञाकारिता, दूसरों को हमारे ऊपर विश्वास व्यक्त करने में मदद करता है । परमेश्वर के वचन से हमें सीखना चाहिए, संस्कृति से नहीं । हमें अपने आप को अनुशासित करना चाहिए पवित्र आत्मा के सहयोग से खराई में चलने की । हमारे कलीसिया या नई सदी को विद्वानों की, योजना बनानेवालों या रणनीति-कुशल लोगों की नहीं बल्कि साधारण, स्पष्टवादी, सच्चे स्त्री – पुरूषों की जरूरत है । ऐसे समय में बलवन्त मन, महान ह्दय, सच्चे विश्वास और तैयार हाथ, ऐसे लोग जो इच्छा रखते हैं कार्य करने; ऐसे लोग जिनके पास आदर है; ऐसे लोग जो झूठ नहीं बोलते ऐसे लोगों की जरूरत है ।

हमारी परिस्थिति उबलते पानी में मेंढक के समान है । क्योंकि पानी धीरे गर्म हुआ, मेंढक को आने वाले खतरे का अंदाजा नहीं रहा : बजाए, उसको यह गर्मी अच्छा लगा । यह हमारे समाज में हुआ है जहाँ हम रहते हैं, एकसाथ नहीं परन्तु धीरे – धीरे । हमारी दुनिया आत्मिक अंधकार में रहती है, जो परमेश्वर से अलग है । परन्तु, लोगों ने समायोजन कर लिया है और आराम महसूस कर रहे हैं । परिणामस्वरूप हमें खतरा हर तरफ दिख रहा है । समय हो गया है कि हम जागें और खतरे के प्रति सावधान रहें । क्या आप ऐसा करेंगे ?

खराई = जो हम सोचते हैं वही योजना करते है, जो हम बोलते हैं, वही करते हैं और यह सब एक और बराबर है !

ईमानदारी का पवित्र शास्त्रीय धारणा

हम इतिहास के समय में जी रहे हैं, जहाँ व्यक्तिगत खराई आसानी से नहीं मिलता, और न ही उसे महत्व दिया जाता है। फिर भी, परमेश्वर खराई को बहुत बड़ा महत्व देता है।
पवित्र शास्त्र क्या कहता है

ऑक्सफॉर्ड शब्दकोष खराई के विषय में कहता है : "......नैतिक सीधापन, सच्चा, परिपूर्ण, ..." ये शब्द मिलकर ई मानदारी का अर्थ बताते हैं।
परमेश्वर ने अय्यूब को ईमानदार व्यक्ति ठहराया है क्योंकि कठिन परीक्षाओं में भी वह विश्वासयोग्य रहा (२ :३) परमेश्वर सुलैमान राजा के शासन को स्थापित करने का वादा करता है अगर हम खराई में जिएँ
(१ राजा ९ :४) खराई और सच्चाई हमारे लिए सुरक्षा का ढ़ाल है जब हम अपनी आशाएँ प्रभु में रखते हैं
(भजन संहिता २५ :२१) परमेश्वर ने शमूएल से कहा, "न तो उसके रूप पर दृष्टि कर, और न उसके डलिडौल की ऊँचाई पर; क्योंकि मैंने उसे अयोग्य जाना है। मुझे प्रभु का देखना मनुष्य का सा नहीं है; मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु प्रभु की दृष्टि मन पर रहती है।" (१ शमूएल १६ :७) इस आयत में "खराई" शब्द का इस्तेमाल नहीं है। फिर भी, चुँकि खराई परिपूर्णता से संबधि है, यह अन्दरूनी जीवन का बाहरी रूप से एकरूप होने का मामला है। यह मामला हृदय का है।

पुराने नियम में हृदय सचेत भाग है, वह अन्दरूनी व्यक्ति, हर कार्य को करता है जो एक व्यक्ति हर कार्य को करता है जो एक व्यक्ति को मनुष्य बनाता है। युनानी शब्द "कर्डिया" का इस्तेमाल पुराने नियम में किया गया है अर्थो के साथ। मनुष्य का हृदय बहुत ही व्यक्तिगत है; उसकी मनोवैज्ञानिक महत्वपूर्ण अंश। जो सचेत जागृति हममें से हर एक में पाई जाती है, जो हमें मनुष्य बनाता है, और परमेश्वर की ओर आत्मिक रूप से अनुकूल या प्रतिकूल होना, यह शब्द "हृदय" से व्यक्त होता है।

मसीही स्वभाव सिर्फ सच्चे विश्वासियों से अपेक्षा किया जाना चाहिए। सिर्फ वे लोग जो पवित्र आत्मा से पुनर्जीवित होते हैं, और नया स्वभाव रखते हैं और परिपूर्णता में चलने का खोज करते हैं पवित्र आत्मा के सामर्थ से वे ही खराई का जीवन जीने की कोशिश कर सकते हैं।

भजन संहिता २४ : ४ अ, हम पढ़ते है निर्दोष और शुद्ध हृदय के विषय में। १ तीमु २ : ८ में प्रार्थना के लिए पवित्र हाथों को उठाना, और भजन संहिता १५ जीवन में नैतिक और आत्मिक शुद्धता जो परमेश्वर परमेश्वर के शरणस्थल में रहते है उनके विषय में कहा गया है। भजन संहिता १९ : १२ – १४ में, दाऊद ने प्रार्थना किया कि परमेश्वर उसे मदद करे ताकि वह अपना जीवन शुद्ध रखें। हम में से कोई भी क्षमता नहीं रखता कि वह दूसरों के इरादों का न्याय करें। सिर्फ परमेश्वर ही ऐसा कर सकता है, और इसी कारण दाऊद भजन संहिता १९ में प्रार्थना करता है। फिर से, प्रभु भोज में आने से पहले, पौलुस उन लोगों को चेतावनी देता है जो इस भोज में सहभागिता लेना चाहते हों कि वे परमेश्वर की वचन के अनुसार स्वयं को जाँचे। यह हममें से हर कोई स्वयं के लिए कर सकता है, परन्तु दूसरों के लिए ऐसा करने की क्षमता नहीं रखते। इसलिए खराई चरम रूप से हृदय का मामला है, ऐसा जीवन जीना जो परमेश्वर के सम्मुख पारदर्शी हो और फिर यह दूसरों के सम्मुख पारदर्शी बन जाता है।

एक करीबी संबंध है ईमानदारी का जीवन की खोज और परमेश्वर और मनुष्य के सम्मुख साफ अंतःकरण रखना है और उसने पहचाना कि उसके विचार, इरादे और मनोवृत्तियाँ, ये सभी का न्याय परमेश्वर करेगा। १ कुरि १ : १२ पर एक विवरण बताता है : "अन्तःकरण – प्राण को चेतावनी देनेवाला यंत्र जो मनुष्यों को उनके इरादों और कार्यो पर ध्यान लगाने की अनुमति देता है और नैतिक मूल्यांकन करता है कि क्या सही और क्या गलत है .... जिस प्रकार परमेश्वर ने रेखांकित किया है, अंतःकरण को ऊँचे नैतिक और आत्मिक स्तर के उत्तम दर्जे तक सूचित करना चाहिए, जिसका मतलब है परमेश्वर के वचन के द्वारा पवित्र आत्मा को समर्पित करना (रोमि १२ : १; १ तीमु १ : १९; २ तीमु २ : १५; इब्रानी ९ : १४; १0: २२) पौलुस का जागृत अंतःकरण उसको पूरी तरह छुटकारा दिया (प्रेरितों के काम २३ : १; २४:१६; १ तीमु १ : ५; ३ : ९; २ तमिु १ : ३) परन्तु, आखिरकार, सिर्फ परमेश्वर (प्रेरितों के काम २३ : १; २४), मनुष्य के इरादों का न्याय कर सकता है

(१ कुरि ४ : १-५) इसलिए, खराई का जीवन जीने के लिए, एक मसीही को संघर्ष करना चाहिए कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच साफ इरादा रखे ।

संबंधों में खराई

मनुष्य जो परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए हैं, वे संबंध - रूपी होते हैं । चूँकि मसीही विश्वास जीवन के विषय में हैं, खराई हमारे व्यक्तिगत संबंधो में दिखना चाहिए । हमारा परमेश्वर के साथ संबंध मौलिक है, परन्तु हम वहाँ रूक नहीं सकते । हमारे प्रभु ने कहा कि पहली आज्ञा यह है कि परमेश्वर से आत्याधिक रूप से प्रेम करें, परन्तु वह आगे कहता है कि दूसरी आज्ञा पहली आज्ञा के तरह है जो कहता है पड़ोसी से स्वयं जैसा प्रेम करो । (मत्ती २२ : ३४ – ४0) हमारे पारस्परिक संबंधो के गुण और गहराई सब परमेश्वर के साथ संबंध पर निर्भर है ।

परमेश्वर के साथ संबंध रखना

दस आशओं में पहली चार आज्ञाएँ परमेश्वर के साथ संबंध के विषय में बताता है, जबकि आखिरी ६: आज्ञाएँ हमारे साथी मनुष्यों के साथ संबंध के विषय में कहता है । पवित्र शास्त्र की आयतें यह स्पष्ट बताता है । हमें परमेश्वर के साथ संबंध की सुरक्षा करना चाहिए हर मूल्य में, क्योंकि यहाँ से खराई शुरू होती है । भजन संहिता ५१ में (दाऊद का पश्चाताप – संबंधी भजन), भले ही उसने आज्ञाओं को तोड़ा है, दाऊद कहता है, "मैं ने केवल तेरे ही विरूद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है ....." (आयत ४) इसकी वजह यह है कि उसने महसूस किया कि परमेश्वर के साथ उसका संबंध प्रमुख था उसके जीवन में और हर पाप आखिर में पवित्र प्रभु के विरोध में पाप है । भजन संहिता १३९ : २३-२४ में, और भजन संहिता १९ : १४ में, फिर हम भजन गाने वाले की इच्छा को देखते हैं जो परमेश्वर के सम्मुख सच्चा होना, और विश्वसनीयता का जीवन व्यतीत करना स्वर्गीय पिता के सम्मुख ।

स्वयं

कोई भी स्वयं से भाग नहीं सकता; हमें जीवन भर स्वयं के साथ जीना है । इसलिए हमें खराई का जीवन व्यतीत करना है जहाँ तक व्यक्तिगत जीवन संबंधित है । सच्चा विश्वास दिख पड़ता है जब आप विचारों के साथ अकेले में हैं । हमारे विचारों में, एहसास में और भावनाओं में सच्चाई, ये सब खराई का जीवन व्यतीत करने का एक भाग है । हमें एक नाजुक तुलना रखना है । एक तरफ, अत्यंत रूप से स्वयं के विचार में बसना, जबकि दूसरी तरफ आत्म – निरीक्षण के लिए बिल्कुल समय नहीं निकालना । दोनों भी खतरनाक है । हमें यहाँ एक संतुलन बनाए रखना है । मसीही जीवन का लक्ष्य यीशु मसीह में बढना और उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करना है । (१ तीमु ४ : ७ जहाँ हमें धार्मिक होने की आज्ञा दी गई है) खराई का जीवन जीना निश्चित रूप से मसीही चरित्र और कार्य में बढ़ने में सहायता करेगा ।

दूसरों के साथ संबंध रखना

परमेश्वर से प्रेम और पड़ोसियों से प्रेम साथ – साथ चलता है । पवित्र शास्त्र हमारा दूसरों के साथ संबंध के विषय में बताता है । जिस तरह परमेश्वर सबके भले की खोज करता है, हमारे अन्दरूनी व्यक्तिगत संबंधों में हमें भी इस लक्षय की नकल करना चाहिए (मत्ती ५ : ४३-४८ देखें) जब दूसरों के भले की खोज करते हैं, कभी – कभी इसमें अनुशासन और डाँट फटकार, परन्तु लक्ष्य दूसरों के भले के लिए होना चाहिए, उनकी हानि के लिए नहीं । यीशु मसीह ने भाई - बहन के साथ सही होने के महत्व को बताया, अगर संबंध में दरार हो, और यह सब प्रभु के सम्मुख, आने से पहले करना चाहिए । दूसरे शब्दों में एक टूटा संबंध को जोड़ना प्रमुख होना चाहिए, सच्ची आराधना करने से पहले । आपके पहल करने के बाद, अगर साकारात्मक प्रतिउत्तर न हो दूसरे तरफ से, आप टूटे संबंध के लिए जिम्मेदार नहीं हैं । यह दूसरे व्यक्ति पर निर्भर है कि आपके इच्छा के स्वीकार करे ताकि समझौता हो जाए, और संबंध फिर से जुड़ जाए । दरअसल बात यह है कि परमेश्वर हमारे और संगी-मसीहियों के संबंध को गंभीरता से लेता है, इसलिए हमें भी ऐसा करना चाहिए । ईमानदारी के जीवन की खोज करना हमारे अन्दरूनी व्यक्तिगत जीवन में खराई के साथ बढ़ने में एकरूप है ।

नैतिक ईमानदारी

परमेश्वर ने नैतिक नियम बनाए हैं । अगर हम उसके नियम की उल्लंघन करते हैं या तोडते हैं, यह हम अपने ही संकट के लिए करते हैं । हमारा मसीही विश्वास स्पष्ट रूप से यह बताता है कि नैतिक परम तत्व हैं जो परमेश्वर ने हमको पवित्र शास्त्र द्वारा

प्रकाशित किया है । तुम चोरी नहीं करोगे । तुम घात नहीं करोगे । इस परम तत्व के दो प्रकार हैं । जब मैं पाठशाला में था, नैतिक शास्त्र हमारा एक विषय था । नैतिक निर्देशन, जैसे भला करना, दूसरों को मदद करना सिखाया जाता था । मनुष्य नैतिक मुददों के विषय में चिन्तित रहता है क्योंकि हम मनुष्य के स्वरूप में सृजे गए हैं । फिर भी हरेक को पुनजीवित होने की जरूरत है, यह तब संभव है जब पवित्र आत्मा हमें नया जीवन और नया स्वभाव दे । यहीं से सच्ची शिक्षा शुरू होती है । एक मनुष्य के लिए परमेश्वर को भाता हुआ जीवन जीना, उसके लिए एक व्यक्ति को नए सिरे से जन्म लेने की जरूरत है । मीका नबी हमें बताते हैं कि परमेश्वर मनुष्यों से किस प्रकार के जीवन की इच्छा रखता है, परन्तु विशेष रूप से प्रभु यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा गोद लिए बच्चों के लिए है : "वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है; और प्रभु तुझ से इसे छोड़ और क्या चाहता है, कि तू न्याय से काम करें, और कृपा से प्रीति रखे, और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले ? (६:८) ।" परमेश्वर को भाता हुआ जीवन, जीने के लक्ष्य से जुड़ा है और यह शुद्ध मन की ओर निरंतर कोशिश रहेगा । सोच में शुद्धता मसीही जीवन के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहीं पर खराई का युद्ध लड़ा जाता है, "सोच को बोएँ, कार्य की फसल काटना, एक कार्य को बोना, आदत के फसल काटना, एक आदत को लेना, लक्ष्य के फसल को काटना ।" कितना सच है । एक व्यक्ति के मन को शुद्ध रखना ताकि खराई का जीवन व्यतीत करे नैतिक मामलों में, यह स[illegible] मसीही जीवन और कार्य के लिए महत्वपूर्ण है । उदाहरण के लिए किताबों, टी.वी. , रेडियो, पत्रिका, कंप्यूटर – इंटरनेट इत्यादि के महत्व को देखें ।

इन सबका हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव होता है, भले ही हम इसे महसूस करते हों या नहीं । नैतिक और आत्मिक शुद्धता का जीवन जीने के लिए, हमें यह सब बातें गंभीरता पूर्वक लेना चाहिए । इसलिए यह ठीक कहा गया है कि पश्चाताप मसीयिों के लिए जीने का तरीका है, क्योंकि नैतिक और आत्मिक मामलों में खराई से जीवन व्यतीत करने में हम गिर जाते हैं ।

मनुष्य यौनभाव ऐसा एक क्षेत्र है जहाँ खराई की जरूरत है, अगर हमें लाभ उठाना है । इस क्षेत्र में खराई महत्वपूर्ण है । हमें पवित्र शास्त्रीय यौन – शिक्षा को समझने की जरूरत है और परमेश्वर के दर्जे को बनाए रखना जरूरी है जो वचन के अनुसार यौन - रूपी शुद्ध जीवन के विषय में कहता है । शादी का कार्य या यौन – संबंध शादी के लिए आरक्षित होना चाहिए । विवाह – प्रथा के बाहर विचलपन को पाप समझकर अस्वीकृत करना चाहिए । हम एक ऐसे समय में जी रहे हैं जहाँ परमेश्वर की शिक्षा इस विषय पर मसीही समाज से बाहर लोग स्वीकार नहीं करते और यह विषय की शिक्षा मसीही समाज में बाँटा नहीं जाता । भले ही पाप, पाप होता है, लैंगिक पाप के दुःखक्षांतक परिणाम होते हैं दूसरे पापों से ज्यादा (नीति ५ : ७-९; और १ कुरि ६ : १८ – २०) लैंगिक पाप, अक्षम्य पाप नहीं है । कई जन हैं जो परमेश्वर के अतुल्य अनुग्रह की कोई सीमा नहीं है, भले ही कोई कितना ही पाप में क्यों न गिर गया हो, फिर भी परमेश्वर के अनुग्रह में पूर्ण रूप से कोई सीमा नहीं है ।

आर्थिक मामलों में ईमानदारी

आर्थिक स्थिति हम सब पर प्रभाव डालता है किसी न किसी रूप से । अगर मुझे एक साबुन खरीदना है तो पैसे की जरूरत हैं । अगर मुझे माचिस की जरूरत है तो मुझे पैसा चाहिए । दरअसल, जीवन के हर क्षेत्र में हवें पैसे की जरूरत हैं । यह अचम्भे की बात नहीं कि परमेश्वर ने पैसे के विषय में वचन में प्रकाशित किया है - उसका महत्व, इसका इस्तेमाल कैसे करें और उसके तरफ सही मनोवृत्ति रखना । पैसा अच्छे और बुरे उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल हो सकता है; अगर हम पैसों का इस्तेमाल सही पवित्र शास्त्रीय तरीके से नहीं करते तो पैसा हमपर विजयी होता है । यीशु मसीह ने पैसों के विषय में बहुत कुछ कहा है, और हम इसका लाभ उठा पाएँगे अगर हम सुसमाचार पढ़ेंगे, और उसके शिक्षा का अनुसरण करेंगे ।

नीचे दिए गए कुछ मुख्य बातें पवित्र - शास्त्र में कही गई आर्थिक बातें और हम किस प्रकार आर्थिक मामलों में खराई का जीवन व्यतीत कर सकते हैं इसका सांरांश दिया गया है :

१. पैसों के विषय में सही मनोवृत्ति : सबकुछ परमेश्वर का है (भजन संहिता २४ : २१) हमें यहाँ से शुरू करना है । मैं जो कुछ भी हूँ और जो कुछ मेरे पास है प्रभु का है । मैं सिर्फ एक प्रवंधक हूँ और वह चाहता है कि मैं विश्वास इस कार्य में विश्वासयोग्य रहूँ ।

२. एक व्यक्ति का पैसे की तरफ मनोवृति उसके आत्मिक प्रौढ़ता का निश्चित करता है तथा उसके उपयोगिता को दर्शाता है : लूका १६ : १ – १३ पढ़ें ।

३. हम अपने पैसों के द्वारा परमेश्वर की सेवा कर सकते हैं, परन्तु हम परमेश्वर और पैसा – दोनों की सेवा नहीं कर सकते । मत्ती ६ : २४

४. नीतिवचन ३0 : ७ – ९ में दिया वचन को नित्य का प्रार्थना बनाएँ

५. गलत तरीके से कमाए हुए धन पर परमेश्वर आशीष नहीं देता : नीतिवचन १0 : २

६. तीन प्रकार से हमें पैसा प्राप्त हो सकता है :
(१) कमाई के द्वारा; (२) जमा करके या पैसे बचाकर; और (३) भेंट के रूप से पैसे प्राप्त होना । तीसरे प्रकार में हमें बुद्धिमान रहना है कि हमें किस स्रोत से पैसे भेंट के रूप में प्राप्त हो रहा है ।

७. आर्थिक चिन्ता के लिए दवाई मत्ती ६ : २५ – ३४ में पाया जाता है

८. आर्थिक सलहकारों से उपदेश लें, परन्तु सेवकाई के उपर संचालन पर ज़ोर देने से दूर रहें । भले ही हमें सीखना है कि संचालन में हमारा पैसा और स्रोत दोनों का उपयोग होता है, हमें संचालन पर बतह ज्यादा पाठ पढ़ने से सावधान रहना होगा, ताकि हम पवित्र शास्त्र के निर्देशन के अनुसार बुद्धिमानी से स्रोतों का संचालन कर सकें । पवित्र शास्त्र हमें धनी बनने के खतरे के विषय में बताता है : १ तीमु ६ : ६ – १0 पैसा बुरा नहीं होता, परन्तु पैसे का मोह को पवित्र शास्त्र दोषी ठहराता है ।

९. देने के महत्व को जानें : २ कुरि ८ – ९; लूका ६ – ३८

१0. उदारता के सिद्धांत का अभ्यास करें : नीति २२ : ९

११. दूसरों को उनके स्रोतों पर संचालन में उनकी आलोचना करने से सावधान रहे : एक व्यक्ति की जरूरत की चाहत हो सकती है और उसका उल्टा ।

१२. चीजों का इस्तेमाल कर, लोगों से प्रेम करना चाहिए, उसका उल्टा नही ।

१३. हमें लोगों के साथ बातचीत कर उन्हें स्वीकार करना चाहिए, इस बात से नहीं कि उनके पास क्या है और क्या नहीं क्योंकि हर कोई परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है ।

१४. हमें आर्थिक ईमानदारी का जीवन व्यतीत करने की खोज करनी चाहिए । आखिर, पाप को कोई छुपा नहीं सकता । उसका एक दिन खुलासा होगा, और हम परमेश्वर से कुछ छिपा नहीं सकते ।

१५. कर्ज से दूर रहें : रोमि १३ : ८; नीति २२ : ७ । उपभोक्ता सामान के लिए कभी कर्ज़ न लें ।

१६. मसीही लोगों करे कर्जा अभिकरण नहीं बनना चाहिए : अगर आप किसी जरूरतमंद को मदद कर सकते हैं, तो करें ।

व्यक्तिगत खराई अति आवश्यक है जिस प्रकार हम मसीही हैं । अगर हममें आत्मिक परिपूर्णता है, हम परमेश्वर और दूसरों के साथ सराई में संबंध रखते हैं ।

जीवन में खराई : पहली जरूरत

हर व्यक्ति को रोज सही या गलत, अच्छा या बुरे मुददों से व्यवहार करना पड़ता है । इन मुददों के साथ संघर्ष करते हुए, स्वभाव में तर्कसम्मति और परमेश्वर के दर्जे की खराई में समझौता होता है । कई बार इन पापों की उपेक्षा की जाती है । ये "नेक लोगों का दुराचार" – होता है जो साधारण दर्जे में स्वीकार कर लिया गया है । मसीहियों को पाप के साथ समझौता कर उसे जीवन में घुसपैठ करने नहीं देना चाहिए ।

ईमानदारी के लिए संघर्ष

१. परमेश्वर ईमानदारी या खराई के जरूरत के विषय में क्या कहता है ? लैव्यव्यवस्था १९ : ११

____

२. यिर्मयाह १७ : ९ पढ़ें ।

क) आपके जीवन में क्या वास्तविकता है जो खराई से जीने के लिए गंभीर करता है ?

____

ख) एक हाल के उदाहरण की सूची बनाएँ जब आपने ऐसे कार्य का न्याय किया हो जो गलत था ।

____

ग) परमेश्वर ने आपके जीवन में किस प्रकार कार्य किया आपको दिखाने के लिए कि यह गलत है ?

____

३. किन तरीकों से आप धोखा खा सकते हैं ?

स्वयं से :

याकूब १ : २२ ______________________________

१ यूहन्ना १ : ८ ______________________________

दूसरों से :

रोमियों १६ : १७-१८ ______________________________

इफि ४ : १४ ______________________________

शैतान से :

२ कुरि ११ : ३ – ४ ______________________________

उत्पत्ति ३ : १ ______________________________

४. चुंकि आप बहुत जल्द धोखा खा सकते हैं, किस प्रकार आप जानेंगे कि आपने पाप किया है ?

भजन संहिता १३९ : २३ – २४ ______________________________

इब्रानी ४ : १२ ______________________________

बेईमानी का खुलासा हो जाता है

५. २ कुरि ८ : २१ और प्रेरितों के काम २४ : १६ की तुलना करें ।

क) कौन से निर्देशत्तत्व पौलुस के नित्य जीवन में मदद किया ?

____

ख) एक स्पष्ट सद्विवेक रखने के लिए, आपको क्या लगता है कि पौलुस ने किया जब परमेश्वर उसके जीवन में पाप का खुलासा किया ? (१ यूहन्ना १ : ९)

____

ग) क्या आपके जीवन में ऐसा कोई क्षेत्र है जिसमें स्पष्ट सद्विवेक नहीं है ? अगर है तो क्या है ?

____

घ) एक स्पष्ट सद्विवेक पाने के लिए आप क्या कदम उठा सकते हैं ?

____

६. आपको इस बात का ध्यान रखना है कि आप ढ़ोंगी न बनें ।

क) यीशु मसीह ने ढ़ोंगियों का बखान कैसे किया है ? मरकुस ७ : ६ - ८

____

ख) एक वजह बताएँ कि क्यों यह जीवन – शैली बेईमानी को दर्शाती है ?

____

ग) एक उदाहरण बताएँ कि किस तरह परमेश्वर के नाम का निरादर होता है ?

____

७. आपके जीवन के गुण में यह गुण होना चाहिए कि दूसरे लोगों के करीवी निरीक्षण को बर्दाशत कर सकें । आपको ई मानदारी से जीवन व्यतीत करना चाहिए —————— हमें दिखाया नहीं करना चाहिए और गलत प्रभाव नहीं डालना चाहिए । ऐसे एक आविष्कार की कल्पना करें जो आपको बता सके कि लोग किस प्रकार हैं और क्या सोचते हैं ।

क) क्या आप यह चाहेंगे कि आप पर यह आविष्कार का इस्तेमाा हो ?

____

क्यो हॉ या क्यों नहीं _______________________________

____

ख) क्या कोई ऐसी बात का खुलासा हो जाएगा जो आप चाहते हैं कि छिपा रहे ? अगर ऐसा है, तो क्या है ?

____

८. २ कुरि ८ : २१ पर मनन करें । नीचे दिए गए सूची को ध्यान से पढ़ें । क्या इनमें से कोई भी आपके लिए समस्या का क्षेत्र है ? उनपर रेखांकित करें ।

_____________ बढ़ा – चढ़ाकर कहना
_____________ सफेद झूठ
_____________ धोखा देना
_____________ वादे को रखने में विफल होना
_____________ लोगों को अनुमति देना कि वे गलत बातों पर विश्वास करें ।

एक का चुनाव करें । आप क्या कर सकते हैं इस समस्या के साथ व्यवहार के लिए ?

९. भजन संहिता १५ : १-५ तक पढ़ें और ईमानदार के व्यक्ति पॉच गुणों की सूची बनाएँ ।

____

१० . १ थिस्सलुनीकियों २ : १० में किस प्रकार उसने जो जीवन बिताया उसको प्रतिविंबित किया है ?

____

ईमानदारी का अभ्यास

११ . ईमानदारी को जीवन के अलग – अलग क्षेत्र में दर्शाया जाना चाहिए । कुछ क्षेत्रों की सूची बनाएँ जिनकी आप उपेक्षा करते हैं ।

रोमियों १३ : ६ – ७ ____

कुलुस्सियों ३ : २३ – २५ ____

१ पतरस २ : १३ – १४ ____

दो महत्वपूर्ण मसीही का दर्जा ऐसा होना चाहिए :

* यह निश्चित करें कि जो कुछ आपके पास उसे ईमानदारी से आपने प्राप्त किया है या नहीं ।

* यह निश्चित करे कि सिर्फ सच ही आपके मुख से निकले । यह जरूरी नहीं कि आप बार-बार बात करें, खासकर राय लेने के मामलों में । प्रेम, उदारता और शिष्टता आपके जीभ पर राज करना चाहिए । और जब आप बात करें, सच ही बोलें । कोई भी ऐसी बात नहीं है जैसे "सफेद झूठ" ।

बोलचाल में ईमानदारी

१२ . आपका बोलचाल क्या दर्शाता है ? मत्ती १२ : ३४ - ३५

____

१३ . भजन गाने वाला किस प्रकार जीभ का बयान करता है ? भजन संहिता ५२ : २ - ४

____

____

"ऐसा नहीं सोचें कि मित्रता आपको अपने घनिष्ठ मित्रों से अरूचिकर बातें कहने का अधिकार देता है । जितना करीब आप एक व्यक्ति के संबंध में आएंगे, उसके साथ व्यवहार–कौशलता और शिष्टाचार जरूरी हो जाता है ।"

१४ . अपमानजनक और झूठी बातें एक मसीही जीवन के लिए बेमेल क्यों है ? कुलु . ३ : ८- १०

____

१५ . क्या आप कोई व्यक्तिगत परिस्थिति के विषय में सोच सकते हैं जहाँ जीने में बेईमानी करने से झूठ बोलना पड़ा हो ?समझाएं ।

____

"झूठ है : कोई भी धोखा : शव्दों में, कार्य में, मनोवृत्ति में – या शांति में; जानबूझकर बढ़ा – चढ़ाकर बोलने मे, सच्चाई को बिगाड़ने में, या गलत प्रभाव डालने में ।"

१६ . नीचे दिए गए आयतों का भावान

इफि ४ : २९ ____

कुलु ४ : ६ ____

एक अगुवे का सबसे ऊँचा लक्ष्य ईमानदारी होना चाहिए

आपको परमेश्वर का जन होना चाहिए

आपका सबसे ऊँचा लक्ष्य मसीही अगुवा बनकर परमेश्वर का जन बनना है । सिर्फ थोडे ही लोग जो पवित्र शास्त्रीय समय में जीते थे उन्हें यह उपाधि दिया जाता था – मूसा, शमूएल, दाऊद, एलियाह, एलीशा, तीमुथियुस और कुछ और ।

बिना कोई संदेह के यह पद सही रूप से एसे अगुवों जैसे यशायाह, दानिय्येल, और पौलुस । शायद कोई और उँचा आदर किसी को नहीं दिया जा सकता इससे ज्यादा कि उन्हें परमेश्वर के स्त्री और पुरूष के रूप में जाना जा सके ।

कोई भी इस पद के योग्य नहीं । कभी – कभी पुराने नियम में यह परमेश्वर के नबी के लिए इस्तेमाल होता था या फिर जो खासकर परमेश्वर का भेजा हुआ हो । कुछ नेक लोगों ने यह पद को मसीही अगुवों, पासवानों और सेवकों के लिए आदरणीय ठहराया है । पर कोई भी अगुवा, परमेश्वर का जन नहीं कहलाता सिर्फ इसलिए कि उनकी सेवकाई कलीसिया से संबंधित है, या फिर इसलिए कि उनका जीवन मसीही कार्य के लिए समर्पित है ।

परमेश्वर का सच्चा जन कौन है ? शायद हम किसी के व्यक्तित्व-विशेषता को ध्यान देते हैं जो परमेश्वर के जन में नहीं होना चाहिए । फिर भी हम सब ईश्वरत्व के पहलू को पहचानते हैं जो किसी के उपर परमेश्वर के छाप को छोड़ता है । हम में से हर कोई अपने जीवन पर छाप छोड़ना चाहता है । इसमें क्या शामिल है ?

परमेश्वर के जन का लक्ष्य

१. **परमेश्वर का जन एकरूपता से धार्मिक और पवित्र जीवन जीता है ।**

सिर्फ परमेश्वर ही पवित्रता में सिद्ध है । सिर्फ परमेश्वर ही अनन्तकाल तक धार्मिक है । हममें से हर एक ने पाप किया है (भूतकाल) और (वर्तमानकाल) परमेश्वर की महिमा से रहित है (रोमि ३ : २३) परन्तु परमेश्वर हमें उसकी इच्छा, उसकी सच्चाई, और उसकी महिमा में अविचलित समर्पण दे सकता है । हम वर्तमान में विजय का जीवन बिता सकते हैं और हर क्षण को आशीष दे सकते हैं । हम ज्योती में चल सकते हैं जैसे प्रभु है और निरन्तर पाप से शुद्धीकरण प्राप्त कर सकते हैं (१ यूहन्ना १ : ७)

हम सब कई रूप से वहक जाते हैं और पाते हैं कि हम गलत हैं (याकूव ३ : २) परन्तु प्राण, परमेश्वर के साथ चलने की आदत, धार्मिकता और पवित्रता के साथ एकरूप होना है । अगर हम पाप करते हैं, तो हमारे बचाव में एक व्यक्ति है जो पिता से बातचीत करता है – यीशु मसीह, जो असीमित रूप से धार्मिक हैं (१ यूहन्ना २ : २) परमेश्वर के अनुग्रह से हम पवित्रता और धार्मिकता में जी सकते हैं उसके समीप में पूरे जीवन – भर हैं (लूका १ : ७५) कोई पाप या नैतिक कमजोरी जब मसीही अगुवा में दिखता है तो वह मसीह के नाम और उसके कलीसिया को तात्कालिक अफवाह में उड़ा देती है । प्रभु का हर जन पवित्रता और धार्मिकता में जीवन व्यतीत करना चाहिए ।

२. **परमेश्वर का जन प्रेम जीवन जीता है ।**

परमेश्वर प्रेम है, और जितना ज्यादा ईश्वरीय हम बनते हैं, उतना ही ज्यादा परमेश्वर का प्रेम हममें प्रकट होता है । "प्रेम का जीवन जिएँ" हैं (इफि ५ : २) "जो कुछ करें प्रेम में करें" हैं (१ कुरि १६ : १४) "आत्मा का फल प्रेम है" हैं (गल ५ : २२) प्रेम से बढ़कर कोई आज्ञा नहीं है हैं (मरकुस १२ : ३१)
अगर कोई बात जो चरित्र और व्यक्तित्व के सुँदरता को बढ़ाता है, तो वह है प्रेम । अगर कोई बात जो मसीही अगुवा को अर्मकित करता है परमेश्वर का जन होने के नाते, तो वह है आत्मिक प्रेम जो निरंतर उसके जीवन से बहता है दूसरों के प्रति । यही हमारे अगुवेपन को मसीही बना सकता है ।

३. **परमेश्वर का जन दूसरों की सेवा करता है ।**

हमें प्रेम में एक दूसरे की सेवा करना है हैं (गल ५ : १३) प्रेम से दूसरे के लिए किया हुआ कार्य उस दूसरे व्यक्ति पर खास छाप छोड़ जाती है । प्रेम सेवा करती है । प्रेम आशीष देते हुए, मदद करते हुए, आनन्द से सेवा करते हुए प्रेम अपने आप को दूसरों पर व्यक्त करता है । यीशु मसीह अपने शिष्यों को बर्दाशत करता है न कि उनके उपर प्रभुता करता है । हैं (१ पतरस ५ : ३) कोई भी इतना अच्छा नहीं कि वो सेवा करें । कोई भी मसीह का दास नहीं है जबतक वह स्वामी के तरह सेवा करने की इच्छा न रखता हो, जिसने अपने शिष्य का पैर धोया था ।

यीशु मसीह के लिए हम दूसरों के सेवक हैं हैं (२ कुरि ४ : ५) परमेश्वर के भेड़ होने के नाते हमें सेवा की इच्छा रखनी चाहिए हैं (१ पतरस ५ : २) परमेश्वर के जन में अगुवेपन, तरीके, सेवकाई संस्था या सफलता का घमंड नहीं होना चाहिए । हममें दास का हृदय होना चाहिए और दास के स्वभावों को प्रकट करना चाहिए जैसा यीशु मसीह ने अपने – आप को नर्म किया । हैं (फिलि २ : ५-८)

४. परमेश्वर का जन परमेश्वर के आत्मा के सुन्दर फल को प्रकट करता है ।

यीशु मसीह ने यह निश्चित किया कि अगर पेड अच्छा है तो उसके फल भी अच्छे रहेंगे हैं (मत्ती १२ : ३३) । अगर हमें आत्मा निर्थातित करता है तो वह उसक पवित्र फल हमारे मनोवृत्ति, तबियत, शव्द और कार्यो से दिख पड़ता है । यीशु मसीह ने कहा, हर मनुष्य उनके फल से पहचाना जाता है हैं । (मत्ती ७ : १६)

परमेश्वर के जन में आत्मिक फल, व्यवस्था का धर्मपरायणता, भावनाओं का धर्मपरायणता, आत्मिक जीवनशैली का धर्म परायणता होता है । पौलुस गलतियों ५ : २२ – २३ में आत्मा के फल के विषय में बताता है । मसीही अगुवा मसीह के खुशबू को लेकर चलता है हैं (२ कुरि २ : १५) पवित्र आत्मा यीशु मसीह के आत्मा, सुन्दरता को दर्शाता है । यह पवित्र आत्मा का महत्वपूर्ण तत्व है जो परमेश्वर के जन का चिन्ह है ।

५. परमेश्वर का जन पवित्र आत्मा से भरा होता है :

"परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ" (इफि ३ : १९) "यीशु में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता" हैं (कुलु २ : ९), "आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ" हैं (इफि ५ : १८) "उस धार्मिकता के फल से जो यीशु मसीह के द्वारा होते हैं, भरपूर होते जाओ जिस से परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती रहे हैं । (फिलि १ : ११) निश्चय ही पवित्र शास्त्र हमारे लिए चकित करनेवाली दर्शन रखती है । परन्तु सभी शब्दों से पवित्र शास्त्र पवित्र सच्चाई का बयान करते हुए कहती है, "आत्मा में परिपूर्ण होना" सवसे अधिक इस्तेमाल हुआ है ।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का अर्थ है, पवित्र आत्मा से भरना, पवित्र आत्मा में उमंडना, पवित्र आत्मा से ग्रस्त होना, जो पवित्र आत्मा से नियंत्रित या प्रभावित होता है, और पवित्र आत्मा से नियंत्रित या प्रभावित होता है, और पवित्र आत्मा से परिवर्तित होता है । पवित्र आत्मा से भरने का अर्थ होता है वह पवित्र आत्मा के लिए उपयोगी हो, पूरी तरह पवित्र आत्मा से प्रभावित और जो पवित्र आत्मा के फल और अनुग्रह से सुन्दर बनाया गया हो ।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने का अर्थ है कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व पवित्र आत्मा से इतना भीग जाना, पवित्र आत्मा से इतना भीग जाना, पवित्र आत्मा से व्याप्त होना और पवित्र आत्मा से भरना ताकि वह व्यक्ति सिर्फ आत्मिक ही नही परन्तु आत्मा से भरा रहे । आप पवित्र आत्मा से भरे हैं – का अर्थ होता है कि पवित्र आत्मा का उपस्थिति और सामर्थ आपको ओढ़ता है और आपसे प्रकट होता है । वह आपको निर्णयात्मक रूप से अलग बनाता है, परमेश्वर का दिया नया विस्तार और आपके जीवन और अगुवापन में नया परिवर्तित परिपूर्णता को लेकर आता है ? आप इसे पहचानते हैं और दूसरे भी इसे पहचानते हैं । यह परमेश्वर का दिया हुआ मसीही–समानता को आपके जीवन में जोड़ता है और आपके गवाही सेवकाई और अगुवाई मे परमेश्वर का दिया हुआ सामर्थ को जोडता है ।
वह आपको परमेश्वर का व्यक्ति समझकर चिहित कराता है ।

<u>दूसरे परमेश्वर के व्यक्ति को पहचानते हैं</u>

जब परमेश्वर आप पर चिन्ह लगाता है, सिर्फ परमेश्वर के वच्चे ही इसको पहचानते हैं ऐसा नहीं हैं, परन्तु अविश्वासी भी आप में कुछ अलग वात को देखते हैं । शैतान भी परमेश्वर के व्यक्ति को पहचानता है । दाऊद, जो परमेश्वर का व्यक्ति कहा जाता था,

उसने कहा, “यह जान रखो कि प्रभु ने भक्त को अपने लिए अलग कर रखा है; जब मैं प्रभु को पुकारूंगा तब वह सुन लेगा ” हैं । (भजन संहिता ४ : ३) एक तरीका जिससे प्रभु हमें अलग करता है वह हमारे प्रार्थना में हमें उत्तर देकर । जब प्रभु ने एलिय्याह के प्रार्थना को प्रमुखता से और दोहराकर उत्तर दिया तो सारपत की विधवा पुकार उठी, “अब मुझे निश्चय हो गया है कि तू परमेश्वर का जन है, और प्रभु का जो वचन तेरे मुँह से निकलता है, वह सच होता है ” हैं । (१ राजा १७ : २४) कर्मेल पहाड़ पर एलिय्याह को यह महसूस हुआ कि परमेश्वर का चिन्ह उसके सेवकाई के लिए अति आवश्यक है अगर राष्ट्र को परमेश्वर के पास लाना हो । इसलिए उसने प्रार्थना किया, “हे अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के प्रभु परमेश्वर । आज यह प्रकट कर कि इस्राएल में तू ही परमेश्वर है, और मैं तेरा दास हूँ और मैंने ये सब काम तुझ से वचन पाकर किए हैं । हे प्रभु ! मेरी सुन ले, कि ये लोग जान लें कि हे प्रभु तू ही परमेश्वर है, और तु ही उनका मन लौटा लेता है । तब प्रभु की आग आकाश से प्रकट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे का जल भी सुखा दिया । यह देख सब लोग मुँह के बल गिरकर बोल उठे, प्रभु ही परमेश्वर है, प्रभु ही परमेश्वर है;” हैं (१ राजा १८ : ३६-३९)

फिर, जब चुनौती दिया गया और “प्रभु का दास” कहा गया एलिय्याह ने उत्तर दिया, “यदि मैं परमेश्वर का भक्त हूँ तो आकाश से आग गिरकर तुझे तेरे पचासों समेत भस्म कर ड़ाले । तब आकाश से आग उतरी और उसके पचासों समेत भस्म कर दिया ।” परमेश्वर अपने दासो पर चिन्ह लगाने के लिए तैयार है जब वह देखता है कि आपको उसकी जरूरत है, और दूसरे इसे पहचानेंगे । परमेश्वर का भक्त बनने के लिए आपका प्रार्थना जीवन और दूसरों को इसमें स्वीकृता महत्वपूर्ण है । जब एलीशा ने कई बार शूनेमवासी महिला के घर पर भोजन किया उस शूनेमवासी स्त्री ने अपने पति से कहा, “सुन, जो यह बार-बार हमारे यहाँ से होकर जाया करता है वह मुझे परमेश्वर का कोई पवित्र भक्त जान पड़ता है ।” हैं (१ राजा ४ : ९) जब भी नबी वहाँ से गुजरता था वह स्त्री उसके रहने के लिए एक कमरा तैयार करती थी । उसने इतने तकलीफ क्यों उठाया ? जो लोग हृदय से भूखे हैं वे परमेश्वर के जन के करीब होना चाहते हैं । मेरी माँ मुझसे कहती है कि जब मैं छोटा बच्चा था और एक मेहमान घर पर आया करता था जो परमेश्वर की बातें करता था, और में उसके कुर्सी के करीब जाकर खडा हो जाया करता था । एक छोटा बच्चा भी परमेश्वर के जन में आत्मिक सच्चाई को महसूस कर सकता है ।

जब शाऊल की गदहियाँ खो गई तो उसके सेवकों ने कहा, “सुन, इस नगर में परमेश्वर का एक जन है जिसका बड़ा आदरमान होता है । जो कुछ वह कहता है वह बिना पूरा हुए नहीं रहता ।” हैं (१ शमू ९ : ६) हाँ, लोग परमेश्वर के जन का आदर करते हैं, परन्तु अगर एक मसीही अगुवा अपने जीवन, प्रार्थना और उसके शब्दों से साबित नहीं करता कि वह परमेश्वर का सच्चा जन है तो लोग उसका आदर नहीं करते ।

परमेश्वर का जन आशीष लाता है

एक जाना – पहचाना सेवक यीशु मसीह के उपस्थिति के लिए भूखा रहता था किसी भी बात से ज्यादा, जबतक यीशु मसीह उसके लिए उसके मित्रों से ज्यादा वास्तविक न हो । सेवक, विद्यार्थी, मछुवारे घर बनाने वाले जो यीशु मसीह को जानने आए थे, उनको यीशु मसीह के प्रेम की जागृति ने जकड़ लिया । एक जवान ने कहा, “अगर आप परमेश्वर पर विश्वास नहीं करते तो परमेश्वर के जन से मुलाकात के बाद आप सभा के बाद नपुंसक नहीं रह सकते । आप उसके जीवन में यीशु को देखते हैं और उसके सेवकाई में यीशु मसीह को छू सकते हैं ।” बार – बार दूसरों ने परमेश्वर की महिमा उसके चेहरे पर देखा । जब रॉबर्ट मुर्रे मॅक चेन मंच पर आते थे तो कई बार उनके पवित्र शास्त्र के खोलने से पहले ही लोग रोना शुरू कर देते थे । वह परमेश्वर की उपस्थिति को उसके साथ लेकर चलता था ।

परमेश्वर का जन जहाँ भी जाता है आशीष लाता है । वह परमेश्वर की उपस्थिति को साथ लेकर चलता है । वह सामान्य जीवन बिता सकता है, उसका घर खुशहाल हो सकता है, आनन्द के मौकों में भाग ले सकता है और लोगों के साथ मिल सकता है – यीशु मसीह ने ऐसा ही किया । परन्तु परमेश्वर का जन पवित्र प्रभाव को पीछे छोड़ जाता है । जो भी उनसे बात करते है उन्हें यह ज्ञात होता है कि उनपर परमेश्वर का अभिषेक है ।

परमेश्वर के जन होने का मूल्य

कोई भी दुर्घटना से परमेश्वर का जन नहीं बन जाता । रातों रात कोई भी परमेश्वर का जन नहीं बनता । हम क्षणभर में परमेश्वर का जन बन जाते है; हम परमेश्वर का जन समय के अवधि में बनते हैं । मसीह में अनौपचारिक समर्पण आपको ईश्वरीय या मसीह – जैसा नहीं बनाएगा । कोई भी परमेश्वर का जन नहीं बनता जब तक प्राण सावधान न हो ।

आप मसीह में करीबी नहीं पा सकते, परन्तु आपको एक मूल्य चुकाना है:

१. यीशु मसीह के उच्चतम समर्पण को बनाए रखना चाहिए ।

यह यीशु मसीह को प्रमुख समर्पण का मूल्य चुकाना है । वह आपका अल्फा और ओमेगा होना चाहिए, आपका उच्चतम इच्छा होना चाहिए । इसका मूल्य, परमेश्वर को समय देना है, उदारतापूर्वक स्वयं को देना है, स्वयं को यीशु मसीह के लिए अलग करना होता है । इसका मूल्य यीशु मसीह के लिए ज्वलंत प्रेम होना है, उसके लिए बलिवेदी श्रद्धा होना है, परमेश्वर के लिए बिना डर के आपके प्रेम को व्यक्त करना है ।

इसमें यीशु मसीह को खोजना दूसरों से ज्यादा, निश्चिन्त होकर, बिना डगमगाए, यीशु मसीह को पहला स्थान देना – यही प्राण का मनोवृत्ति होना चाहिए । उसके उपस्थिति में रूके रहना है, सिर्फ एक इच्छा नहीं, परन्तु यीशु मसीह के साथ अकेले में समय बिताना । वही आपका उच्चतम आनन्द होना चाहिए, आपका उच्चतम प्रेम, आपका उज्जवलित महिमा जब उसके अटूट सहभागिता को बॉटते हैं, उसके उपस्थिति में रहते हैं और उसके प्रेम में प्रसन्न रहते हैं ।

फिर बिना ढ़के हुए चेहरे से आप यीशु की महिमा को प्रतिबिंबित करते हैं और निरंतर उसके स्वरूप में परिवर्तित होते हैं महिमा से महिमा तक हैं (२ कुरि ३ : १८) इसी को पौलुस भक्ति का पीछा करना कहता है हैं (१ तीमु ६ : ११) इसमें निरंतर कोशिश, इच्छा, बने रहना और अपरिवर्तनीय होना चाहिए । बिना किसी बलिदान के विषय में सोचे पौलुस के साथ आपको कहना चाहिए, "यह एक कार्य में करता हूँ ।"

२. स्वयं को ईश्वरीय होने का प्रशिक्षण दें ।

पौलुस शारीरिक प्रशिक्षण को आत्मिक प्रशिक्षण के साथ तुलना करता है हैं (१ तीमु ४ : ७) पौलुस जिस शब्द का इस्तेमाल करता है वह "व्यायामशाला" है । वह अनुशासित, नियमित, मेहनती व्यायाम को दर्शाता है । एक ओलम्पिक व्यायामी के तरह, उसके जीवन में एक घटना के लिए प्रशिक्षण, बाकी सभी बातों का बलिदान कर अपने आप को मजबूत करने और प्रशिक्षन देने में अनुशासित करता है । इसलिए आपको अपनी ताकत और समय जितना तक हो सके देना चाहे उसमें जितना भी बलिदान लगे ताकि परमेश्वर का सच्चा भक्त बने ।

यह पवित्र प्रशिक्षण, यह आत्मिक अनुशासन आपके उच्चतम प्रमुखता का उद्देश्य क्या है ? यह यीशु मसीह को जानने के लिए है, यीशु मसीह के साथ एक होना है और उसमें पहचाना जाना है ताकि आप उसके स्वरूप में पहचाने जाएँ हैं (२ कुरि ३ : १८) आपका उच्चतम प्रमुखता यीशु मसीह के लिए आप क्या करते हैं वह नहीं है, परन्तु उसके समान होना है । फिर आप घनिष्ठता में उसके लिए जो भी करना चाहते हैं वह समर्पण के गहराई से बहेगा । इसको सम्भव होते देखने में दो और कदम की जरूरत है ।

३. अपने प्राण को वचन से भर दें ।

स्वयं को वचन में भिगो दें उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक, परन्तु हर बात जो यीशु मसीह से संबंधित है, पूरे नए नियम और भजन संहिता को मिलाकर । यह आपके उपलब्धी के लिए सबसे ज्यादा वास्तविक है । परमेश्वर के वचन से खाएँ, उसके वचन से पिएँ, आपके प्राण को परमेश्वर के वचन में नहलाएँ । वचन को पढ़ें - उसे पूरा पढ़ें । बार – बार पढ़ें जब तक वह आपके आत्मिक मनुष्य के मनोबल में नहीं घुसता हो ।

आप परमेश्वर के वचन के बिना उसका जन नहीं बन सकते । अगर आप किसी बात के अधिकार में हैं तो पहले परमेश्वर के वचन के अधिकारी बनें । अगर आपमें किसी प्रकार का शौक है, तो परमेश्वर के वचन को पढ़ने का शौक रखें । अगर आप किसी भी प्रकार के पढ़ाई में समय बिताते हैं, तो वह परमेश्वर का वचन होना चाहिए । आप इसे अपने हृदय में जमा करें । उसपर विचार करें, मनन करें,याद करें और उसके विषय में सपना देखें । इसे आप अपने जीवन और हृदय में लागू करें । प्रतिदिन अपना मुख्य समय वचन पढ़ने में बिताएँ ।

वचन आपको खिलाएगा, बढ़ाएगा और सामर्थ से भरेगा । वह आपको ज्योर्तिमय करेगा और आपका मार्गदर्शन करेगा । उसे अपना प्रमुख मार्गदर्शक और अधिकार बनाएं । जब परमेश्वर का वचन बातचीत करता है, वह आपके लिए व्यवस्था देता है । पौलुस २ कुरिन्थियों ३ : १६ (युनानी) में संकेत देता है कि पवित्र आत्मा उस पर्दे को हृदय से हटा देती है जब अविश्वासी पवित्र शास्त्र के वचन को पढ़ते हैं । पवित्र शास्त्र के वचन को पढ़ते हैं । पवित्र आत्मा वचन के द्वारा हमें यीशु मसीह के स्वरूप में परिवर्तित करती है महिमा के एक स्तर से दूसरे स्तर तक । यह हमें परमेश्वर का जन बनाती है । आपको परमेश्वर के वचन में उतना ही समय बिताना चाहिए जितना आप प्रार्थना में करते हैं ।

४. यीशु मसीह को अपना प्रार्थना समय दें ।

प्रार्थना सबसे महत्वपूर्ण है, और लाभदायक रूप से आप इसमें समय लगा सकते हैं । प्रार्थना, मसीह जैसा कार्य है जिसमें आप शामिल हो सकते हैं, क्योंकि आज भी यीशु मसीह मध्यस्थी करता है । प्रार्थना सबसे महत्वपूर्ण, सबसे फलवंत कार्य है जिसे आप पृथ्वी पर कर सकते हैं । प्रार्थना सबसे महत्वपूर्ण, सबसे फलवंत कार्य है जिसे आप पृथ्वी पर कर सकते हैं । प्रार्थना सबसे बड़ा बहुमूल्य भेंट है जो आप यीशु मसीह को दे सकते हैं । मूसा यीशु मसीह के करीब था और यीशु मसीह के साथ ज्यादा समय व्यतीत करता था, जहाँ तक हम जानते हैं, पुराने नियम के किसी भी अगुवे ने ऐसा नहीं किया ।

जब इस्राएलियों ने मूसा को देखा चालीस दिनों के बाद पहाड़ पर देखा तो वे विशेष रूप से प्रभावित नहीं हुए । परन्तु पहाड़ पर अस्सी (८०) दिनों के बाद, वे उसके चेहरे के महिमा से संभ्रमित हो गए ।

यीशु मसीह के साथ प्रभु – भोज और उसके मध्यस्थी के बोझ में समय बिताएँ जो दुनिया और कलीसिया के लिए है । जब पति- पत्नी एक दूसरे से प्रेम करते हैं और साथ में बढ़ते हैं, तो कई साल के दौरान ऐसा लगता है कि वे एक दूसरे से मिलते – जुलते हैं ।

उनके मिलते – जुलते मनोवृत्ति, इशार, भाषा और यहाँ तक कि मिलते – जुलते चेहरे के भी लक्षण होते हैं । जब एक बच्चा माता – पिता की नकल उतारता है, तो आप उनके स्वभाव, मनोवृत्ति और शब्दों को उनसे मिलता – जुलता हुआ पाते हैं ।

परमेश्वर का जन बनने के लिए हमें यीशु मसीह के साथ समय बिताना चाहिए । जितना ज्यादा आप उससे प्रेम करते हैं, उतना ज्यादा उसके साथ समय बिताना चाहेंगे । एक कमज़ोर प्रार्थना जीवन यीशु मसीह के साथ कमजोर प्रेम को दर्शाता है । जब आप परमेश्वर के श्रद्धालु हैं तो आप नाममात्र या आकस्मिक प्रार्थना जीवन नहीं बिता सकते । जितना ज्यादा आप उसके साथ होते हैं, उतना ज्यादा आप उसके विषय सोचेंगे और उसके तरह बोलेंगे और मिलते – जुलते दिखेंगे । आप परमेश्वर के जन होंगे ।

परमेश्वर का जन और ईमानदारी में खराई

परमेश्वर अपने लोगों में खराई चाहता है (१ इतिहास २९:१७) परमेश्वर का जन पवित्र खराई के लिए जाने जाते हैं । एक मसीही अगुवा में इससे ज्यादा महत्वपूर्ण और कुछ भी नहीं है । ईश्वरत्व, परमेश्वर के वचन के अधिकार और शास्त्र के सिद्धांत के ओर मानसिक समर्पण से कहीं ज्यादा है । हमें मानसिक समर्पण की जरूरत है परन्तु इतना काफी नहीं है । ईश्वरत्व, आनन्द और प्रेम के भावनाओं से बढ़कर है जैसे हम स्तुति के गति गाते हैं और आराधना करते हैं और महानता, अच्छाई और परमेश्वर के विश्वासयोग्यता के गीत पवित्र आत्मा के सामर्थ के बारे में गाते हैं । ईश्वरत्व में इच्छा का समर्पण शामिल है जिसका परिणाम धार्मिक कार्य और पवित्र जीवन व्यतीत करना है । शरीर ज्योतिर्मय होने से पहले आँखों को साफ और अच्छा होना चाहिए (मत्ती ६ : २२) । मनोवृतित्त, सोच और शब्दों का शुद्धीकरण के पहले हृदय का शुद्धीकरण जरूरी है ।

पवित्र शास्त्र के अनुसार जो विश्वास हमें बचाता है वही शुद्धीकरण भी करता है । मसीह को व्यक्तिगत समर्पण पवित्र आत्मा के लिए रहने का स्थान बनाता है, और पवित्र आत्मा का फल उसकी सम्पूर्णता में मसीही – स्वरूप को लाता

है । पवित्र आत्मा मसीह के प्रभुत्व को सम्पूर्ण जीवन में लागू करता है । मसीही जीवन के सम्पूर्ण नीतिशास्त्र - संबंधी उलझाव के साथ भी उसके पवित्रता में दूसरा कोई वैकल्पिक बात नहीं है ।

परमेश्वर के जन का चरित्र, पवित्र मनोवृत्ति और पवित्र कार्यो में प्रकट होता है । जबतक पवित्र हृदय से पवित्र वचन नहीं आते वे सामर्थहीन हो जाते हैं । और जबतक पवित्रता का परिणाम सम्पूर्ण खराई नहीं है तो वह झूठी पवित्रता है । ऐसा कोइ परमेश्वर का जन नहीं जो खराई के विषय में अविचारी हो सकता है । जब तक जीवन के कार्य और स्वभाव धार्मिक या पवित्र नहीं हैं तब हम जानते हैं कि हृदय भी पवित्र नहीं है । जबतक हृदय पवित्र नहीं होता कोई भी परमेश्वर का जन नहीं होता है । सच्वी पवित्रता वह है जो पवित्र जीवन के साथ एकरूप होता है । हमें "उसके सामने पवित्रता और धार्मिकता से जीवन भर, निडर रहकर उसकी सेवा करते रहें ।"
(लूका १ : ७४ – ७५) जीवन में पवित्रता का दर्जा असम्भव नहीं है क्योंकि जब पवित्र आत्मा हमें भरता है तो वह दैविक क्षमता से हमें परमेश्वर की पवित्रता में समान बनाता है । परमेश्वर के पवित्र लोगों के लिए पवित्र जीवन का दर्जा विस्मयकारी रूप से सम्पूर्ण और ऊँचा है । हमें परमेश्वर के तरह पवित्र होना चाहिए (१ पतरस १ : १५ – १६) । उसने हमें पवित्र जीवन व्यतीत करने के लिए बुलाया है (२ तीमु १: ९) । हमें पवित्र किया जा रहा है (इब्रानी १0 : १४) । हम हर किसी कार्य में पवित्र होना चाहिए (१ पतरस १ : १५) जिसका मतलब है कि पवित्रता सिर्फ सैद्धांतिक नहीं होता; वह व्यावाहारिक भी होता है । हमें पवित्र और ईश्वरीय जीवन बिताना चाहिए (२ पतरस ३ : ११) । इस तरह के पवित्रता से ही हम दोषारोपण के ऊपर जी सकते हैं (१ तीमु ३ : २) । चूँकि एक मसीही अगुवे को "परमेश्वर का काम सौंपा जाता है, तो उसे निष्कलंक होना चाहिए (तीतुस १: ६ – ७) । पौलुस उसके अर्थ का सारांश "धर्मी, पवित्र और अनुशासित" शब्दों द्वारा देता है (आयत ८) हममें "न कोई कलंक, न झर्री और न कोई दोष हो, किंतु हम पवित्र और निर्दोष हों ।" (इफि ५ : २७)

हमारा पवित्र आचार (नीति) साकारात्मक और नाकारात्मक दोनों भी है । पाप में मरना परमेश्वर में जीवित होना है । हमारा पवित्र आचार (नीति) और संसार के लिए मृतक – एक नाकारात्मक नैतिक संबंधी अलगाव हृदय और जीवन में । यह यीशु मसीह को जीवन देना और यीशु मसीह में जीवन देना होता है । यह ईश्वरत्व, धार्मिकता और जीवन के पवित्रता का साकारात्मक आचार है । हम अपने शरीर को जीवित, पवित्र और परमेश्वर को पसंद आनेवाली भेंट जैसा चढ़ाएँ (रोमि १२ : १) हम शरीर के अंग को पाप में देने से नाकारते हैं (रोमि ६ : १३) और हम पवित्रता के आचार के लिए अपने शरीर को जानबूझकर साकारात्मक रूप से परमेश्वर को सौंपे (रोमि ६ : १३,१९) । हम पाप को शरीर पर या शरीर के द्वारा राज नहीं करने देते, परन्तु मसीह को हृदय के सिंहासन पर राज करने देते हैं; और उसकी आत्मा हमारे व्यावाहारिक जीवन में धार्मिक और पवित्र नीतिशास्त्र - संबंधी कोशिश करता है जो पवित्र चरित्र से निकलता है ।
यह हमें सभी लोगों की ऑखों में पवित्र खराई को बनाए रखने में निरन्तर चिन्तित रहता है । "जो बातें सब लोगों की दृष्टि में भली है, उसकी चिन्ता किया करो ।" (रोमि १२ : १७) "जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली है, हम उनकी चिन्ता करते हैं ।" (२ कुरि ८: २१)

कथन में खराई

परमेश्वर के जन को उसके वचन का जन होना चाहिए । उसके बोलचाल में पवित्रता, प्रेम और खराई दिखना चाहिए । हमारे कथन, विवरण और लिखावट खुला, ईमानदार और भला होना चाहिए । दोनों परमेश्वर और मनुष्य हमें हमारी शब्दों से न्याय करते हैं । "मैं तुम से कहता हूँ, जो – जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन उन्हें अपनी हर एक निकम्मी बात का लेखा देना होगा । तू अपनी बातों ही के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा ।" (मत्ती १२ : ३६ – ३७)

१. जब आपको पूरी जिम्मेदारी लेने की इच्छा नहीं है तो कुछ भी नहीं बोलें । एक व्यक्ति जो मौजूद नहीं है उसके विषय में ऐसा कुछ न कहें जो आप उसकी उपस्थिति में नहीं दोहरा सकें ।

२. निर्णय लेते समय किसी विषय में हमेशा टिप्पणी देने से सावधान रहें । अपने टिप्पणियों को देर से देने की इच्छा रखें । यह जरूरी नहीं कि सबकुछ बताएँ जबतक आपकी सूचना निर्णय के लिए जरूरी न हों । जब आपके राय की जरूरत हो तब बोलें; जब वे लाभदायक न हों तो शांत रहें ।

३. जितना संभव हो अपने राय देने में साकारात्मक हों । एक नाकारात्मक व्यक्ति बनने की कीर्ति से दूर रहें ।

४. बढ़ा – चढ़ाकर प्रशंसा या खुशामद करने की आदत से सावधान रहें । यह आपके सुननेवालों के आदर के खोने का कारण हो सकता है ।

५. विचार और मदद के लिए दूसरों को पूरा श्रेय दें ।

६. बोलचाल और लिखावट में विचार – हरण से दूर रहें ।

७. अलग क्षेत्रों में अधिकार के मनोवृत्ति की कल्पना नहीं करें जहाँ आपकी सूचना, अनुभव और प्रशिक्षण अधूरा हो ।

८. दूसरों के विषय में टिप्पणी देने से पहले सावधानी और समझ से काम लें जैसा कि वह आपके ही घर का सदस्य हो ।

९. नाकारात्मक विवरण को श्रेय न दें और निरंतर उत्तम बातों के लिए विश्वास करें जितना संभव हो । खासतौर पर यह ध्यान दें कि सहकर्मी या मसीही अगुवों को कलंकित न करें ।

१०. दूसरों के अभिप्रेरणा पर कभी दोष नहीं लगाना चाहिए । आप उनके स्थिति में स्वयं को नहीं डाल सकते इसलिए पूर्ण रीति से उनके उत्साहना को समझें । याद रखें, आप सिर्फ शब्दों को सुनते और कार्यो को नहीं देखते; तो आपको उनके उत्साह के विषय जानकारी नहीं होती है ।

११. जो भी आप कहते हैं उसमें ईमानदार रहें । आशीष देने, मदद करने और मार्गदर्शन करने के लिए बातचीत करें ।

१२. सांख्यिकी और वर्णन का विवरण देने में सही हो । बढ़ा – चढ़ाकर बात करने से, न्यूनोक्ति या ज्यादा – सामान्यीकरण करने से बचे रहें ।

१३. चरित्र - चित्रण में विश्वासयोग्य रहें । हर कथन सही, निष्पक्ष और विवरण में कोई दाग न हो ताकि आपकी टिप्पणी बार – बार दोहराएँ बिना हिचक के भले ही वहाँ कोई भी क्यों न मौजूद हो ।

१४. ऐसे कथन से दूर रहें जो दो तरीके से समझा जा सके । हर दुतरफ़ी बात से बचें; आपकी स्थिति बिल्कुल स्पष्ट होनी चाहिए । अगर आप अपनी स्थिति बदलते हैं तो ऐसा कहें, छल – कपट करने से सावधान रहें । ध्यान रखें, ऐसा न हो कि लोग आपकी बातों पर निर्भर न कर सकें ।

१५. हर रोज पवित्र आत्मा से माँगे कि वह आपको आपके बोलचाल को सीमित रखें और मार्गदर्शन करें ।

व्यक्तिगत नैतिकता में खराई

परमेश्वर के जन को ऐसी खराई बनाए रहना चाहिए अपने नैतिकता में कि दूसरे उसे अपना आदर्श बनाएँ । यीशु मसीह निरंतर अपने शिष्यों के लिए एक नमूना छोड़ रहे थे, मसीही जीवन और सेवकाई क्या है उसका एक दर्जा स्थापित करते जा रहे थे । उसने अपने मनोवृत्ति से यह स्पष्ट किया (फिलि २: ५) और उसके कार्यो से (यूहन्ना १३: १५;१ पतरस २ : २१)

पौलुस एक आदर्श बनाने में बोधित था जो उसने अपने शिष्यों को नमूना बनकर सौंप दिया ।
- "तुम जानते हो कि तुम्हें किस प्रकार आचरण करना चाहिए ।" (२ थिस्सलु. ३ : ७)

- .... पर हम अपने – आप को तुम्हारे लिए आदर्श ठहराना चाहते थे कि तुम हमारे आचरन का अनुसरण करो । (२ थिस्सलु. ३ : ९)

- .... क्योंकि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता बन गया हूँ । मैं तुम से अनुरोध करता हूँ कि तुम मेरी सी चाल चलो । (२ कुरि. ४ : १५ – १६) मसीही अगुवा होने के नाते परमेश्वर के लोगों के लिए आदर्श बनना आपकी जिम्मेदारी है ।

कोई भी शब्द, मनोवृत्ति- या आपका कार्य लोगों के लिए अयोग्य नहीं होना चाहिए ताकि वे उनका नकल करें । भले ही हम काबिल हों या नहीं हों, हम, हमारे साथी और हमारे बच्चे सब चिन्हित लोग है । जनता को हमारे लिए ऊँचा दर्जा होता है । जो उनके स्वयं की नज़रों से ज्यादा होता है । हमारा जीवन मसीह को आदर तभी दे सकता है या सामर्थी प्रचार तभी हो सकता है जब हम पवित्रता के खराई में चलते है जो मसीह को प्रतिबिंचित करता है । हमारा व्यक्तिगत नैतिक – लक्ष्य मसीही – समानता होना चाहिए । पवित्र आत्मा हमें निरंतर मार्गदर्शन देता है ताकि हमारी खराई दोषारोपण से ज्यादा है ताकि हमारा जीवन सुसमाचार प्रचार को सौंप दें । मैं कुछ उदाहरण दे रहा हूँ ।

१. अपने व्यक्तिगत और अगुवापन के कार्यो में हमें दोषारोपण से उपर उठना चाहिए । हम हमेशा परमेश्वर और उसकी कलीसिया का प्रतिनिधित्व करते हैं । आप जहाँ भी जाते हैं आप चिन्हित हैं । आपका मुख्य समर्पण मसीह और उसके सेवकाई की जिम्मेदारी लेना है ।

२. हर नैतिक – संबंधी निर्णयों के लिए पवित्र शास्त्र को कार्यो का दर्जा दें । अगर कोई पवित्र - शास्त्रीय कथन नहीं है जो आपका मार्गदर्शन करें, तब अपने निर्णयों को परमेश्वर के वचन पर आधारित करें । हमेशा आप ऐसा प्रश्न कर सकते हैं । "यीशु मसीह ऐसी परिस्थिति में क्या करते ? हम क्या मसीही कार्य कर सकते हैं ?

३. आत्मिक और शारीरिक जरूरत की दुनिया में अपनी बोलचाल, वस्त्र, आदत, रूचि और जीवनशैली को संतुलित रखें आपके अगुवाई और मसीही जीवन में ।

४. स्वयं और घर के सफाई, □म, एकता और ईश्वरत्व में दूसरों के लिए आदर्श बनें ।

५. दूसरों के हक और सहानुभूति के लिए ध्यान देकर, उनके साथ अच्छा बर्ताव कर और संवेदनशील होकर आदर्श बनना चाहिए । हमेशा पारस्परिक संबंधों का आदर करें ।

६. दूसरों के विचार, अपमान, विरोध और शत्रुता में आपकी प्रति□या में उदारता और प्रौढ़ता का आदर्श बनें । सब बातों का प्रतिउत्तर मसीही प्रेम में क्षमा और प्रार्थना के साथ करें ।

७. विरोधी लिंग के सभी संबंधों में सावधानी और विवेकशीलता का आदर्श बनें । आत्मिक सलाहकार के नाते भविष्य के जाल में फंसने से सावधान रहें । अपने विचार के जीवन को परमेश्वर की नज़रों में शुद्ध रखने में चौकस रहें ।

आर्थिक बातों में खराई

आर्थिक और संपत्ति के प्रवंधक के रूप में परमेश्वर के जन को सम्पूर्ण खराई बनाए रखना चाहिए – व्यक्तिगत तथा जो भी आर्थिक बातों का नियंत्रण वह करता हो ।

१. संसार में मसीह के राज्य की बढ़ोत्री और दूसरे जरूरतों के लिए साधारण जीवनशैली में गहरे समर्पण के साथ आदर्श बनें ।

२. व्यक्तिगत खर्चे और हर प्रकार के निधि जो आपके इस्तेमाल के लिए सौंपा जाता है उसका सही प्रकार से संचालन करें । खर्चीले होने के लिए कीर्ति न कमाएँ ।

३. जिस कार्य के लिए लोगों ने दिया है उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें ।

४. विवरण देने में सही होना चाहिए । आर्थिक विवरण विस्तृत होना चाहिए, समयनिष्ठ और यथातथ्य रूप से सही भी । दान किया हुआ धन से जो भी पूर्ति हुआ उसका विवरन नियमित, विस्तृत और कठोर रूप से वास्तविक होना चाहिए ।

५. समय पर उधार पुर्ज़ा चुकाएँ । जब आप नई सेवकाई करना शुरू करें तब उधार पुर्ज़ा सब चुकता कर दें ।

६. कर्जा से दूर रहें और अपनी सेवकाई को कर्ज़ा से मुक्त करें । कर्ज़ा जाल होता है और मसीह पर प्रतिबिंबित होता है । पहले से ही पैसा बचाना ठीक रहता है न कि कर्ज़ा उठकर निरंतर ब्याज भरना । खाते में जमा रकम स्वामी का गुलाम बन सकता है जो आपके सेवकाई को विकलांग (असमर्थ) बना सकती है और आपके नाम को कलंकित कर सकता है । दर्शनशास्त्र के जाल से दूर रहें जो कहता है : "अभी ऐसा करो" या अभी खरीदो और बाद में चुकाओ"

सेवकाई की नैतिकता में खराई

परमेश्वर के जन को सेवकाई और अगुवापन में ऊँचे दर्जे के खराई को बनाए रखना चाहिए । सेवकाई, दूसरे व्यवसायों के तरह, नैतिक – संबंधी कई बाते हैं, और मसीही कार्यकर्ताओं को आपसी संबंधों और उनके कार्य करने की जगह में नैतिकता प्रकट करना चाहिए

१. ज्यादाा सावधान रहें, ज्यादा उदार बनें और व्यावसायिक बनें किसी दूसरे व्यवसायी के अपेक्षा से ज्यादा । मसीह और उसकी कलीसिया का नाम दॉव पर लगा रहता है जब किसी कार्य को आप करते हैं ।

२. इस बात को पहचानें कि आप परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करने के लिए और लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बुलाए गए हैं ।

३. अपने अगुवों और सेवकाई के लिए पूरा समय दें । जब बोर्ड या अधीक्षक की सहमीत हो तो वह अलग बात है । आलस्य और समय की बर्बादी की नेकनामी से सावधान रहैं । आपको दूसरे जिम्मेदारी को स्वीकार करने के लिए बार – बार विनती किया जाएगा, सभी स्तुति के योग्य, परन्तु आपके प्राथमिक बुलाहट को नष्ट कर सकता है ।

४. अपने कलीसिया या संस्था के प्रति और उसके सिद्धांत तथा परंपरा के प्रति ईमानदार रहें । कोई भी विचलन आपके तरफ से या आपके कार्य के प्रति हो तो कलीसिया या समूह को इस बात का विवरण दे देना चाहिए ।

५. मसीही कलीसिया और मसीही सहकर्मियों की नेकनामी के लिए सावधानी बरतें । सभी की नेकनामी आपके हाथ में सुरक्षित होना चाहिए ।

६. दूसरे कलीसिया, सेवकाई या मसीही अगुवों के साथ सभी हानिकर स्पर्धा से दूर रहें ।

७. दूसरे मसीही अगुवों के अगुवापन का आदर, करें और उनके सदस्यों की सेवा न करें जबतक वह कोई आपात स्थिति न हो या फिर दूसरे अगुवे के सलाह से ऐसा करें ।

८. भरोसे का उल्लंधन नहीं करना चाहिए ।

९. विश्वासियों और समूह में पवित्र आत्मा की एकता की सामर्थ को बनाए रखने की निरंतर कोशिश करें। किसी भी विभाजित वर्ग के भाग बनने से दूर रहें।

१०. अपने लोगों को खुश करने की खोज में, आपकी प्रमुखता, परमेश्वर को खुश करने में होना चाहिए।

११. नमूना बनें और सरकार तथा मसीही नागरिकता के प्रति आदर रखें।

१२. आपकी सेवा को प्राथमिक स्थान दें और सेवा के लिए मेहनताना या आर्थिक विकास को दूसरा स्थान दें।

हमेशा याद रखें कि जब आप अगुवाई नहीं कर रहे होते हैं, फिर भी आपको मसीही अगुवा समझा जाता है।

सेवक निष्फल क्यों होते हैं : वजह और सीखने के लिए अध्याय

मूलपाठ : १ तीमु ४ : ६ – ११

<u>परिचय</u> – हज़ारो पासबानों और सुसमाचार के सेवकों के पास एक सफल सेवकाई हो सकती थी – परन्तु ऐसा नहीं है । वे गिरे या पाप किए ऐसा नहीं है, परन्तु प्रभावशाली नहीं है और अपने सेवकाई में फलवन्त नहीं होते हैं । नीचे हम कुछ वजहों का विश्लेषण करेंगे, ताकि आपकी सेवकाई में आप इन बातों से दूर रहेंगे ।

<u>बातें जो सेवकाई को बर्बाद करती है :</u>

१. **<u>अपरिवर्तनीयता</u>**

अपरिवर्तनीयता की परिभाषा :
- "अनिच्छुक या बदलने की क्षमता की कमी"
- "बड़ा चित्र देखने की अक्षमता"
- "बदलाव के लिए बर्दाश्त नहीं होना" – जो लोग बदलाव के साथ चलना नहीं जानते ।

अपरिवर्तनीयता हमारे सवकाई के मुख्य भाग को नष्ट कर देता है :

क) वह हमारे भविष्य को बिगाड़कर नष्ट कर देता है ।

ख) परिवर्तनीय होने का अर्थ समझौता करना नहीं होता है । परिवर्तनीय होना सीखें और परमेश्वर के साथ चलें ।

२. **<u>ईर्ष्या</u>**

शैतान ईर्ष्या के बीज को बोता है । सहायक पासबान होने के नाते आप इसे देखेंगे । पासबान दूसरे पासबानों से ईर्ष्या करते हुए या उनके सहायकों से । शैतान सेवकों के विरूद्ध बर्बाद करता है । इसलिए :
- तुलना न करें ।
- सफलता को संख्या के साथ तुलना न करें ।
- स्वयं को दूसरों के साथ तुलना न करें । (२ कुरि. १०:१२)

३. **<u>अनियंत्रित जीभ</u>**

अनियंत्रित जीभ एक सभा का भगा देती है । जीवन और मृत्यु जीभ में होता है (नीतिवचन १८ : २१) इसलिए :
- एक व्यक्ति को नीचा न करें ।
- किसी के नेकनामी पर दाग न लगाएँ - भले ही आप में इतनी सामर्थ हो या न हो ।
- कचरा नहीं फैलाएँ ।

४. **<u>अनुचित पैकेज बनाना</u>**

स्वयं को उचित रूप से पैकेज करें । इसलिए आपके प्रकटीकरण का ध्यान रखें :– प्रभु के सामने, और संसार के भी सामने ।

इस बात का एहसास करें कि आपका प्रकटीकरण आपके गवाही पर प्रभाव डालता है ।
- स्त्रियॉं - ज्यादा सौदर्य - प्रसाधन न लगाएँ
- पहनावा - नियम होना आवश्यक है । हर फैशन को अपनाना जरूरी नहीं । पहनावे में सुंदर दिखें ।
- मोटे होने से दूर रहें – खाने की आदतों में स्वयं - नियंत्रण रखें, और व्यायाम करें । (१ तीमु ४ : ८)

५. **<u>आलोचना को स्वीकार करने में असफल होना</u>**

ऐसी आत्मा जिसको शिक्षा स्वीकार नहीं
- शिक्षणीय होना बढ़ने का एक भाग है । सह – सेवकों को और सभा के सदस्यों को आपके

सेवकाई करने का अवसर दें । यह नम्रता का अच्छा चिन्ह है ।

शिक्षणीय होना हमें सिखाता है आलोचना स्वीकार करना और चुप रहना । इसे शालीनता से स्वीकार करना सीखें । इसमें आपके सुधार के लिए कुछ सच्चाइयाँ होगी । गुस्सा में लाल – पीले न हों ।

६. <u>अवचनबद्ध साथी</u>

- एक अवचनबद्ध (असमर्पित) साथी या जीवन – साथी आपको नीचे गिरा सकता है ।
- आप ऊंचाई तक नहीं पहुँच सकते जबतक आपका साथीदार अनुमति नहीं देता ।
- अगर आप सेवकाई से ग्रस्त हैं और परमेश्वर के लिए बोझ रखते हैं – फिर आप अपने साथी के लिए बोझ बन जाएँगे ।

  एक असमर्पित साथी अकेलेपन का कारण ठहरेगा ।
- अकेलेपन का अर्थ है किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करना जो आपके दर्शन को देख नहीं सकता ।

  आपके विवाह में समर्पण महत्वपूर्ण है ।

  आपकी पत्नी को :
  - पवित्र आत्मा से भरा हुआ और परमेश्वर के लिए हृदय होना चाहिए ।
  - परमेश्वर और आपसे समर्पित ।

७. **<u>मानसिक आत्मिक और भावुक रूप से बढ़ने में असफल</u> – हमारे दोस्तों के साथ भी ।**

- एक व्यक्ति को बढ़ना चाहिए ताकि वह परमेश्वर और सेवकाई के लिए प्रेरणा और उत्साहना बनाए रखे । निरंतर ग्रहणक्षमता होना चाहिए ।
- जो व्यक्ति परमेश्वर के संदेश के लिए खोदता नहीं है उसके लोगों के लिए – वह आत्मिक रूप से मर जाएगा ।
- रिश्तों को बनाने का प्रयत्न करें ।

८. <u>लोगों का भय</u>

- परमेश्वर का वचन बॉटने के लिए । जो कुछ परमेश्वर ने आपके हृदय पर रख छोड़ा है उसका प्रचार करें, शिक्षा दें और उसपर विश्वास करें ।
- कलीसिया या सभा में । लोगों को खोने का भय । चिन्ता न करें । परमेश्वर आपको काफी जन देगा जिनको सच्चाई जानने की इच्छा हो ।

९. <u>लोगों के चोट और जरूरतों के लिए नासमझ होना</u>

- यह बढ़ोत्री को रोकता है । जब वचन तैयार करें तब हमेशा याद रखे : जिन लोगों को आर्थिक चोट है उन्हें उत्तर की जरूरत है । वैवाहिए जीवन में समस्या होनेवालों को भी उत्तर चाहिए । जिन लोगों को व्यवसाय समस्याएँ हैं उन्हें भी उत्तर चाहिए । जिन लोगों को दोषभावना की समस्या है उन्हें भी उत्तर चाहिए ।
- लोगों के दर्द को महसूस करने में विफल न हों । उनको प्रचार की जरूरत नहीं है । उन्हें प्रेम और ध्यान की जरूरत है ।

१०. <u>पदवी का प्रेम</u>

क) धमण्ड और पद्वी

अपने आप को बढ़ावा नहीं देना सीखें, परन्तु परमेश्वर की बुलाहट पर निर्भर हों । स्वयं की प्रशंसा घमण्ड करना होता है । वह आपको नीचे लाएगा ।

ख) बेईमानी

सच्चाई को घुमाने या बुढ़ा – चढ़ाकर बात न करें, जब आप गवाही या संख्या का बखान कर रहे हों ।

बाईस फंदे जिनसे आपको सेवकाई में दूर रहना है

१. धन के प्रेमी न बनें

“न हठी, न □धी, न पियक्कड़ , न मारपीट करनेवाला, और न नीच कमाई का लोभी ।” (१ तीमु ३ : ३; तीतुस १ : ७) १ पतरस ५ : २ कहता है, “... परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से; और नीच – कमाई के लिए नहीं ; पर मन लगाकर करो ।” धन को अपने निर्णयों पर शासन करने न दे जहाँ और जब आप सेवकाई करते हैं । परमेश्वर आपकी सहायता का स्रोत है । हमेशा परमेश्वर पर सहायता के लिए भरोसा करें । (फिलि ४ : १९) यशायाह ५६ : ११ में कठोर शब्द का इस्तेमाल हुआ है इस मामले में । “वे मरभूखे कुत्ते हैं, जो कभी तृप्त नहीं होते । वे चरवाहे हैं जिन में समझ ही नहीं; उन सभों ने अपने अपने लाभ के लिए अपना अपना मार्ग लिया है ।” इनको परमेश्वर कहता है, “उसके लोभ के पाप के कारण मैं ने □धित होकर उसको दुख दिया था, और □ध के मारे उस से मुँह छिपाया था; परन्तु वह अपने मनमाने मार्ग में दूर भटकता चला गया था ।” (यशा ५७ : १७)

इसलिए पौलुस १ तीमु ६ : ५ – ११ में हमे सावधान करता है और हमें उपदेश देता है कुछ लोगों के विषय में, “.....ऐसे लोगों की बुद्धि बिगड़ गई है । वे सत्य से गिर गए हैं । वे समझते हैं कि भक्ति कमाई का साधन है । पर सन्तोष साहित भक्ति बड़ी कमाई है । न हम इस संसार में कुछ लाए हैं और न यहाँ से कुछ हो जा सकते हैं । यदि हमारे पास खाने और पहनने को हो तो इन्हीं पर सन्तोष करना चाहिए । पर जो धनी होना चाहते हैं, वे ऐसी परीक्षा, जाल – फन्दे तथा अनेक व्यर्थ और हानिकारक लालसाओं में फंसते हैं, जो मनुष्यों को बिगाड़ देती है, और विनाश के समुद्र में डुबा देती हैं । रूपए – पैसे का लोभ सब प्रकार की बुराइयों का जड़ है । उसको प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए अनेक विश्वासी के मार्ग से भटक गए, और उन्होंने अपने – आप को नाना प्रकार के दु:खों से छलनी बना लिया है । हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से दूर रह; और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर ।”

कलीसिया में अगुवापन की इच्छा व्यक्तिगत आर्थिक लाभ के लिए नहीं होना चाहिए । (१ तीमु ३ : ३)
“......इन बातों के योग्य कौन है ? हम उन बहुत लोगों के समान नहीं हैं जो परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं । हम तो मन की सच्चाई और परमेश्वर की ओर से परमेश्वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं ।” (२ कुरि २ : १६ ब से १७)

“प्रभु परमेश्वर की यह वाणी है, मेरे जीवन की सौगन्ध, मेरी भेड़-बकरियाँ जो लुट गई, और मेरी भेड़-बकरियाँ जो चरवाहे के न होने के कारण सब वनपशुओं का आहार हो गई; और इसलिए कि मेरे चरवाहों ने मेरी भेड़ बकरियों की सुधि नहीं ली, और मेरी भेड़-बकरियों का पेट नहीं, अपना ही अपना पेट भरा; इस कारण है चरवाहों, प्रभु का वचन सुनो, प्रभु परमेश्वर यों कहता है, देखो, मैं चरवाहों के विरूद्ध हूँ, और मैं उन से अपनी भेड़-बकरियों का लेखा लूँगा, और उनको फिर उन्हें चुराने न दुँगा; वे फिर अपना अपना पेट भरने न पाएंगे । मैं अपनी भेड़-बकरियाँ उनके मुँह से छुडाऊँगा कि आगे को वे उनका आहार न हों । भले ही आपके पास ईश्वरीय हक है कि आप सुसमाचार से जीविका स्वीकार करें (१ कुरि ९ : १४) यह बुद्धिमानी होगी कि पौलुस का उदाहरण अपनाएँ अगर जीविका स्वीकार करना सुसमाचार प्रचार के लिए समस्या बन जाए । पौलुस ने जो कहा उसको नोट करें : “.....किन्तु हम यह अधिकार काम में नहीं लाए । हम सब कुछ सहते हैं कि हमारे द्वारा मसीह के सुसमाचार की कुछ रोक न हो ।” (१ कुरि ९ : १२ब, १३) यहेजकेल ३४ : २ ब में परमेश्वर का वचन हमें सावधान करता है : “प्रभु परमेश्वर यों कहता है, हाय इस्राएल के चरवाहों पर जो अपने अपने पेट भरते हैं । क्या चरवाहों को भेड़ - बकरियों का पेट न भरना चाहिए ?” फिर से पवित्र शास्त्र हमें सावधान करती है और उपदेश देता है : “तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो । जो तुम्हारे पास है, उसी पर सन्तोष करो; क्योंकि उस ने कहा है, “स्वयं मैं तुझे कभी न छोडुंगा, और न कभी तुझे त्यागुंगा ।” (इब्रानियों १३: ५)

२. झगडालू न बनें

"वह पियक्कड़ या मारपीट करनेवाला न हो । वह नम्र स्वभाव का हो । वह न झगडालू हो और न लोभी ।" (१ तीमु ३ : ३; तीतुस १ : ७) प्रभु के सेवक को झगडालू न होना चाहिए । पर सबके साथ कोमल, शिक्षा में निपुण, और सहनशील होना चाहिए ।" (१ तीमु ३ : ३; २ तीमु २ : २४) "पर मूर्खता, और अविघा के विवादों से अलग रह; क्योंकि तू जानता है कि उनसे झगड़े होते हैं । प्रभु के सेवक को झगड़ालू न होना चाहिए । पर सब के साथ कोमल, शिक्षा में निपुण, और सहनशील होना चाहिए । वह विरोधियों को नम्रता से समझाए । क्या जाने परमेश्वर उन्हें मन-फिराव का मन दें कि वे भी सत्य को पहचानें ।

और इसके द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने के लिए सचेत होकर शैतान के फन्दे से छूट जाएँ । (२ तीमु २ : २३- २३ - २६) कई बार हमें ऐसे भाईयों से बात करना पड़ा है जो धार्मिकता नहीं चल रहे होते हैं । कभी – कभी ऐसे विचार – विमर्श में वे चुप रहते हैं, परन्तु बाद में वे झूठी बात के एक तत्व को सच्ची बात के तत्व में बांध देते हैं । इसलिए फिर वाद – विवाद शुरू हो जाता है । अगर हम ईमानदारी, धार्मिकता और ज्योति में चलें तो बहुत रांकाए हट जाएँगी ।

३. नशीली पदार्थो का सेवन नहीं करें ।

पुराने नियम में नज़रानियों को नशीली पदार्थो के सेवन में मनाही थी । आत्मसंयम रखने से हम दूसरों को बचाने का एक उदाहरण देते हैं । कुछ लोग थोड़ा – थोड़ा शराब का सेवन कर बाद में शराबी बन जाते हैं ।
रोमियों १४ : १९ – २१ में कुछ निर्देशातत्व बुद्धिमानी से और सुन्दरता से दिया गया है : "हम उन बातों में लगे रहें जिनसे मेल – मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो । भोजन के लिए परमेश्वर का काम न बिगाड़ । सब कुछ शुद्ध तो है, परन्तु उस मनुष्य के लिए बुरा है जिसको उसके भोजन से ठोकर लगती है । भला तो यह है कि तू न मांस ठोकर लगती है । भला तो यह है कि तू न मांस खाए और न दाखरस पीए, न और कुछ ऐसा करे जिससे तेरा भाई ठोकर खाए ।"

इसलिए मैं कोई नशीली वस्तुएँ नही लेता । मैं नहीं चाहता कि कमज़ोर भाई या बहन के लिए मैं रूकावट बनूं । उदाहरण के तौर पर, मैंने सुना कि एक ठीक होता शराबी जब अपने स्वामी को एक गिलास शराब विवाह – समारोह में पीते देखा तब उसने सोचा, "अगर मेरा स्वामी शराब पी सकता है तो मैं भी पी सकता हूँ ।" और उसकी आदत पहले जैसी हो गई ।

४. नए विश्वासियों को कलीसिया के अगुवा न बनाएँ ।

नए विश्वासी में स्वयं – प्रशंसा, आत्मतुष्ठी, अहंकार और घमंड का खतरा होता है जब उसे अगुवाई का स्थान दिया जाता है । यह जिम्मेदारी नए विश्वासी को तभी दें जब वह दो या तीन साल तक आत्मिक रूप से बढ़ें । जिस प्रकार शैतान को घमंड आ गया, एक नया विश्वासी जो अगुवाई करेगा वह गिर जाएगा (१ तीमु ३ : ६) हमने इस मामले में एक कीमती अध्ययन सीखा है । मिशन क्षेत्र में हमने दो जवान सुसमाचार प्रचारक को अगुवाई का स्थान दिया था । तब तक वे दोनों अच्छे मसीही थे । जब उन्हें अगुवाई का स्थान मिला तो उनमें घमंड आ गया । उन्होंने हमारी सेवकाई की आलोचना करना शुरू किया । हमने उनके लिए उपवास रखकर प्रार्थना किया और उन्हें सलाह भी दिया परन्तु उन्होंने सुनने से इन्कार कर दिया । आखिरकार, परमेश्वर का नाम, उसके भेड़ सबको पीडित होना पड़ा और हमें उन्हें उनके कार्य से निकालना पड़ा ।

५. अयुक्तिपूर्ण और हठी न बनें

"... न हठी, न □धी, न पियक्कड़, न मारपीट करनेवाला, और न नीच कमाई का लोभी हो ।" (तीतुस १ : ७) अगर आप हठी होते हैं तो उस खच्चर के समान होते हैं जो उस दिशा में जाने से इन्कार करता है जहाँ उसे भेजा जाता है । यीशु मसीह न अपनी मर्जी का पालन नहीं किया । वह सिर्फ वही बोलता या करता था जो उसके पिता के सिद्ध मर्जी के अनुसार था । "मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ; और मेरा न्याय सच्चा है,

क्योंकि मैं अपनी नहीं परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ ।" (यूहन्ना ५ : ३0) फिर जब वह ऊंचाई पर पहुँचा – जो सेवकाई का सबसे कठिन भाग था – वह फिर से पुकार उठा, "तौभी जैसा मैं चाहता हूँ नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो ।" (मत्ती २६ : ३९ब)

६. चिड़चिड़ा न बनें

एक कलीसिया के अगुवा को चिड़चिड़ा, □धी, आवेश में आना, अविवेकपूर्ण, आगबबूला नहीं होना चाहिए (तीतुस १ : ७) परन्तु संयमी होना चाहिए (तीतुस १ : ८) नीतिवचन १६ : ३२ पर अध्ययन करें : "विलम्ब से क्रोध करना वीरता से, और अपने मन को वश में रखना, नगर को जीत लेने से उत्तम है ।"
नीतिवचन १७ : २७ हमें सिखाता है : "जो संभलकर बोलता है, वह ज्ञानी ठहराता है, और जिसकी आत्मा शान्त रहती है, वही समझवाला पुरूष ठहराता है ।" नीतिवचन १४ : २९ इस बात पर ज़ोर देता है, "जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है वह बड़ा समझवाला है, परन्तु जो अधीर है, वह मूढ़ता की बढ़ती करता है ।"

७. परमेश्वर के भेड़ पर शासक न बनें

अगुवाई करना प्रभुत्व होना नहीं है । आपको उन लोगों के लिए आदर्श बनना है जिनका आप मार्गदर्शन करते हैं । (१ पतरस ५ : ३) अगुवा बनने के लिए आपको लोगों की अगुवाई करना पड़ता है न कि उन पर प्रभुत्व ।

"उनमें वाद – विवाद भी हुआ कि उन में से कौन बड़ा समझा जाता है । उसने उनसे कहा, अन्यजातियों के राजा उन पर प्रभुता करते हैं; और जो उन पर अधिकार रखते हैं, वे उपकारक कहलाते हैं । परन्तु तुम ऐसे न होना; वरन जो तुम में बड़ा है, वह छोटे के समान और जो प्रधान, वह सेवक के समान बने । क्योंकि बड़ा कौन है, वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है ? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है ? परन्तु में तुम्हारे बीच में सेवक के समान हूँ ।" (लूका २२ : २४-२७) यीशु मसीह जब पृथ्वी पर शारीरिक रूप में थे, सिर्फ उसी समय उन्होंने सेवा नहीं किया परन्तु उसकी देह, जो कलीसिया है उसके द्वारा वह आज भी सेवा करता है । उदाहरण के तौर पर, जैसे हम वचन से सेवा करते हैं उन लोगों के साथ जो मेज़ पर आत्मिक भोजन के लिए बैठे हों । यीशु मसीह के प्रासंगिक प्रशन को नोट करें आयत २७ में : "... बड़ा कौन है, वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है ? क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है ?

यीशु मसीह इस बात को फिर से महत्व देता है कि अपने शिष्यों पर (प्रेरितो पर) जब वह, उनका प्रभु बनकर उनके पैर धोता है । यह करने से वह यह दर्शाता है कि एक सच्चे सेवक को उसके शिष्यों की नम्रता से सेवा करना चाहिए, न कि स्वयं – सेवा की चाहत रखनी चाहिए : "क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो । मैं तुम से सच – सच कहता हूँ , दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं और न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से । तुम ये बातें जानते हो, और यदि उन पर चलो तो धन्य हो ।" (१ यूहन्ना १३ : १५-१७)
यह बात नोट करने योग्य है कि यीशु मसीह ऐसे एक अगुवा जो दूसरों पर प्रभुता करता है उसे कपटी कहता है (मत्ती २३ : २३) और मत्ती २३ : ११ – १२ में वह विधिपूर्ण चेतावनी भी देता है । "जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने । जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा : और जो अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा ।"

इसलिए स्वयं की सेवा की चाहत न रखे – विशेषकर अपने सहकर्मियों या कलीसिया के सदस्यों से सेवा करने के द्वारा अपने आप को सेवक सावित करें । उदाहरण के तौर पर, अपने मेहमानों को क्या आप चाय पिलाकर सेवा करेंगे ? क्या आप खाना बनाकर बरतन धोने के लिए तैयार होते है वचन के सिखाने के बाद, या आप महसूस करते हैं कि अगुवा बनकर आपका हक बनता है बैठकर सेवा दूसरों से लिया जाए ?
जब आप दूसरों के साथ चलते हैं तो क्या सबसे आगे रहकर सबसे पहले अन्दर जाते हैं या दूसरों को पहले अन्दर जाने देते हैं ? शिमोन, के घर पर खाना खाते समय जो फरीसी का घर था, यीशु मसीह ने उदाहरण दिया कि कैसे हमें दूसरों की सेवा करना है और खुद के लिए नहीं । मरियम (मार्था की वहन) ने यीशु मसीह के चरण का अभिषेक जटामांसी का

बहुमूल्य इत्र से किया (यूहन्ना १२ : ३) । क्योंकि उसने नम्र होकर यीशु मसीह की सेवा की, उसने मार्था को सबके सामने ऊँचा उठाया और हमेशा के लिए स्मरण का कारण ठहरायाा

८. "आपका/मेरा" कलीसिया या राज्य न स्थापित करें ।

कई मसीही अगुवे उनकी सेवकाई लूका १० : २ के जवाब में शुरू करते हैं - उसके खेत पर कार्यकर्ता बनकर । परन्तु कुछ समय बाद परमेश्वर का राज्य बनना बन्द हो जाता है । वे बदलकर अपना राज्य बनाना शुरू करते हैं । दुर्भाग्यवश हम पाते हैं वे यीशु मसीह के समय के धर्मियों जैसा बन जाते हैं (मरकुस १२ : १-९ देखें) वे परमेश्वर का भेंट स्वयं के लिए इस्तेमाल कर रहे थे । वे परमेश्वर के दाख के बारी का देखभाल स्वयं की कटनी के लिए कर रहे थे । बारी परमेश्वर का था परन्तु उसका फल वे स्वयं के लिए ले रहे थे और परमेश्वर का भाग उसको नहीं दे रहे थे । यहाँ पर कार्य करते हुए भाड़े का किसान और बंधुए मजदूर के विशेष भेद को नोट करें । भाड़े पर कार्य करनेवाले किसान सेवकाई में व्यक्तिगत लाभ के लिए काम कर रहे होते हैं । बंधुए – मजदूर कठिनाई और सताव को बर्दाशत करने की इच्छा रखते हैं, यहाँ तक कि वे अपना जीवन राजा और उसके स्वर्ग राज्य के लिए दे देना चाहते हैं । इसलिए हम ९ वें आयत के सौभ्य चेतावनी पर ध्यान दें : "इसलिए दाख की बारी का स्वामी क्या करेगा ? वह आकर उन किसानों का नाश करेगा, और दाख की बारी दूसरों को दे देगा ।

परमेश्वर उसके बंधुए – सेवकों के साथ सुन्दर वादा करता है जो उसके सिद्ध इच्छा को करते हैं । जो उसकी आज्ञा का पालन करते है, भले ही कितनी ही बड़ी परीक्षा या सताव हो, उन्हें खास ईनाम मिलता है।
"... वह समय आ पहुँचा है कि मरे हुओं का न्याय किया जाए, और तेरे दास भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों को और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं बदला दिया जाए ..." (प्रकाशितवाक्य ११ : १८ब) सांप्रदायिक घमंड व्यक्तिगत, शारीरिक "राज्य स्थापना" का कारण बन सकता है । पौलुस कुरिन्थियों को चेतावनी देता है : "क्योंकि जब एक कहता है, मैं पौलुस का हूँ, और दूसरा, मैं अपुल्लोस का हूँ, तो क्या तुम मनुष्य नहीं ? ...... है भाईयों मैं तुमसे इस रीति से बाते न कर सका जैसे आत्मिक लोगों से, परन्तु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं । (१ कुरि ३ : ४; १ कुरि ३ : १) परमेश्वर के दृष्टि में तुम प्रौढ़ नहीं हो – भले ही आप अगुवा क्यों न हों – अगर आप संप्रदाय को स्थापित कर रहे हैं या एक मनुष्य अगुवा के पीछे हो लेते हैं, मसीह से बढ़कर ।

"अपुल्लोस क्या है ? और पौलुस क्या है ? केवल सेवक, जिनके द्वारा तुमने विश्वास किया, जैसा हर एक को प्रभु ने दिया ...... लगानेवाला और सींचनेवाला दोनों एक हैं, परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा । (१ कुरि ३ : ५,८) "हे भाइयों मैंने इन बातों में तुम्हारे लिए अपनी और अपुल्लोस की चर्चा दृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिए कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना, और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना । क्योंकि तुझ में और दूसरे में कौन भेद सकता है ? और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया ? और जब कि तू ने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है कि मानो नहीं पाया ? (१ कुरि ४ : ६-७) आत्मिक स्पर्धा से जो सडन पैदा होता है दुर्भाग्यवश वह आज भी कलीसिया में पाई जाती है इसका मूल वजह है आत्मिक घमण्ड । यह आत्मिक प्रौढ़ता की कमी और असुरक्षा से आती है ।

<u>परमेश्वर के हृदय के जलते हुए प्रश्न है :</u>

i) क्या हम परमेश्वर के साथ इस मरती हुई दुनिया के लिए मध्यस्थी कर रहे हैं ? (भजन संहिता २ : ८)
ii) क्या हम अभी भी खोए आत्माओं की तलाश में हैं ? (यहेजकेल ३४ : ४; लूका १९:१०)
iii) क्या हम सचमुच परमेश्वर के राज्य की खोज पहले कर रहे हैं ? (मत्ती ६ : ३३)
iv) क्या हम परमेश्वर के सम्मुख आत्मिक रूप से भटकनेवालों के लिए गिड़गिड़ा रहे हैं और क्या हम जाकर उन्हें ढूँढ़ रहे हैं ? (यहेजकेल ३४ : ६)
v) क्या हम विधवाओं और अनाथों की भेंट करते हैं – जो याकूब कहता है "जो परमेश्वर और पिता स्वीकारता है वह शुद्ध और निर्मल भक्ति है" (याकूब १ : २७)
vi) क्या हम आज भी गरीबों को खिलाते, नंगे और बीमारों की सुधि लेते है ? (मत्ती २५: ३५-३६)

vii) क्या हम आज भी शुद्ध हृदय और पवित्र जीवन के लिए प्रयास करते हैं ? (कुलु १ : २२; याकूब १ : २७; २ पतरस ३ : १४; इब्रानी १२ : १४)

viii) क्या हम आज भी परमेश्वर के सामने नम्र होते हैं शुद्धीकरण के लिए, नए अभिषेक और पवित्र आत्मा के नए सामर्थ के लिए हमारे जीवनों में ? (यिर्म ५० : ४-५)

९. ताड़ना और सुधार के लिए स्वयं को खुला रखें ।

अगुवे जो मसीह के बजाए स्वयं की सेवा करते हैं (यीशु के दृष्टांत में भाड़े के किसान मरकुस १२ : १ - ९) वे डॉट – फटकार, चेतावनी और परमेश्वर के कठिन ताड़ना के लिए खुले नहीं होते (देखें तीतुस १ :१३) पौलुस रूखाई से इसे पेश करता है : "क्योंकि बहुत से लोग निरंकुश, बकवादी और धोखा देनेवाले हैं; (तीतुस १ : १०) परमेश्वर उसके चिरदुखी में अनुग्रह में, यह आशा उनसे रखता है कि वे अपनी गलती का इकरार करेंगे, अंगीकार कर स्वयं को नम्र करेंगे, उसके बंधुए-दास को उनके पास भेजता है ताकि वे पश्चाताप करें । परन्तु जैसे कई बार, वे सिर्फ उसके वचन की उपेक्षा नहीं करते परन्तु उनके बंधुए – दास के चरित्र और सेवकाईयों को भी दूषित कर देते हैं "...... और उसका अपमान किया ।" (मरकुस १२ : ४) आज भी दुनिया में कई ऐसे जगह हैं जहाँ परमेश्वर के बंधुए – दासों पर वार, पथराव, और उन्हें मार डाला जाता है (मरकुस १२ : ५) परिस्थिति की गंभीरता ९ वें आयत में हम देखते हैं और प्रकाशितवाक्य के रोमियो ११ : १८ व में । "इसलिए परमेश्वर की कृपा और कड़ाई को देख । जो गिर गए उन पर कड़ाई, परन्तु तुझ पर कृपा, यदि तू उसमें बना रहे, नहीं तो तू भी काट डाला जाएगा ।" (रोमियो ११ : २२) क्योंकि हम उसे जानते हैं, जिसने कहा, और फिर यह, कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा । जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है ।" (इब्रानियों १० : ३०ब,३१)
इन सब के बावजूद, परमेश्वर इन लोगों को अन्त तक पश्चाताप करने का सच्चे बंधुए – दास बनने को उत्साहित करता है : "इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए ।" (१ पतरस ५ : ६)

मैं इस बात के लिए आपको सावधान करना चाहता हूँ कि प्रभु जितना आपको उपयोगी बनाता है, उतना ही ज्यादा धमण्ड में गिर सकते हैं । यदि आप इसमें पड़ जाए और घमण्ड का सामना नहीं करेंगे, तो वह आपको शिक्षा देने योग्य नहीं रखेगा । क्योंकि परमेश्वर आपको उपयोगी बनाता है, तो आप सोचत हैं कि आपने इतना प्रगति किया है कि आपको आगे चलकर कुछ सीखने की जरूरत नहीं है । यदि आप ऐसा सोचते हैं, तो अन्त में आपको लगेगा कि आपके आत्मिकता के द्वारा ही आत्मिक बढ़ोत्री और आत्मिक फल दिख रहें हैं । आप इस सोच में धोखा खा सकते हैं कि परमेश्वर की भेंट और सामर्थ आपके व्यवसाय या अच्छाई का परिणाम है । शिक्षा देना एक वरदान है; बीमारों को चंगाई देना एक वरदान है; ज्ञान का वचन या बुद्धि एक वरदान है; एक नबूवत के वचन की सेवकाई करना वरदान है; भेंट का समझ होना एक वरदान है; वगैराह ...... इसलिए यदि प्रभु आपको वरदानों में उपयोगी बना रहा है, तो इसका मतलब यह नहीं कि आपने आत्मिकता का बड़ा स्तर प्राप्त कर लिया है या दूसरे भाइयों से बहुत दूर निकल गए हैं जो अगुवे हैं ।

उदाहरण के तौर पर, आत्मिक वरदानों का कार्य आपके जीवन और सेवकाई में तीव्र हो सकता है और बढ़ सकता है यदि हम समय – समय में उसे ज्वलित करें । (२ तीमु १ : ६) कुरिन्थियों के तरह, आप भी वरदानों में प्रवीण हो सकते हैं (१ कुरि. १ : ७अ) जब तुम एक आत्मिक बालक ही हो, जब पवित्र आत्मा के फल की कमी है आपके जीवन में (१ कुरि. ३ : १ - ३अ) इसलिए, आपके सेवकाई में आत्मिक वरदानों का बहाव नहीं जो आपके आत्मिक बढ़ोत्री को निश्चित करता है बल्कि आप उन वरदानों से क्या करते हैं – दूसरे शब्दों में आपकी मनसा क्या है । क्या आपकी मनसा यह है कि मनुष्यों की नज़रों में महान बनना, ताकि वे आपका आदर कर सकें, या फिर आपका हृदय उन वरदानों के बहाव के लिए जलता है ताकि मसीह के देह का निर्माण हो ?

१ कुरिंथियो १४ : १अ, ३ब : में पौलुस डॉटकर कहता है "प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो ...... वह मनुष्यों से उन्नति, उपदेश और शांति की बातें कहता है ।"

इस बात को रेखाचित्र करने के लिए यहाँ एक उदाहरण दिया गया है : मैं ऐसे कई सभाओं में जा चुका हूँ जहाँ पवित्र आत्मा ने प्रभुता किया है और वहाँ के सदस्यों को उत्साहना और सामर्थ मिला । दूसरे तरफ, मैंने ऐसे भी सभा में भाग लिया है जहाँ सेवक मनुष्यों के नज़रों में महान बनने के लिए तब तक एक व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता है जबतक वह गिरे नहीं । यह सौभाग्य की बात है कि कोई वरदान किसी को मिला हो जैसे ज्ञान का वचन या आत्माओं को परखने का वचन । परमेश्वर के नज़रों में यह बड़ी जिम्मेदारी है जो उसे आपके उपर विश्वासपूर्वक सौंपा है ।

क्या आप इस वरदान का गलत उपयोग करते हैं कि प्रभु जो आपको लोगों के बारे में दिखाता है उनकी आप आलोचना या गपशप करते हैं ? या आप तुरंत परमेश्वर के साथ मध्यस्थी करते हैं ऐसे लोगों के लिए, और तभी मुँह खोलते हैं जब पवित्र आत्मा आपको इस बात के लिए मार्गदर्शन करता है । एक प्रार्थना जो मैं स्वयं के लिए हमेशा करता हूँ वह यह है कि परमेश्वर मेरे हृदय की मनसाओं के विषय में मुझे प्रकाशन दें और नए सिरे से स्थिर आत्मा को उत्पन्न करे (भजन संहिता ५१ : १०) मैं प्रार्थना करता हूँ कि परमेश्वर का अनुग्रह मेरे गलत मनसाओं को मुझसे निकाल फेंके (इफि १ : १७-१८) "... वही तो अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों की मतियों को प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी ।" (१ कुरिन्थियों ४ : ५ ब) हम प्रार्थना करें कि परमेश्वर हमें प्रकाशन देना शुरू करें और जो कुछ अन्धकार में है उसे ज्योति में लाए, हमारे हृदय की छिपी मतियाँ भी ताकि न्याय के दिन हम परमेश्वर के सम्मुख खड़े रहने योग्य बन सके बिना किसी दोष के ।

१०. ईर्ष्या या स्वार्थी महत्वाकांक्षा से प्रचार न करें ।

फिलिप्पियों १ : १५ – १७ अ में पौलुस दूसरे जाल के विरूद्ध जो वचन के सेवकों को पहरावा देना है । फिर से छिपी मनसाएँ कारण होते हैं, "कितने तो डाह और झगड़े के कारण मसीह का प्रचार करते हैं और कितने भली मनसा से ।" पिछले इसे प्रेम से करते हैं ...... और पहले बताए गए लोग मसीह का प्रचार स्वार्थी महत्वाकांक्षा से करते हैं, सच्चाई से नहीं ...... ।

<u>गलत मनसाएँ</u>	<u>सही मनसाएँ</u>
- डाह और झगड़े के कारण	- शुभेच्छा के कारण
- स्वार्थी महत्वाकांक्षा के कारण	- प्रेम के कारण

सेवकाई में विवाद और झगड़ा घुसता है जब सहकर्मी, परमेश्वर के चुने हुए अधिकारी और सेवकाई ढाँचे के विरोध में खुला विद्रोह करते हैं । कभी – कभी अनबन हो जाता है जैसे की पौलुस और बरनबास के विषय में ।

यह दूसरे तरह से भी कार्य कर सकता है । परमेश्वर आपके रास्ते में (आपके सेवकाई में) किसी को भेज सकता है जो खतरनाक बातों और असंतुलन को दर्शाएगा । यह इसलिए होता है क्योंकि आप प्रभु की बारी को अपना समझने लगते हैं (जैसे – कि भाड़े के किसान – मरकुस १२ : १ - ९) जिस प्रकार मैंने पहले के अनुच्छेद में बताया है कि ये लोग तुम्हें परिस्थितियों का प्रकाशन देगे ।

यदि आप स्वयं-सेवा कार्य में लग जाते हैं तो आपकी प्रतिक्रिया इन लोगो के प्रति आपको इस बात को दर्शा देगी । शायद ऐसा हो कि आपने सेवकाई प्रेम या बोझ से शुरू किया, परन्तु अभी जो सेवकाई प्रभु ने आपको दिया है उसे आप डाह से पकडे रहने की कोशिश करते हैं ।

यह एक स्वाभाविक भाग है आपके बढ़ने की क्रिया का और एक परीक्षा भी जो समय-समय में आपके सेवकाई में होता जाएगा । जब प्रभु आपके परिस्थितियों को स्पष्ट करता है, आपके प्रतिक्रिया (अन्दर और बाहर) उस परिस्थिति के लिए जो होता है वह यह दर्शाएगा कि आपको किस प्रकार प्रतिउत्तर देना है और उसमें लगने वाले क्या कार्य हैं । इन

परिस्थितियों में आपको क्या करना चाहिए ? हम देखें कि मूसा ने क्या किया जब मिरियम, हारून, सह – अगुवे उसकी बुलाहट की ले लेना चाहते थे : "... मिरियम और हारून उसकी उस ब्याहता कूशी स्त्री के कारण उसकी निन्दा करने लगे; उन्होंने कहा, क्या यहोवा ने केवल मूसा ही के साथ बातें की हैं क्या उसने हमसे भी बातें नहीं की ? उनकी यह बात यहोवा ने सुनी । मूसा तो पृथ्वी भर के रहने वाले सब मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था । सो यहोवा ने एकाएक मूसा, हारून और मरियम से कहा, तुम तीनों मिलापवाले तम्बू के पास आओ । तब वे तीनों आए । तब प्रभु ने बादल के खम्भे में उतरकर तम्बू के द्वार पर खड़ा होकर हारून और मरियम को बुलाया; सो वे दोनों उसके पास निकल आए । तब प्रभु ने कहा, मेरी बातें सुनो : यदि तुम में कोई नबी हो, तो उस पर मैं प्रभु दर्शन के द्वारा अपने आपको प्रकट करूँगा, या स्वप्न में उस से बातें करूँगा । परन्तु मेरा दास मूसा ऐसा नहीं है; वह तो मेरे सब धरानों में विश्वास योग्य है । उस से मैं गुप्त रीति से नहीं, परन्तु आमने – सामने और प्रत्यक्ष होकर बातें करता हूँ; और वह प्रभु का स्वरूप निहारने पाता है । सो तुम मेरे दास मूसा की निन्दा करते हुए क्यों नहीं डरे ? तब प्रभु का कोप उन पर भड़का, और वह चला गया; तब वह बादल तम्बू के ऊपर से उठ गया, और मरियम कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई । हारून ने मरियम की ओर दृष्टि की, और देखा, कि वह कोढ़िन हो गई है । तब हारून मूसा से कहने लगा, हे मेरे प्रभु हम दोनों ने जो मूर्खता की वरन् पाप किया, वह पाप हमपर न लगने दें । मरियम को उस मरे हुए के समान न रहने दे, जिसकी देह अपनी माँ की पेट से निकलते ही अधगली हो । मूसा ने यह कहकर प्रभु की दोहाई दी, कि हे परमेश्वर, कृपा कर, और उसको चंगा कर । (गिनती १२ : १-१२, १३) क्योंकि मूसा नम्र व्यक्ति था, परमेश्वर और मनुष्य के सामने (आयत ३), वह परमेश्वर का सच्चा बधुआ – दास था और उसके सब धरानों में विश्वास – योग्य था (आयत ७) जब उसकी सेवकाई का विरोध किया गया, उसने स्वयं का बचाव नहीं किया परन्तु सबकुछ परमेश्वर पर छोड़ दिया ।

<u>इसमें मूसा आपको और हमको एक उदाहरण देते हैं कि किस प्रकार हमें व्यक्तिगत आलोचना और विरोध का सामना करना चाहिए । परमेश्वर आपका बचाव करे । रक्षात्मक न बनें और स्वयं को अच्छा दिखाने की कोशिश न करें । यीशु ने जो किया वह करें, "आनन्दित हों और अत्यन्त खुश रहें ।"</u>

परमेश्वर के घराने के लिए मूसा का विश्वासयोग्यता हमें यह बताता है कि वह मिरियम को दी गई सजा में खुश नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर को पुकारा ताकि वह उसे चंगा कर दे । हारून के कार्य आत्मज्ञान से भरा है । उसने परमेश्वर को करूणा और क्षमा के लिए नहीं पुकारा । बल्कि, हारून ने मूसा से उसके और मरियम के अन्याय और विद्रोह के प्रति पश्चाताप किया । हारून ने मूसा से पूछा : "हे मेरे प्रभु, हम दोनों ने जो मूर्खता की वरन् पाप किया, यह पाप हम पर न लगने दे ।" (आयत ११) मूसा का प्रतिउत्तर हमारे लिए एक बहुत बड़ा पाठ है । यदि मूसा नम्र न होता, और प्रेम तथा क्षमा से भरा न होता तो उनके पाप की सजा उठा नहीं लिया जाता था । हमें आज मूसा के परमेश्वर समान गुण अगुवापन में होना चाहिए । (ईश्वरीयता ही ईश्वर जैसा होना है)

११. ऐसे "अच्छे विचार" जो आपके मन और इच्छा से हो उसे अमल में न लाएँ ।

हमारा कार्य है यह पता लगाना कि परमेश्वर क्या चाहता है और उसे पूरा करना है । दूसरे दल – सदस्य के अच्छे विचार आपके सेवकाई में गलत हो सकता है । जबतक पवित्र आत्मा आपको स्पष्ट रूप से निर्देशन नहीं देता है, कोई भी परियोजना शुरू करने से पहले सावधान हो जाएँ । "जो शरीर से जन्मा है,वह शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है । (यूहन्ना ३ : ६)

कई बार लोगों को सेवकाई में देखा गया है जो परमेश्वर के दूसरे सेवकों का नकल करते हैं । वे दूसरे का संदेश प्रचार करते हैं यहाँ तक की उनके मुखाकृति, उनके हाव – भाव और उनके आवाज भी । यह समझने वाली बात है । हम दूसरों से सीखते हैं और यह गलत नहीं है कि पवित्र शास्त्र की शिक्षा जो हमने दूसरों से सीखा है उसे आगे बढ़ाया जाए । (२ तीमुथियुस २: २) परन्तु यदि हम नाम कमाने और भाग्य के लिए इन दॉवपेंच या भविष्यवाणियों को खोजते हैं "...... परमेश्वर ऐसा कहता है" जब हम दूसरों के शब्दों को उधार में लेते हैं फिर हम परमेश्वर के अप्रसन्न करने के खतरे में रहते हैं । यिर्मयाह २३ : ३0 में इस प्रकार हमें सावधान रहने को कहा गया है : "प्रभु की यह वाणी है, देखो, जो

भविष्यद्वक्ता मेरे वचन औरों से चुरा – चराकर बोलते हैं, मैं उनके विरूद्ध हूँ ।" (यिर्मयाह २३: ३०) जब आप दूसरों को उद्‌धृत करते हैं, तो उन्हें आपके टिप्पणी के स्रोत का प्रकाशन देते हुए उन्हें उसका श्रेय दें । परंतु दूसरों को उद्‌धृत करते समय ऐसा बोलने में सावधान रहें, "प्रभु ने मुझे दिखाया है" या "प्रभु ने मुझसे बातचीत किया", वगैराह । अपने स्रोत को कबूल करे और आप सुरक्षित हैं ।

१२. दूसरों को परमेश्वर के वचन पर निर्देशन न दें जब तक आप स्वयं "जो प्रचार करते हैं उसका अभ्यास करें ।"

यीशु मसीह मत्ती २३ : ३ में सावधान करते हैं कि, "इसलिए वे तुम से जो कुछ कहें, वह करना और मानना : परन्तु उनके जैसे काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं ।" मैंने यह आत्मिक नियम देखा है; यदि मैं उन सिद्धांतों के विषय में शिक्षा देता हूँ जिनका मैंने जीवन में उपयोग किया है, तो यह उनके जीवनों में भी कार्य करता है जो इसे सुनते हैं । यदि आप ऐसी कोई शिक्षा देते है जो आपके विवेकी ज्ञान से हों, किंतु स्वयं आपने जीवन में इसे सावित नहीं किया तो हो यह दूसरों के लिए जाल और परीक्षा बन जाता है । आप और आपके सुननेवालों की परीक्षा ली जाती है क्योंकि परमेश्वर का अभिषिक्त वचन हमेशा परीक्षा का विषय बन जाता है (लूका ८ : १३, १५)
पौलुस समझ गया कि यदि वह अनुशासन के विषय में प्रचार करता है, या पवित्र जीवन बिताना तथा पाप और दुनिया से अलग होना तो फिर उसे पहले उसका अभ्यास करना है । वरना वह ईश्वरीय न्याय के खतरे में पड़ जाता । "मैं अपनी देह को मारता – कूटता, और वश में लाता हूँ । ऐसा न हो कि मैं दूसरों को प्रचार करूँ और स्वयं ही पुरस्कार पाने के लिए अयोग्य ठहरूँ ।" (१ कुरिन्थियों ९ : २७)

१३. आलसी न बनें तथा प्रार्थना और पवित्र शास्त्र अध्ययन की उपेक्षा न करें ।

वचन के कुछ सेवकों की शुरूवात "विश्वासयोग्य और बुद्धिमान सेवक से होती है जिसे स्वामी ने अपने नौकरों – चाकरों पर निरीक्षक नियुक्त किया कि वह समय पर उन्हें भोजन दे ।" (मत्ती २४ : ४५) परंतु जिस तरह समय जाता है, वे अपने दर्शन से हट जाते हैं और आलसी बन जाते हैं । वे कल का और परसों का भोजन गर्म करके खाते हैं और परमेश्वर के चेहरे की खोज नहीं करते आज के वचन के लिए ।

दूसरे समयों में भोजन बहुत कम होता है क्योंकि वे वचन में समय बिताने के लिए बहुत ही आलसी हो जाते हैं और नया "प्रकाशन - ज्ञान" के लिए परमेश्वर की खोज भी नहीं करते हैं । परिणाम : भेड भूख के मारे तड़पते हैं । ऐसे अगुवों को परमेश्वर कहता है, उस समय मैं दीपक लिए हुए यरूशलेम में ढूँढ – ढ़ाँढ करूँगा, और जो लोग दाखमधु के तलछट तथा मैल के समान बैठे हुए मन में कहते हैं कि प्रभु न तो भला करेगा और न बुरा, उनको मैं दण्ड़ दुँगा ।" (सपन्याह १ : १२) परमेश्वर कहता है, "और मैं तुम्हें अपने मन अनुकूल चरवाहे दुँगा, जो ज्ञान और बुद्धि से तुम्हें चराएँगे ।" (यिर्म ३ : १५) दूसरे शब्दों में परमेश्वर आपका प्रतिस्थापन करेगा ।

१४. परमेश्वर के भेड़ के साथ दुर्व्यवहार न करें

दूसरे फिर से "... वह दुष्ट सेवक" जो "... अपने साथी – सेवकों को मारने – पीटने लगे" (मत्ती २४ : ४८ - ४९) वे विधिवादी बनने के लिए ऐसा करते हैं । (इसका मतलब है कि आप पवित्र शास्त्र का उपयोग मारने – पीटने, नीचे गिराने और परमेश्वर के भेड़ को दोषी ठहराने के लिए करते हैं – बजाए शिक्षा देने के प्रेम से निर्देशन देने के धीरज और कृपालु होकर) आप लोगों को नियंत्रित करते हैं डर का न्याय देते हुए ।
पौलुस ने अच्छा तरीका सिखाया । "परन्तु जिसके बन्धन में हम थे उसके लिए मर कर, अब व्यवस्था से ऐसे छूट गए हैं कि लेख की पुरानी रीति पर नहीं वरन् आत्मा की नई रीति पर सेवा करते हैं ।" (रोमियों ७ : ६) पौलुस विधिवादियों को बुलाता है, जो व्यवस्था का प्रचार करते हैं (खतना करना), "निरंकुश, बकवादी और धोखा देनेवाले" (तीतुस १ : १०; १ तीमुथियुस १ : ६-७अ), "जो सच्चाई से भटक गए हैं (सच्चा सुसमाचार)" (१ तीमुथियुस १ : ६-७अ; गलतियों २ : १४)

क्योंकि वे प्रचार करते हैं, “उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने स्वीकार किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है तो वह स्रापित हो ।” (गलतियों १ : ९)

ऐसे अगुवों का चरित्र - चित्रण “करने” और “नहीं करने” में किया जाता है – सच्ची पवित्रता के बजाए बाहरी दिखावा और पहनावे के बारें में शिक्षा देना (गलतियों १ : ९-१0; १ तीमुथियुस ४ : १-५) उनके पास हर प्रकार के नियम रहते हैं, जो मसीह में मुक्त हैं उन्हें बंधुवाई में डालने के लिए । वे विधिवादी दावे को गहरी आत्मिकता और सच्चा सुसमाचार के रूप में उपस्थित करते हैं, जबकि सच्चाई में उन्हें “सच्चाई की ओर आज्ञाकारिता में रोका जाता है” (गलतियों की पुस्तक को इस तरह पढ़ा जाना चाहिए)

मत्ती २३ में यीशु मसीह उन्हें ढोंगी बुलाता है और उन्हें सावधान करता है १३, १४ वें आयत में : “हे पाखंडी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम पर हाय ! तुम मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो । न तो आप ही उस में प्रवेश करते हो, और न उस में प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो ।” और यहेजकेल ३४ : २ब, ४ब : “प्रभु परमेश्वर यों कहता है, हाय इस्राएल के चरवाहों पर .... परन्तु तुम ने बल और जबरदस्ती से अधिकार चलाया है ।”

१५. आप नींव पर कैसे घर बनाते हैं इस बात का ख्याल रखें ।

प्रभु ने पौलुस का उपयोग किया एक प्रेरित के रूप में ताकि लोगों की कलीसिया के लिए वह एक नींव डाले । हम, अगुवे होने के नाते, परमेश्वर के सम्मुख एक विशाल ज़िम्मेदारी रखते हैं कि हमें इस नींव पर कैसे बनाने की शुरूवात करना है : “परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया है, मैं ने बुद्धिमान राजमिस्त्री के समान नींव डाली, और दूसरा उस पर रददा रखता है । परन्तु हर एक मनुष्य चौकस रहे, कि वह उस पर कैसा रददा रखता है । वह उस नींव को छोड़, जो पड़ी है, और जो यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव डाल सकता । यदि कोई इस नींव पर सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्थर, काठ, घास या फूस का रददा रखे, तो हर एक का काम प्रकट हो जाएगा; क्योंकि वह दिन उसे बताएगा । वह आग के साथ प्रकट होगा । वह अगर हर एक का काम परखेगी कि कैसा है । जिसका काम उस पर बना हुआ स्थिर रहेगा, वह मजदूरी पाएगा । यदि किसी का काम जल जाएगा तो वह हानि उठाएगा । किंतु वह स्वयं बच जाएगा, परन्तु जलते – जलते ।” (१ कुरि. ३ : १0-१५)

१६. परमेश्वर के वचन को प्रस्तुत करते समय धोखा या तोड़ - मरोड़ करने में सावधानी रखें ।

(२ कुरि.४: २; जकर्याह १0:२) १ तीमुथियुस ६ : २0 – २१ में पौलुस हमें डॉटता है, “इस थाती की रखवाली कर और जिस ज्ञान को ज्ञान कहना ही भूल है, उसके असुद्ध बकवाद और विरोध की बातों से दूर रह । कुछ धर्मशिक्षक इस ज्ञान को स्वीकार कर सच्चे विश्वास से भटक गए हैं ।” हम में से कई जो मिलता – जुलता पाठ पढ़े हैं (उदाहरण २ कुरि.११: ३-४; २ तीमु.२:१६–१७; २ तीमु ४:३-४; २ तीमु. ३:८) वे ऐसा सोचते हैं कि उन्हें सिर्फ संप्रदायवादी समुदाय और उनके अगुवों से लेना देना है । पौलुस, फिर भी हर शिक्षा, जो परमेश्वर के वचन से पूर्ण रूप से समर्थन नहीं करता उसका विरोध करता है । उसी तरह एक और बात कहा जा सकता है कि पवित्र शास्त्र की सच्चइयों जिनकी तुलना, अन्तर स्पष्ट करने के द्वारा प्रतिसंतुकित, पवित्र शास्त्र के सच्चाईयों का पूरक कार्य न हो, तो यह एक व्यक्ति के विश्वास-जीवन में संतुलन की कमी ला सकता है ।

नीचे दिए गए उदाहरण को जॉचे । यह ऐसे सच को रेखाचित्रित करती है जो प्रतिसंतुलित हो । मत्ती ३ : १२ में हम पढ़ते हैं कि यीशु मसीह, जो न बुझनेवाला आग है, वह भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने का नहीं । : “उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी तरह साफ करेगा । वह अपने गेहूँ को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने का नहीं ।” यह लेखांश व्यवस्थाविवरण ४ : २४ पर आधारित है : “तुम्हारा प्रभु परमेश्वर भस्म करनेवाली आग है; वह ईर्ष्यालु परमेश्वर है ।” (इब्रानी १२: २७-२९ भी देखें) पवित्र शास्त्र जैसे व्यवस्थाविवरण ४ : २९ – ३१ इस मूलपाठ को संतुलन प्रदान करता है : “परन्तु वहां भी यदि तुम अपने प्रभु परमेश्वर को ढूँढोगे, तो वह तुम को मिल जाएगा । शर्त यह है कि तुम अपने पूरे मन से और अपने सारे प्राण से उसे ढूँढो । अन्त के दिनों में जब तुम संकट में पडो, और ये सब विपत्तियॉ तुम पर आ पडेंगी, तव तुम अपने प्रभु परमेश्वर की ओर फिरना ओर उसकी आज्ञा मानना; क्योंकि तेरा प्रभु परमेश्वर दयालु परमेश्वर है; वह तुमको न तो छोड़ेगा और न नष्ट

करेगा, और जो वाचा उस ने तेरे पूर्वजों से शपथ खाकर बांधी है उसको नहीं भूलेगा ।" यह लेखांश, अनुशासन तथा करूणा और पुनर्स्थापन के न्याय के साथ प्रतिसंतुलन को रेखाचित्रित करता है ।

शिक्षा या प्रकाशन का आधार जब शास्त्र के एक ही मूलपाठ पर हो तो हम खतरे का सामना करते हैं – बिना बाइबल के दूसरे आयतों के साथ प्रतिसंतुलित करते हुए जो शिक्षा के दूसरे रूख को दर्शाता है । परमेश्वर का वचन बहुत ही स्पष्ट है कि, " .... किसी प्रकार के अधर्म अथवा पाप के विषय में, चाहे उसका पाप कैसा ही क्यों न हो, एक ही जन की साक्षी न सुनना, परन्तु दो अथवा तीन साक्षियों के कहने से बात पक्की ठहरे ।" (व्यवस्थाविवरण १९: १५; मत्ती १८ : १६ब)

१७. स्वयं प्रशंसा और स्वयं बढ़ोत्री से दूर रहें ।

२ कुरिन्थियों ४ : ५ में पौलुस कहता है, "हम अपने को नहीं, परन्तु मसीह यीशु को प्रचार करते हैं कि वह प्रभु है । हम अपने विषय में यह कहते हैं कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं ।"

कुछ प्रचारक ऐसे घोषणा करते हैं कि वे मसीह के राज्य को स्थापित करने की खोज करते हैं । किंतु जब वे मंच पर जाते हैं, वे स्वयं का विज्ञापन,बकवाद और दिखावा करते हैं और यीशु मसीह के बजाए स्वयं की घोषणा करते हैं । मसीह को कभी – कभी सम्पूर्ण रूप से ढॉक दिया जाता है ।

१८. स्वयं को महत्व देना और "मैं कितना महान हूॅ" के जाल से बचें ।

कुछ कलीसिया के अगुवे जो अपने ही नजरों में इतने महत्वपूर्ण बन जाते हैं, वे "साधारण" विश्वासी के साथ मित्रता नहीं करते । शैतान को यह माता है कि वह परमेश्वर के दास को इस बात के लिए उत्साहित करे जिसे लोगों का ध्यान मिलता हो और उसे सोचने पर मजबूर करता है : "मैं परमेश्वर का विशेष राजदूत हूॅ ।" ऐसा व्यक्ति वही जाल में गिरता है जैसा लूसिफर – आत्मिक घमण्ड । वह ऐसा सोचता है कि वह दूसरे सेवकों से बढ़कर है । वह ऐसा सोचता है, "क्योंकि मेरी सेवकाई तुमसे बड़ा है, इसलिए मैं तुमसे ऊॅचा हूॅ ।" ऐसे किसी व्यक्ति से जो कि उससे "छोटा" हो यह उसके इज्जत के लिए खराब होगा ।

इस [illegible] में कुछ लोग सम्पूर्ण रूप से २ कुरिन्थियों १० : १२ की दृष्टि को भूल जाते हैं : "हमें यह साहस नहीं कि हम अपने – आप को उनमें से ऐसे लोगों के साथ गिनें या उन से अपने को मिलाएं जो अपनी प्रशंसा करते हैं और अपने आप आपस में नाप तौलकर एक दूसरे से मिलान करके मूर्ख ठहराते हैं ।" वे दावा हैं कि वे परमेश्वर के राज्य का बढ़ावा कर रहे हैं, किंतु यह नहीं समझते की मसीह विश्वासियों की देह से स्वयं को व्यक्त करता है – सिर्फ थोडे बहुत प्रमुख कलीसिया के अगुवे ही नहीं ।

पौलुस इस सिद्धांत को स्पष्ट करता है जब वह लिखता है "परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक – एक करके देह में रखा है । यदि वे सब एक ही अंग होते तो देह कहॉ होती ? परन्तु अब जैसा है, अंग अनेक हैं, परन्तु देह एक ही है" "इसके विपरीत, देह के अंग जो दूसरों की अपेक्षा निर्वल दिखाई पड़ते हैं, बहुत आवश्यक है । देह के जिन अंगों को हम आदर के योग्य नहीं समझते हैं, उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं और हमारे कुरूप अंग बहुत सुन्दर हो जाते हैं । फिर भी हमारे सुन्दर अंगों को इसकी आवश्यकता नहीं थी । परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है कि जिस अंग को कमी थी उसी को बहुत आदरणीय बना दिया । ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बरोबर चिन्ता करें । (१ कुरिन्थियों १२ : १८-२०, २२-२५)

यीशु मसीह भले ही कितने भी थके भूखे या प्यासे क्यों न होते थे वे एक व्यक्ति को पहचानने के लिए समय निकालते थे । (यूहन्ना ४: ६-२२; मत्ती १४ : १३-१४)

अगुवे जो स्वयं – प्रशंसा में उठते हैं वे मत्ती २३ : ६ – ७ के पाखंडी समान होते हैं जो "भोजों में मुख्य – मुख्य आसन, बाजारों में नमस्कार और मनुष्यों में गुरू कहलाना उन्हें अच्छा लगता है ।" हमारा हृदय पहचान और दिखावे का खोजी नहीं बल्कि जो जरूरत में हैं उनकी देखरेख और सेवा का खोजी होना चाहिए ।

१९. लोगों की स्तुति के लिए भले कार्य न करें ।

फरीसियों के विषय में जो पवित्र शास्त्र बताता है, वैसा होने से बचें, "वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिए करते हैं ।" (मत्ती २३ : ५ अ) यदि आप ऐसे हैं, आप सिर्फ पाखंडी ही नहीं, किंतु आपने अपना प्रतिफल पा लिया (लोगों की प्रशंसा) "...... तब अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा पाखंडी लोग सभाधरों और गलियों में करते हैं ताकि देखनेवाले लोग उनकी बड़ाई करें । में तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना पुरस्कार पा चुके ।" (मत्ती ६ : २;आयत ३ और ४ की तुलाना करें)

किसी ने ऐसा टिप्पणी दिया है : "सेवकाई में जो लोग मनुष्यों के आदर की खोज करते हैं और धमण्ड में गिरते हैं, वे असुरक्षित होते हैं ।" हम परमेश्वर की प्रशंसा की खोज करें और ऐसा जीवन व्यतीत करें जो उसको स्वीकृत हो ।

२०. अनैतिकता हमेशा के लिए शर्म के साथ कलंकित हो जाता है ।

दुर्भादयवश कुछ अगुवे अपराधी महसूस करते हैं, "...... वे भक्ति का भेष धारण करेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे ।" (२ तीमुथियुस ३ : ५) "इन्हीं में से वे लोग हैं, जो धरों में दबे पॉव घुस आते हैं और उन छिछोरी स्त्रियों को वश में कर लेते हैं, जो पापों से दबी और हर प्रकार की वासनाओं के वश में हैं ।" (२ तीमुथियुस ३ : ६)

कभी – समाचारपत्रों और पत्रिकाओं में सुसमाचार प्रचारकों या प्रचारकों के विषय में छापते हैं जिनके विवाहेत्तर संबंध है "मसीही" स्त्रियों के साथ । इस घोर पाप से कई घर और विवाह टूट चुके हैं । पुरूष स्त्री को यह कहकर बंधुवा बना लेता है कि मुझसे अकेले में मिलना क्योंकि परमेश्वर ने मुझे आपके बारे में सुन्दर प्रकाशन दिया है । नासमझ और अस्थिर स्त्रियॉ इनके कहने में आ जाते हैं । वे ऐसा सोचते हैं कि सभा के दौरान उस व्यक्ति के ऊपर इतना अभिषेक था, तो वह कोई गलत काम नहीं कर सकता । उन्हें इस बात का एहसास नहीं होता कि परमेश्वर अपने वरदानों से, और अपनी बुलाहट से कभी पीछे नहीं हटता ।" (रोमियों ११: २९) इसका मतलब यह है कि भले ही एक प्रचारक बुरा बन जाता हो और नैतिक रूप से सड़ जाता हो, फिर भी उसके पास वो सब भेंट जो परमेश्वर ने दिया है वह धारण किए रहता है और उनका गलत उपयोग कर सकता है ।

२१. निर्भरता और निराशा से बचें ।

कभी – कभी आपको ऐसा महसूस होता है कि आपके सेवकाई में उत्तरों से ज्यादा प्रश्न हैं भजन संहिता १२६ : ५ – ६, से उत्साहना लें, "जो आंसू बहाते हुए बोते हैं, वे जय – जयकार करते हुए लवने पाएंगे । चाहे बोनेवाला बीज लेकर रोता हुआ चला जाए, परन्तु वह फिर पूलियॉं लिए जय – जयकार करता हुआ निश्चय लौट आएगा ।" जब कोई व्यक्ति हताश होता है, तो परमेश्वर के विरूद्ध बड़बड़ाने का प्रलोभन होता है । १ कुरिन्थियों १0 : १0 में पौलुस हमें सावधान करता है, "न तुम कुड़कुडाओ । जिस रीति से उन में से कुछ लोग कुड़कुड़ाए और नाश करनेवाले दूत के द्वारा नाश किए गए ।" हम ऐसे परमेश्वर की सेवा करते हैं जो कभी थकता नहीं है । चुँकि उसके पास भरपूर भावुक, शारीरिक और मानसिक निधि है, वह थके हुओं को सामर्थ दे सकता है और कमजोर लोगों के सामर्थ को बढ़ा सकता है ।

२२. सेवकाई कभी नहीं त्यागे ।

कई बार थकावट निराशा के साथ जाती है, और यह आपके बुलाहट के चाहत को खोने में मजबूर कर सकता है । इसके लिए तैयार हो जाएँ । यह एक परीक्षा है जिसे सेवकाई में हर व्यक्ति अलग – अलग समय और अलग – अलग परिस्थितियों में अनुभव करेगा । इसलिए यीशु मसीह इफिस्यों की कलीसिया की प्रशंसा करता है, प्रकाशितवाक्य २ : ३,

"तू धीरज रखे हुए है । तू मेरे नाम के लिए दुख उठाते आया है । तू धीरज रखे हुए है । तू मेरे नाम के लिए दुख उठाते - उठाते थका नहीं ।"

जब कोई यह महत्व देता है कि परमेश्वर एक अगुवा से क्या अपेक्षा करता है और उसके लिए कौन से फंदे होते हैं, तब एक व्यक्ति महसूस करता है कि अगुवाई की जिम्मेदारी कितना बड़ा होता है । दुर्भाग्यवश इससे एक व्यक्ति को लगेगा कि यह अप्राप्य है । फिर भी, हम पौलुस के साथ २ कुरिन्थियों ३ : ४-६ में आनन्द मना सकते हैं, "हम मसीह के द्वारा परमेश्वर पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं । यह नहीं कि हम अपने आप इस योग्य हैं कि अपनी ओर से किसी बात का विचार कर सकें । पर हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है । जिस ने हमें नई वाचा के सेवक होने के योग्य भी किया । कोरे शब्द के सेवक नहीं वरन् आत्मा के; क्योंकि शब्द मारता है, पर आत्मा जिलाता है ।" हम गलतियॉ करेंगे किंतु इन्हीं के द्वारा हम सही अगुवे बन पाएँगे और परमेश्वर के बंधुए दास । इसके साथ, हमारी गलतियॉ हमें दूसरों के साथ स्वयं को पहचानने में सक्षम करता है और जो लोग इस प्रकार के अनुभव से होकर गुज़रते हैं उनपर किस तरह करूणा करना ।

किस प्रकार हार और दुर्बलता के साथ व्यवहार करना ।

परमेश्वर के राज्य में कोई हार नहीं होता; सिर्फ सीखनेवाले होते हैं । "मनुष्य की गति प्रभु की ओर से दृढ़ होती है, और उसकी चलन से वह प्रसन्न रहता है; चाहे वह गिरे तो भी वह पड़ा न रह जाएगा, क्योंकि प्रभु उसका हाथ थांभे रहता है ।" (भजन संहिता ३७ : २३-२४) "उस ने मुझ से कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है । मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है ।" (२ कुरिन्थियों १२ : ९-१0) जब आप हार जाते हैं तो मेमने की ओर देखें (यीशु मसीह)

"जब हम सब के उधाडे चेहरे से प्रभु का तेज इस प्रकार प्रतिविम्बित होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो हम प्रभु के द्वारा, जो आत्मा है, उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं ।

जब हम हार जाते हैं तो परमेश्वर की उपस्थिति में हमें समय बिताना चाहिए । उसके महिमा को हमारे ऊपर चमकने देना चाहिए (मनन के समय और स्तुति के समय), हम उसकी समानता में बदल जाते हैं । यदि आप पाते हैं कि आप किसी फंदे में गिरे हैं तो मैं आपको रोमियों ८ : २६ – ३९ को बार – बार पढ़ने का उपदेश दुँगा । जब आप गिरते हैं तो परमेश्वर आप पर आरोप नहीं लगाता है । क्योंकि उसने पहले से ही यीशु मसीह के जरिए आपको न्यायोचित्त ठहराया है । "परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगाएगा ?"

(आयत ३३) यीशु मसीह भी हमें दोषी नहीं ठहराता – किंतु वह हमारे लिए परमेश्वर से निवेदन भी करता है । (आयत ३४) "परन्तु इस सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है, विजेताओं से भी बढ़कर है । मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊँचाई, न गहराई और न कोई, और न समस्त सृष्टि की कोई वस्तु हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी ।" (रोमियों ८ : ३७-३९)

जब परमेश्वर हमारा चुनाव करता है, बुलाता है, अलग करता है और हमें भेजता है तो परमेश्वर की सहायता, सामर्थ और अनुग्रह के कई सुन्दर वायदे हैं : "तो भी मैं निरन्तर तेरे संग ही था; तू ने मेरे दाहिने हाथ को पकड़ रखा । तू सम्मति देता हुआ, मेरी अगुवाई करेगा, और तब मेरी महिमा करके मुझ को अपने पास रखेगा" (भजन संहिता ७३ : २३-२४) "जो मुझे सामर्थ देता है, उस से मैं सब कुछ कर सकता हूँ ।" .... "मैं अपने प्रभु मसीह यीशु का जिसने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता हूँ कि प्रभु ने मुझे विश्वास योग्य समझकर अपनी सेवा के लिए ठहराया है ।" (फिलिप्पियों ४ : १३; १ तीमुथियुस १ : १२) "इसलिए हे मेरे पुत्र, तू उस अनुग्रह से जो मसीह यीशु में है, बलवंत हो जा ।" (२ तीमु. २ : १) "परन्तु प्रभु मेरा सहायक रहा । उसने मुझे सामर्थ दी ताकि मेरे द्वारा पूरा – पूरा प्रचार हो, और सब अन्य जाति सुन लें । मैं सिंह के मुँह से छुडाया गया हूँ ।" (२ तीमुथियुस ४: १७) "इब्रानी ११ : ३४ उन लोगों के बारे में कहता है जो "निर्बल होने पर भी बलवनत हुए ।" "जिन पर परमेश्वर ने प्रकट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्य जातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है । वह यह है, कि मसीह जो महिमा की आशा है, तुम में रहता है (कुलुस्सियों १ : २७) आगे, इब्रानी ६ : १0 कहता है, "परमेश्वर अन्यायी नहीं कि वह तुम्हारे काम और उस प्रेम को भूल जाए जो तुम ने उसके नाम के लिए इस रीति से दिखाया कि पवित्र लोगों की सेवा की, और अब भी तुम कर रहे हो ।"

इसलिए भाइयों और बहनों जो दर्द में हैं तिरस्कार किए गए हैं और हार का एहसास है, तुम जो बहुत दुःखी हो और अलगाव में जी रहे हो : इतने वर्षो के दौरान तुमने अपने इर्द - गिर्द एक आड बना लिया है और किसी को अपने नजदीक आने की अनुमति नहीं देते । इसके बावजूद भी आपका हृदय प्रेम और स्वीकृति के लिए पुकार उठता है । ओह ! मेरे भाई, मेरे बहन प्रभु के दाख की बारी में आपकी जरूरत है । परमेश्वर तुमको एक नया, तेज हंसुआ देना चाहता है ताकि कटनी ला सको जो भूमि पर पके हैं । क्या आज के दिन तुम नकाब नहीं उतारोगे, अपने घमंड को जेब में नहीं डालोगे और किसी को देख या जिसको जानते हो, आदर करते हो या भरोसा करते हो उससे बात नहीं करोगे ? हार के हर चोट और भावनाओं से परे हो जाओ । यीशु मसीह के चोट खाए हुए सैनिक □स के पास आ जाओ । वहाँ यीशु मसीह तुम्हारे लिए रूका हुआ है । पौलुस भी, सभी समय का "महान" प्रेरित बुरी तरह से चोट खाया था । "...... क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है ......" (२ तीमु . ४ : १0 अ); "सिकन्दर ठठेरे ने मुझसे बहुत बुराइयाँ की है ।" (२ तीमु ४ : १४अ); "अदालत में मेरे पहले प्रत्युत्तर देने के समय किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया ।" (२ तीमु . ४ : १६ अ); फिर कुछ यहूदी आए ......"उन्होंने पौलुस पर पथराव किया । फिर उन्हें मरा समझकर नगर के बाहर घसीटकर ले गए ।" (प्रेरितों के काम १४ : १९) इन सब के बावजूद पौलुस दृढ़तापूर्वक कहता है : "मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ । मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है । मैंने विश्वास की रखवाली की है ।" (२ तीमुथियुस ४ : ७)

भाईयों, बहनों, यीशु के नाम में, दूसरों के दर्जो से स्वयं को नापना बन्द कर दो । जिस दर्जे से परमेश्वर आपको देखता है उससे नापना शुरू कर दो – यीशु जिसने शिमौन से कहा ("सरकण्डा" जो हवा के हर हल्के झोंके पर झुकती है) उनके पहले मिलन में : "शिमौन, तुम पतरस हो," ("चट्टान" जो हिल नहीं सकता, स्थिर रहनेवाला)जो आप नहीं हैं उसका ढ़ोंग रचना बंद कर दें । ऐसे कार्य करना छोड़ दें जो यह साबित करता हो कि आप परमेश्वर के दास हैं । ओह ! आइए और □स के सामने घुटने टेको । जो आपके हृदय में है उसे अंगीकार करें और उसके उपस्थिति का, क्षमा का, स्वच्छता का, शांति और प्रेम का अनुभव करो । ऑसुओं को बहने की अनुमति दो – वह चंगाई को लाता है । यीशु मसीह जो बचाता है, उसने तुम्हें बुलाया और भेजा है, और तुम्हें कहता है, "डरो मत, सिर्फ विश्वास करो !" परमेश्वर ने तुम्हें क्षमा किया है । दूसरों ने तुम्हें क्षमा किया है । अभी तुम स्वयं को क्षमा करो । पौलुस कहता है, "परन्तु यह एक काम में करता हूँ : जो बातें पीछे रह गई हैं, उनको भूलकर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ । मैं निशाने की ओर दौड़ा चला जा रहा हूँ ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है ।" (फिलि . ३ : १३ ब-१४)

खड़े हो जाओ, भाई । खडे हो जाओ, बहन । आप आत्मिक जीवन या बुलाहट किस प्रकार शुरू करते हैं यह परमेश्वर नहीं गिनता, परन्तु इसे आप किस प्रकार समाप्त करते हैं उसपर निर्भर है । आपको ऐसा महसूस होगा की आप जमीन पर होंगे कुश्ती के मैदान में और रेफरी ने आठ तक गिनती लगा ली है, परन्तु यीशु मसीह के नाम से उठें ! उसके प्रेम के नए विस्तार में; यीशु मसीह के साथ प्रभु जानकर चलना; उसके राज्य में एक नए सभा में हो लेना; उसके पवित्र आत्मा के नए अभिषेक में चलना; भूमि का नया दर्शन के साथ जो कटनी के लिए सफेद हो; उसको प्रसन्न करने के लिए एक नया उद्देश्य; उसके कार्य में नए प्रेरणा में चलनाा

हॉ, यीशु मसीह आपके राख की जगह में महिमा रखता है, और हार के जगह पर सफलता रखता है । स्वर्गीय कुम्हार ने आपका पुनः सृष्टि किया है । वह "एल शदाई", जो भरपूरी का परमेश्वर है, परमेश्वर जो हर हालत में सन्तुष्टि देता है – जो महान है !

अगुवाई के समस्याओं पर कैसे विजय प्राप्त करें

१. **मूल्य**

(क) अकेलापन जो आगे होने से और अकेले होने से होता है । (१ राजा १९ : ९-१0)

(ख) घबराहट (२ कुरि. ४ : ८) और दूसरों की समस्याओं का बोझ (२ कुरि. ११ : २८-२९)

(ग) परिस्थितियों की कठिनाईयॉं (२ कुरि.११ : २३-२७) जो थकावट और दर्द का कारण होता है ।

(घ) समय पर दबाव (मरकुस ३ : २0)

(ङ) आलोचना और तिरस्कार (२ तीमु १ : १५)

२. **विपत्तियॉं**

(क) स्वयं धार्मिकता, घमंड और उच्चाकांक्षा (१ तीमु. ३ : ६)

(ख) "इसलिए तुम अपनी और पूरे झुण्ड की रखवाली करो ।" (प्रेरितों के काम २0 : २८)

(ख) ईर्ष्या (गिनती ११ : २८-२९)

(ग) चापलूसी (१ कुरि. ३ : ४-९)

(घ) अचूकता (गल. १ : ८)

(ङ) आवश्यकताएँ (निर्ग.१८ : १३-२६; पें रितों के काम २0 : २८ – २९, ३८)

(च) निराशा (२ कुरि. ४ : ८)

(छ) असंभव परिस्थितियॉं (निर्ग. १४ : १0-१४)

(ज) समझौता (निर्ग. ८ : २५-२७)

(झ) असहनशीलता (गिनती २0 : १0-११)

(ञ) आजादी (गलतियों २ : १-९)

अगुवाई की ओर प्रतिउत्तर

१. उनकी प्रशंसा कर उनका आदर करें (१ थिस्सु.५ : १२-१३)

२. उन्हें आर्थिक रूप से सहयोग करें । (१ तीमु.५ : १७-१८); थोड़ा समय काम करनेवाले भी मज़दूरी के योग्य हैं ।

३. निर्मूल अफवाहों का तिरस्कार करें और उसका विरोध करें (१ तीमु. ५ : १९)

४. उनकी ओर समर्पित रहें (१ कुरि. १६ : १६)

५. उनकी आज्ञा करें (इब्रानी १३ : १७) किसी ने निरीक्षण किया है : "जब आप कहते हैं कि सिद्धांत के किसी बात से सेहमत होते हैं, इसका मतलब यह होता है कि आपका थोड़ा भी इरादा नहीं है कि आप इसका अभ्यास करेंगे ।"

विश्व का मूल विवाद अधिकार है और परमेश्वर का इरादा यह है कि एक समर्पित कलीसिया के द्वारा संसार के ऊपर उसके अधिकार का प्रगटीकरण हो । जब भी हम परमेश्वर की सेवा बदले की भावना से करते हैं तो शैतान को महिमा मिलती है । जैसे शमुएल ने राजा शाऊल प्रस्तावना दिया कि वह उसके अनाज्ञाकारिता के फल परमेश्वर को बलिदान के रूप में चढ़ाएगा, "परमेश्वर से विद्रोह करना और भारी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है । हठ करना मूर्तियों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है ।" (१ शमु. १५ : २३) समर्पण एक मनोवृत्ति है और उसे सम्पूर्ण होना चाहिए; परन्तु आज्ञाकारिता कार्य करने पर निर्भर है, इसलिए यह संवंधित है । कई बार आज्ञाकारिता के ज़रिए समर्पण स्वयं को व्यक्त करता है, परन्तु सिर्फ परमेश्वर ही अयोग्य आज्ञाकारिता स्वीकार कर सकता है (दानिय्येल १ : ८-२0) और आज्ञाकारिता सीखी जा सकती है (इब्रानी ५ : ८) समर्पण तभी एकरूपता से संभव है जब निरंतर रूप से पवित्र आत्मा हमारे अन्दरूनी मनुष्यत्व को फिर से भरता है । (इफि ५ : १८-२१) दबोरा की गीत हमारे कलीसियाओं के लिए प्रत्यक्ष गवाही बन जाए : "कि इस्राएल के अगुवों ने जो अगुवाई की और प्रजा जो अपनी ही इच्छा से भरती हुई, इसके लिए यहोवा को धन्य कहो ! (न्यायियों ५: १-२)

नए नियम की कलीसियाई जीवन

"नए नियम की कलीसियाई जीवन" को करने से पहले यह निश्चय कर लेना बुद्धिमानी होगा कि हमें क्यों ऐसा लगता है कि इसका अध्ययन करना चाहिए और इसमें शामिल होने के लिए हमें क्या उत्साहित करती है ।

१. हम क्यों दिलचस्पी लेते हैं ?
क्योंकि हमारे दिल के भीतर में यह धारणा है कि पहले सदी कलीसिया में साधारण तौर पर लोग जोश, जीवंतता, शुद्धता और सादगी का अनुभव करते थे विस्तार में और निरंतर रूप से जो हम नहीं महसूस करते ।

२. क्योंकि हम कम से कम बोधित रूप से उनके जीवन के विशेष गुण, संगति और समझ की खोज करते हैं जो पवित्र आत्मा को आजादी से कार्य करने के लिए वातावरण को संभव बना देते थे ।

३. क्योंकि हम निश्चित हैं कि हमारे अध्ययन के लिए आधिकारिक स्रोत है : परमेश्वर के अनन्तकाल का वचन । यह स्रोत हमें यह विश्वास करने में संभव बना देता है कि हम दोनों को खोज सकते हैं : क) सच्चाइयों की रोशनी जो हमें सिर्फ विचारों के आगे दिशा देती है, और ख) सिद्धांत जो अभ्यास की ओर निर्देशन देते हैं जो सिर्फ एक धुन नहीं परन्तु तात्पर्य बताते हैं ।

हमारे शामिल होने में क्या उत्साहित करता है ?

१. हम नए नियम के लोग हैं । हम कलवरी के वाचा में जीते हैं, और पिता के वायदों को स्वीकारा है । इन दो सच्चाइयों में – क्षमा जो पुत्रों के गोद लेने में है, और आत्मा के अभिषेक में परिपूर्णता – हमारा जीवन कार्य करने पर निर्भर है ।

२. पवित्र आत्मा के वर्तमान कार्यों को हम जानते हैं । किसी भी विषयगत निरीक्षक के लिए यह बात स्पष्ट है कि दूर-दूर फैलता हुआ बेदारी उठ रहा है । हमारा आंदोलन कैसे शुरू हुआ उससे यह भिन्न नहीं है, परन्तु न ही वह उसके समान भी है । हम जानना चाहते हैं (क) इसका प्रतिउत्तर कैसे देना है (ख) हम क्या प्राप्त कर सकते हैं और (ग) परमेश्वर के कार्य के लिए हम वर्तमान में उसे नया भेंट दे सकते हैं ।

३. कलीसिया के प्रभु के लिए हम उपलब्ध हैं । पवित्र आत्मा कलीसिया से क्या कह रहा है । उसके साथ – साथ हम चलना चाहते हैं । हम यह भी चाहते हैं कि हर अयोग्य मंशाएँ परमेश्वर से परखी जाए, और उस अंतदृष्टि और प्रकाशन को स्वीकार करें जो पवित्र आत्मा हमारे लिए ज्ञान बनाने की खोज करता है ।

हम इनके बीच समझ रखने की खोज करें :

क) हमारे भेड़ों को बनाने की चाहत रखना, कलीसिया को निर्देशन देना और हमारे कलीसियाओं को बनाने की चाहत रखना और हमारी नेकनामी भी ।

ख) लोगों को यीशु मसीह में जीवन देते हुए देखना और जो कोई कलीसिया में आते हैं उनकी संख्या में बढ़ोत्री देखना ।

ग) हमारे जीवन में किस क्षेत्र में बदलाव चाहिए उसे जानना और नए तरीकों को सीखने की इच्छा रखना जिसका उपयोग किया जा सके ।

घ) पवित्र आत्मा जिस तरफ बहता है उसके साथ चलना, और वर्तमान नवीनीकरण के अपूर्णता में दोष निकालना ।

ड.) यह खोजना कि साकारात्मक सच्चाइयों से क्या लाभ मिलेगा, और जब एक धर्मशास्त्रीय विचार न समझे तो उसका चीर – फाड़ करने की इच्छा रखना ।

च) वचने की आत्मा जो हमें स्वतंत्र करता है उसे जानने की चाहत रखना, और उस कानून का बचाव करना जो हमें बांधे रखेगा हम जहाँ कहीं भी हैं ।

छ) एक व्यक्ति के लाभ को स्वीकार करना और एक मनुष्य के कमजोरियों के न्याय में बैठना ।

चरवाहों की सेवकाई में अनुभव के बढ़ते धन ने, मुझमें जागृति ला दिया है जो कि कई परीक्षाओं में असुरक्षित होना है (हम चरवाहे)

तीन ऐसी बड़ी बातें जो अगुवाई की सेवकाई में नियुक्त स्त्री – पुरूषों पर आ□मण होता है वह है :

(१) वस्तु – सुरक्षा : चीजों की तरफ देखना, "ऑखों की लालसा" । यह पैसों के प्रति, संपत्ति के प्रति, अधिकृत वस्तु के प्रति मनोवृति पर प्रभाव ड़ालता है ।

(२) नैतिक हार : विशेषकर लैंगिक, "शरीर की लालसा" ।

यह शायद काल्पनिक या यथार्थ व्यभिचार हो सकता है, परन्तु यह एक बंधन बन जाता है ।

(३) व्यक्तिगत सम्मान : इस बात के लिए चिन्तित रहता है कि दूसरे क्या सोचते हैं, "जीवन का घमंड़" । यह ज्यादातर धमंड से ज्यादा डर द्वारा प्रकट होता है ।

यह तीनों, कई बार चर्चित, और कई बार निरीक्षित किए हुए संभावित आ□मण के विषय और हार हैं जिन्हें थोड़ा परिभाषा और विकास की जरूरत है । इसके साथ हम चौथे को भी जोड़ सकते हैं जो यथार्थ रूप से धमकी कम, जिसकी अपेक्षा न की गई हो, परन्तु निकाला नहीं जा सकता : सिद्धांतवादी गलतियॉं । परन्तु सिद्धांत के बारे में सबसे बड़ी समस्या है कि हमारी प्रवृत्ति जो यह समझ नहीं पाते हैं कि वचन के सच्चाई का विकास करते हैं । इन चारों के बावजूद, फिर भी, सूक्ष्म प्रलोभन के विशाल क्षेत्र हैं जिसमें खतरा और जाल है जिसने हमारे समूह को बंदी बनाकर रखा है । हम से कोई भी इन अनुभवों के लिए विदेशीय नहीं हैं ।

१. ऐसा एक पद्धति की खोज करने का प्रलोभन जो हमारे उद्देश्यों को पूरा करेगा, बजाय सृष्टिकर्ता की किस प्रकार सेवकाई करना है, इस बात की खोज करना ।
२. जिस अधिकार को परमेश्वर ने हमपर नियुक्त किया है उसपर भरोसा नहीं करने का प्रलोभन, जबकि हम यह सोच रहे होते हैं कि हम जिनके उपर अधिकार करते हैं वे हमपर पूर्ण रूप से भरोसा क्यों नहीं करते हैं ।
३. परिस्थितियों में चाल चलना या हेरा-फेरी करने का प्रलोभन, बिना हमारे भय का अंगीकार किए, कि परमेश्वर हमारे मदद के बिना हमारा प्रयोजन या हमें संपन्नता नहीं दे सकता ।
४. सहकमियों के विफलता या कमजोरी में सांत्वना पाने का प्रलोभन, न कि उनके लिए प्रार्थना करने के लिए प्रेरित होना ।
५. हमारे संख्यात्मक लाभ से फलंवत होने का नाप लेने का प्रलोभन न कि पवित्र शास्त्रीय प्रौढ़ता से स्वयं को जॉंचना ।
६. आज्ञा न मानने का प्रलोभन जो कहता है कि "जो खुशी मनाते हैं, उनके साथ खुशी मनाओ," विशेषकर जब खुशी हम सहकर्मी के संपन्नता के लिए मनाते हैं, उसके बढ़ोत्री या सेवकाई के विस्तार के लिए हो ।
७. जो हम नहीं समझते हैं उसे अधिकारपूर्ण रूप से तिरस्कार करने का प्रलोभन न कि हम उसे नम्रतापूर्वक सीखें
८. हमारे अधिकार के आधार को "सही है" बनाने का प्रलोभन न कि कलीसिया को यीशु मसीह के द्वारा "दिया गया" समझना ।
९. हमारे गलतियों को न्यायोचित करना बिना हमारे तथा बाहरी निरीक्षक के तर्क किए बजाए इसके कि हम इमानदारी से अपने कमजोरियों का अंगीकार करें ।
१०. यह ज्ञान लेना कि क्योंकि हमने प्रभु से कुछ पाया है और हमारे पास अनुमति है कि हम दूसरों के लिए उसे शासन में बदलें ताकि सबकुछ नियंत्रण में रहे ।

आत्मिक सुरक्षा को समझना – समर्पण

हम ऐसे समय में जी रहे हैं जब हर प्रकार की आवाज़ें हमारे ध्यान को केंद्रित करने के लिए शोर मचा रहे हैं और हर प्रकार के दिशासूचक भी हैं । सब बुद्धि परमेश्वर की ओर से नहीं आते हैं, कुछ दुष्टात्मा के स्रोत से आते हैं और कुछ मनुष्यों की ओर से । मैं विश्वास करता हूँ कि हर सच्चा मसीही, हरकोई जो मसीह में समर्पित है, हरकोई जो प्रभु से प्रेम करता है, वे यही चाहते हैं कि प्रभु उनका मार्गदर्शन करें । वे उनके नेतृत्व तथा सलाह देने में सुरक्षा चाहते हैं जब वे ऐसा करते हैं या स्वयं सेवकाई प्राप्त करते हैं । पवित्र आत्मा के वरदानों का न्याय करते समय या कार्य में उन्हें समझ की सुरक्षा चाहिए । हमें आत्मिक सुरक्षा की जरूरत है । आत्मिक सुरक्षा प्रभु की ओर से आती है । वही एक जगह है जहाँ हम आत्मिकता के सरक्षा को पाते हैं । भजन संहिता ४ : ८, "मैं शान्ति से लेट जाऊँगा और सो जाऊँगा; क्योंकि, हे प्रभु केवल तू ही मुझ को एकान्त में निश्चिन्त रहने देता है ।"

हमारे जीवनों में सुरक्षा का विकास के लिए हमें परमेश्वर की प्रभुता में समर्पण करते हुए शुरू करना है । हमें समर्पण करते हुए शुरू करना है । हमें समर्पण के विषय के साथ व्यवहार करना पड़ेगा । यीशु मसीह के प्रभुता के बाहर हमारे पास आत्मिक सुरक्षा नहीं रहता । यदि आप उन सीमाओं के अन्दर नहीं रहना चाहते जो परमेश्वर ने बनाए हैं, यदि आप उसके निर्देशानुसार नहीं चलना चाहते, यदि आप आज्ञाकारी और उसके प्रति समर्पित नहीं होना चाहते, फिर परिभाषा के अनुसार आप उसके अगुवाई के बाहर कदम रखने वाले हैं । यह उस क्षेत्र से बाहर होगा जो परमेश्वर ने आपके लिए सुरक्षित नियुक्त किया है, और फिर आप एक ऐसे क्षेत्र में कदम रखेगे जो आत्मिक रूप से खतरनाक हो और आत्मिक सुरक्षा के क्षेत्र के बाहर हो ।
मैं देखना चाहता हूँ कि उसके प्रभुता में समर्पण का मतलब क्या होता है कई उदाहरणों की रोशनी में जो हमें यह महसूस दिलाएगा कि पवित्र शास्त्र में समर्पण का अर्थ क्या है ।

रूत १ : १६ – १७, "तू मुझ से यह अनुरोध न कर, कि मुझे छोड़कर लौट जा । क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊंगी । जहाँ तू टिके वहाँ मैं भी टिकूँगी । तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा । जहाँ तू मरेगी वहाँ मैं भी मरूँगी, और वहीं मुझे मिट्टी दी जाएगी । यदि मृत्यु छोड़ और किसी कारण मैं तुझ से अलग होऊँ, तो प्रभु मुझ से वैसा ही वरन् उस से भी अधिक करे ।"

यहाँ पर हम देखते हैं कि रूत, उसकी जिठानी, और नाओमी, उसकी सास सभी विधवाएँ हैं । नाओमी के दोनों बेटों की मृत्यु हो गई है । उन्होंने गैर – यहूदी लडकियों के साथ विवाह किया था और नाओमी कहती है, "मैं अपने स्वदेश इस्राएल वापस जा रही हूँ और तुमलोग अपने रिश्तेदारों के पास रहो । इस गैर – यहूदी भूमि में मेरे लिए कुछ भी नहीं रह गया, मेरे बेटों की मृत्यु हो गई है, और मैं इस्राएल वापस जा रही हूँ ।" रूत घोषित करती है कि वह नाओमी के पीछे हो लेगी क्योंकि उसने नाओमी के परमेश्वर को अपना परमेश्वर बना लिया है । रूत गैर-यहूदी विश्वासी है, जिस प्रकार पुराने नियम में परमेश्वर के राज्य में आने का तरीका है । और उसने कहा, "तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा । मैं इस्राएल के परमेश्वर की सेवकाई करूँगी । पहले, उसने परमेश्वर के साथ समर्पण किया, जो प्रभुता का समर्पण है । दूसरा, उसने स्वयं को पति के परिवार को समर्पित किया जब उसने विवाह किया और उसने कहा, "मैं तुम्हें नहीं छोडुँगी, तुम्हारे बेटे मर गए हैं, तुम्हारा अब कोई बचा नहीं, मैं तुम्हें नहीं छोडुँगी नाओमी, मैंने तुम्हें अपना माना है ।" इस तरह वह सास को समर्पित रहती है, और उन लोगों के साथ रहती है जो परमेश्वर के पीछे हो लेने का समर्पण करते हैं ।

यही मसीह के प्रभुता में समर्पण की शुरूआत है । वह इस्राएल वापस जा रही है । वह परमेश्वर के साथ एक संबंध में बंधती है और हम देखते हैं कि समर्पण एक नींव है जिसमें मार्गदर्शन और आत्मिक सुरक्षा पाती है । यदि उसके पास यह समर्पण नहीं होता तो वह अधर्मी भूमि में नहीं होती जैसे ही नाओमी वहाँ से चली जाती हो ।

रोमियो १२ : १-२, "हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण कर यह अनुरोध करता हूँ, अपने शरीर को जीवित, पवित्र, और परमेश्वर को पसंद आनेवली भेंट जैसा चढ़ाओ । यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है । इस संसार के सदृश न बनो;

परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नए हो जाने से तुम्हारा चालचलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली तथा मन-भावती, और सिद्ध इच्छा को अनुभव से मालूम करते रहो ा

जिस प्रकार रूत द्वारा रेखाचित्रित किया गया है यह नए नियम के समर्पण का प्रतिरूप है ा यदि आपको परमेश्वर के साथ चाल-चलन में आत्मिक सुरक्षा चाहिए : सलाह में सुरक्षा, और वचन (पवित्र शास्त्र के) के अनुवाद के लिए, फिर आपको पूरी रूप से यीशु मसीह के प्रभुत्व में सौ प्रतिशत समर्पण से शुरू करने की जरूरत है ा बिना उस प्रकार के समर्पण के कोई पवित्र शास्त्रीय गारंटी नहीं होता जो आपके जीवन में आप आत्मिक सुरक्षा ढूँढ पाएँ ा आपको उसके प्रभुता की ओर समर्पण से शुरू करना है ा जैसे रूत ने इस प्रकार का समर्पण किया, मृत्यु तक समर्पण, वह सौ प्रतिशत था, अनारक्षित, और एक समर्पण जो एक बार और सदा तक के लिए था ा इसलिए इस बात से मुददा स्थिर हो गया ा उस बात ने उसे एक ऐसे स्थिति में ड़ाला जो कई प्रश्नों को ज्यादातर रूप से बहलाता न हो ा कई सारे प्रश्न उसके जीवन में आएँ होंगे जिनको बहलाया नहीं जा सकता हा क्योंकि इनके जवाब पहले ही दिए जा चुके थे जब उसने परमेश्वर और इस्राएल को स्वयं को समर्पित किया ा

जब आप यीशु मसीह में स्वयं को समर्पण करते हैं और उसकी प्रभुता में पहला और आखिरी बार ऐसा कर रहे हों तो फिर ऐसे कई प्रश्न होंगे जिनके साथ आपको कभी भी व्यवहार करने की जरूरत नहीं होगी क्योंकि प्रश्नों का जवाब पहले से ही मिल जाएगा ा आपके पास वो चुनाव नहीं होंगे, क्योंकि आपने अपना चुनाव और समर्पण परमेश्वर को दे दिया है ा

रूत २ : १२, "प्रभु तेरी करनी का फल दे ा इस्राएल का प्रभु परमेश्वर जिसके पंखो तले तू शरण लेने आई है तुझे पूरा बदल दे ा" यहाँ पर पंख का चित्र परमेश्वर के बचाव और सुरक्षा को दर्शाता है ा प्रभु के पंखो तले उसे पाया गया है जहाँ पर प्रभु ने प्रत्युत्तर मिलती है ा हम पाते हैं कि जिस तरह वह एक समर्पण करती है, प्रभु उसे मदद करता है जब वह इस्राएल वापस यात्रा करती है ा

रूत २ : ३, "रूत जाकर एक खेत में लवनेवालों के पीछे बीनने लगी ा जिस खेत में वह संयोग से गई थी, वह एलीमेलेक के कुटुम्बी बोअज का था ा इसी को हम बिना सचेत किया हुआ मार्गदर्शन कहते हैं ा यह ऐसा कुछ है जो आपके जीवन में छतता है जब आपने परमेश्वर की प्रभुता में समर्पण किया हो ा रूत आई और खेत में लवनेवालों के पीछे बीनने लगी और जहाँ वह काम कर रही थी, उस खेत का भाग बोअज का था जो उसके पति एलीमेलेक के परिवार का था ा उसका पति के पास एक भूमि छुडाने का अधिकार रखनेवाला था ा उसका नाम बोअज था ा

बोअज भूमि को छुडानेवाला होने के अधिकार होने के नाते वह इस्राएल के कानून के ऐसे स्थान में था ताकि वह रूत से विवाह कर सके, विधवा के दुर्दशा से निकाल सके जहाँ उसके पास आर्थिक प्रयोजन हो, उसका ख्याल रखा जा सके और एक सम्पूर्ण व्यक्ति कहलाया जा सके ा बोअज ने रूत से विवाह कर लिया और वे औषेद के पिता बने जो दाऊद का दादा था ा इस अनजान निर्देशन के कारण रूत अपनी दुर्दशा से निकलकर अलौकिक उद्देश्य से जुड़ गई ा बोअज के खेत में जाना एक संयोग था ा वह सिर्फ किस्मत की बात नहीं
थी ा रूत ने यीशु मसीह के प्रभुत्व में समर्पण किया था ा उसने उसे अपने जीवन का प्रभु माना था ा इसके निष्कर्ष में, उसके जीवन के प्रभु ने वचन की सच्चाई को प्रभावशाली बनाया ा

भजन संहिता ३७ : २३, "मनुष्य की गति प्रभु की ओर से ढ़ृढ़ होती है, और उसके चलन से वह प्रसन्न रहता है;" ऐसे कई समय होते हैं जब आप सचेत रीति से प्रभु से निर्देशित होते हैं और कई ऐसे समय होते हैं जहाँ आप अनजान रीती से प्रभु का मार्गदर्शन पाते हैं ा यह एक अनजान मार्गदर्शन है जहाँ पर एक अनजान रूप से रूत के जीवन में दखल हुआ ा एक संयोग हुआ जहाँ वह उस खेत में जा सके जिधर उसका होनेवाला पति था, उसके भूमि छुडाने का अधिकार रखनेवाला, जो उसे अलौकिक उद्देश्य में ला सके ा

जब हम उसके प्रभुत्व में स्वयं को समर्पण करते हैं तो हम पाते हैं कि आत्मिक में कुछ मुक्त होता है जहाँ परमेश्वर उस की कृपा से हमारे परिस्थितियों में कार्य करना शुरू करता है मुख्य लोगों के साथ उसके अलौकिक उद्देश्य में ताकि जो कुछ परमेश्वर हमारे लिए इरादा रखता है अवसर के क्षेत्र में आकर उसके कार्यो को पूरा कर सकें ा

हमें जब अवसर मिलते हैं तो उन्हें कार्यान्वित करना चाहिए । हमें इन मौकों को पहचानना है जब वे आते आते हैं । रूत परमेश्वर में ज्यादा परिपक्व नहीं थी उसके जीवन के इस घड़ी में । वह नाओमी के पास वापस जाकर उससे कहा कि कहाँ वह काम करने गई थी, वह किसका खेत था और नाओमी ने प्रभु के हाथ को तुरंत देखा । उसने रूत से पूछा, "क्या तुम जानते हो कि वह कौन है ? वह तुम्हारे भूमि को छुडाने का अधिकार रखता है, बोअज, जो तुम्हारे लिए बहुत कुछ कर सकता है ।" बाद में नाओमी ने रूत से कहा कि परमेश्वर का हाथ है और किस प्रकार इसका प्रतिउत्तर देना है ।

इधर हम पाते हैं कि रूत जिस प्रकार उसके परिवार के सदस्यों के साथ रिश्तेदारी में समर्पित होती है, उसको दूसरी आशीषें मिलती है । परमेश्वर ने इस रिश्तेदारी को एक स्रोत बनाया जिसके द्वारा रूत समझदारी प्राप्त कर सके कि उसके जीवन में अनजान निर्देशन के द्वारा क्या हो रहा है । यह सलाह परिणामतः उसे अलौकिक उद्देश्यों की ओर मार्गदर्शन करता है । मैं चाहता हूँ कि यहाँ आप एक नींव को देखें, कि यदि उसने (रूत) समर्पण नहीं किया होता तो वह कभी भी बोअज के खेत में संयोग से नहीं जाती । उसे कभी भी नाओमी की सलाह नहीं मिला रहता । अपने जीवन में वह उस मौके को और जो उद्देश्य हैं उसे वह खो दी रहती ।

दूसरा उदाहरण जो समर्पण को लेकर आत्मिक सुरक्षा और निर्देशन देता है वह अब्राहम और उसके दास से दर्शाया जाता है जब वे इसहाक के लिए एक पत्नी ढूंढ रहे थे ।

उत्पत्ति २४ : २६-२७ "तब उस पुरूष ने सिर झुकाकर प्रभु को दण्डवत् करके कहा, "धन्य है मेरे स्वामी अब्राहम का प्रभु परमेश्वर, कि उस ने अपनी करूणा और सच्चाई को मेरे स्वामी पर से हटा नहीं लिया । प्रभु ने मुझ को ठीक मार्ग पर चलाकर मेरे स्वामी के भाई-बन्धुओं के घर तक पहुँचा दिया है ।" एक बहुत महत्वपूर्ण कथन यहाँ है, "प्रभु ने मुझको ठीक मार्ग पर चलाकर मेरे स्वामी के भाई - बन्धुओं के घर पर पहुँचा दिया है ।" जब परमेश्वर मार्ग पर चलाता है तो कुछ होता है । यह ऐसा होता है जैसे कि आप कार चला रहे हों । यदि आप कार का मार्गदर्शन करेंगे, तो जरूरी है कि वह गति में हो । आप गाडी ठहराने की जगह में बैठ सकते हैं और दिनभर चक्के धुमा सकते हैं । वह कहीं भी नहीं जाएगा जबतक कार गति में न हो । उसके बाद ही उसका मार्गदर्शन हो सकता है ।

हम यहाँ मार्गदर्शन के पहले सिद्धांत को देखते हैं । मार्ग में होते हुए परमेश्वर ने मेरी अगुवाई की । हमारे पास कई बार विचित्र विचार रहते हैं कि हमारे जीवन का मार्गदर्शन कैसे हो । हम कहते हैं, "परमेश्वर, मुझे इसी क्षण पूरी कहानी बता दे । मुझे शुरू से ही अंत के विषय में जानना है । मुझे मार्ग के हर कदम के बारे में जानना है कि मैं इसके दौरान कैसे कार्य करूँगा और किस प्रकार यह पूरा होगा । यदि आप मुझे पूरा ज्ञान दे देंगे प्रभु, तो निर्देशन मिलेगा, मैं उस मार्ग पर चलूँगा । वास्तव में, मुझे इतना ज्ञान होगा कि प्रभु, मैं तुम्हारे बगैर भी चल सकता हूँ ।" यही होता है जब हम ज्ञान के अनुसार चलते हैं, नहीं क्या ? हम परमेश्वर सही में नहीं चाहता कि हम सारे तथ्य को जानें ।

पवित्र शास्त्र हमें इस लेखांश के द्वारा सिखाता है कि हम जिस मार्ग पर चलते हैं वह हर कदम पर खोल दिया जाएगा । इसका मतलब है कि एक व्यक्ति को हमेशा परमेश्वर के साथ बातचीत में निरंतर रहना चाहिए । इसका मतलब है कि एक व्यक्ति को परमेश्वर के साथ बातचीत में ध्यान देना चाहिए और उसपर निर्भर होना चाहिए । जैसे हम परमेश्वर के साथ बातचीत में होते हैं, हम इस सिद्धांत को पाते हैं जिस प्रकार प्रभु ने निर्देशन दिया है । वह कदम – कदम पर मार्ग खोल देता है । वह हमारे सामने ही मार्गो को खोल देता है । यदि हम ध्यान देना बंद कर देंगे तो हम एक अवसर को देंगे और गलत दिशा में चलना शुरू करेंगे ।

इस कहानी में ३ सिद्धांत हैं जो हमें यह समझने में मदद करते हैं कि किस प्रकार एक दास का इस तरह मार्गदर्शन हुआ था । उत्पत्ति २४ : ३-४, "और मुझसे आकाश और पृथ्वी के प्रभु परमेश्वर की इस विषय में शपथ खा, कि तू मेरे पुत्र के लिए कनानियों की लडकियों में से, जिनके बीच में रहता हूँ, किसी को न ले आएगा । परन्तु तू मेरे देश में मेरे ही कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र इसहाक के लिए एक पत्नी ले आएगा।"

१. यह अब्राहम का दिशासूचक था ताकि वह अपने दास के साथ उस वाचा में जा सके । उसका दास इस संसार से अलगाव का वायदा करता है । फिर से हम समर्पण को देखते हैं । हम पाते हैं कि यह दास उसके स्वामी के प्रति समर्पित है और वह

उसके प्रतिबद्ध है । यह सबसे बड़ा (उम्र में) दास था जो पूरे अब्राहम के घराने में शासन करता था । यह मुझे उस व्यक्ति के चरित्र में कुछ बताता है । पहला कि वह सावित था । वह सिर्फ कोई बूढ़ा दास नहीं था जो चित्र में आने की संयोग रखता हो । वह पुरनिया था । वह घर में शासन करता था और समर्पण में विश्वासयोग्य सावित हुआ था और जो स्वयं से ज्यादा अपने स्वामी की चिन्ता करता था । जिस तरह से एक कार्य करना हो उस तरह से वह किया करता था । इस प्रकार का समर्पण उसके लिए आधारभूत था ताकि प्रभु के मार्गदर्शन और आत्मिक सुरक्षा में हों ।

हम देखते हैं कि उसे बहू बनने की जिम्मेदारी दी जाती है । यह जिम्मेदारी उसे अब्राहम की ओर से मिली थी जो प्रतिनिधि के आधार पर था क्योंकि वह एक दास था जिसपर भरोसा किया गया था और सावित किया गया था । वह समय जब आप एक सावित दास को पाते हैं वह तब होता है जब वह समर्पित हो । यदि आपके पास एक ऐसा दास हो जो अपने दिशासूचक के प्रति समर्पित न हो, फिर आप महत्वपूर्ण बातों में उसपर भरोसा नहीं करते । यह इसलिए होता है क्योंकि आप नहीं जानते कि वह क्या करेगा । वह शायद कुछ और ही करे । इस मनुष्य पर भरोसा किया जा सकता है क्योंकि वह सावित है; उसके आत्मा में समर्पण है ।

२. दूसरी बात हम इस सिद्धांत से सीखते हैं जिससे इस दास को मार्गदर्शन मिला वह ७वी आयत में है । उत्पत्ति २४ : ७, "स्वर्ग का प्रभु परमेश्वर, जिस ने मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्मभूमि से ले आकर मुझ से शपथ खाकर कहा, कि मैं यह देश तेरे वंश को दूँगा । वही अपना दूत तेरे आगे – आगे भेजेगा, कि तू मेरे पुत्र के लिए वहाँ से एक स्त्री ले आए ।"अभी अब्राहम कहता है कि परमेश्वर ने उससे बातचीत किया कि परमेश्वर, उसके दास के पास एक दूत को भेजेगा ताकि वह अपने बेटे के लिए एक पत्नी ढूँढ सके । और दास परमेश्वर के वचन पर विश्वास करता था । यह बहुत जरूरी है यदि हमें आत्मिक सुरक्षा चाहिए होता है ।

नीतिवचन २९:२५, "मनुष्य का भय खाना फन्दा हो जाता है, परन्तु जो प्रभु पर भरोसा रखता है वह ऊँचा स्थान पर चढ़ाया जाता है ।" क्योंकि वह प्रभु के वचन पर भरोसा करता था उसे सुरक्षा मिली । उस दास ने सिर्फ परमेश्वर के वचन पर सिर्फ भरोसा ही नहीं परन्तु उसने इस मनुष्य, अब्राहम और प्रभु का वचन जो उसके द्वारा आया उस पर भी भरोसा किया । उसके पास सीधे परमेश्वर का वचन नहीं आया था । वास्तविकता में, इस घड़ी उसके पास परमेश्वर वचन सीधा उसके पास नहीं आया था । उसके पास प्रभु का वचन था जो उसके स्वामी, अब्राहम के जीवन और होठों से बहता था । उसने प्रभु का वचन को सुनते हो और उसपर भरोसा करते हो तो सुरक्षित रहोगे । परमेश्वर में सुरक्षा है ।

३. तीसरी बात जो हम इस दास को कार्य की प्रतिउत्तर देते हुए देखते हैं, वह १२-१४ वें आयत में है; "वह कहने लगा, "हे मेरे स्वामी अब्राहम के परमेश्वर, प्रभु आज मेरे कार्य को सिद्ध कर, और मेरे स्वामी अब्राहम पर करूणा कर । देख, मैं जल के इस सोते के पास खड़ा हूँ; और नगरवासियों की बेटियाँ जल भरने के लिए निकली आती हैं : सो ऐसा होने दे, कि जिस कन्या से मैं कहूँ, कि अपना घड़ा मेरी ओर झुका, कि मैं पीऊं; और वह कहे, कि ले, पी ले, पीछे मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी : सो वही हो जिसे तू ने अपने दास इसहाक के लिए ठहराया हो; इसी रीति मैं जान लूँगा कि तू ने मेरे स्वामी पर करूणा की है ।" यह दास सिर्फ विश्वासयोग्य ही नहीं था जो समर्पित था, वह परमेश्वर पर विश्वास करता था, वह परमेश्वर के वचन पर विश्वास करता था और प्रार्थना में पूरे कार्य को भिगो लेता था । वह प्रभु के पास गया और उसके विषय में प्रार्थना किया । उसने प्रार्थना किया और प्रभु से मांगा कि उसकी अगुवाई करे और उसे संपन्न बनाए उसके यात्रा के दौरान तथा जिस उद्देश्य के लिए वह वहाँ गया था । उसने परमेश्वर से मदद मांगा । और जब वह कुएँ के पास पहुँचा जिस राज्य के क्षेत्र में अब्राहम के रिश्तेदार रहते थे, फिर से उसने प्रार्थना किया । इसलिए वह कहता है, जब मैं मार्ग में ही था परमेश्वर ने मेरी अगुवाई की ।

मार्ग में कई बातें घटी होंगी, हमारे पास सब विस्तार नहीं है, परन्तु उसने परमेश्वर के प्रति समर्पण के साथ शुरू किया । उसका समर्पण अब्रहम के साथ था । वह समर्पण में था, परमेश्वर के अधिकार में उसकी आत्मा समर्पित था तथा उन लोगों के भी प्रति जो परमेश्वर की ओर से नियुक्त अधिकारी थे उसके जीवन में । वह परमेश्वर के वचन पर विश्वास करता था क्योंकि वह उसके नियुक्त अधिकारी की ओर से आता था और परमेश्वर इस बात का गवाह ठहरा कि मार्ग में होने पर

प्रभु ने उसकी अगुवाई की । जब वह वहाँ पहुँचा तो प्रभु उस समय भी उसकी अगुवाई कर रहा था क्योंकि वह निरंतर परमेश्वर के साथ बातचीत करता था उस यात्रा को लेकर और जिस उद्देश्य से उसे भेजा गया था उसे भी लेकर ।

इस निरंतर प्रार्थना के कारण, उसका अनुभव यह हुआ कि मार्ग में होने पर परमेश्वर ने उसकी अगुवाई की । परमेश्वर आपकी अगुवाई करने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता यदि आप उसके पीछे हो लेने की इच्छा नहीं रखते । परमेश्वर आपका मार्गदर्शन करने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता यदि आप उसे सुनने की इच्छा नहीं रखते ।
इसलिए, आत्मिक सुरक्षा और मार्गदर्शन के लिए या मार्गदर्शन या सलाह तथा पवित्र आत्मा के वरदान के लिए पूर्वापेक्षित है कि हम प्रभु को सुनने की इच्छा रखें । नीतिवचन १ : ३३, "परन्तु जो मेरी सुनेगा, वह निड़र बसा रहेगा, और बेखटके सुख से रहेगा । हम यहाँ देखते हैं कि सुरक्षा के लिए समर्पण आवश्यक है । आपको परमेश्वर के वचनों के प्रति समर्पित रहना है । लैव्यव्यवस्था २५ : १८ – १९, "तुम मेरी विधियों को मानना, ओर मेरे नियमों पर समझ बूझकर चलना; क्योंकि ऐसा करने से तुम उस देश में निडर बसे रहोगे । भूमि अपनी उपज उपजाया करेगी, और तुम पेट भर खाया करोगे, और उस देश में निडर बसे रहोगे । लैव्यव्यवस्था २६ : ३-५, "यदि तुम मेरी विधियों पर चलो और मेरी आज्ञाओं को मानकर उनका पालन करो, तो मैं तुम्हारे लिए समय – समय पर पानी बरसाऊँगा, तथा भूमि अपनी उपज उपजाएगी, और मैदान के वृक्ष अपने – अपने फल दिया करेंगे । यहाँ तक कि तुम दाख तोडने के समय भी दावनी करते रहोगे, और बोने के समय भी भरपेट दाख तोड़ते रहोगे, और तुम भरपेट रोटी खाया करोगे, और अपने देश में निश्चिंत बसे रहोगे ।

हम में से हर एक के पास परमेश्वर का वचन दिशासूचक बनकर सीमाओं को बनाता है । यदि हमें सुरक्षित रूप से रहना है तो हमें परमेश्वर की प्रभुता और उसके वचन के द्वारा उसके आज्ञाओं में समर्पित होना है । इसमें कलीसिया में हाजिरी और सहभागिता, पैसा, प्रार्थना, जो कार्य आप करते हैं, जो कार्य आप नहीं करते सब शामिल होता है । आज्ञा जैसे एक दूसरे से प्रेम करो जैसा परमेश्वर ने आपसे किया है । यदि आप वचन में जैसा लिखा है, वैसा दिशासूचक के आज्ञा का पालन नहीं करते तो अपेक्षा भी नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर उसके पवित्र आत्मा के द्वारा हमारी विशेष अगुवाई करेगा । यदि हम परमेश्वर के बाहरी आज्ञाओं में समर्पित नहीं है तो हमसे यह उम्मीद भी नहीं होता कि हम पवित्र आत्मा के दिशासूचक के प्रति समर्पित रहें ।
यह उस पुरनिए के समान है जिसे अब्राहम ने चुना था जो एक दास था । वह साबित व्यक्ति था । उसने बाहरी बातों को पूरा किया था । वह समर्पण में रहता था । वह विश्वासयोग्य ठहरा था, इसलिए अब्राहम उसे दूसरे बातों पर भरोसा कर सकता था । यदि आप समर्पण में साबित नहीं हुए हों और विश्वासयोग्य साबित नहीं हुए हों तो परमेश्वर कभी भी आपको अगुवाई करने नहीं देगा । आप किस प्रकार जान सकते हैं कि परमेश्वर आपको इधर या उधर मार्गदर्शन कर रहा है ? आप परमेश्वर के वचन को जानने की शिक्षा लेते हैं और जब वह आपसे बातचीत करना शुरू करता है तो उसके पास एक तरीका होता है जो आपको यह बताता है कि वह परमेश्वर ही है ।

यदि हम परमेश्वर के वचन की आज्ञाओं के प्रति बाहरी रूप से समर्पित नहीं हैं और उसे गले नहीं लगाते तो मुझे नहीं लगता है कि हमें परमेश्वर की ओर से निर्देशन मिलेगा ।

समर्पण ऐसा एक शब्द है जो कई लोगों के हृदय में डर उत्पन्न करता है । हर कोई शांत हो जाता है । इसके लिए वजह है । जब हम समर्पण शब्द का उपयोग करते हैं तो डर का बोध इसलिए होता है क्योंकि हम यह नहीं जानते की परमेश्वर के राज्य में समर्पण क्या होता है । ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारे जीवनों में अधिकारी, हुक्म चलानेवाले, और कोई भी काम जर्बदस्ती करानेवाले, जो डर और धमकियों से होता था । उस प्रकार के अधिकार की वजह से हमारे जीवनों में धार्मिक रूप से विद्रोह का बोध है । जब भी रोब दिखानेवाला अधिकार आपके पर हो जो जबर्दस्ती और डर की भावना से शासित होता है, वह हृदय में विद्रोह को उत्पन्न करता है । यदि आपके ऊपर एक प्रेमभरा अगुवाई हो तो आप पाते हैं कि समर्पण बिलकुल अलग होता है । आप जिसे प्रेम करते हैं उसकी तरफ आसानी से झुक जाते हैं ।

समर्पण आत्मा में और आज्ञा कार्य करने से होता है । आप ऐसे लोगों को पाएँगे जो आज्ञा करता हो बिना किसी समर्पण के । सेना आपसे हर बार यह कार्य करने लगाता है । वह सेना को चिन्ता नहीं रहता है कि आप समर्पण कर रहे हो या

नहीं । सिर्फ एक ही काम जो वे आपसे चाहते हैं वह है आज्ञा का पालन करना । आप भले इसे चाहें या नहीं, उन्हें इसकी चिन्ता नहीं । एक पिता ने अपने बेटे से कहा, "पुत्र, मैं चाहता हूँ कि तुम बैठ जाओ ।" पुत्र कहता है "मैं नहीं चाहता ।" वह कहता है, "पुत्र, "बैठ जाओ" पुत्र बैठता है और कहता है, "पिताजी, मैं बाहरी रूप से बैठा हूँ, परन्तु अन्दर से मैं अभी भी खड़ा हूँ ।" अभी पुत्र ने आज्ञा मानी है परन्तु समर्पण नहीं किया है । हम बिना समर्पण के आज्ञा का पालन कर सकते हैं । आप कभी भी समर्पण के लिए किसी को मजबूर नहीं कर सकते । आप सिर्फ आज्ञा पालन के लिए ही मजबूर कर सकते हैं ।

कई ऐसे पुरूष हैं जो अपनी पत्नियों से समर्पण के लिए □ूरता से पेश आएँ हैं और आज्ञाकारिता का मांग किया है, और पत्नियों ने भी कर्तव्य के बोध से इनकी आज्ञाओं को माना है, परन्तु समर्पण कभी नहीं किया ।

इस अगुवाई की ओर वे समर्पित नहीं होते और अंत में अप्रसन्नता होती है । दूसरे तरफ एक प्रेमभरा अगुवाई और उसका अधिकार ऐसे काम करेगा कि एक पत्नी स्वेच्छा से आज्ञा का पालन करेगी क्योंकि वह ऐसा चाहती है, जो समर्पण होता है और वह हृदय से होता है । आप समर्पण के लिए जबर्दस्ती नहीं कर सकते ।

जब हम कहते हैं कि समर्पण आपके जीवन की मुख्य कुँजी है, आत्मिक सुरक्षा के लिए, तो आप समझने लगते हैं कि हम आज्ञा पालन करने के लिए एक कर्त्तव्य के बोध के विषय में नहीं कह रहे । हम ऐसे समर्पण के बारे में कह रहे हैं जो हृदय से स्वेच्छापूर्वक आती है और जिससे आप प्रेम करते हैं उसको समर्पित करते हैं । जब आप परमेश्वर से प्रेम करते हैं; और वह आपसे प्रेम करता है और उसने उसके प्रेम का विश्वास दिलाया है तो आप पाते हैं कि समर्पण करना आसान है । वह समर्पण के लिए मजबूर नहीं करता । आप किसी का हृदय जीतते हैं तो वह स्वेच्छा से है । तब हम यह खोज निकालते हैं कि पवित्र शास्त्रीय रूप से, समर्पण जो शब्द है वह प्रेम – शब्द है । बिना प्रेम के आप समर्पण नहीं कर सकते । आप बाहरी रूप से आज्ञापालन कर सकते हैं, परन्तु समर्पण एक प्रेम – शब्द है ।

हमें अपने जीवन अधिकार को पहचानना है ताकि समर्पण कर सकें । बिना अधिकार को पहचाने हम जीवन में समर्पण नहीं कर सकते । आत्मिक सुरक्षा के लिए समर्पण आवश्यक है । समर्पण के द्वारा आपके पास अलौकिक प्रयोजन की कु□ी होती है । आप जैसे परमेश्वर की प्रभुता और उसकी ओर समर्पित होते हैं तो आपके जीवन के लिए प्रयोजन मिलता है । आपके जीवन के लिए दिशा भी होता है और परमेश्वर के प्रयोजन और दिशा से आपको सुरक्षा मिलती है ।

हर तालेवाला जब ताला बनाता है तो एक मुख्य चाबी उसके पास होती है, अलग - अलग ताले बनाने के लिए । परन्तु तालेवाले के पास एक भव्य २ चाबी भी होती है जो विशेष ताले और हर ताले को खोल सकती है । वह मुख्य चाबी से परे हैं । समर्पण परमेश्वर का भव्य चाबी है जो परमेश्वर के राज्य के हर दरवाजे को खोलती है । इसी वजह से आप प्रवेश और पहु□पा सकते हैं । बिना समर्पण के, बाकी सब जो हमें आपका बताना है आत्मिक सुरक्षा के लिए, वे सब आपके जीवन प्रभाव नहीं रखेंगे । वे सब कार्य नहीं करेंगे जब तक आप समर्पण के भव्य चाबी का उपयोग नहीं करते ।

आप जो कर रहे हैं उसमें सफलता पा सकते हैं परन्तु आत्मिक सुरक्षा नहीं । आप एक सफल चरवाहा या सफल सुसमाचार प्रचारक बन सकते हैं, या सफल न्यायवादी, परन्तु आत्मिक सुरक्षा नहीं हो सकता । इसलिए हमारा केंद्रबिंदु गलत हो सकता है । जब हम परमेश्वर की सुरक्षा में चलते हैं तो हम जो भी कार्य करते हैं उसमें सफलता प्राप्त करते हैं । परमेश्वर का अधिकार उसका प्रतिनिधित्व करता है । उसका सामर्थ सिर्फ उसके कार्यो के लिए होता है । आप परमेश्वर के सामर्थ के विरोध में आए□ तो मार डाले जाए□ । परन्तु यदि आप परमेश्वर के अधिकार के विरोध में आते हैं तो आपका नाश हो जाएगा । शैतान का इरादा - उसके सिंहासन को परमेश्वर के सिंहासन के ऊपर स्थापित करना, एक बात था जिसने परमेश्वर के अधिकार का उल्लंधन किया । वह स्वयं प्रशंसा को सिद्धांत था । वह अपने सिंहासन को परमेश्वर के सिंहासन से ज्यादा उठाने का इरादा रखता था । जब भी हम स्वयं - प्रशंसा करते हैं तो परमेश्वर के अधिकार के विरूद्ध दोषारोपण होता है और जब ऐसा होता है तो परमेश्वर आपको नीचे लाता है ताकि उसका अधिकार बना रहे ।

आप परमेश्वर के लिए और चुनाव नहीं रख छोड़ते । जब आप परमेश्वर के अधिकार को हड़पना चाहते हैं तो वह आपको आपके स्थान पर खड़ा करता है । कोई भी कार्य जिसमें आज्ञा मानना नहीं हो, उसमें गिरना जरूरी है । कोई भी निरादर का कार्य विद्रोह होता है । यह किस प्रकार सच होता है ? किस प्रकार एक कार्य जिसमें आज्ञा पालन न हो उसमें पतन होना है ? मुझे आज़ादी चाहिए, मैंने सोचा कि जब मैंने उद्धार पाया , तब "जहाँ प्रभु की आत्मा है वहा□आजादी है और मुझे जो भी करना है उसमें आजादी चाहिए । लोग यह नहीं समझते कि आजादी का मतलब संयम रखना है । एक वजह जिससे हमें कानूनी करार दिया जाता है कई व्यावसायिक व्यवहारों के लिए वह इसलिए क्योंकि लोग ईमानदार नहीं

होते । किसी कार्य में कोई रोक या समर्पण नहीं होता । वे धोखा देकर लोगों को गुमराह करते हैं । इसलिए, सबको सुरक्षा देने के लिए और व्यवहार के लिए हमारे पास सब लिखित होता है और विस्तृत रूप से दिया गया है ताकि हर किसी को सुरक्षा मिले । अब हमें ऐसे कानून की जरूरत नहीं परन्तु हमें आजादी मिल सकती है यदि हमारे अंदर संयम हो । एक ही वजह जिससे हमें समाज में कानून की जरूरत हो वह इसलिए कि हम अन्दरूनी रूप से संयम की कमी रखते हैं । हमारे समाज में आजादी इसलिए नहीं है क्योंकि हृदय में काफी अनुशासन और चरित्र नहीं होता । कोई भी प्रेम करते हुए माता - पिता अपने बच्चों को राइफल, मोटर - साइकिल, और संकली देकर उन्हें ढ़ीला नहीं छोड़ते । क्यों ? क्योंकि, यदि वे अपने बच्चों से प्यार करते हैं तो वे नहीं चाहते कि उनके बच्चे या किसी और को चोट पहुँचे । वे उस बच्चे को लेकर प्रशिक्षण देंगे, उसका निरीक्षण करेंगे, उसका चरित्र जानेंगे और जब वह काफी ज्ञान, अनुशासन, संयम, चरित्र को दर्शाता हो ताकि वह दूसरे बातों की जिम्मेदारी ले सके तब माता - पिता उन्हें अधिकार देंगे ताकि वे कार का उपयोग करें या शिकार के लिए राइफल का इस्तेमाल करें । परन्तु जबतक एक बच्चा जिम्मेदारी, सुरक्षा की समझ को नहीं दर्शाता है एक प्रेम करते हुए माता - पिता कभी उन्हें अधिकार का अनुमति नहीं देंगे । तो स्वर्गीय पिता से आजादी का चुनाव तभी आता है जब हम प्रशिक्षित, विकसित, तैयार और उस आजादी के योग्य हो जिसका मतलब है हम अधिकार को हड़पते नहीं हैं । हमारे पास वह अधिकार है क्योंकि परमेश्वर ने हमें यह दिया है । इसलिए, चुनाव में आजादी उस अधिकार के प्रति आज्ञाकारिता है । कोई भी कार्य जिसमें आज्ञापालन न हो उसमें पतन होता है । कोई भी निरादर का कार्य विद्रोह होता है । अब जिस तरह विश्वास एक सिद्धांत होता है जिससे हम जीवन प्राप्त करते हैं, इसलिए आज्ञाकरिता एक सिद्धांत है जिससे जीवन जिया जाता है । यीशु मसीह का जीवन विश्वास के द्वारा स्वीकार किया जाता है । परन्तु हम आज्ञाकरिता से इसे जीते हैं । कई बार हम नहीं चाहते कि परमेश्वर के नियुक्त अधिकार से संबंध रखें । यही एक समस्या है । आप कौन होते हैं जो स्वयं को लोगों के ऊपर उठाए? लैव्यव्यवस्था १० : १-२, "तब नादाब और अबीहू नामक हारून के दो पुत्रों ने अपना-अपना धूपदान लिया, और उन में आग भरी, और उसमें धूप डालकर उस ऊपरी आग की जिसकी आज्ञा प्रभु ने नहीं दी थी प्रभु के सम्मुख आरती दी । तब प्रभु के सम्मुख से आग ने निकलकर उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे प्रभु के सामने मर गए । घोर न्याय । यहाँ क्या हुआ ? नादाब और अबीहू महायाजक का काम करते थे क्योंकि परमेश्वर के परिवार ने उन्हें इस कार्य के लिए चुना था । हारून महायाजक था और महायाजक सभी कार्य में मुख्य होता था । वह सब कार्यो के ऊपर अध्यक्ष था और कुछ वेदी के बाजू में मदद करनेवाले होते थे जो परमेश्वर और हारून की सेवकाई के आज्ञाकारी थे ।

परमेश्वर कभी भी उन दोनों पुत्रों से आजादी से सेवकाई नहीं चाहता था, उसने उन्हें हारून के अधिकार के नीचे नियुक्त किया था और उन्होंने स्वयं होकर बलिदान चढ़ाया, हारून के नियुक्त अधिकार से हटकर जो एक विचित्र जीवन का भेंट था । यह ऐसा हो गया जैसे बंदूक उठाना और उसका इस्तेमाल करना जब माता - पिता यह कहते हैं कि आप बंदूक नहीं चला सकते जबतक मेरी निगरानी में न रहो । यह उनका कार्य था, यह परमेश्वर के कार्यो से लेन-देन रखता था । "विचित्र आग" का मतलब है - बिना किसी आशा के सेवकाई करना । वे यह देखने में विफल हो गए जिस अधिकार को परमेश्वर ने नियुक्त किया था और उन्होंने जब यह स्थान हड़प लिया, परमेश्वर के कार्य में स्वयं - प्रशंसा, तो सुधार का न्याय उनके ऊपर आया । वह घोर था, परन्तु वह इसलिए हुआ क्योंकि वह परमेश्वर के अधिकार के प्रति चुनौती के साथ व्यवहार कर रहे थे ।

सच्ची सेवा जो परमेश्वर के अधिकार में उसकी ओर से आरंभ होता है । आत्मिक अधिकार ऐसा कुछ भी नहीं जो कोशिश से मिलता है । वह परमेश्वर की ओर से दिया जाता है जब हम उसके अलौकिक उद्देश्य में योग्यता पाते हैं । यही एक तरीका है जिससे परमेश्वर देता है । जो भी परमेश्वर के सीधे अधिकार को सुनता है, परन्तु नियुक्त अधिकार का तिरस्कार करता है, वे विद्रोह के सिद्धांत रखते हैं । हमारे जीवन में कोई आत्मिक सुरक्षा नहीं होता यदि हम परमेश्वर के नियुक्त अधिकार के प्रति समर्पित नहीं हैं । हमारे जीवन में हर प्रकार के अधिकार है । बच्चे होने के नाते हमारे पास माता - पिता हैं । जवान या बड़े होने पर हमारे ऊपर कार्य - अध्यक्ष होते हैं । हमारे पास कई शिक्षक थे । पत्नियों के लिए पति होते हैं । मसीहियों के पास चरवाहों का अधिकार है । सरकार का अधिकार होता है । इस प्रकार हमारे जीवनों में कई प्रकार के अधिकार होते हैं । हमें यह सीखना है कि हम अधिकार से कैसे संबंध रख सकें ।

अब अपवाद भी होते हैं । यदि आपके जीवन में कोई अधिकारी पाप करने के लिए उकसाए, तो आप पाप न करें (प्रेरितों के काम ५ : २९) परन्तु आप अधिकार के साथ सही हो सकते हैं । परन्तु आप परमेश्वर के साथ सही होकर भी समर्पण में नहीं हो सकते । परमेश्वर के राज्य में हर दरवाजे को खोलने के लिए जो भव्य चावी होती है वह समर्पण की चाबी है समर्पण एक प्रेम शब्द है । हम जिससे प्रेम करते हैं उनके प्रति आसानी से समर्पित होते हैं । पहले हम शुरूवात परमेश्वर के प्रति समर्पण से आरंभ करते हैं । फिर

उसके नियुक्त अधिकार के प्रति । जब नियुक्त अधिकार विफल होता है या गलत करता है तो हम पाप में उनकी आज्ञा का पालन नहीं करते हैं उस प्रकार हम उनके गलत दिशा की आज्ञा नहीं करते । परन्तु हमें समर्पित आत्मा को बनाए रखना है । पवित्र शास्त्र नीतिवचन ११ : १४ और २४ : ८ में कहती है कि कई लोगों के सलाह में सुरक्षा है । जो कु मैं तुम्हें दू वह किसी काम नहीं आएगा और यथार्थ नहीं होगा यदि परमेश्वर के प्रति एक समर्पित आत्मा नहीं हो । यदि आप आत्मा में परमेश्वर के प्रति समर्पित न हो तो दूसरे चाबी कार्य नहीं करेंगे । भव्य चाबी उन नियुक्त अधिकारियों का है जो परमेश्वर ने आपके जीवन में डाला है । उस पैतृक - संबंध को याद करें जो परमेश्वर ने आपके परिवार में दिया है । हम परमेश्वर के परिवार में है परन्तु स्वाभाविक परिवार में इसे कोई अधिकार नहीं । आपका उनके साथ कोई संबंध नहीं । परन्तु माता - पिता होने के नाते आप पड़ोसियों के बच्चों पर अधिकार नहीं रखते । आप उनके साथ संबंध नहीं रखते । परन्तु माता - पिता होने के नाते, आप अपने सुन्दर अभिव्यक्ति में बाधा डाला है और इसे नाश किया है । परमेश्वर ने माता - पिता दिए जो बच्चों से प्रेम करें, जो प्रौढ हो और समझ रखते हो ताकि जो भी करने की इच्छा रखते हैं उसमें उन्हें प्रशिक्षण और विकास के लिए मदद मिल सके । अधिकार आता है समर्पित प्रेम के द्वारा । इसलिए हम समझते हैं, कि जिस प्रकार हम अधिकारियों से संबंध रखते हैं समर्पित आत्मा से, वह एक प्रेम-संबंध रखते हैं समर्पित आत्मा से, वह एक प्रेम - संबंध है ।

भव्य चाबी समर्पण होता है । बिना समर्पण के कोई और चाबी कार्य नही करेगी । इसलिए हमें हृदय में समर्पण जरूरी है । हर मसीही चाहता है कि उसे प्रभु निर्देशन दे और जो सलाह वह पाते या देते हैं और पवित्र आत्मा के वरदानों के कार्य में सुरक्षा चाहते हैं । हमें इन क्षेत्रों मे सुरक्षा चाहिए ताकि हम परमेश्वर के साथ चलें । एक मुख्य बात जो इस समय हो रहा है वह यह है कि परमेश्वर अंधकार के राज्य में प्रौढता और सम्पूर्णता के बातों के लिए अनुमति दे रहा है और यही उजियाले के राज्य में भी हो रहा है । इसका मतलब है कि विधर्म के साथ समस्याएं हैं, गलतफहमियां हैं, मिली - जुली बातें जो सिखाई जाती है वे हमें परेशानी में ला सकते हैं जब हम उसके साथ चलते हैं । परन्तु परमेश्वर ने पूरा सुरक्षा के लिए पूरा प्रयोजन दिया है जब हम हमारे जीवनों में उसके साथ चलते हैं । हमें हमने सीखा है कि हमें उसके अगुवाई में समर्पण से आरंभ करना है, और यदि हम ऐसा नहीं करते तो आत्मिक सुरक्षा के लिए हम कानूनी रूप से योग्य नहीं । पवित्र शास्त्र कहती है कि सुरक्षा प्रभु से आता है और जब हम परमेश्वर के साथ चलने में इच्छा नहीं रखते, फिर हम स्वचालित रूप से उसकी रक्ष और सुरक्षा के बाहर चलते हैं । इसका मतलब है हमें उसके अगुवाई में स्वयं को सौंपना है और जिसका मतलब समर्पण भी होता है। हमने सीखा की सर्मपण वह नहीं जो समाजवालों ने समझाया है, परन्तु यह सच्चाई में प्रेम - शब्द है । बिना समर्पण के हम आज्ञा पालन कर सकते हैं और कभी बिना आज्ञा पालन के हम समर्पण कर सकते हैं । हमने सीखा की समर्पण वह भव्य चाबी है जो परमेश्वर के राज्य के हर
दरवाजे को खोलती है । बिना समर्पण के निम्नलिखित सिद्धांत जो हम बाटें वह आपके जीवन में कार्यशील और लागू नहीं होगा । हमने सीखा की परमेश्वर के प्रति समर्पण, उसके नियुक्त अधिकारियों को समर्पित होना है । अभी हम, कैसे अगुवाई, सलाह या पवित्र आत्मा के वरदानों का न्याय करना, इनके ऊपर ध्यान केंद्रित करेंगे ताकि हम समझ पाए कि ये प्रभु की ओर से हैं । कुछ सुरक्षा के नमूने हैं जो हमें परमेश्वर की इच्छा में करना है, न कि ऐसा कुछ करें जो प्रभु की ओर से न हो । हमें परमेश्वर की आत्मा की भरपूरी चाहिए । उसके वचनों के पूरे अनुशासन में, हमें उसके सम्पूर्ण अभिव्यक्तिया चाहिए, हम चाहते हैं कि वह परमेश्वर ही हो, जो सच्चा है और कोई कम नहीं । सच्चाई हमेशा खोज करने के बाद स्थिर रहता है इसलिए डरे नहीं ।

हमें यह सीखना है कि कोई एक विशेष सुरक्षा का सिद्धांत नहीं है जो सुरक्षा में चलने के लिए पूरा होगा, परन्तु सब मिलकर नमूनों के जाल को बनाते हैं जो गलतियों का खुलासा करते हैं और हमें परमेश्वर के साथ सुरक्षित रूप से चलने का कारण बनते हैं ।

परमेश्वर के लिखित वचन के अधीन

दूसरा सिद्धांत जिसका हम उपयोग करते हैं समर्पण को समझने के बाद वह यह है कि हम परमेश्वर के लिखित वचन के प्रति अधीन रहें । हर निर्देशन, हर सलाह, हर पवित्र आत्मा के वरदानों का प्रकटीकरण परमेश्वर के वचन के अधीन होना चाहिए । कुछ लोगों के लिए यह एक समस्या है, क्योंकि वे कहेंगे, "ठीक है, आप बाईबल को खोल सकते हैं, आप परमेश्वर के वचन को खोल सकते हैं और जैसा आपको समझता हो वैसा उसका मतलब बता सकते हैं ।" कई लोगों ने ऐसा कहा है । मैं ऐसा एक कथन को चुनौती देता हू २ पतरस १ : १९ - २०, "हमारे पास नबियों का जो वचन है, वह इस घटना से दृढ ठहरा । तुम यह अच्छा करते हो और यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि यह एक
दीया है, जो अन्धेरे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे ।" संदर्भ यह है पतरस ने उन बातों को बांटा जो उसका अनुभव प्रभु के साथ परिवर्तन के पहाड़ पर हुआ जहा स्वर्गीय

पिता स्पष्ट रूप से उससे बातचीत किया । इस अनुभव को बाटने के बाद, जो वचन के साथ सहमति रखता था, वह कहता है कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी व्यक्तिगत अनुवाद नहीं होता । एक व्यक्तिगत अनुवाद वह होता है जहाँ आप उसे खोलकर कहते है कि मैं ऐसा सोचता हूँ कि इस लेखांश का मतलब यह है और यह है । हमारी राय, मेरी राय, तुम्हारी राय अर्थहीन है । जो परमेश्वर उसके बारे में कहता है वही उसका मतलब है, और दूसरे साहित्य जैसे, पवित्र शास्त्र व्यक्तिगत अनुवाद के लिए नहीं होता, वह व्यवस्था के अनुसार होता है । यदि आप उस व्यवस्था का उल्लंधन करते हैं तो आप गलत अनुवाद करते हैं, और यह अपधर्म हो जाता है । हर अपधर्म जो मसीही धर्म में आया है वह व्यवस्था का उल्लंधन करने से हुआ है । (एक पूरा विषय है जो धर्मशास्त्र के साथ व्यवहार करता है उसे हर्मेन्यूटिक्स Hermeneutics कहते हैं) एक जाना - पहचाना अनुवाद की व्यवस्था है कि आप संदर्भ से बाते नहीं निकालें । संदर्भ से निकालना, अनुवाद के विधिमान्यता का उल्लंधन करता है । उदाहरण के तौर पर, जैसे कि मैं कहता हूँ कि बाईबल व्यक्तिगत अनुवाद के लिए नहीं होता परन्तु उसे अनुवाद के व्यवस्था में समर्पित होना चाहता जिस प्रकार से दूसरे साहित्य होते हैं । मैं कह सकता हूँ कि कुछ ऐसे लोग हैं जो सोचते हैं कि पवित्र शास्त्र व्यक्तिगत अनुवाद के लिए होता है और जैसे चाहते है वैसा मतलब निकाल सकते हैं और यह विधिमान्य है और उनकी राय सही है, परन्तु यह सही नही । अब इस आखिरी अनुच्छेद से, आप परिचायक वाक्यों को ले और बाकी वाक्य निकाल दें, और मुझे उदाहरण करे, और आप मैं जो कहना चाहता हूँ उसका प्रतिनिधित्व नहीं करेंगे । जो मैं आपसे कहना चाहता हूँ बिलकुल उसके विपरीत आप इसका मतलब निकालेंगे ।

रेखाचित्रों के अनुसार, यदि आप संदर्भ से कुछ निकालें, तो आप ठीक से कुछ समझ नहीं पाएंगे । सिर्फ आयतों का संदर्भ नही पाया जाता है पुस्तकों में परन्तु सम्पूर्ण परमेश्वर के वचन का संदर्भ पाया जाता है । इसके अलावा, दिन के विषय का संदर्भ, कौन किससे बातचीत करता है उसका संदर्भ, वो लोग क्या विश्वास करते हैं उसका संदर्भ, तथा उनके जीवन में क्या घटनाएं हो रही है उसका संदर्भ । ये सब बातें मिलकर संदर्भ बनता है । इस लेखांश में संदर्भ, संदर्भ परिस्थितियों में जिसमें वचन लाया गया था, ये सब बात मिलकर संदर्भ बनाती है जिसमें कोई लेखांश का अनुवाद हो । यह अनुवाद का सिर्फ एक व्यवस्था है । मुख्य वचन दूसरी व्यवस्था है । आप एक वचन लेकर कह सकते हैं, "ओह, मुझे उसका अर्थ मालूम है ।" भाषा समय के ऊपर विकसित होता है और आज एक शब्द का अर्थ उसी तरह समझा जाना चाहिए जिस तरह वह अभिलिखित था । शब्दों में के कई प्रकार के संकेतार्थ होते हैं । जबतक हम शब्दों के मतलब को नहीं जानते जिस समय उनका उपयोग हुआ था, हम उस शब्द के मतलब को अच्छी तरह समझ नहीं सकते । हम बीसवीं सदी के मानसिकता को लेकर उसे परमेश्वर के वचन में नहीं दर्शा सकते हैं । हमें उसके संदर्भ को देखने की जरूरत है जहाँ से वह बना हो । परमेश्वर के वचन में अनुवाद के लिए व्यवस्था होते हैं । अनुवाद के सिद्धांत होते हैं, जैसे पहले स्वाभाविक, फिर आत्मिक । तो, आपके पास एक चित्र है जो इस्राएल में स्वाभाविक रूप से था, फिर कलीसिया में उसका प्रकटीकरण । हम स्वीकार करते हैं, जो सलाह हम स्वीकार करते हैं या हमारे जीवन में पवित्र आत्मा के वरदानों का प्रकटीकरण, ये सब परमेश्वर के वचन के अधीन होना चाहिए, हम यह भी कहते हैं कि परमेश्वर का वचन वह अनुवाद है जो उचित है और जाँचा गया है तथा विश्वसनीय है ।

कई बार पवित्र शास्त्र के विरोधात्मक अनुवाद भी होते हैं । आप पता कर सकते हैं कि अर्थ क्या है यदि आप परमेश्वर के वचन को कैसे अनुवाद करना चाहिए उसको सीखें और गृह - कार्य करें । कई लोग सारा गृह - कार्य नहीं कर पाते । या तो वे गलत गृह - कार्य करते हैं, और गलत प्रकार के विद्वान होते हैं । यदि हम अनुवाद के व्यवस्था का पालन करेंगे तो स्पष्ट रूप से परमेश्वर के वचन को समझ सकते हैं ।

परमेश्वर के वचन के अनुसार हमारी अगुवाई में अधीनता, हमारे अनुभवों का परमेश्वर के वचन में अधीनता ताकि सही समझ हो, यही पवित्र शास्त्रीय सिद्धांत है ।

१ कुरिन्थियों १४ : ३७, "यदि कोई मनुष्य स्वयं को नबी था आत्मिक जन समझता है तो वह यह जान ले कि जो बातें मैं तुम्हें लिख रहा हूँ वे प्रभु की आज्ञाएँ हैं ।"

व्यवस्थाविवरण ४ : २, "जो आज्ञा मैं तुम को सुना रहा हूँ उस में न तो कुछ बढ़ाना । तुम्हारे प्रभु परमेश्वर की जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूँ उन्हें तुम मानना ।"

प्रकाशितवाक्य २२ : १८ - १९ "मैं हर एक को, जो इस पुस्तक की भविष्यवाणी की बातें सुनता है, चेतावनी देता हूँ कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाएगा तो परमेश्वर उन विपत्तियों को, जो इस पुस्तक में लिखी है, उस पर बढ़ाएगा । यदि कोई इस भविष्यवाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डालेगा तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से, जिसकी चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा । हम आपके लिए सुरक्षा परमेश्वर के वचन के द्वारा दूसरे महत्वपूर्ण कथन में देखते हैं, नीतिवचन ३० :५-६, "परमेश्वर का एक-एक वचन ताया गया है, वह अपने शरणागतों की ढाल ठहरा है । उसके वचनों में कुछ मत बढ़ा, ऐसा न हो कि वह तुझे डांटे और तू झूठा ठहरे । परमेश्वर का वचन हमें राज्य के सिद्धांतो के बारे में बताता है, स्वर्ग

राज्य का प्रकाशन, परमेश्वर के व्यक्तित्व का प्रकाशन, उसके तरीकों का प्रकाशन । कोई भी दिशासूचक या अगुवाई जो आपको लगता है कि परमेश्वर की आत्मा की ओर से है जो परमेश्वर के प्रकाशन और उसके राज्य का उल्लंधन करता है या उसके वचन का तो उस इन्कार कर देना चाहिए । २ तीमुथियुस ३ : १६, "हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है । वह उपदेश देने, समझाने, सुधारने, और धर्म की शिक्षा देने के लिए लाभदायक है ।" हमें जीवन में कार्य करने के लिए परमेश्वर के वचन की जरूरत है । हमें वचन से विषयगत दर्जा चाहिए जिससे हम आत्मा के अगुवाई का न्याय कर सकें । नीतिवचन २९: २५, "मनुष्य का भय खाना फन्दा हो जाता है, परन्तु जो प्रभु पर भरोसा रखता है वह ऊँचे स्थान पर चढ़ाया जाता है ।" हमें अपना भरोसा परमेश्वर और उसके वचन पर करना चाहिए ।

एक बात जो हमारे जीवन में घटती है कि जब हम ऐसा करते हैं तो हमें वचन से सीखना है कि कैसे स्वनिष्ठ बात का न्याय करें । आपके पास विषयगत वचन यहा है, और आप स्वनिष्ठ वचन को विषयगत वचन के द्वारा न्याय कर सकते हैं, और जान सकते हैं कि यह परमेश्वर है या नहीं ।कई लोग जब उनके आत्मा में प्रभाव होता है और विश्वास करते हैं कि यह प्रभु की अगुवाई है, इस समस्या में उलझ जाते हैं जहा वे सोचते हैं कि यह प्रभु की ओर से है जो कि वास्तव में नहीं होता है । इसका एक लक्षण यह होता है, विवशता का बोध । "मुझे ऐसा करना या कहना है, या मुझे ऐसा करना है और अभी करना है ।" इस बात का डर कि क्या होगा यदि में अभी इस कार्य को नहीं करूगा, और उसका आतंक और मजबूरी, सशवत रूप से डर के आत्मा का गवाही देता है । यह काफी है कि आपको दिखा सके कि यह प्रभु की ओर से नहीं है भले ही वचन कुछ भी क्यों न कहता हो । इस अनुभव को समझने के लिए पवित्र शास्त्र कहता है, याकूब ३ : १७, "पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है, फिर मिलनसार, कोमल, मृदुभाव, दया, अच्छे फलों से लदा हुआ, पक्षपात और कपटरहित होता है ।" यदि एक वचन, अगुवाई या चिन्ह परमेश्वर की ओर से आता हो, तो वह ऐसा कुछ नहीं होगा जो आतंक लाता हो जो आपको प्रति क्रिया करने पर मजबूर करे और अनियंत्रणीय रूप से आपको विवश करे । वचन जो परमेश्वर की ओर से आता है वह मृदुभाव होता है । वह ऐसा कुछ है जिसे आप गले लगा सकते हैं । वह कोमल, पवित्र और सच्चा है । वह मिलनसार होता है, और उसमें जीवन होता है । आप इन विशिष्टताओं की सच्चाई को समझने और पहचानने की शिक्षा ले सकते हैं । उदाहरण एक ऐसे व्यक्ति की है जिसके साथ मैं हाई स्कूल में पढ़ता था । वह एक दिन कहने के लिए मसीही बन गया, परन्तु वह विश्वासी नहीं था । वह नशे में चूर रहता था और उसे यह भ्रम था जहा उसने एक बादल से भरा रात्रि देखा और यह देखा कि बादल खुल रहा है और छोटा यीशु मसीह (बच्चा) बादल से उसके बाहों में गिरा । उसने सोचा कि उसके वजह से वह मसीही बन गया है । जिस आत्मा से वह जकड़ा था यह वही आत्मा था जिसमें वह शामिल था । कुछ समय बाद मुझे एक बुलावा आया और मुझे अस्पताल उससे मिलने जाना पड़ा । वहा भूख के मारे वह मर रहा था । जिस आत्मा को वह परमेश्वर की अगुवाई समझ रहा था, वह ऐसा सोचता था कि अत्यधिक खाने की वजह से वह स्वार्थी हो गया है और आत्मा उससे कह रही थी कि यदि तुम मुझसे सचमुच प्रेम करते हो तो तुम कुछ भी नहीं खाओगे जब तक कि वह अस्पताल में भर्ती हो गया था । वह मृत्यु के इतने करीब था कि जब उसके नसों में दवाई डाला तो उसका शरीर इन्कार कर रहा था और वह कुछ भी स्वीकार नहीं कर रहा था ताकि पोषक रूप से शरीर अनु क्रिया करे । इसी समय में मुझे अस्पताल बुलाया गया । मुझे उधर जाकर उस व्यक्ति के लिए तब तक प्रार्थना करना पड़ा जब तक मृत्यु - शैया से नहीं उठा । वह स्वस्थ हो गया परन्तु सलाह के लिए इन्कार किया । अगली बात जैसे आप जानते हैं, कुछ महीनों बाद मुझे पुलिस डिपार्टमैन्ट से फोन आया । बात यह थी कि वह व्यक्ति हाई स्कूल में लम्बी दूरी का धावक था । वह दौड़ के लिए जा रहा था, और आत्मा ने कहा, 'यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मुझे पूरे हृदय से करोगे, और मैं चाहता हू कि तुम दौड़ना शुरू करो और पूरे हृदय से दौड़ो । वह दौड़ रहा था और आत्मा उसे मजबूर कर रहा था और कह रहा था कि तुम पूरे हृदय से नहीं दौड़ रहे, बल्कि अपने आप को रोक रहे हो । और भी ज्यादा तेजी से दौड़ो । वह दौडता गया जबतक पुलिस स्टेशन के सामने ध्वस्त न हो गया । यह चरम उदाहरण है । मैं सिद्धांत को रेखाचित्रित करने के लिए चरम सीमा का उपयोग कर रहा हू । सिद्धांतों को देखना आसान है । गलती जो एक या दो डिग्री के दूरी पर हो, वह आपको स्पष्ट रूप से नहीं दिखता है । जब आप हजार मीटर दौड जाते हैं तो वह एक दूरी बनाता है । जो जहाज चलाते हैं वो मेरी बात समझ जाएगे । यह सिद्धांत जो हम याकूब ३ : १७ में देखते हैं, उसका रेखाचित्र दिया गया है । जो वचन उसके पास आया था वह पवित्र नहीं था । वह अनिवार्य था, वह मजबूर करता था, वह डर की सेवकाई करता था । वह परमेश्वर नहीं था । जो भी हम अगुवाई हम सोचते हैं कि परमेश्वर की ओर से है वह परमेश्वर के वचन के अधीन होना चाहिए । आपको कई प्रकार के कार्य करने के लिए अगुवाई मिलेगा, परन्तु स्वयं को नम्र करना सीखें और परमेश्वर के वचन में उस अगुवाई को तौलें ।

कलीसिया के निरीक्षक सेवकाइयों के प्रति अधीन

आपकी अगुवाई, सलाह, पवित्र आत्मा के वरदान, सब निरीक्षक सेवकाईयों के अधीन या प्रमाणित होना चाहिए । यह कई लोगों के लिए डर का कारण होता है क्योंकि उसका दरूपयोग होता है । इफिसियों ४ ः ११ - १५ कहता है ः "उसी ने कुछ को प्रेरित् कुछ को कलीसिया के मेषपाल और कुछ को उपदेशक नियुक्त किया और उन्हें दायित्व सौंपा जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाए तथा एक सिद्ध मनुष्य न बन जाए और मसीह के पूरे डीलडौल तक न बढ़ जाए । तब हम आगे को बच्चे के समान नही रहेंगे जो मनुष्यों को ठगविद्या और चतुराई से उनकी भ्रमपूर्ण युक्तियों से उनके उपदेश की हवा के हर एक झोंके से उछाले और इधर - उधर उड़ाए जाते हैं । नहीं वरन् हम प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उस में जो सिर है अर्थात मसीह में बढ़ते जाएँगे ।" हम देखते हैं कि परमेश्वर ने सेवकाईयां प्रदान किया है ताकि हम परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में प्रौढ़ बनें । यही परमेश्वर का एक तरीका है जो हमें परिपूर्ण बनाता है ।

इब्रानियों १३ : १७ कहता है : अपने अगुवों की बात मानो; और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा । वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडे सांस ले- लेकर; क्योंकि इस दशा में तुम्हें कोई लाभ नहीं ।" याकूब ३ : १ में आगे लिखा है : "हे मेरे भाईयों, तुम में से बहुत लोग उपदेशक न बनें, क्योंकि तुम जानते हो कि हम उपदेशक और भी दोषी ठहरेंगे ।" प्रेरितों के काम २० : २८-३० - में लिखा गया है, "इसलिए तुम अपनी और पूरे झुण्ड की रखवाली करो । पवित्र आत्मा ने तुझे अध्यक्ष ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है । मैं जानता हूं कि मेरे जाने के बाद फाडनेवाले भेडिए तुम में आएंगे । वे झुण्ड को सुरक्षित न छोडेंगे । तुम्हारे ही बीच में ऐसे मनुष्य उठेंगे जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने के लिए टेढ़ी-मेढी बात कहेंगे ।" हम निरीक्षक सेवकाई के विचार को यहां लाते हैं सुरक्षा के उद्देश्य के लिए । मैं यहां आपके समझ के लिए विशिष्टता को दिखाना चाहता हूं कि सही निरीक्षक सेवकाई क्या है और क्या नहीं है । एक निरीक्षक सेवकाई आपका बता सकता है कि इस संदर्भ में क्या करना चाहिए । आप अन्दर आते हैं और सलाह देते हैं और उनके साथ बांटते हैं, और कहते हैं, "मैं उस व्यक्ति के प्रति रोष से भरा हूँ ।" उनके लिए यह सही होगा कि वो ऐसा कहें कि परमेश्वर आपको क्षमा करने के लिए कहता है और आपको यह करने की जरूरत है । परन्तु, आप कहते हैं, "मुझे ऐसा लगता है कि प्रभु चाहता है कि मैं जीविका बदल दूं या मैं एक नए जगह जाना चाहता हूँ ।" ऐसे परिस्थितियों में निरीक्षक सेवकाईयां आपको बताते हैं कि क्या करना या नहीं करना चाहिए, फिर आप जानते हैं कि यह प्रभु की ओर से नहीं है क्योंकि वह परमेश्वर के वचन के साथ संबंध नहीं रखता । वे आपको तथाकथित रूप से परमेश्वर की इच्छा को निर्धारित करने के लिए मदद करते हैं, और जब जरूरत हो, आपको दिखाते है कि आप पवित्र शास्त्र के विपरीत किस तरह सोच रहे हैं । परमेश्वर के सामने जो आप निर्णय लेते हैं उसका आपको लेख देना है । आप ही हैं जिसे निर्णय लेना है । जो आप निर्णय लेते हैं उसके अनुसार आपको जीवन व्यतीत करना है । इसलिए, आपको जरूरत है कि पहचाने की वह परमेश्वर की इच्छा है या नहीं ।

आपके प्रति मेरा कार्य एक निरीक्षक सेवकाई या प्रभु में भाई होकर, आपको परमेश्वर की इच्छा में निर्णय लेने में मदद करना है न की आपको बताना की आपको क्या करना है । परन्तु मैं जो अभी कर रहा हूं, उसमें ये बातें शामिल है जैसे की परमेश्वर की इच्छा को पहचानने में आपकी मदद करना । इसका मतलब हो सकता है, आप इस निर्णय तक कैसे पहुंचे? आप क्यों विश्वास करते हैं कि यह प्रभु है ? मैं आपसे यह बातें पूछकर आपके साथ बांट सकता हूं । मैं आपको सिद्धांतो को दिखाने में मदद कर सकता हूं जिससे आप परमेश्वर के वचन में निर्देशन और सुरक्षा को पा सकते हैं और उसको अपने जीवन में लागू कर सकते हैं ताकि आपका नींव हो यह पहचानते हुए कि हां, परमेश्वर मुझे इस ओर मार्गदर्शन दे रहा है या नहीं । यही निरीक्षक सेवकाई को करना है ।

ऐसा करने से, निरीक्षक सेवकाई यह कह सकते हैं कि यह सब परमेश्वर के इच्छा के अनुसार संबंधित है और उस आधार पर आप आत्मविश्वास पा सकते हैं कि आपको परमेश्वर की अगुवाई मिली है । या, वो कह सकते हैं, मैं जो आप कह रहे हैं इसकी वजह से चिंतित हूं क्योंकि वह वचन से संबंध नहीं रखता और मुझे सोचने पर मजबूर करता है कि यह परमेश्वर की ओर से नहीं है ।

परमेश्वर आपसे यह नहीं कहेगा, उदाहरण के तौर पर कि एक अविश्वासी से शादी करो । पवित्र शास्त्र यह कहता है कि एक अविश्वासी के साथ तुम बराबरी मत करो । यदि आप एक अकेले व्यक्ति हैं, और आपका विवाह होनेवाला है, तो आप अविश्वासी से विवाह नहीं करते । क्या आप जानते हैं क्यों ? यह इसलिए नहीं क्योंकि परमेश्वर आपको कुछ अच्छी बात से दूर रखने की कोशिश करता है परन्तु इसलिए कि आप परमेश्वर के साथ धनिष्ठ संबंध नहीं रख सकते । यदि आप एक विश्वासी हैं और

परमेश्वर के साथ आपका रिश्ता आपके जीवन में महत्व रखता है और आप उसके बारे में उस व्यक्ति के साथ बाट नहीं सकते जो आपके जीवन का साथी हो, तो फिर आप परिपूर्ण, घनिष्ठ संबध से वंचित रहेंगे जो परमेश्वर आपके विवाह से योजना रखता है I वह किसी को भी किसी बात से चुराना नहीं चाहता; बल्कि वह उन्हें कई साल के दर्द, निराशा, चोट और खालीपन से बचाना चाहता है I

<u>सम्मति देनेवालों की बहुतायत में सुरक्षा</u>

नीतिवचन ११ : १४, जहा बुद्धि की युक्ति नहीं, वहा प्रजा विपत्ति में पडती है; परन्तु सम्मति देनेवालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है I" नीतिवचन २४: ६, "इसलिए जब तू युद्ध करे, तब युक्ति के साथ करना, विजय बहुत से मन्त्रियों द्वारा प्राप्त होती है I" प्रभु ने कई लोगों को सुधार और तोल के लिए मसीह की देह में रखा है I वे थर्मोस्टॅट का काम करते हैं जो किसी चीज को गति में लाते हैं जब कोई दहलीज पार करता है I यह कार्य चीजों को तोल में वापस लाते हैं और उसको मुख्य धारा में मिला देते हैं I यह सुरक्षा का सही संचालन होता है I मसीह के देह में ऐसा अधिकार <u>जो लेखा नहीं देता है वैसा कोई बात नहीं I</u> पासबान कलीसिया के अगुवे और सभी विश्वासी को जवाब देह होना चाहिए उनके जीवनों में ताकि वे स्वयं को और दूसरों पर जिनके ऊपर वो प्रभाव डालते हैं सुरक्षित हों I यह गलती के विरूद्ध सुरक्षोपय लाता है और उन त्मक जीवनों को सुरक्षा का प्रयोजन करता है जो मसीह के पीछे हो लेने के लिए समर्पित हैं I

कुछ ऐसे उत्तरदायी लोग - माता - पिता, पति-पत्नी, पासबान, शिक्षक और दूसरे सावित अगुवे होते हैं जो मसीह की सेवा करते I ऐसे लोग जिनके प्रति हम जवाब देह होते हैं हमारे आत्मिक जीवन में वो बलवन्त मसीही, होने चाहिए जो परमेश्वर की सेवा करते हों I ये लोग स्वाभाविक रूप से हमारे जीवनों में अगुवे हो सकते हैं, परन्तु मसीह को अपना जीवन समर्पित किए बगैर वे योग्य नहीं ठहरते कि हमारे जीवनों में आत्मिक सच्चाई की बातचीत करें I आत्मिक संबंध में दो ऐसे महत्वपूर्ण पॅरामीटर्स होते हैं जिनपर गौर करना चाहिए I एक स्तर ऐसा होता है संबंध का जो सीमित है उस समर्पण के स्तर द्वारा जो उस संबंध को दिया जाता है I दूसरा स्तर होता है व्यक्तिगत सामर्थ ताकि समर्पण को पूरा किया जा सके I यदि एक गलत मूल्यांकन इन दोनों स्तरों का किया जाए तो चोट पहुचता है I

जैसे समय वीतता गया, यीशु मसीह ने अपने शिष्यों को एक धनिष्ट संबंध में अगुवाई किया जो उनके बीच प्रकटीकरण से भरा था I यूहन्ना १५ : १५, "अब से मैं तुम्हें सेवक न कहूँगा; क्योंकि सेवक नहीं जानता कि उसका स्वामी क्या करता है I परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है; क्योंकि मैंने जो वातें अपने पिता से सुनीं, वे सब तुम्हें बता दी I" एक - दूसरे के साथ आपसी समर्पण आवश्यक है ताकि प्रकटीकरण के साथ एक संबंध को बनाया जा सके I यह कई बार अलग परिस्थितियों में जैसे एक - दूसरे के साथ आपसी समर्पण आवश्यक है ताकि प्रकटीकरण के साथ एक संबंध को बनाया जा सके I यह कई बार अलग परिस्थितियों में जैसे एक - दूसरे के जीवन में जरूरतें, हमारे जीवन के संवेदनशील भागों का खुलासा, वदलाव की जरूरत, और विकास, यदि संबंध पूरे क्षमता में बढ़ना हो तो प्रेम से इन वातों का सामना करने की अगुवाई मिलती है I

ऐसे पारदर्शिता का संबंध,प्रेम में सच्चाई को वताना, और परमेश्वर के उत्तम बातों के लिए एक - दूसरे के जीवन में आपसी समर्प ण, आत्मिक सुरक्षा को उत्पन्न करने में मदद करती है I ऐसे एक संबंध से दो व्यक्ति सच्चे मधुर संबंध एकता और सहमति में आ सकते हैं I यह एक ऐसे जगह को उत्पन्न करती है जहा परमेश्वर के साथ विशाल सामर्थ हो I

मत्ती १८ : १९, "मैं तुम से कहता हूँ , यदि तुम में से दो व्यक्ति पृथ्वी पर किसी बात के लिए एक मन होकर प्रार्थना में मांगेगे, वह मेरे पिता की ओर से, जो स्वर्ग में है, उनको प्राप्त हो जाएगा I"

ईमानदारी

परमेश्वर की इच्छा में चलना सीखना सुरक्षा के साथ यह होता है कि परमेश्वर के साथ में धनिष्ठ संबंध में चलना I मत्ती ६ : ३३, "इसलिए पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएंगी I"

कुलस्सियों १ : ९-१२, "इसलिए जिस दिन से हम ने यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिए यह प्रार्थना करने और विनती करने से नहीं चूकते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो जाओ I ताकि तुम्हारा चालचलन प्रभु के योग्य हो I वह सव प्रकार से प्रसन्न हो, और तुम में हर प्रकार के भले कामों का फल लगे और तुम परमेश्वर की

पहचान में बढ़ते जाओ । तुम उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सब प्रकार की सामर्थ से बलवन्त होते जाओ । यहाँ तक कि आनन्द के साथ हर प्रकार से धीरज और सहनशीलता दिखा सको । तुम पिता का धन्यवाद करते रहो, जिस ने हमें इस योग्य बनाया कि हम ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में संभागी हों ।"

कई लोग स्वयं को खुश करनेवाले होते हैं परन्तु जैसे हम प्रभु में प्रौढ़ होते हैं हम अपने स्वर्गीय पिता को प्रसन्न करने के लिए जीते हैं । यह सच्चे ईमानदारी का महत्वपूर्ण भाग है, क्योंकि पिता को प्रसन्न करने के लिए जीने के लिए हमें धार्मिकता में जीना जरूरी है । नीतिवचन ११ : ३, "सीधे लोग अपनी खराई से अगुवाई पाते हैं, परन्तु विश्वासघाती अपने कपट से विनाश होते हैं ।" नीतिवचन १८ : १0, "प्रभु का नाम दृढ़ कोट है; धर्मी उसमें भागकर सब दुर्धटनाआ से बचता है ।" भजन संहिता ११२ : ४, "सीधे लोगों के लिए अन्धकार के बीच में ज्योति उदय होती है । वह अनुग्रहकारी, दयावन्त और धर्मी होता है ।" खराई ने अब्राम की अगुवाई किया । उत्पत्ति लुटेरों के ऊपर जय पाई । फिर भी उसने अपने पद्वी का फायदा नहीं उठाया ताकि परिस्थिति पर पराक्रम करके स्वयं धनी हों, परन्तु उसने जीवन के प्रयोजन के लिए परमेश्वर पर भरोसा किया । उसने पहचाना कि वह प्रभु ही है जिसने युद्ध में उसे जय दिलाया । यह खराई का एक उदाहरण है जिसने अब्राहम की अगुवाई की, परिस्थितियों में । उत्पत्ति १४ : २२ - २३, "अब्राहम ने सदोम के राज से कहा, "परमप्रधान परमेश्वर प्रभु, जो आकाश और पृथ्वी का अधिकारी है, उसकी मैं शपथ खाता हूँ कि जो कुछ तेरा है, उस में से न तो मैं एक सूत और न जूती का बन्धन, न कोई और वस्तु लूँगा; ताकि तू ऐसा न कहने पाए, कि अब्राम मेरे ही कारण धनी हुआ ।"

खराई ने बोअज़ की अगुवाई की । जैसे जरूरत के समय रूत बोअज़ के चरणों के पास लेटी, बोअज़ ने स्वयं की तृप्ति के लिए उस परिस्थिति का फायदा नहीं उठाया, परन्तु रूत और उसके इज्जत की सुरक्षा की । रूत ३ : ११, १४, "इसलिए अब, हे मेरी बेटी, मत डर, जो कुछ तू कहेगी, मैं तुझ से करूँगा, क्योंकि मेरे नगर के सब लोग जानते हैं कि तू भली स्त्री है । . . . तब वह उसके पांवों के पास सवेरे तक लेटी रही, और उससे पहले कि कोई दूसरे को पहचान सके वह उठी । बोअज न कहा, "कोई जानने न पाए कि खलिहान में कोई स्त्री आई थी ।"

खराई ने युसुफ को पोती पर के घर अगुवाई की । जब उसके स्वामी की पत्नी ने युसुफ पर कुदृष्टि डाली और उसके साथ सोने की इच्छा किया तो खराई ने युसुफ की अगुवाई की ताकि पोती पर और उसकी पत्नी का निरादर न हो । उत्पत्ति ३९ : ७ - १0, "इन बातों के पश्चात ऐसा हुआ, कि उसके स्वामी की पत्नी युसुफ पर कुदृष्टि डाली । उस ने कहा, "मेरे साथ सो ।" पर उसने अस्वीकार करते हुए अपने स्वामी की पत्नी से कहा, "सुन, जो कुछ इस घर में है मेरे हाथ में है । उसे मेरा स्वामी कुछ नहीं जानता, और उस ने अपना सब कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया है । इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं । उसने, तुझे छोड़ जो उसकी पत्नी है; मुझसे कुछ नहीं रख छोडा । भला, मैं ऐसी बड़ी दुष्टता करके परमेश्वर का अपराधी क्योंकर बनूँ?" ऐसा हुआ, कि वह प्रतिदिन यूसुफ से बातें करती रही, पर उस ने उसकी न मानी कि उसके पास लेटे या उसके संग रहे ।"

खराई ने दाऊद की अगुवाई की ताकि उसको आराधना और परमेश्वर के प्रति सेवा अपवित्र न हो मुफ्त की होमबली चढ़ाकर । २ शमूएल २४ : २४, "राजा ने अरौना से कहा, "ऐसा नहीं, मैं अपने प्रभु परमेश्वर को मुफ्त की होमबलि नहीं चढ़ाने का ।" इसलिए दाऊद ने खलिहान और बैलों को चांदी के पचास सिक्कों में मोल लिया ।"

<u>पुनरावलोकन</u>

हमने देखा कि पवित्र आत्मा की अगुवाई, जो सम्मति हम प्राप्त करते हैं, जो वरदान (पवित्र आत्मा के) हमारे जरिए या हमारे अन्दर कार्य करते हैं, वे सब परमेश्वर के लिखित वचन के अधीन होना चाहिए । वे कलीसिया के निरीक्षक सेवकों के अधीनता या निश्चितता से होना चाहिए । हमने सीखा कि सम्मीत देनेवालों की बहुतायत में सुरक्षा होती है और कुछ ऐसे संबंध होते हैं जिसे हम सम्मति के लिए दे देते हैं । हमने सीखा कि खराई हमारी अगुवाई करेगी । पवित्र शास्त्र कहता है कि सीधे लोगों की खराई उनकी अगुवाई करेगी, इसलिए हम उन चार कुंजियों को देखेंगे ।

यह महत्वपूर्ण है कि आप समझें कि हर एक चाबी जो आपको दी जाती है बिना दूसरे चाबियों के, विफल हो सकती है । आप परमेश्वर के वचन का गलत अनुवाद कर सकते हैं । आप सम्मति को गलत समझ सकते हैं । आपको कलीसिया की निरीक्षक

सेवकाई को समझने में परेशानी हो सकती है । फिर भी, सब कुछ पवित्र शास्त्र की सच्चाई को मिलाकर आत्मिक सुरक्षा के लिए जाल प्रदान करता है । यदि जाल का एक धागा भी विफल हो जाए, तो दूसरे आपको थामे रहेंगे ।

पवित्र आत्मा की गवाही

पवित्र आत्मा की गवाही या परमेश्वर की आवाज को सुनना । यह कई बार कुछ लोगों के लिए कठिन बात है, परन्तु बहुत ही महत्वपूर्ण । प्रेरितों के काम ८ : २९ "तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, "पास जाकर इस रथ के साथ हो ले ।" १ शमूएल ३ : १0, "तब प्रभु आया, और उसके पास खड़े होकर पहले के समान पुकारा, "शमूएल ! शमूएल !
शमूएल ने कहा, "कह, क्योंकि तेरा दास सुन रहा है ।" पवित्र आत्मा ने किस तरह फिलिप्पुस या पवित्र आत्मा ने किस तरह शमूएल से बातचीत की ? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसके साथ हम अक्सर संघर्ष करते हैं । कभी - कभी परमेश्वर स्पष्ट रूप से बातचीत कर सकता है । फिर भी, बहुत ही कम बार परमेश्वर स्पष्ट

रूप से बातचीत करता है । जब हम "परमेश्वर का वचन" शब्द का इस्तेमाल करते हैं तो हम एक सुनाई पडने वाली आवाज का ज़ि□नहीं कर रहें या ऐसा कुछ जो सुनाई पड़ने वाली आवाज के । जैसा हो, परन्तु भीतरी मनुष्यत्व की आवाज । हम परमेश्वर के वचन का उल्लेख इस प्रकार करते हैं - जो परमेश्वर की इच्छा है वह हमें जाहिर करता है । वह भले ही दर्शन, छाप, या किसी के सम्मति द्वारा, प्रचार द्वारा, वचन सुनने के द्वारा, या फिर एक भीतरी आवाज द्वारा ऐसा करता है । यदि परमेश्वर सफलतापूर्वक उसके मन और इच्छा के विषय में आपकी आत्मा से कुछ कहता है, फिर भी इस सहभागिता का विकास कई साल परमेश्वर के साथ चलने के द्वारा हुआ है । लोगों ने कई बार मुझसे पूछा है, तुम किस प्रकार जानते हो कि परमेश्वर ऐसा कह रहा है, तुम किस प्रकार जाने की परमेश्वर ने तुम्हारे जीवन में कुछ कहा है ? मैंने उन लोगों से जो ज्ञान के वचनों में चलते हैं और सेवकाई में दैविक मार्ग दर्शन रखते हैं, पूछा है किस प्रकार उन्हें इन अलग बातों की मालूमात हुई । हर किसी ने अलग - अलग लक्षण बताए जिसके द्वारा वे परमेश्वर की आवाज़ को पहचान सके । मैने यह निष्कर्ष लगाया कि ऊ□ रूप से व्यक्तिवादी है । मैंने यह पाया कि इनमें एक व्यक्ति हमेशा उन अलग लक्षन के बारे में बताता है जिससे वह परमेश्वर की आवाज़ को पहचानता है । मैने जाना कि यह एक ऐसे स्रोत से आएगा जो उस व्यक्तित्व का चरित्र हो : एक व्यक्ति जो बिल्कुल सहानुभूतिशील हो वह परमेश्वर की आवाज को सहानुभूतिशील स्रोत में पाता है । जो व्यक्ति बुद्धिमान हो या दिमागी हो व्यक्तित्व में तो उसे परमेश्वर की आवाज़ मन से या बुद्धि के स्रोत से मिलता है ।

मैं इतना कहना चाहता हू□कि आपको परमेश्वर की आवाज पहचानना सीखना पडेगा, वचन में अनुभव में बढ़ते, सलाह में, खराई में, समर्पण में निरीक्षक सेवकाईयों के प्रति, और जीवन में प्रौढ़ता के द्वारा । और हमारे जीवन में जब परमेश्वर हमारे हृदय से और हमारे जीवन में बातचीत करना शुरू करता है तो हम उसे अतिरिक्त समय पहचानने लगते हैं । पहली बार आप मौके को खो देते हैं, और आप सोचते हैं, वह प्रभु नहीं था । आपने ऐसा सोचा कि वह प्रभु है और पाया कि जैसा आपने सोचा वैसा कुछ हुआ नहीं, और आप देखते हैं कि एक अवसर आपने खो दिया है । फिर एक समय में आप पाते हैं कि वह ठीक था, और वह परमेश्वर ही था । आप परमेश्वर के चरित्र को इस बार और भी यथार्थता से उठाते हैं जहा□आप हमेशा निश्चित नहीं होते । जितना ज्यादा आप परमेश्वर के साथ चलते हैं और परमेश्वर के आवाज को पहचानते हैं, आपको उतना ही आत्मविश्वास मिलता है और परमेश्वर की आवाज को पहचानने में यथार्थ होते हैं ।

एक बात जो हमें पहचानना है वह यह कि निर्देशन स्वीकार करना इस बात पर निर्भर करता है कि जब परमेश्वर हमसे बातचीत करता है तो क्या हम उसकी आवाज को पहचानते हैं । याकूब परमेश्वर के चरित्र के विषय में कहता है जब वह बातचीत करता है, वह यह कि, वह उस ज्ञान को जो पृथ्वी से आती है और उस ज्ञान को जो स्वर्ग से आती है उसमें अंतर देखता है । (याकूब ३ : १५-१७) वह कहता है कि जो ज्ञान ऊपर से आता है, वह मिलनसार, कोमल और मृदुभाव होता है । इसलिए हम जानते हैं कि जब परमेश्वर हमारे हृदय से बातचीत करता है तो वह तुरंत सावधान नहीं करता; वह हमें तुरन्त प्रतिउत्तर देने पर मजबूर नहीं करेगा, हम किसी भी बात के लिए जर्वदस्ती नहीं खींचे जाए□, परन्तु वह शांति और समझ देता है । हम यह जान सकते हैं कि हमें कुछ कार्य करने की जरूरत है, वह आवश्यक है, वह महत्वपूर्ण है कई समय; परन्तु परमेश्वर की आवाज़ जो हमारे हृदय तक आती है वह शांति लाती है, और मृदुभाव होता है । अभी वह सचमुच पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के संपूर्ण अनुभव से संबंधित होता है । यीशु

मसीह ने कहा कि उसके लिए यह जरूरी है कि जाए, ताकि सहायक आए । यीशु ने कहा कि वह सांत्वना देनेवाले को भेजेगा जो हमें सच्चाई में मार्गदर्शन करेगा, जो अपने मन की नहीं कहेगा, परन्तु जब वह सुनेगा तो वह हमसे बातचीत करेगा फिर यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि वे येरूशलेम में रूके रहें जब तक पवित्र आत्मा उनके ऊपर आए और वे स्वर्ग से सामर्थ पाएं । मैं विश्वास करता हू कि जो बपतिस्मा पवित्र आत्मा की ओर से हमारे जीवन
में आती है वह शिक्षा के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है जो पवित्र आत्मा सेमार्गदर्शित होती है । यदि हम पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को स्वीकार नहीं करते तो पवित्र आत्मा के अगुवाई को पाना कठिन है ।

एक बात जो पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के साथ जोडना चाहता हू कि वह आवाज शुरू करने सामान है । जब परमेश्वर बातचीत करता है तो आप इसे थोड़ा स्पष्ट रूप सुन सकते हैं आपका दर्शन थोड़ा स्पष्ट होता है और कोहरा उठता हुआ लगता है और आप विस्तृत रूप से परख सकते हैं । ऐसा लगता है कि पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के द्वारा सुगाहिता का ज्यादा माप मिलता है । मैं ऐसा विश्वास नहीं करता कि यह सिर्फ एक तरीका है जिससे परमेश्वर हमारे जीवन में सुग्राहिता को बढ़ाता है, परन्तु निश्चय ही यह एक तरीका है जैसे हम परमेश्वर की आवाज़ को सुनने और पवित्र आत्मा की गवाही को समझते हैं तो एक तरफ ऐसा होता है कि हमें कोशिश और गलतियों के स्तर से गुज़रना होता है । मैं विश्वास करता हू कि यह पवित्र शास्त्रीय रूप से दस्तावेज किया जा सकता है ।

इब्रानियों ५ : १४, "पर अन्न सयानों के लिए है जिनकी ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते - करते, भले - बुरे में भेद करने के लिए पक्की हो गई हैं ।" उपयोग और अभ्यास के द्वारा बोध आता है । हम अतिसंवेदनशीलता के साथ, क्या घट रहा है, इसका बोध करना सीखते हैं अनुभव के द्वारा, प्रशिक्षण के द्वारा, एकाग्रता के द्वारा । मैं विश्वास करता हू कि किसी भी बात के साथ यह सही है । एक सफल व्यक्ति से यह पूछा गया था कि उसने सफलता किस तरह प्राप्त किया ? उसने उत्तर दिया, "बहुत ही सरल है, दो शब्द : सही निर्णय ।" सही निर्णय लेना आपने किस प्रकार सीखा ? "बहुत ही सरल है; एक शब्द : अनुभव ।" आपने अनुभव करना कैसे सीखा ? "बहुत आसान, दो शब्द : गलत निर्णय ।" इसलिए यह कई बार कार्य करता है । यदि आप बाहर जाकर गलत निर्णय लेते हैं और आप समझते हैं कि वे गलत थे, भले ही आप दूसरा कुछ नहीं सीखें परन्तु यह सीखेंगे कि क्या नहीं करना चाहिए । यह बात सही है कि कुछ लोग सीखते नहीं हैं जबतक वे वही गलत निर्णय दर्जनों बार न ले लें, परन्तु आखिरकार उन्हें यह समझ आ जाता है । मार्ग में चलते - चलते हम सीखते हैं और हमारी संवेदनशीलता तेज होती जाती है ।

मै ऐसा विश्वास करता हू कि आत्मा में चलना, उसकी आवाज को पहचानना, प्रगामी रूप से हम तक आती है और अनुभव के द्वारा हम तक पहुचती है । जब आपको पता है कि परमेश्वर ने एक निश्चित रूप से आपसे बातचीत किया है और यह बार - बार साबित करता है कि वह परमेश्वर ही है तो आप आत्मविश्वास के साथ परमेश्वर को पहचानना शुरू करते हैं ।

सिद्धांत के रूप में हम तक आवाज़ कैसे पहुच सकती है ? अद्वितीय रूप से व्यक्तिगत, परन्तु सिद्धांत में हमेशा एक समान । एक तरीका यह है कि पवित्र आत्मा हमें नियंत्रित रख सकता है । प्रेरितों के काम १६ : ६, "वे फ्रूगिया और गलातिया प्रदेशों से होकर गए । किन्तु पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने के लिए मना किया ।" यहाँ पौलुस एशिया जाने को है और वह कहता है कि पवित्र आत्मा ने उन्हें एशिया में वचन सुनाने से मना किया । परमेश्वर की आत्मा ने उसे मना किया । मैं विश्वास करता हू कि मना करने के पीछे सच्चाई के लिए समर्पण है : नीतिवचन ३ : ५ - ६ "तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से प्रभु पर भरोसा रखना; उसी को स्मरण करके सब काम करना तब वह तेरे लिए सीधा मार्ग निकालेगा ।" पौलुस प्रभु की इच्छा की खोज कर रहा था जब वह कुछ ऐसा कर था जे उसने सोचा की उत्तम है । परन्तु परमेश्वर की आत्मा ने उसे मना किया और उसके मार्ग निर्देशित किया गया । यदि हम अपनी समझ का सहारा नहीं लेंगे, परन्तु निरंतर परमेश्वर के मार्गदर्शन की खोज करेंगे, तो मैं विश्वास करता हू कि हम परमेश्वर को निर्देशन देने की अपेक्षा कर सकते हैं ।

हमारे हृदय में शांति का बोध

हम किस तरह जानते हैं कि परमेश्वर हमारे दिशा को व्यवस्थित करना प्रारंभ करता है, पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन जो पवित्र आत्मा की गवाही देता है ? एक तरीका है, कि हमारे हृदय में शांति का बोध होता है । हमें इस काम के लिए परमेश्वर की इच्छा में समर्पित होना चाहिए । यदि आप अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा में प्रमुख रूप से समर्पित नहीं हैं तो यह विशिष्ट सिद्धांत

आपके जीवन में कार्य नहीं करेगा । कुलुस्सियों ३ : १५, “मसीह की शान्ति जिसके लिए तुम एक देह रूह में बुलाए गए हो, तुम्हारे हृदय में राज्य करे । तुम सदा धन्यवाद देनेवाले बने रहो ।” यह शब्द “राज्य” का मतलब है : शासन करना हथौड़ी से जैसे न्यायालय में न्यायाधीश होता है । हमारे पास कुछ ऐसा है जो हमें खतरे में सावधान करता है । दूसरे शब्दों में, जब वह अलौकिक विश्राम जो हमारे मध्य में हैं, उसमें भंग होता है तो वह इसलिए है कि परमेश्वर हमें सावधान करना चाहता है । जब आपकी शांति भंग होती है परमेश्वर आपका मार्गदर्शन करना चाहता है । आपकी शांति भंग होती है तो इसका मतलब है, कुछ ऐसा है जो ठीक नहीं है, और आपको उन बातों के द्वारा जो हमने आपको सुरक्षा और मार्गदर्शन के तरीके बाँटे थे उनके जरिए उन बातों को जाँचें । इसे कार्य में लाने के लिए हमें कुछ पूर्व पेक्षित कार्य करने की जरूरत है ।

यशायाह ४८ : १८, “भला होता कि तू ने मेरी आज्ञाओं को ध्यान से सुना होता ! तब तेरी शान्ति नदी के समान और तेरा धर्म समुद्र की लहरों के नाई होता ।” हम परमेश्वर के शान्ति को जान नहीं पाएँगे यदि हम उसके व्यवस्था का निरादर करेंगे । यदि हम उसके व्यवस्था का निरादर करेंगे तो परमेश्वर की शान्ति हमारे हृदयों में नहीं रहेगी । भजन संहिता ११९ : १६५, “तेरी व्यवस्था से प्रीति रखनेवालों को बड़ी शांति होती है; और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती ।” यदि हमारा समर्पण परमेश्वर के इच्छानुसार नहीं है, और हम परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी नहीं हैं तो हम उसकी शांति नहीं पा सकते जो हमारे जीवन में कार्य करने के लिए आवश्यक है । तो हम पाते हैं, सर्मपण पूर्वपेक्षित है, भव्य चाबी, सुरक्षा चाबी जो परमेश्वर के राज्य के हर दरवाजे को खोलता है । जैसे हमारे पास मसीह की प्रभुता और व्यवस्था में एक समर्पित आत्मा है, तब हम पाते हैं कि परमेश्वर की शांति हमारे दिलों में होती है, और वह हमें एक गलत या सही परिस्थिति में जागृत कर सकता है, उस शांति को उठाकर या हमारे जीवन में उसे देकर ।

हमारी शांति एक वजह से भंग होती है । इसे नकारें नहीं परन्तु प्रभु से मांगे कि वह आपसे क्या बातचीत करना चाहता है । आप परमेश्वर की शांति के लिए योग्य नहीं ठहर सकते जब तक आप परमेश्वर की इच्छा में समर्पित नहीं होते चाहे कुछ भी क्यों न हो - ताकि दिशा आपके हृदय के लिए कठिन न हो । मुददा यह होना चाहिए : पिता की इच्छा, और आप इस जगह तक समर्पित होना चाहिए चाहे वह हाँ या न हो, मैं नहीं ध्यान देता, वह आपकी इच्छा है कि मैं परमेश्वर में दिलचस्पी लेता हूँ । जब आप उस समर्पण के जगह में हैं, तब जैसे आप मनन करते हैं कि हाँ, और शांति भंग होती है और विरोध भड़कता है : और आप मनन करते हैं कि नहीं, और परमेश्वर की शांति आपके आत्मा में होता है, तब आप इसे पवित्र आत्मा के गवाही की अनुमति दे सकते हैं ताकि वह आपके चुनाव का निर्देशन करें ।

यह सिद्धांत मत्ती १0 : ११-१३ में रेखाचित्रित है, यीशु मसीह के कथन द्वारा जब उसने शिष्यों को बाहर भेजा और कहा : “जिस किसी नगर या गांव में जाओ, तो पता लगाओ कि वहाँ से न निकलो, उसी सम्मानित व्यक्ति के यहाँ ठहरे रहो । जिस घर में प्रवेश करो तो उस घर को आशीष देना । यदि उस घर के लोग योग्य होंगे, तो तुम्हारी शांति उन पर ठहरेगी । परन्तु यदि वे योग्य न होंगे, तो तुम्हारी शांति तुम्हारे पास लौट आएगी ।”दूसरे शब्दों में, एक अनुभव था जो प्रभु इन शिष्यों को बता रहा था, जो मार्ग दर्शन के लिए था ।

वे एक घर जाकर अपने शांति को उनके घर में देना है, जो परमेश्वर के द्वारा उनके जीवन से निकलती है । यदि वह शांति उनके पास लौट आती है, तो वह यह दर्शाती है कि उस जगह में कुछ गलत है, और उसके अनुसार उन्हें कार्य करना है । यह मार्गदर्शन का एक जरिया है । पवित्र आत्मा की गवाही नहीं होती यदि वे सही जगह नहीं है । फिर से, हमारे पास शांति का एक चित्र है । कभी - कभी हम अंतर करने के द्वारा सीख सकते हैं, इसलिए हम व्यवस्थाविवरण में इस भेद को देखेंगे । जब हम परमेश्वर की इच्छा के बाहर कार्य करते हैं तो क्या होता है ? यह एक कथन है जो परमेश्वर इस्राएल के लिए बनाता है यदि वे वाचा तोड़कर उसकी इच्छा के बाहर कार्य करते हैं । व्यवस्थाविवरण २८ : ६५ - ६७, “उन जातियों में कभी तू चैन न पाएगा, और न तेरे पांव को ठिकाना मिलेगा; क्योंकि वहाँ प्रभु ऐसा करेगा कि तेरा हृदय कांपता रहेगा । तेरी आँखें धुंधली पड़ जाएंगी, और तेरा मन कलपता रहेगा; तुझ को जीवन का नित्य संदेह रहेगा । तु दिन-रात थरथराता रहेगा, और तेरे जीवन का कुछ भरोसा न रहेगा । तेरे मन में जो भय बना रहेगा, और तेरी आँखों को जो दिखता रहेगा उसके कारण तू सवेरे आह मारके कहेगा, कि सवेरा कब होगा ।” दूसरे शब्दों में, वह कहता है कि, जब आप परमेश्वर के इच्छा के बाहर हैं, तो शांति और विश्रांति नहीं रहेगी; आप भय में रहेंगे, आप में गड़बड़ी होगी, और आप दुखी रहेंगे । यदि आपके जीवन में ये सब बाते हैं तो आप परमेश्वर के इच्छा के बाहर हैं । कहीं न कहीं आप गलत हुए ।

दूसरे तरफ अंतर यह है कि यदि हम उसमें और उसकी आत्मा में बने रहते हैं और आत्मा की अगुवाई में चलते हैं, तो हमारे पास परमेश्वर की शांति होती है जो हमारे जीवन में राज करती है । जब हम आत्मा में नहीं चलते और उसके बाहर कदम रखते हैं, तो परमेश्वर की शांति में विघ्न होता है । जब हम परमेश्वर की आत्मा में फिर से वापस चलने लगते हैं तो परमेश्वर की शांति हम में प्रमाणित होता है । हमें इसे सुरक्षा के मार्गदर्शन के लिए इस शासन करने की अनुमति देना चाहिए ।

प्रयोजन की परिस्थितिया

दूसरा निर्देशतत्व जो मैं आपको बताना चाहता हू वे हैं परिस्थितिया । ये कई लोगों के लिए गड़बड़ी का क्षेत्र होता है । यहा पर हम निश्चिता के लिए देखते हैं जो हमें वचन में ढूढना चाहिए और निरीक्षक सेवकाई तथा सम्मति के द्वारा करना चाहिए । कई लोग परिस्थिति को गलत समझते हैं । एक बार जब हम अपने जीवन को यीशु मसीह की प्रभुता में समर्पित करते हैं और बिना आरक्षण के उसमें समर्पित रहते हैं तो हम अपने हाथों में नहीं रहते परन्तु हमारा जीवन उसका होता है और हम उसके हाथों में रहते हैं । परिणामस्वरूप हमारे परिस्थितियों में हम मनुष्य या शैतान के साथ व्यवहार नहीं करते परन्तु स्वर्गीय पिता के साथ व्यवहार करते हैं । आप कहते हैं यह किस प्रकार होगा अय्यूब के जीत की कुन्जी उसके दैविक पिता के साथ व्यवहार में नहीं था । प्रभु ने हमें यूसुफ के जीवन में एक महान शिक्षक दिया है । जवान मनुष्य होने के नाते परमेश्वर ने उसे एक दर्शन दिया था जो उसके बुलाहट और जीवन में कार्य के लिए दिया था । जिस प्रकार यूसुफ ने अपने भाईयों के साथ बाटा उन्होंने ईर्ष्या में आकर यूसुफ को गुलामी के लिए बेच दिया । कुछ सालों तक यूसुफ गुलामी में गलत दोषारोप जिसके कारण बन्दीगृह में रहना पड़ा और अपने परिवार से अलग होकर रहना पड़ा । फिर भी जैसे यूसुफ परमेश्वर के वचन की पूर्णता में बढ़ा उसने फिरौन के साथ दूसरे स्थान पर मिस्र देश में राज किया । इस स्थिति में वह उसके भाइयों के साथ मिला । जब यूसुफ उनसे मिला तो उसका हृदय शुद्ध था उसमें स्वतंत्रता और क्षमा था । यह इसलिए था क्योंकि उसने अपने परिस्थितियों को सही रूप से देखा ।

उत्पत्ति ५० : २०, " यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया था । परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिस से वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रकट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं ।" परमेश्वर ने यूसुफ को परिस्थितियों के ऊपर अपने स्वर्गीय पिता के साथ संबंध के लिए क्षमता दिया था और यह देखने की क्षमता की परमेश्वर उस परिस्थिति को उसके उद्देश्य की बढ़ोत्री के लिए किया है । इसी समय, वह इस बात की जानकारी रखता था कि उसके भाई बुराई का इरादा रखते हैं । इसके लिए वह क्षमा और अनुग्रह के स्थान को पाने के लिए सक्षम था ।

कभी - कभी परमेश्वर में हमारे भरोसे की परीक्षा के लिए, परमेश्वर हमारे दृष्टि से थोडे देर के लिए छुपा रहना चाहिए । जिस प्रकार आप प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर आपको उसके हाथ को देखने में मदद करे, हर घटना में और आप समझ जाते हैं कि आप मनुष्य या शैतान के साथ नहीं, परन्तु आप अपने स्वर्गीय पिता के साथ व्यवहार कर रहे हैं, तब आप आत्मा में स्वतंत्रता पा सकते हैं । यह पहली बात है जो आपको जानना है जब आप परिस्थितियों को देखते हैं । यदि आप इसे सच्चाई के रूप में नहीं स्वीकार करते हैं, आपके विपरीत परिस्थिति में, तो आप सचमुच में क्या हो रहा है इसे कभी पहचान नहीं पाएंगे । आखिरकार, एक ईसाई होने के नाते, मनुष्य या शैतान के माध्यमिक उलझन का परवाह किए बिना, आप अपने स्वर्गीय पिता के साथ व्यवहार कर रहे होते हैं ।

यह यूसुफ और अय्यूब के जीवन के अध्ययन से सुगमता से देखा जाता है । चार प्रकार के मार्ग हैं जिसका हम जिस परिस्थिति का हम गलत तरीके से अनुवाद करते हैं जो हमारे व्यक्तित्व के अनुकूल होता है ।

१. हम अपने नाकारात्मक परिस्थिति को देखते हैं और कहते हैं, परमेश्वर हमें परीक्षा में डाल रहा है । कभी - कभी यह बात सच है, परन्तु हमारे जीवन में हर परिस्थिति परमेश्वर के कारण नहीं होता । कभी - कभी ये हमारे स्वभाव या दूसरे लोगों के कार्यो से होता है ।

२. मैं अनाज्ञाकरिता के लिए अनुशासित किया जाता हू । कभी - कभी हम इस विचार का उपयोग ऐसी चीजों को स्वीकारने के लिए करते हैं जो हमें स्वीकारना नहीं चाहिए ।

३. शैतान मेरे पीछे लगा है । यह कहना ठीक है जब हम जिम्मेदार होना नहीं चाहते । मैं धार्मिकता के लिए सताया जाता हूँ। कई बार हम इस विचार का उपयोग हमारे विफलता और कमजोरियों से दूर रहने के लिए करते हैं । समस्याएँ जो हमारे विफलताओं से उठती है वह धार्मिकता के लिए सताव नहीं होता है ।

हम वैसे गलतियाँ तब करते हैं जब हम अपने परिस्थितियों को देखते हैं, और हमें यह समझना है कि सचमुच में क्या हो रहा है । हमें परमेश्वर के हाथ को परिस्थितियों में पहचानना सीखना है । सिर्फ परिस्थितियाँ ही परमेश्वर की इच्छा के अन्दर या बाहर होने का चिन्ह नहीं होते । कई लोग सोचते हैं कि एक परिस्थिति साकारात्मक होती है, और कहते हैं, "परमेश्वर की महिमा हो, यह निशिचित हो गया है ।" दूसरा व्यक्ति परिस्थिति को नाकारात्मक रूप से देखता है और कहता है, "यह प्रभु नहीं था ।" ऐसा कहना गलत है ।
परमेश्वर का एक उदाहरण जो परिस्थितियों के दौरान कार्य करता है वह गिनती २२ में पाया जाता है, जो बिलाम कीं कहानी है । बिलाम एक भविष्यद्वक्ता था जिसने भविष्यद्वाणी के भेंट को पैसों के लिए, स्वयं की प्रतिष्ठा और मौके के लिए बेच दिया । जैसे ही वह परमेश्वर के दिए दिशा के विरूद्ध भविष्यवाणी करने लगा, परमेश्वर ने उसपर परिस्थितियों का एक श्रृंखला उसके कार्य में अड़चन लाने के लिए किया ।
उसके पास एक विरोधी गदही था जो दीवार से ऐसी सट गई, कि बिलाम का पांव दीवार से दब गया । प्रभु दूत हाथ में नंगी तलवार लिए हुए मार्ग में खड़ा दिखाई पड़ा और बिलाम दैविक सामना कर रहा था । परन्तु समस्या यह थी कि बिलाम दैविक मार्ग दर्शन के लिए नहीं देख रहा था । वह परमेश्वर से भाग रहा था ।

परिस्थितियाँ मार्गदर्शन को निश्चित करते हैं ।

बाइबल में कुछ रेखाचित्र है, और उनमें साधारण सिद्धांत होते हैं । मैं यह दिखाना चाहता हूँ कि परिस्थितियाँ इन साधारण सिद्धांतों से मार्गदर्शन कैसे निश्चित करती हैं । यिर्मयाह ३२ : ६-८, "निर्मयाह ने कहा, प्रभु का वचन मेरे पास पहुँचा, देख शल्लूम का पुत्र हनमेल जो तेरा चचेरा भाई है, सो तेरे पास यह कहने को आने पर है कि मेरा खेत जो अनातोत में है उसे मोल ले, क्योंकि उसे मोल लेकर छुडाने का अधिकार तेरा ही है । सो प्रभु के वचन के अनुसार मेरा चचेरा भाई हनमेल पहरे के आंगन में मेरे पास आकर कहने लगा, मेरा जो खेत बिन्यामीन देश के अनातोत में है उसे मोल ले, क्योंकि उसके स्वामी होने और उसके छुड़ा लेने का अधिकार तेरा ही है, इसलिए तू उसे मोल ले । तब मैं ने जान लिया कि वह प्रभु का वचन था ।" परमेश्वर ने यिर्मयाह को एक परिस्थिति के विषय में कहा उसे यह बताते हुए कि यह ऐसा कुछ है जो उसे करना था, और जब ऐसी परिस्थिति आई, तो उसने जाना कि वह परमेश्वर ही था । हम उसी सिद्धांत को प्रेरितों के काम में देखते हैं । पतरस ने शुद्ध और अशुद्ध जानवरों के विषय में एक दर्शन पाया था । वह निश्चित नहीं था वह सब क्या था । प्रेरितों के काम १० : १७ - २०, "जब पतरस अपने मन में इस दर्शन के अर्थ पर विचार कर रहे थे कि जो दर्शन उन्होंने देखा है, उसका क्या अर्थ है, तब वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शिमौन के घर का पता लगाकर डेवढ़ी पर आकर खड़े हो गए । उन्होंने पुकारकर पूछा, "क्या शिमौन, जो पतरस कहलाते हैं, यही मेहमान है ? पतरस उस दर्शन पर सोच ही रहे थे कि आत्मा ने उन से कहा, "देख, तीन मनुष्य तुझे खोज रहे हैं । उठकर नीचे जा, और निश्ंचित उनके साथ चले जाना; क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है ।" यहाँ पर क्या हो रहा था कि जो गैर-यहूदी लोग थे, वे पतरस से पूछ रहे थे कि वह उनके घर आकर उन्हें सुसमाचार सुनाए, जो ऐसा कुछ था जिसे यहूदी नहीं किया करता थे । यह उसके विचार के लिए अलग था, इसलिए पतरस के पास एक दर्शन था जिसमें परमेश्वर उसे तैयार कर रहा था । फिर परमेश्वर ने उसे बताया कि, तीन मनुष्य आएँगे और उसे खोजेंगे, और जब वे आए, तो उसने जाना की वह परमेश्वर ही था । उदाहरण के तौर पर, यदि आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपको दिखा रहा है कि अगले रविवार आराधना सभा से जब आप जाएँ तो आप एक विशेष दुर्धटना देखेंगे और वहाँ कोई होगा जिसे मरने से पहले आपको मसीह में लाना है और घर जाते समय आप कोई दुर्धटना नहीं देखते । आप जानेंगे कि वह परमेश्वर नहीं था जिसने आपको यह दुर्धटना के विषय में बताया । पर यदि दूसरे तरफ आप घर जाते समय़ जिस तरह आपने दर्शन देखा था, आपको दुर्धटना दिखता है, तब आप जानेंगे कि परमेश्वर आपसे बातचीत कर रहा था, और आपको उस व्यक्ति को ढूँढना है जिसे मरने से पहले, आपको प्रभु में लाना है । इस तरह परिस्थितियाँ निश्चित करती है । परमेश्वर आपको इसके बारे में समय से पहले बता देता है, और वह उसे निश्चित करता है, उसके घटने के द्वारा ।

विपरीप परिस्थितियों का मतलब यह नहीं होता की परमेश्वर उसमें नहीं है । मरकुस ४ : ३५ - ४0, उसी दिन जब शाम हुई तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, "आओ, हम उस पर चलें ।" उन्होंने भीड को छोड दिया । यीशु जैसे थे वैसे ही उनको चेलों ने अपने साथ में बैठा लिया और नाव खोल दी । यीशु के साथ और भी नावें थी । तब भयंकर तूफान आया । लहरें नाव पर लगी और उसमें पानी भरने लगा । यीशु नाव के पिछले भाग में गद्दी पर सो रहे थे । तब उन्होंने यीशु को जगाकर, उन से कहा, "हे गुरू, क्या आपको चिन्ता नहीं कि हम मर रहे हैं ? तब यीशु ने उठकर तूफान को डांटा, और पानी से कहा, "शांत रह, थम जा ।"

और तूफान थम गया और पूर्ण शान्ति छा गई । यीशु ने उन से कहा, "तुम क्यों डरते हो ? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं ?" बात यह है कि जैसे वे तूफान के विपरीत परिस्थिति का सामना कर रहे थे, वह यह नहीं दर्शाता था कि वे परमेश्वर के इच्छा के बाहर हैं । वे विपरीप परिस्थितियों में भी परमेश्वर की इच्छा में चल रहे थे । यह भी सही है कि साकारात्मक परिस्थिति का मतलब यह नही की आप परमेश्वर की इच्छा में चल रहे हैं । योना नाम का एक भविष्यद्वक्ता था । परमेश्वर ने उसे नीनवे को भविष्यवाणी नहीं करना चाहता, क्योंकि ऐसा होगा की वे पश्चाताप करेंगे और आप उन्हें माफ कर देंगे, और मैं चाहता हूँ कि आप उनका न्याय करें । इसलिए, मैं नहीं जाऊँगा । यह योना था । इसलिए, वह बंदरगाह जाता है और कहता है कि मैं यहाँ से निकल रहा हूँ और उस दिन एक जहाज वहाँ से निकल रहा था, और उसमें एक ही टिकट रह गया था । वह जहाज पर चढ़ गया और कहा की वह प्रभु ही होगा, परन्तु शैतान उसे उकसा रहा था, क्योंकि यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी कि वह नीनवे से भागे ।

योना १: १-३ "प्रभु का यह वचन अमितै के पुत्र योना के पास पहुँचा, उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा, और उसके विरूद्ध प्रचार कर; क्योंकि उसकी बुराई मेरी दृष्टि में बढ़ गई है । परन्तु योना प्रभु के सम्मुख से तर्शीश को भाग जाने के लिए उठा, और यापो नगर को जाकर, तर्शीश जानेवाला एक जहाज पाया; और भाड़ा देकर उस पर चढ़ गया कि उनके साथ होकर प्रभु के सम्मुख से तर्शीश को चला जाए । साकारात्मक परिस्थितियों का मतलब यह नहीं होता की हम परमेश्वर की इच्छा में चल रहें हैं । नहीं एक नाकारात्मक परिस्थिति का मतलब होता है की हम परमेश्वर की इच्छा के बाहर हैं । हम सीखते हैं कि परिस्थितियाँ तब निश्चित होती हैं जब परमेश्वर उसके विषय में हमसे पहले ही कुछ बता देता है, और फिर ऐसा होता है । फिर हम कह सकते हैं कि परमेश्वर मुझसे बातचीत कर रहा था, वह परमेश्वर ही था ।

परमेश्वर को सौंपना

सातवां सिद्धांत जो सुरक्षा के लिए दिया जाता है वह है परमेश्वर को सौंपने का सिद्धांत । हम इसे दूसरे तरीके से कह सकते हैं - हम आत्मा का उपयोग नहीं करते, आत्मा हमारा उपयोग करता है । रोमियों ६ : १३ - " न तुम अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को सौंपो । पर स्वयं को मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर अपना शरीर परमेश्वर को सौंप दो और अपने अंगो को धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर को अर्पित कर दो ।" जब इस्राएल यर्दन नदी पार कर वायदे की भूमि पर गए, तो उन्होंने ऐसा किया क्योंकि परमेश्वर ने यहोशू से बातचीत किया और उसे बताया की याजकों को वाचा का सन्दूक अपने कंधो पर उठाकर नदी से जाना था । याजकों ने वाचा का संदूक उठाया, नदी में कदम रखे, और पानी में उनके पांव जाल में डूब गए और नदी का बहाव रूक गया, हवा आया, जमीन को सुखा दिया और वे सूखे भूमि से होकर पार हुए ।
यहोशू ३ : १४ - १६ "जब प्रजा के लोगों ने अपने डेरें से यरदन नदी के पार जाने को प्रस्थान किया, और याजक वाचा का सन्दूक उठाए हुए प्रजा के आगे - आगे चले, सन्दूक के उठानेवाले, यरदन नदी पर पहुँचे, और सन्दूक के उठानेवाले याजकों के पांव यरदन के किनारे के जल में डूब गए (यरदन का जल कटनी के समय के सब दिन तट के ऊपर - ऊपर बहा करता है) तब जो जल से ऊपर की ओर से बहा आ रहा था वह बहुत दूर, अर्थात आदाम नगर के पास जो सारतान के निकट है रूककर एक ढेर के रूप में खड़ा हो गया, और दीवार-सा उठा रहा, और जो जल अरावा का ताल, जो खारा ताल भी कहलाता है, उसकी ओर बहा जा रहा था, वह पूरी रीति से सूख गया । प्रजा के लोग यरीहो के सामने पार उतर गए ।
मत्ती १४ : २८ - २९, पतरस ने यीशु को उत्तर दिया, "हे प्रभु, यदि आप ही हैं तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दीजिए । यीशु ने कहा, "आ ।" पतरस नाव पर से उतरा और यीशु के पास जाने के लिए पानी पर चलने लगा ।" पतरस ने प्रभु के वचन के अनुसार कार्य किया, न कि अपनी इच्छा के अनुसार । यह एक उदाहरण है जहाँ हम प्रभु को स्वयं को सौंपते हैं । आप परमेश्वर का उपयोग नहीं करते । परमेश्वर आपका उपयोग करता है । आप आत्मा के वरदानों का उपयोग नहीं करते; परमेश्वर उनको आपके जरिए कार्यरत करता है । आत्मा के वरदान विश्वासी की इच्छानुसार किसी भी समय में कार्य नहीं करते ।

(१ कुरि.१२:११) परन्तु विश्वास परमेश्वर की ओर से निश्चित वचन है । यह सुरक्षा का महत्वपूर्ण सिद्धांत है । जब भी आप एक ऐसे जगह पर हैं जहाँ परमेश्वर की आत्मा को उपयोग करने की कोशिश करते हैं, तो आप पहले से ही परमेश्वर के सुरक्षा तम्बू के बाहर हैं । आपने स्वयं को हर प्रकार के दुष्टात्मा के नकल के लिए खोल दिया है ।

आखिरकार, सिद्धांत के इस पथ पर जो परमेश्वर को सौंपना है, हमें हस्ताक्षर की जरूरत नहीं की हम परमेश्वर के साथ चलें । यदि हम परमेश्वर के दीक्षा के लिए नहीं रूकते और अपनी इच्छा के अनुसार योजना करने की कोशिश करते हैं तब हम ढीठ होते हैं । परन्तु जब परमेश्वर हमसे बातचीत करता है और हम कहते हैं कि प्रभु यदि आप ही हैं तो मैं चाहता हूँ कि आप मुझे एक चिन्ह दें नही तो हम अविश्वास से भरे होते हैं । मरकुस १६ ः १७ "विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे ः वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे ।" ये चिन्ह विश्वास करनेवालों में होंगे ।

यदि आप एक अविश्वासी हैं, तो आपको एक चिन्ह की जरूरत है, इसलिए चिन्ह होते हैं । ये उनका पीछा करते हैं जो विश्वास करते हैं । परमेश्वर विश्वासी को चिन्ह देता है ताकि अविश्वासी संसार को विश्वास दिलाए की वे सुसमाचार के सच्चाई को बाँट रहे हैं और यह की परमेश्वर सच्चा है और यीशु मसीह पाप क्षमा करता है । एक ही समय जब हम इस पहलू को देखते हैं परमेश्वर से एक चिन्ह खोजने का और परमेश्वर इस बात का आदर करता है, वह हम पुराने नियम में देखते हैं । यह गिदोन और भेड़ी की ऊन के कहानी में है । पहला, हमें गिदोन को समझना है । उसने नया - जन्म प्राप्त नहीं किया था, क्योंकि यीशु मसीह का पुनरूत्थान नहीं हुआ था । मसीह आत्मा में वास नहीं कर रहा था । दूसरा, क्योंकि मसीह का पुनरूत्थान नहीं हुआ था, परमेश्वर की आत्मा गिदोन में वास नहीं कर सकती थी, परन्तु सिर्फ उसके ऊपर वास कर सकती थी । इसलिए, उसके अन्दर परमेश्वर की शान्ति नहीं थी की उसे वह मार्गदर्शन कर सके । उसके भेड़ी की ऊन निकालने के कार्य उसके जिदद्दी विश्वास का एक उदाहरण था, और परमेश्वर सिर्फ मनुष्य के कमजोरियों को ही जगह देता है, क्योकि

१. उसे मनुष्य की जरूरत थी ।

२. वह मनुष्य अविश्वास में था और वह उसे विश्वास में लाने की कोशिश कर रहा था ।

परमेश्वर के दूत ने उस से कहा, मांस और अखमीरी रोटियों को लेकर इस चट्टान पर रख दे, और जूस को उण्डेल दे । उस ने ऐसा ही किया । तब यहोवा के दूत ने अपने हाथ की लाठी को बढ़ाकर मांस और अखमीरी रोटियों को छूआ; और चट्टान से आग निकली जिस से मांस और अखमीरी रोटियां भस्म हो गई; तब यहोवा का दूत उसकी दृष्टि से अन्तर ध्यान हो गया । जब गिदोन ने जान लिया कि वह यहोवा का दूत था तब गिदोन कहने लगा, हाय, प्रभु यहोवा ! मैंने तो यहोवा के दूत का साक्षात देखा है ।" अब वह पहचाना की परमेश्वर उससे बातचीत कर रहा था जो इस्राएल के आनेवाले छुटकारे के विषय में था । समय चला जाता है, वह इन सब बातों के लिए तैयार होता है, और वह संदेह और अविश्वास करने लगता है ।

आयत ३६, "तब गिदोन ने परमेश्वर से कहा, यदि तू अपने वचन के अनुसार इस्राएल को मेरे द्वारा छुडाएगा, (यदि आप मुझसे झूठ नहीं बोल रहे) तो सुन, मैं एक भेडी की ऊन खलिहान में रखूँगा और यदि ओस केवल उस ऊन पर पड़े और उसे छोड़ सारी भूमि सूखी रह जाए, तो मैं जान लूँगा कि तू अपने वचन के अनुसार इस्राएल को मेरे द्वारा छुडाएगा । (यदि आप सचमुच मुझसे झूठ नहीं बोल रहे) ।" क्या आप देख सकते हैं की गिदोन के ऊन का निवेदन अविश्वास के द्वारा उत्पन्न हुआ था ? परमेश्वर ने जो कहा, उसने वह पहचान लिया परन्तु वह परमेश्वर को सच्चा वक्ता नहीं स्वीकार करता है, या फिर परमेश्वर ने उससे कुछ बोला ही हो । किसी भी प्रकार से यह अविश्वास है । क्या हुआ ? वह सच हुआ । आयत ३८, "और ऐसा ही हुआ । इसलिए जब उस ने बिहान को सवेरे उठकर उस ऊन को दबाकर उस में से ओस निचोड़ी, तब एक कटोरा भर गया ।" वह काफी नहीं था । इसलिए फिर से गिदोन ने आयत ३९ में कहा, "यदि मैं एक बार फिर कहूँ, तो तेरा क्रोध मुझ पर न भड़के; मैं इस ऊन से एक बार और भी तेरी परीक्षा करूँ, अर्थात केवल ऊन ही सूखी रहे, और सारी भूमि पर ओस पड़े ।" और परमेश्वर ने उस रात ऐसा ही किया । भेडी की ऊन खलिहान में रखना, मार्गदर्शन के लिए निश्चितता का एक प्रकार है जो अविश्वास के दुष्ट हृदय से आता है । यह परमेश्वर की ओर से मार्गदर्शन के लिए नमूना नहीं है । वास्तविकता में, यदि परमेश्वर ने उसे आदर करना नहीं चुना होता तो गिदोन परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानता । जिस क्षण आप भेडी की ऊन को निश्चितता के लिए खलिहान में परमेश्वर के सामने रखते हैं, तब आप स्वचलित रूप से स्वयं को धोखे में और परमेश्वर की इच्छा के बाहर रखते हैं । यह एक क्रिया - पद्धति है परमेश्वर को उपयोग करने का बजाय स्वयं को परमेश्वर में सौंपने और उसे आपको उपयोग करने की अनुमति देना । यह एक तरीका है परमेश्वर को बताने का की कैसे करते हैं, कब करना चाहिए, और किस तरह से करना चाहिए, और फिर आप उसे समझेंगे । याद रखें, कि यदि आप आत्मिक सुरक्षा में चलना चाहते हैं तो परमेश्वर महाराज है और हम सेवक हैं ।

मसीहियों में मतभेदों के साथ व्यवहार

परमेश्वर ने कलीसिया को उसके सदस्यों के दृष्टि - कोण और अलग - अलग पृष्ठभूमि के बावजूद भी महान एकता के साथ अनुग्रह से भर दिया है । हम हमेशा एक बात पर सहमत नहीं होते, परन्तु अपने असहमति से कलीसिया का चीर - फाड़ नहीं करते । हम कलीसिया की एकता को व्यक्तिगत अधिमान से ज्यादा मान्यता देते हैं ।
जहाँ परमेश्वर स्वतंत्रता और विविधता को अनुमति देता है, साधारण पवित्र शास्त्रीय सिद्धांत मसीही स्वभाव का निर्देशन करते हैं । इन सिद्धांतों के द्वारा एक विश्वासी ईश्वरीय मनोवृति और चरित्र को लेता है । यही मनोवृत्तियाँ विश्वासी को मसीह जैसा कार्य करने पर तैयार करती हैं जब व्यक्तिगत राय, अधिमान और दोषसिद्धि में टकराव होता है । जहाँ अधिदेश प्राप्य नहीं है, वहाँ सिद्धांत मसीहियों को सूसमाचार के सच्चाई के साथ चलने में मदद करते हैं, मतभेदों के साथ व्यवहार और एकता को बनाए रखते हैं । बिना सिद्धांत के गड़बडी और अराजकता का शासन होता है और लोगों को चोट पहुँचता है । जो विश्वासी विविधता पसंद करते हैं वे कभी न कभी एक - दूसरे के साथ टकराते हैं । एक व्यक्ति की स्वतंत्रता को ठेस पहुँचाती है ।

रोमियों १४, अलग - अलग व्यक्तिगत दोषसिद्धि रखने वाले विश्वासी को यह दिखाती है कि किस तरह एक दूसरे के साथ संबंध बनाए रखना चाहिए और विरोध से दूर रहें ।
रोमियों १४ उस स्वर्णिम आज्ञा को किस तरह पूरा करना चाहिए यह दिखाती है, "जो तुम मनुष्यों से चाहते हो कि यों करें, वैसा तुम उनके लिए करो ।" रोमियों १३ हमें दिखाती है कि दूसरी महान आज्ञा को कैसे पूरा करें, "अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख ।"

यहाँ रोमियों १४ से नौ सिद्धांत दिए गए है जो विश्वासियों में मतभेद के साथ व्यवहार करने के दौरान हमें निर्देशतत्व देती है ।

१. **अपने कमज़ोर भाई को स्वीकार करें ।**

रोम की कलीसिया में कुछ सदस्य मांस नहीं खाते थे । कुछ सिर्फ सब्जी खाना पसंद करते थे । सही युनानी मूलपाठ के अनुसार, एक झगडे (युनानी : "डायलोगिसमोस") का विस्फोट विचार और राय के वज़ह से हुआ । प्रेरित पौलुस ने व्यक्तिगत दोषसिद्ध में कोई दोष नहीं पाया और दोनों प्रकार के लोगों को वही खाने के लिए स्वतंत्रता दिया जिसे वे खाना पसंद करते हों । फिर भी, उसने एक व्यक्तिगत दोषसिद्धि को पवित्र शास्त्रीय अधिदेश के साथ गडबड़ी करने से सावधान किया । पौलुस ने दोनों मुददों को अलग करते हुए एक रेखा खींची और उन्हें इस बात के लिए सावधान किया की उनके आहार के व्यक्तिगत दोषसिद्धि से उनके उद्धार के ऊपर प्रभाव के विषय में नहीं सोचना चाहिए जिसकी शिक्षा में पवित्र शास्त्र यह वर्णन करती है कि यह एक भेंट है । मांस से परहेज करना किसी के उद्धार को नहीं खरीदता । पौलुस ने दोनों प्रकार के लोगों को उद्धार प्राप्त करने के लिए मसीह में विश्वास के व्यक्तिगत राय देने से रोका ।
मांस खाने में सख्त मना ही विश्वास में कमजोर मनुष्य को चिन्हित करता था । जहाँ विश्वास कमजोर है, सन्त वहाँ जीवन द्वारा सावित होते हैं, परन्तु उद्धार प्राप्त करने के लिए नियमों और विधियों को बनाना गलत है । वास्तव में यह एक अपधर्म है । रोम के कलीसिया में, जो विश्वासी यहूदीवादी थे वे विधिवादी थे । उनके जीवन के मूल्य पुराने नियम के सौ मनाहियों पर आधारित था । रोमियों १४ : १ हमें आदेश देती है की "जो विश्वास में कमजोर है उसे स्वीकार करो ।" हमें उसका स्वागत करना है और उसे स्वीकार करना है जिस प्रकार परमेश्वर हमें स्वागत करता है और स्वीकार करता है । परमेश्वर अनुग्रह से हमें स्वीकार करता है । जब एक भाई अपने जीवन में व्यक्तिगत चुनाव करता है जो आपके चुनाव से अलग है परन्तु पवित्र शास्त्र अधिदेश का उल्लंधन नहीं करता, तो उसे बिना आलोचना

विवाद या न्याय स्वीकार करो । पौलुस ने दोनों व्यक्तियों से कहा, "एक दूसरे का न्याय मत करो । परमेश्वर को न्याय करने की अनुमति दो क्योंकि वह हम सबकी न्याय करता है ।"
आज के कलीसिया में, विश्वासी कमजोर विश्वास को प्रदर्शित करते हैं । हम लोगों को यह कहते सुनते हैं, मैं कलीसिया जाता हूँ "जैसे कलीसिया जाने से उन्हें उद्धार प्राप्त होता है । हर रविवार की सुबह उठना और कलीसिया जाना आपको परमेश्वर के साथ नहीं बनाता । वह परमेश्वर को आपसे प्रेम करने में मजबूर नहीं करता परमेश्वर आपसे प्रेम करता है । भले ही आप आज्ञाकारी न हों । वह आपके तरफ समर्पित है ।

प्रभु के साथ आपका प्रेम संवंध आपको अच्छे कार्य करने में मजवूर करता है, परन्तु सबसे पहले संवंध आता है । अच्छे कार्य पीछे हो लेते हैं । (इफिसियों २ : ८ - १०) यीशु मसीह ने इसका परिचय क्रूस पर उसके लहू को बहाकर, आपके पाप का दाम चुकाया । थोड़ा सा भी कार्य पर निर्भर होना कमज़ोर विश्वास का चरित्र है । आप मसीह के प्रायश्चित द्वारा स्वीकारे गए हैं । पूर्ण बिंदु ! पूर्णविराम !

२. **<u>किसी को तुच्छ न समझें और किसी का न्याय न करें ।</u>**

पौलुस ने कमजोर और बलवन्त सन्तों को धृणा से देखने को मना किया (रोमियों १४ : ३ - ४) परमेश्वर स्वयं ने दोनों को स्वीकार किया है । दोनों प्रभु के सेवक हैं । दोनों भी परमेश्वर के प्रेम में स्वीकृत हैं । परमेश्वर दोनों के जीवन में कार्य करता है । "जिस ने तुम में अच्छा कार्य आरंभ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा ।" (फिलिप्पियों १ : ६) "...मुझे निश्चय है कि वह मेरी थाती की उस दिन तक रखवाली कर सकता है ।" (२ तीमुथियुस १ : १२) परमेश्वर दोनों को सन्त बनाता है और उन्हें सम्पूर्ण करता है । वे प्रभु में परिपूर्ण हैं और उन्हें एक - दूसरे को तुच्छ नहीं समझना चाहिए ।

३. **<u>सही और गलत स्वभाव के विषय में पूर्ण रूप से निश्चय करें ।</u>**

यदि एक विश्वासी व्यक्तिगत दोषसिद्धि रखता है, उसे अन्दरूनी शांति और आत्मविश्वास होना चाहिए की यह पवित्र है । जरूरी नहीं की दूसरे ऐसा दोषसिद्धि रखें, इसलिए उसे "मन में निश्चय कर लेना चाहिए ।" (रोमियों १४ : ५) रोम में, कलीसिया के विश्वासी सबत रखने में अलग - अलग राय रखते थे । विवाद के केन्द्र यह था कि यदि एक दिन को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए या हर दिन को । पौलुस ने एक दिन खास ठहराने को गलत नहीं ठहराया । उसने उस दिन सिर्फ आराधना के बजाय परमेश्वर की आराधना हर दिन करने पर महत्व दिया । मैं विश्वास करता हूँ कि सामर्थी जगह हर दिन प्रभु का दिन मानता है । एक मसीही के लिए, हर दिन एक समान है । हर दिन प्रभु ने बनाया है । हर दिन खास है ।

४. **<u>आप जो करते हैं इसका ध्यान रखें ।</u>**

दूसरों के साथ व्यवहार में ध्यान देने की आदत डालें । जिस सन्त के साथ आप मतभेद करते हैं वह परमेश्वर का जन है । मसीही दोनों सामर्थी और कमज़ोर सन्तों के लिए मरा । दोनों भी परमेश्वर की ओर से स्वीकृत हैं (रोमियों १४ : ८)

५. **<u>न्याय करना परमेश्वर पर छोड़ दें ।</u>**

हर किसी को परमेश्वर के न्याय के सिंहासन के सामने खड़े होकर प्रभु को लेखा देना है (रोमियों १४ : १०- १२) परमेश्वर सबको उसके दर्जे के अनुसार न्याय करेगा इसलिए दूसरे व्यक्ति को तुच्छ क्यों समझा जाए जो आपके दर्जे का न हो ? परमेश्वर को न्याय करने की अनुमति दें । हमें दूसरों को प्रभु की राय देने में स्वीकार करने की इच्छा रखनी चाहिए ।

जिस व्यक्ति में मसीही स्वतंत्रता है उसे परमेश्वर पर न्याय छोडने के लिए कोई समस्या नहीं होती । वह परमेश्वर को उसके असीम बुद्धि में समस्या का हल करने में अनुमति देता है ।

६. **<u>दूसरों के रास्ते में रूकावट का कारण न बनें ।</u>**

अपने कार्य का न्याय करें । स्वयं से पूछे, "क्या मैं रूकावट, फंदा बन जाता हूँ जो दूसरों को पाप करने पर मजबूर करता हो ?" आपका कार्य दूसरों के कार्य की तुलना करके स्वयं को न्यायेचित ठहराना नहीं है । आपका कार्य स्वयं से पूछना है, "क्या मैं अपने भाई को चोट पहुँचा रहा हूँ?" रोमियों १४ : १३ - १५ हमें तीन निर्देशन देते हैं ताकि हम अपने कार्य और स्वयं को न्याय करें ।
पहला, दूसरे मसीहियों की दोषसिद्धि को आदर करें । स्वयं से पूछे, "मेरा भाई किस बात को खराब समझता है? उसे गिरने पर क्या मजबूर करती है ? हमें दूसरों की दोषसिद्धि पर संवेदनशील होना चाहिए न कि अपने स्वभाव से उन्हें ठेस पहुँचाना चाहिए जो आप पहचानते हैं कि वे "पाप" या "खराब" समझते हैं । ध्यान न देते हुए या संवेदनशील न होते हुए आप कह सकते हैं, "मैं

सामर्थी हूँ वह कमजोर है । वह उसकी समस्या है, मेरा नहीं । मैं ये सब कार्य कर सकता हूँ वह कमजोर है । वह उसकी समस्या है, मेरा नहीं । मैं ये सब कार्य कर सकता हूँ इसके साथ मैं परमेश्वर से प्रेम और उसकी आराधना कर सकता हूँ मैं बंधुवाई में नहीं जाऊँगा । मुझे मेरा मसीही स्वतंत्रता मिलेगा ।" परन्तु आपने अपने कमजोर भाई के साथ क्या किया है ?
कुरिन्थ की कलीसिया में विभाजन आया जैसे विश्वासियों ने विवाद में भाग लिया जो मांस को मूर्ति को बलि चढ़ाने से था (१ कुरिन्थियों ८ : १-१३) कलीसिया का एक भाग मांस को अस्वच्छ और स्वास्थय के लिए हानिकारक समझते हैं । दूसरे तरफ कलीसिया के गुट में मांस खाने की स्वतंत्रता को महसूस करते थे । वे इसे खाते थे और कहते थे, "मूर्तियों में कोई सामर्थ नहीं होता । यह सिर्फ मांस है ।" जब आप आपके भाई के दृष्टिकोण को मायने देकर पूछते हैं, "मेरा भाई किस बात को अस्वच्छ समझता है ?" तो आप उस मुददे को अलग ज्योति में देखेंगे । दूसरा, अपने भाई को अपनी स्वतंत्रता से नाश न करें । पवित्र शास्त्र कहती है हमें अपने भाई के साथ प्रेम में चलना चाहिए (रोमियों १४ : १५) हमें उसे दुखी नहीं करना चाहिए । यह डरावनी बात है की स्वतंत्रता एक भाई, एक बहन, एक बच्चा, एक जवान व्यक्ति को नाश कर सकती है ।

मूर्तियों को बलि चढ़ाया हुआ मांस हमें परेशान नहीं कर सकती क्योंकि हम बलवन्त विश्वासी हैं । हमें उसके विषय में अच्छा लग सकता है, परन्तु परमेश्वर कहता है, "अपने भाई को भोजन के द्वारा नाश न करो ।" ये सिर्फ एक अच्छा सुझाव नहीं है । यह स्पष्ट आज्ञा है । तीसरा, अपने स्वतंत्रता को विश्वासयोग्य और जिम्मेदारी से बर्ताव करो । हर बात में एक पवित्रता है (रोमियों १४ : १४), परन्तु मनुष्य पवित्र बातों को भ्रष्ट करते हैं । वह उसे अशुद्ध, दुष्ट और विनाशी बना देता है जब बिना जिम्मेवारी के वह बर्ताव करता है ।

अंगूर का रस अच्छा है । वह शुद्ध होता है, परन्तु मनुष्य नशीला प्याऊ बनाता है जिससे नशा उत्पन्न होता है । शाकाहार होना गलत नहीं, परन्तु नशा, न्याय या अन्याय के रूप से शाकाहार से उत्पन्न होता है । संगति अच्छी है । यह पवित्र शास्त्र में सिखाया गया गया है । संगति अच्छी है, परन्तु यदि उसमें विषयासक्त या लैंगिक बातें शामिल हों तो संगति स्वच्छ और शुद्ध नहीं रह जाती ।
सही बोध से एक विश्वासी ऐसा कार्य कर सकता है जो दूसरे सन्त पाप समझते हैं, परन्तु यदि दूसरे सन्त उसके स्वतंत्रता की वजह से गिरते हैं, तो उन विश्वासी ने उन्हें पाप करने पर मजबूर किया है । "भाइयों के प्रति अपराध करने से और उनके निर्बल विवेक पर चोट लगाने से तुम मसीह के प्रति अपराध करते हो ।" (१ कुरिन्थियों ८ : १२)

७. अलोचना के लिए अवसर न दें ।

स्वतंत्रता का दुरूपयोग हो सकता है । मसीही भाई और बहन हमारे स्वतंत्रता से लड़खड़ा सकते हैं जब हम अपने सुख और इच्छाओं को परमेश्वर कि राज्य से ज्यादा खोजते हैं । यदि दूसरे विश्वासी हमारे स्वतंत्रता को नहीं बाटें, तो वे हमारे कार्य को परमेश्वर के सम्मुख स्थिर और स्वीकारी नहीं समझेंगे (रोमियों १४ : १६) परमेश्वर का राज्य हमारी पहली चिन्ता है, और हम दूसरों के आत्मिक हित को अपने सुख से पहले स्थान देंगे । सामर्थी विश्वासियों को उनके स्वतंत्रता का एक दर्जा बलिदान कर देना चाहिए ताकि कमज़ोर विश्वासियों को उनके स्वतंत्रता का एक दर्जा बलिदान कर देना चाहिए ताकि कमज़ोर विश्वासियों को मदद मिले । साफ बोध द्वारा सामर्थी विश्वासी अपने स्वतंत्रता का आनन्द उठा सकता है, परन्तु यदि उनकी स्वतंत्रता उनके भाई के लिए रूकावट का कारण बनता है, तो उन्हें उस स्वतंत्रता से दूर रहना चाहिए जो कमज़ोर भाई को गिराता हो ।

८. शांति और उन्नति लाने वाली बातों के पीछे हो लें ।

यदि आपका पहला स्थान परमेश्वर का राज्य और उसकी धार्मिकता है, तो आप एक कमज़ोर भाई के उन्नति की खोज करेंगे । आप ऐसा कुछ नहीं करेंगे जो उसकी आत्मा या मन में गड़बड़ी पैदा करती है । आप कहेंगे कि "मैं उसे खडे रहने में मदद करूँगा । मैं उन बातों को जिसका वह एतराज करता है उनमें स्वतंत्रता लेकर उसका चीर - फाड़ नहीं करूँगा ।" पवित्र शास्त्र कहती है कि "सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप रखो" (रोमियों १२ : १८), और हमें एक - दूसरे को बनाना और उनकी उन्नति करना है (रोमियों १४ : १९) यह आपको बंधुवाई में नही डालेगा यदि आपकी अग्रता सही है ।

क्योंकि पौलुस उसके भाईयों से प्रेम करता था, उसने स्वतंत्रता को समर्पण कर दिया और सुविधा बना दिया । एक प्रकार से, उसने कहा, "इस कारण यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊंगा । ऐसा न हो कि मैं अपने भाई के लिए ठोकर का कारण बनूं । (१ कुरिन्थियों ८ : १३) पौलुस ने एहसास किया कि कमजोर सन्त उसकी स्वतंत्रता के साथ ठीक से बर्ताव नहीं कर सकते ।

९. स्वयं को दोषी न ठहराओ

. . . धन्य है वह जो उस बात में, जिसे वह ठीक समझता है, अपने आपको दोषी नहीं ठहराता (रोमियों १४ : २२) क्या आप महसूस करते हैं कि आपकी स्वतंत्रता आपको एक विशेष बात करने की
अनुमति देती है जो परमेश्वर के लोगों का एक भाग को ठेस पहुँचता हो ? यहाँ तीन - तरीके दिए गए हैं जो आपको स्वयं को दोषी ठहराने से बचाए रखता हो ।

क. विश्वास को बनाए रखें । आपके कर्य परमेश्वर की स्वीकार्य होना चाहिए और विश्वास में उसे करने में सक्षम होना चाहिए । " . . .जो कुछ विश्वास से नहीं होता, वह पाप है ।" (रोमियों १४ : २३) यदि आप इस कार्य को धन्यवादित रूप से परमेश्वर को देना चाहते हैं तो आप ऐसा कर सकते हैं । यहीं से आप शुरू करते हैं, और कई प्रश्न से भरे क्षेत्रों को हटा देती हैं ।
यदि परमेश्वर को आपके ऐसा करने में कोई समस्या नहीं परन्तु यदि वह दूसरों को ठेस पहुँचाता हो, तो फिर रोमियों १४ : २२ आपको यह परमेश्वर के सामने निजी रूप से करने को दिशा देती है । उसका सार्वजनिक रूप से जुलूस न निकालें । ऐसा करना भाई से प्रेम करना और उसके कमजोरी को छुपाना होता है । यह उसके अतःकरण सुरक्षित रखता है और आपके स्वतंत्रता में ठोकर खाने से रोकता है ।

ख. स्वयं के अंतःकरण के विरोध में न जाएं । यदि आपका अंतःकरण कहता है कि एक कार्य गलत है, तो आप उसे विश्वास में नहीं कर सकते । अपने अंतःकरण का उल्लंधन करते हुए स्वयं को दोषी न ठहराएं । क्या आप कार्य के लिए धन्यवाद दे सकते हैं ? क्या आप उसे पढ़ने, उसे पहनने, उसे देखने से पहले प्रार्थना कर सकते हैं ? यदि ऐसा है, तो आपका अंतःकरण परमेश्वर के सम्मुख स्पष्ट है । याद रखें, आपके बच्चे और आपका साथी घर में जो आप करते हैं या अनुमति देते हैं उससे प्रभावित होते हैं ।

ग. विश्वास पर कार्य जो दोषसिद्धि द्वारा होता है और परमेश्वर स्वीकृति देता है ।
अपने स्वभाव को अंगीकार द्वारा स्थिर बनाएं । यह स्पष्ट शिक्षा है । यह शायद आपको अच्छा न लगे । कुछ लोग अपनी स्वतंत्रता से कलीसिया का चीर फाड़ करना पसंद करते हैं । वे यह कहना चाहते हैं, "कमजोरों को गिरने दो यदि वे खड़े नहीं रह सकते । मैं उनके समान विधिवादी नहीं बन सकता । मैं विश्वास करता हूँ
कि यीशु मसीह बचाता है और मेरे कार्य क्या हैं यह मायने नहीं रखता । जो मायने रखता है वह सिर्फ यीशु और मैं ही हूँ कलीसिया, मरे रास्ते से हट जाओ ।" प्रभु हमें कटनी तक पहुँचाने वाले नहीं बनना चाहिए । हम भाई या बहन को ठोकर खाने का कारण नहीं बनना चाहिए । हमें एक अविश्वासी के लिए ठोकर का कारण नहीं बनन चाहिए । मैं अपने भाई का रखवाला हूँ ।

समकालीन मुददों पर पवित्र शास्त्रीय दर्जे

जब मैं ज्येष्ठ पासबान होता हू मी दूसरे वृद्ध और मैं कलीसिया के लिए सामाजिक दर्जे को निश्‍चित करता हू इसका मतलब यह नहीं है कि कलीसिया के दूसरे सदस्यों की हम नहीं सुनते हैं उन निर्णयों को लेने, परन्तु परिवार में माता-पिता होने के नाते, अगुवों को दर्जे स्थापित करना चाहिए । हमारे कुछ दर्जे ने प्रमुख कीर्ति कमाया है कि हम एक संगति होने के नाते आज खुश है ।

इधर कुछ सामाजिक दर्जे दिए गए हैं जिनका हम वर्तमान में अनुसरण करते हैं ।

<u>चलचित्र</u>

हम विश्‍वासियों को चलचित्र देखने को उत्साहित नहीं करते हैं, विशेषकर सिनेमा-घरों में जहा विश्‍वासी को वातावरण पर नियंत्रण नहीं रहता हो । हम उसे पवित्र शास्त्रीय अधिदेश के रूप में शिक्षा नहीं देते परन्तु हमारे पास अधिकार है कि चलचित्रों का मूल्यांकन करें और परमेश्‍वर की कलीसिया के लिए सामाजिक दर्जे स्थापित करें एक अच्छी पारिवारिक चलचित्र का पता होना निराशाजनक होता है । एक चलचित्र या वीडियो बिना विचिलिए हुए या उसे बंद किए बगैर देखना असंभव होता है । जो चलचित्र आजकल बनाए जाते हैं, वे विश्‍वासी के आत्मा, प्राण और मन के लिए लाभदायक नहीं होते । मैं नहीं सोचता कि काफी शिष्ट चलचित्र रूप से बनाया जाता होगा । आप एक चलचित्र देखकर भावनाओं को उत्साहित कर सकते हैं, परन्तु यदि आप कचरे को आहार बनाए, तो आप आत्मिक रूप से बीमार हो जाए । अन्दर की गहराई से ऐसा कुछ निकलेगा, यह तो मेरे लिए बेकार था "जो आप देखते या सुनते हैं वह महत्वपूर्ण होता है । आप क्या खाते हैं यह महत्व रखता है । आप ज़हर खाने की नहीं सोचेंगे, भले ही हम इसे आखों और कानों से हडप लेते हैं । तब हम आश्‍चर्य करते हैं कि हमारी आत्मा इतनी कमज़ोर क्यों है ।

<u>सामाजिक रूप से पीना (नशा करना)</u>

सम्पूर्ण रूप से नशीले पेय से परहेज करना हमारा दर्जा है । यहा फिर से हमारे पास कोई पवित्र शास्त्रीय अधिदेश नहीं है । बजाय इसके पवित्र शास्त्रीय अधिदेश नहीं है । बजाय इसके कि हमारा दर्जा, संसार में कई लोगों पर नशे श्राप को प्रतिबिंबित करता है । कई विवाहों को तोड़ने, नरहत्या और यातायात में मृत्यु में पियक्डपन शामिल है । चार में से एक व्यक्ति जो सामाजिक रूप से पीता हो उस लत लग जाएगा और वह पियक्कड़ बन जाएगा । कई राष्ट्रों में पीना और नशीले पेय का सेवन गरीबी और उससे संबंधित हर दरिद्रता को लाती है । ऐसा कोई चीज़ क्यों कुतरना जो हमारे समाज को जहरीला बना दे ? आप ऐसा करके प्रभु या स्वयं को ठेस नहीं पहुंचा रहे होंगे परन्तु जो व्यक्ति आपके बाजू में होता है उसे आपकी स्वतंत्रता से ठोकर लग सकता है । यदि आप पीना चाहते हैं और परमेश्‍वर के सामने अच्छा विवेक रखना चाहते हैं, तो इसे एकांत में करें जैसे रोमियों १४ : २२ में कहा गया है । किसी के सामने न पिए । देह की एकता से ज्यादा आपकी स्वतंत्रता महत्वपूर्ण नहीं होता । हम अपने लोगों से कलीसिया की देह की एकता का आदर करने के लिए निवेदन करते है न कि उसमें विभाजन लाने को सोचते हैं (नीतिवचन २० : १; २३:२९-३३; ३१:३-७; यशायाह ५ : २२; ५६: १०-१२; लूका १:१५; १ कुरिन्थियों ५:११; ६:१२; ८:१२)

<u>संगीत</u>

मैं नहीं सोचता कि एक मसीही को झकझोर देने वाले संगीत सुनना चाहिए । वह आपके कान या मन के लिए नहीं होता । संगीत प्राण का उच्चतम अभिव्यक्ति है । जब आप संगीत सुनते हैं तो यह प्रश्‍न करें कि "यह मेरे लिए क्या कर रहा है ?" झकझोर देने वाले संगीत शैतान के लिए एक यंत्र बन जाता है जो मनुष्य के नैतिक बल का नाश कर देता है । ताल जो है और कई बार ऐंद्रिय भी होता है वह शैतान का एक यंत्र बन गया है जो मनुष्य के वर्जन और परमेश्‍वर
के दिए हुए शालीनता को गिराने में सामर्थी है । वह आपको बिना किसी रोक के सोच-विचार कर "जाओ" कहत है । उसके प्रभाव में, लोग ऐसे परीक्षा में पड़ जाते हैं जो उन्हें नहीं करना चाहिए जैसे नशीले पदार्थ लेना और/या

नशीले पेय लेना और स्वयं को स्वच्छंदाचारी लैंगिक संबंध में डालना । (देखें फिलिप्पियों ४ : ८-९) हमारे जीवन ईश्‍वरीय संगीत से भरा होना चाहिए जो सुधार लाता हो, जैसे स्तुति और आराधना तथा भजन गाना । सबकुछ जो हम करते हैं वह सब परमेश्‍वर की महिमा के लिए होना चाहिए । (१ कुरि .१०: ३१)

<u>जूआ</u>

जूआ का खेल एक विश्वासी के जीवन में कोई जगह नहीं रखता । वह जल्द - अमीर होने का तरीका है और जो सबसे ज्यादा दुख भोगते हैं वो लोग ऐसे हैं जो सोचते हैं कि वे जैक - पॉट जीत लेंगे । जल्दी अमीर होने के तरीके, नीतिवचन के पुस्तक में गलत साबित कर दिए गए हैं (२८: २०,२२) विश्वास करें या न करें संसार तम्बाकू के मुदद् में कलीसिया के साथ पाया जाता है । आखिरकार, संसार सहमत होता है कि धूम्रपान आपके लिए खराब है, वह आपके फेफड़ों को खराब कर कॅन्सर और दूसरी बीमारिया☐देता है । पिछले सदी में जो हुआ उसके लिए प्रभु को धन्यवाद देते हैं । हमारा शरीर परमेश्वर का मन्दिर है और हमें ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जो इसे दूषित करे (१ कुरि .३: १६-१७; ६:१५-५०)

पहनावा

हर दो साल में, मैंने कलीसिया के बुलेटिन पर एक लेख लगाया । वह कहता है, "हम अपने बहनों को प्रभु के दिन में वस्त्र पहनने (जो उस क्षेत्र का स्थानीय वस्त्र हो) और पुरूष अच्छा वस्त्र पहनने को उत्साहित करते हैं . . . ." कई लोग इसे अच्छे रूप से स्वीकार करते हैं और मुझे प्यारे चिट्ठिया☐आते हैं परन्तु कभी मुझे इसका सामना भी करना
पड़ता है ।" ये तुम्हारा काम नहीं कि मैं क्या पहनूँ ।" कुछ लोग कहते हैं, "आप टाँग अड़ा रहे हैं, पासबान साहब । वचन प्रचार करें और इस क्षेत्र से बाहर रहें" में उनके प्रतिक्☐या को समझ सकता हू☐यदि वे सोचते हैं कि मेरे पास पवित्र शास्त्रीय अधिदेश है जो पहनावे के विषय में कहता है । मैं नहीं । यह विश्वासी समाज का दर्जा है जब हम प्रभु के दिन परमेश्वर के भवन में आते हैं, तो हमारे मन में एक बात आता और वह है प्रभु यीशु मसीह से मिलना जो राजाओं का राजा है और प्रभुओं का प्रभु है । वह हमारे जीवन सबसे मुख्य व्यक्ति है । हम अपने बच्चों को यह ज्ञात दिलाना चाहते हैं कि यह दूसरा खेल का दिन नहीं है । यह एक विशेष दिन है । यह पवित्र किया हुआ दिन है । वह ऐसा दिन है जो अलग किया गया है प्रभु के लिए ताकि आकर उसकी आराधना करें । हमें अच्छा दिखना चाहिए । अच्छे दिखने के लिए, वस्त्र पहनें या जूते पॉलिश करे जो आपके सम्पूर्ण परिवार के लिए उत्तम अनुशासन है । वह हमें ज्यादा आत्मिक नहीं बनाता है । यह सिर्फ एक अच्छा प्रस्तुतीकरण है ।

यदि राष्ट्र के राष्ट्रपति के साथ श्रोतागण होते थे तो आप पहनावा किस तरह करते थे ? आप सबसे श्रेष्ठ दिखते थे और स्वयं को प्रतिष्ठा के साथ प्रस्तुत करते । यह घमण्ड नहीं है । यह आदर दिखाना है । पहनावे में शालीनता और मर्यादा विश्वासियों के लिए निर्देशतत्व होता है । पवित्र शास्त्र में शिष्ट पहनावे की बात करती है (१ तीमुथियुस २:९) जो हम और आप शिष्ट कहते हैं वह अलग हो सकता है परन्तु हम जिस प्रकार न्याय करते हैं, उसका प्रभाव कलीसिया में दूसरों के संवेदनशीलता के द्वारा होगा यदि हम जानबूझकर उन्हें ठेस नहीं पहु☐ते । "तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिए ठोकर का कारण बनो ।" एक ही तरीका जिससे हम दूसरों को नाराज करने से बच सकते वह यह है कि हम मर्यादा में रहें चाहे हम जो कुछ भी करें (फिलिप्पियों ४: ५) हमें पेरिस के आधुनिक रिवाज की जरूरत नहीं है, परन्तु न ही हमें ऐसे कोई कपड़े पहनने चाहिए जो कलीसिया के लिए तैयार किए गए हैं ।
हम ऐसे कपड़े पहनने को उत्साहित नहीं करते जो मनुष्य के शरीर रचना का खुलासा करता हो । ऐसे कपड़े पहनना जो शरीर का प्रदर्शन करता हो वह शालीन नहीं होता । पहनाव एक व्यक्ति के चेहरे की तरफ ध्यान खींचने वाला होना चाहिए न कि उसके शरीर की ओर । परमेश्वर का इरादा हमारे लिए कभी भी यह नहीं था कि हमारे शरीर की तरफ कोई ऐंद्रिय तरीके से आकर्षण हो जो खास कर प्रभु के भवन में बाधा बन जाए ।
हम पूरे रूप से अपेक्षा करते हैं कि मेहमान और अतिथि किसी भी तरह से पहन सकते हैं जिस तरह व उनकी इच्छा हो । हम उनसे प्रेम करते हैं । हम स्वयं को उच्च्य स्थिति में नहीं रखते, परन्तु हम विश्वास नहीं करते कि हमारे विश्वासी दर्जे उनके दर्जे के अनुरूप होना चाहिए । हम चाहते हैं कि हमारा उनके साथ संबंध अच्छा हो, पर हम उन्हें यह भी शिक्षा देना चाहते हैं कि परमेश्वर के लोगों के संघटित सभा में कैसे आदरपूर्वक आया जाए ।

संसार के नाच के तरीके

हमारा दर्जा यह है कि हम सामाजिक नाच से दूर रहें । आधुनिक नाच के तरीके पवित्र शास्त्र का उल्लंधन करते हैं क्योंकि वे जानबूझकर लैंगिक इच्छा को बढ़ाते हैं उन लोगों में जो इसमें भाग लेते हैं और उनमें जो इसे देखते हैं नाच, हर संकृति में भी वैसा ही था जैसे कि विकसित राष्ट्रों के शहरों में देखा जाता है, पवित्र शास्त्र के दो शब्द इस कार्य का वर्णन करते हैं ।

१. कामुकता (इफिसियों ४:१९) यह शब्द दूसरे व्यक्ति में लैंगिक इच्छा की जागृति का उल्लेख करता है जिसे आदरणीय रूप से पूरा नहीं किया जा सकता है ।

कामतृष्णा (कुलुस्सियों ३:५) यह लैंगिक आनन्द की इच्छा है जो व्यवस्था के अनुसार नहीं है । (रोमियों ७:८ और १ थिस्सुलुनीके ४ : ५ देखें) डिस्को क्लब, नाच हॉल, रात के क्लब में नाचना इत्यादि एक विश्वासी के लिए ठीक जगह नहीं है । कई जवान लोग इन कार्यों के द्वारा पाप करने के लिए फुसलाए जाते हैं । पति और पत्नी साथ में नाचना अच्छा और स्वीकारने योग्य है परन्तु यही बात आपके बच्चों को क्या सिखाते हैं ?

हम अपने भाई के रखवाले हैं । हम ऐसा कुछ नहीं करेंगे जो एक कमजोर भाई को गिरा दे ।

आधुनिक चलन

हाल में मैंने दूसरे चलन को प्रभु के भवन में देखा जो ठीक नहीं था । पहले पुरूष और लड़के बेसबॉल के टोपी और गियर पहनकर कलीसिया आते हैं । जब कलीसिया में आते हैं तो वह विश्व के राज के सामने आने जैसा है । कई समाज में यह एक आदर का चिन्ह है कि उच्चपदस्थ के उपस्थिति में टोपी पहनकर बैठ जाए। यह चलन मेरी राय में आराधना सभा में बेलिहाज होता है ।

फिर से, अतिथि और अजनबी किसी भी तरह आ सकते हैं और हम उन्हें प्रेम देंगे, परन्तु हमें परमेश्वर के भवन को साधारण या अकस्मात रूप से व्यवहार नहीं करना चाहिए । यदि अतिथि रूकना चाहे, तो वह उन दर्जो को स्वीकार करेगा जो गवाही के रूप में है और उसके अनुसार जीवन व्यतीत करेगा ।

हमें अपनी आजादी से भाई को ठोकर खाने का कारण नहीं बना सकते । हमें ऐसा कुछ नहीं करना चाहिए जो जानबूझकर ठेस पहुँचाए । ये जरूरतें प्रभु की ओर से है ।

नहीं, उपर्योक्त बातों में कोई पवित्र शास्त्रीय अधिदेश नहीं है, परन्तु साधारण शिष्टता काफी है जो इन कार्ये से दूर रहने में मदद करता है । कलीसिया हमारे समाज के लिए ईश्वरीय दर्जे को स्थापित करती है । यदि हम अपने मार्ग को खो देते हैं ईश्वरत्व और शिष्टता में, तो फिर संसार को किस बात की आशा होगी ? यीशु मसीह हमें जीवन, आशा और एक भविष्य देने आया । विश्वासी को उसके जीवनशैली द्वारा मसीह के जीवन को दर्शाना चाहिए । "जो कुछ भी हम करें, हम सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करें ।"

पुनरूत्पादक सेवकाई और अगुवाई

यीशु मसीह हमारा :

उद्धारकर्ता	बपतिस्मादाता
पश्चाताप	स्वीकार
जीवन	सामर्थ
बढ़ा हुआ- फल-विकसित करना	दिया हुआ-भेंट-निपुण होना
चरित्र	कार्य
(प्राणी)	(सोच-शब्द-कार्य)

<u>उद्देश्य</u> : यीशु मसीह जैसा बनना . . .उसके जीवन को व्यक्त करना
<u>जगह</u> : परमेश्वर के परिवार में जन्म लिया . . .मसीह के देह बपतिस्मा
<u>बुलाहट</u> : कलीसिया में कार्य करने . . .और संसार में भी

<u>पुनरूत्पादक सेवकाई का महत्व</u>

उसी ने कुछ को प्रेरित, कुछ को नबी और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाला, कुछ को उपदेशक नियुक्त किया; और उन्हें दायित्व सौंपा जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाए, और वे सेवा का काम करें जिस से मसीह की देह निर्मित होकर उन्नति करें जब तक कि हम सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाए। तब हम आगे को बच्चे के समान नहीं रहेंगे जो मनुष्यों की ठग-विद्या और चतुराई से, उनकी भ्रमपूर्ण युक्तियों से, उनके उपदेश की हवा के हर एक झोंके से उछाले, और इधर-उधर उडाए जाते हैं । नहीं, वरन हम प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ते जाएं। उस से सारी देह हर एक जोड़ की सहायता से एक साथ मिलकर, और एक साथ गठकर उस प्रभाव के अनुसार जो हर एक भाग के परिमाण में उस में होता है, अपने आपको बढाती है; कि वह प्रेम में उन्नति करती जाए (इफिसियों ४:११-१६)

१. नेतृत्व का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि सेवकाई के लिए अगुवों को पहचानने और उनको तथा कार्य कताओं को कार्य करने में लगाने की क्षमता । यह क्षमता उस कलीसिया में नही होती जिसमें बढ़ोत्री नहीं होती ।

२. सेहतमंद बढ़ोत्री के लिए यह कुंजी है : आप सिर्फ बढ़ सकते हैं (संख्या में और आत्मिक प्रौढ़ता में) जैसे आपके नेतृत्व की क्षमता बढ़ती है ।

३. यह बहुत आसान हो जाता है कि सीधे प्रकार से जब जरूरतों की पूर्ति होती है, उसमें फंस जाना । भविष्य में, हमारे लिए सबसे प्रभावशाली तरीका यह होगा कि हम लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए ज्यादा लोगों को तैयार करें अगुवाई और सेवकाई के लिए ।

४. हमें इसे अग्रता देना चाहिए ।

५. हमारे कलीसिया के इस धेरे में हमने उन वजहों का परीक्षण किया जिससे यह समझ आया कि हमारे कलीसिया - कथापना के कोशिश असफल रहे । पहला वजह था चरवाहे की अक्षमता लोगों को पहचानने, उन्हें कार्य में लगाने, शिक्षा देने, तैनात करने, मानीटर करने और उन्हें कलीसिया में सेवकाई के लिए पालन-पोषण करने में ।

<u>कार्य में भर्ती करना</u>

क. अगुवों को ढूंढना ।
हम इस आधार-वाक्य पर काम कर रहे हैं कि हम अगुवों को बना नहीं सकते परन्तु उन्हें ढूंढ सकते हैं (समझ और परख की शिक्षा द्वारा) उन्हें सेवक का कार्य देने के द्वारा (२ तीमुथियुस २ : २) और नेतृत्व करने देना जिस प्रकार परमेश्वर देता है ।

ख. भर्ती करना जरूरी क्यों है ?

१. परमेश्वर भर्ती करता है (आप भी कार्य के लिए भर्ती किए गए थे) पूरे वचन में परमेश्वर स्त्रियों और पुरूषों के पीछे जाता रहा (नूह, अब्राहाम, इसहाक, भविष्यवक्ताओं इत्यादि)

२. यीशु मसीह ने बारह शिष्यों को भर्ती किया : “मेरे पीछे हो लो ।” उसने उनको उसके तरफ सेवा के लिए बुला लिया । मत्ती ४ : १८ - २१

३. हमें सेवा के लिए बुलाया गया है ।

क. कलीसिया का सदस्य होना सेवक बनकर सहभागिता देना होता है । यह समझते हुए कि हमारी बुलाहट को स्पष्ट और साबित किया जाएगा जैसे हम सेवा करते हैं ।

ख. लोग चंगाई प्राप्त करते हैं जब वे सेवकाई करते हैं; चंगाई के लिए सेवा करना महत्वपूर्ण धटक साबित होता है ।

ग. “सेना के विपरीत दर्शक” जो मानसिकता है वह कलीसिया का दर्शनशास्त्र कहलाता है (क्योंकि हम उसे पवित्र शास्त्रीय संबंधी ऐसा विश्वास करते हैं)

४. पासबान होने के नाते, हमें बुलाया गया है ताकि सेवकाई के लिए सन्तों को तैयार किया जाए । परमेश्वर हमें कार्य□ओं के लिए दर्शन देता है और कार्य□म कर्मचारियों के बिना विधमान नहीं होता । इफिसियों ४ : १0; मत्ती ९ : ३५ - ३८

५. <u>अगुवाई के लिए स्वयंसेवा काम नहीं करता</u>

क. गलत लोग सेवा की इच्छा रखते हैं (जरूरतों के द्वारा अगुवाई, अपरिपक्व, अशुद्ध इरादा, इत्यादि; तो आपको इनके साथ व्यवहार करना होता है ।)

ख. या कोई भी लोग सेवा करने की इच्छा नहीं रखते (क्योंकि कलीसिया शिक्षा पाई हुई दर्शक बनते हैं)

ग. किसे भर्ती करना चाहिए ?

१. हर किसी को कार्य और सेवा करने के लिए ।

२. अगुवाई के लिए दाऊदों को १ शमूएल १६ : ७

क. यह जान लें कि आप कलीसिया के उन अगुवों के जीवनों का पुनरूत्पादन करेंगे ।

ख. जान लें कि आप उन अगुवों के लिए स्वयं को दे देंगे (आप हर समय किसके साथ रहना चाहते हैं ?)

घ. सही कार्यकर्ताओं की चुनाव आधारभूत होता है ताकि कलीसिया में अगुवाई का विकास हो ।

१. लोगों के दर्शन, लक्ष्य और योजना को जानना भी भर्ती करने में शामिल है ।

२. चुनाव यीशु मसीह के सूत्रपात पर निर्भर होना चाहिए । मरकुस १ : १६-१७

३. भर्ती करना जोड लगाना होता है कि परमेश्वर से बुलाए गए लोगों को कलीसिया में कार्य करना उस कार्य से जिसके लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है ।

ड. कार्यकर्ताओं और अगुवों को पहचानने के निर्देशतत्व ।

१. इस बात का ध्यान दें कि कौन स्वाभाविक रूप से मार्गदर्शन कर रहे हैं । लोग किसके बारे में बात करते हैं?

२. लोग क्या करना पसंद करते हैं वह सुनें और उसका अवलोकन करें ।

३. उन लोगों में भिन्नता बताए□जो सच्चाई से लोगों में दिलचस्पी रखते हैं और उनमें जो अवसर पाकर कार्य करते हैं ।

क. जल्दबाजी न करें ! समय आपके साथ है ।

ख. देखें कि लोग क्या कर रहे हैं, सिर्फ वही नही जो वे कह रहे हैं ।

४. विषयगत बनें । किसी भी व्यक्ति के पास कई भेंट देखकर, रूप देखकर, शिक्षा या पृष्ठभूमि देखकर कम या ज्यादा उत्साहित न हो जाए□

५. उनके साथ सच्चा रिश्ता बनाए□

६. जरूरतों को और कार्यो को पहचानें ।

७. कार्य का सच्चा चित्र उन्हें दिखाए□

क. निर्देशनतत्व और जरूरतों को लिख डालें ।

ख. समय के समर्पण की अपेक्षा ।

ग. उन्हें मूल्य को जानने दें ।

ध. उन्हें समर्पण की ओर खीचें ।

च. चरित्र चिन्ह

१. परिवार - एक व्यक्ति किस प्रकार अपने जीवन साथी और बच्चों के साथ व्यवहार करता है ? क्या वह अपने परिवार का आदर और मूल्यांकन बोलचाल में करते हैं ? जो व्यक्ति अपने परिवार के साथ जैसा है वही कलीसिया के लिए भी करेगा । परिवार परीक्षण का मैदान होता है प्रभावशाली नेतृत्व के लिए ।

२. बोलचाल के तरीके - बोलचाल हृदय का माई□फोन होता है । क्या वह व्यक्ति बात करने में देरी और सुनने में जल्दबाज़ी करता है (याकूब १ : १९) अवलोकन करें कि एक व्यक्ति किस प्रकार दूसरों के विषय में कहता है । उसी तरह वह व्यक्ति आपके और कलीसिया के विषय में कहेगा जब आप वहा□हीं होंगे । ईमानदारी के लिए देखें और स्वार्थवाद पर ध्यान दें ।

३. बाहरी रूप - संसार में जैसा है, सामाजिक वर्गीकरण में बाहरी रूप एक अभिव्यक्ति नहीं है, परन्तु वह जरूर बता सकती है कि एक व्यक्ति स्वयं के विषय में क्या सोचता है और जीवन को किस तरह से देखता है ।

४. दूसरों के साथ बर्ताव - क्या वह व्यक्ति समूह के साथ अच्छे से कार्य कर सकता है ? समर्पण एक दिखने वाली आश्वासन है कि वह व्यक्ति पवित्र आत्मा से भरा है (इफिसियों ५ : १८-२१), साथ मैं दूसरों के साथ कार्य करने की क्षमता बताता है ।

५. पैसा - एक व्यक्ति जिस तरह पैसा संभालता है उससे यह पता चलता है कि उसके हृदय में क्या घट रहा होता है ।

६. आराधना - क्या वे परमेश्वर को आराधना के द्वारा श्रद्धा अर्पित करते हैं ।

७. प्रार्थना - क्या वे परमेश्वर के साथ बातचीत करते हैं जैसे कि उसके साथ एक संबंध हो या फिर एक ही बात बेकार दोहराते हैं जैसे मत्ती ६ : ७ में अन्यजाति करते हैं ? क्या प्रार्थना जीवन में उदारता और ईमानदारी को दर्शाते हैं ?

८. परमेश्वर का वचन - क्या पवित्र शास्त्र की सच्चाईया□नसे आती हैं, न कि सिर्फ सिद्धांत और वाद - विवाद की बातें ?

ध्यान दे : किसी भी धार्मिक या आत्मिक मूल्यांकन के साथ बाहरी क्षेत्रों का ध्यान रखना चाहिए । कई बार अगुवों को चुना गया था जिस प्रकार से वे जन समूह में लोगों की सेवकाई या प्रार्थना करते थे । कई लोग जो सेवकाई में विफल हो गए हैं वो ऐसी लोग हैं जो यीशु मसीह के न्यायरूपी शिष्य होने में विफल हो गए हैं । जीवन का कार्य करता हुआ तरफ, आत्मिक जीवन का अच्छा प्रतिबिंब हो सकता है जो धार्मिक स्वभाव की तुलना में बेहतर हो ।

६. कार्यकर्ता और उनकी जरूरतें

१. उन्हें ऐसा महसूस होना चाहिए कि उनका कार्यपूर्ण रूप से महत्वपूर्ण है ।
२. उन्हें इनाम देना चाहिए ।
३. उन्हें धन्यवाद देना चाहिए ।
४. उन्हें पहचान की जरूरत है ।
५. उनके साथ शिष्ट रूप से व्यवहार किया जाना चाहिए ।
६. उन्हें सही तरीके से पालन - पोषण और चराया जाना चाहिए

निरीक्षण करनेवालों की भर्ती

१. कौन विश्वासयोग्य है ?

____

२. आपके दर्शन को कौन समझ सकता है ?

____

३. किसे शिक्षा की जिज्ञासा है ?

____

४. पिता किसकी ओर आपको इशारा कर रहा है ?

____

५. कौन व्यक्ति/दंपत्ति समूह-का स्वाभाविक अगुवा बन सकता है ?

व्यक्ति / दंपत्ति	क्षमता
______________	______________

६. कौन से विशेष कौशल इनमें पाए जाते हैं ?

व्यक्ति का नाम	कुशलताएँ
______________	______________

७. किस प्रकार के सेवकाई पद्धतियाँ आप नियमित रूप से सामना करते हैं ?

- ❖ अस्पताल
- ❖ पथ/मार्ग
- ❖ सेवकाई यात्राए□
- ❖ संगति
- ❖ सलाह देना
- ❖ घर
- ❖ सेमिनार
- ❖ रिश्ता
- ❖ कलीसियाएँ
- ❖ दूसरे

८. इन छोटी - मोटी यात्राओं में आपके साथ जानेवाला अच्छा प्रत्याशी कौन होगा ।?

व्यक्ति (दंपति)	कार्य
______________	______________

मूल्यांकन फॉर्म

नाम : ______________________

१. कसौटी

आप किस कसौटी का उपयोग करेंगे ताकि जिन्हें आप कार्य पर लगा रहें है उनके काम निश्चित हों ?

क्या वे इन बातों को दर्शाते हैं :

- ❖ समर्पण ---------------------------
- ❖ उदारता --------------------------
- ❖ चरित्र ---------------------------
- ❖ सामाजिक कुशलताए□-----------------
- ❖ सेवकाई कुशलताए□-----------------
- ❖ प्रभावशाली होना -------------------

क्या वे

- ❖ शिक्षा दे सकते हैं -------------------
- ❖ इच्छुक हैं -------------------
- ❖ स्वयं उत्साहित हैं -------------------
- ❖ नम्र हैं ------------------

क्या उनके विदयार्थी उन्हें पसंद करते हैं और उनका आदर करते हैं ------------------------------

क्या उनमें

सामर्थी विवाह और/या व्यक्तिगत रिश्ते हैं ? --

दूसरों के साथ सामर्थी रिश्ता है ? --

२. चरित्र

इन नीचे दिए गए वर्गो में एक व्यक्ति को आप किस तरह देखते हैं ?

क. घबरा जानेवाला १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 रचा हुआ

ख. हताथ १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 खुशदिल

ग. चुस्त १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 शांत

घ. भावपूर्ण १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 शर्मीला
अनु[illegible]ाक

ड. दयालु १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 विमुख

च. व्यक्तिनिष्ठ १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 विषयगत

छ. हावी १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 समर्पित

ज. विरोधी १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 सहनशील

झ. स्वयं - अनुशासित १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 सनकी

समर्पण

क. पूर्ण रूप से एक व्यक्ति में कितना सर्मपण का स्तर होना चाहिए ऐसा आपको लगता है ?
कमजोर १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 बलवन्त

ख. परिवार की ओर एक व्यक्ति में कितना समर्पण होना चाहिए, ऐसा आपको लगता है ?
कमजोर १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 बलवन्त

ग. मूल्य, रिवाज और संगति के तरफ एक व्यक्ति में कितना समर्पण का स्तर होना चाहिए ?
कमजोर १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 बलवन्त

घ. जिस सेवकाई के लिए वे बुलाए गए हैं उसके प्रति कितना समर्पण होना चाहिए ऐसा आपको लगता है ?
कमजोर १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 बलवन्त

ड. उनके अगुवे होने के नाते आपके प्रति कितना समर्पण होना चाहिए ऐसा आपको लगता है ?
कमजोर १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 बलवन्त

च. एक व्यक्ति को कितने समर्पण के स्तर तक बदलना चाहिए ?
कमजोर १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 बलवन्त

छ. एक चलते - फिरते रिश्ते में उस व्यक्ति का सर्मपण कितने स्तर तक होना चाहिए ?
कमजोर १-२-३-४-५-६-७-८-९-१0 बलवन्त
प्रशिक्षण

क. समय के अवधि में होता है ।
दोनों, सूचनाए[illegible]ौर बदलाव एक अगुवे के विकास के लिए जरूरी होता है ।

ख. प्रशिक्षण का केंद्रबिदु / कार्यकर्ता और अगुवों को मदद करना ताकि वे उनके सेवकाई क्षेत्र में सूचित, स्पष्ट उच्चारण कर सके, और कुशल बन सके ।

ग. प्रशिक्षण के तीन वाहन :

१. औपचारिक

२. अनौपचारिक

३.	आदर्श बनना

घ.	शिक्षा का मौसम
१.	जब कोई जरूरत होती है तो लोगों को प्रशिक्षण के लिए भूख होती है ।
२.	गर्म मौसम : विद्यार्थी को ऐसे जगह ले जाना जो उसके अनुभव से ज्यादा हो ।
३.	ग्रीनहाऊस शिक्षा का मौसम वह होता है जहा विद्यार्थी को गर्म मौसम में ज्यादा अवधि तक रखा जाता है ।
४.	शिक्षा पर हाथ धरना
क.	व्यापार विद्यालय में जाने का तरीका जो कॉलेज से विपरीत हो ।
ख.	बनावट जो सूचना के विपरीत हो ।

५.	तो हम प्रशिक्षण किस प्रकार दें ?
गर्म मौसम + ग्रीनहाऊस + हाथ धरना = एक शिष्य

६.	ठण्ड़ा मौसम
क.	ऐसा एक विद्यालय जो आधार - सामग्री में निपुणता पर केंद्रित हो ।
ख.	कार्य करने के लिए कोई अपेक्षा नहीं होती ।
ग.	अनुभव और संबंध में कमी की वजह से गर्म मौसम को ठण्ड़ा किया जाना ।
ड.	ि्रया - पद्धति की शिक्षा जो गर्म मौसम प्रदान करता हो ।
१.	सेवकाई स्वंय करें ।
२.	जब आप सेवकाई करें तो पाए कि दूसरे आपका अवलोकन कर रहे हो ।
३.	जब आप अवलोकन करते हैं तो उन्हें सेवकाई करने दें ।
४.	यह कदम हमें कार्य के दूसरे क्षेत्र में पहुाती है ।
सारांश
१.	कार्यकताओं और अगुवों के लिए प्रार्थना करें ।
२.	एक अवधि उनके चरित्र और स्वभाव का अवलोकन करें ।
३.	उनके साथ समय बिताए, उनको खाने पर आमंत्रित करें और एक संबंध स्थापित करें ।
४.	दूसरे कार्यकर्ता अगुवों को साथ में कार्य करने लगाए ।
५.	दर्शन और दिशा के विषय में उनसे बाटकर उनके प्रतिऊतर का अवलोकन करें ।
६.	उन्हें "प्रशिक्षणाधन चिकित्सिक" बनाएँ
क.	सभा से पहले उनके साथ नियमित समय बिताए ताकि वाद-विवाद, मध्यस्थी और बातों को ग्रहण करने ।
ख.	महीने में एक बार मिले ताकि समूह में उनका अवलोकन मिल सके और कोई भी प्रश्न पूछने का उन्हें अवसर दे ।
ग.	सेवकाई का आदर्श दें, उन्हें शामिल करें, उन्हें सेवकाई के लिए उत्साहित करे ।
फैलाव
क.	सेवकाई के लिए किसी को भेजना प्रशिक्षण मिशन का निश्चित रूप से एक भाग है । यीशु मसीह ने इसमें भाग लिया धनिष्ठता के बाद समर्थन और अधिकार मिला ।
१.	अनुशासन यीशु मसीह के द्वारा चुने गए थे, किस तरह से सेवकाई करना और बाहर भेजे जाना इसे प्रदर्शित किया गया । मत्ती १0 : १-१५
२.	वह उनको बताता है कि कहा जाना है, क्या प्रचार करना है, क्या करना है, यात्रा किस प्रकार करना है और किस बात की अपेक्षा करना है ।
३.	यह नाभि - संबधित डोरी को काटने की शुरूआत है । थोडे से अवधि तक स्वयं के बलबूते पर रहते हैं उन्हें सफल होना या विफल होना है । कोई भी ठीक है ।

ख. फैलाव प्रशासन और लोगों की भर्ती करना होता है ताकि लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके ।
१. नए कर्मचारी/अगुवे को उनके बुलाहट और भेंट के प्रति स्पष्ट विचार होने चाहिए ।
२. हर नए अगुवे को अपेक्षाओं और जिम्मेदारियों का स्पष्ट और संपूर्ण विवरण होना चाहिए ।
३. नए अगुवे और उसके निरीक्षक जानना चाहिए कि विधि सम्मत रूप से वे एक दूसरे से क्या अपेक्षा कर सकते हैं, ताकि जिन अपेक्षाओं की पूर्ति न हुई हो उससे नाराजगी और कडुवाहट न हो ।
४. संबंधों के विषय में बताना स्पष्ट रूप से परिभाषित होना चाहिए । नए अगुवे को जानना चाहिए कि उनके ऊपर कौन हैं और वरिष्ठ पासबान के साथ सीमित संबंध स्वीकारना चाहिए ।
५. जो प्रशिक्षण, पढ़ाई, सुनाई, सेवकाई यात्राएँ, इत्यादि; जो चालू हैं उन्हें सेवा के फैलाव के लिए समझा हुआ पहलू माना जाना चाहिए ।
६. जैसे आप अपने कर्मचारी/अगुवों के साथ काम करते हैं प्रशिक्षण स्थिति द्वारा प्रतिसूचना देना जारी रखें ।

ग. आप जिनको प्रतिनिधि बनाते हैं उनके सफलता के लिए आपको समर्पित होना चाहिए ।
१. समर्पण शामिल करना ताकि आप उनके लिए प्रार्थना करें ।
२. सेवकाई में देने और सुनने के लिए हमेशा प्राप्य रहें, दोनों व्यक्तिगत और पारिवारिक सलाह के लिए ।
३. संपर्क बनाए रखें ।

मॉनीटर करना

क. निरीक्षक, अगुवा और पासबान को नए कर्मचारी/अगुवे पर ध्यान देने की जरूरत है । जिम्मेदारी और लेखा देना दोनों अलग न होनेवाले जूडवे होते हैं ।
१. मूल्यांकन ओर प्रतिसूचना देना जारी रहना चाहिए ।
२. सभी नए अगुवों/कार्यकर्ताओं को सराहने की जरूरत है और समूह का एक भाग बनने की ।
३. उन्हें यह देखने की जरूरत है कि उनकी कोशिशे किस प्रकार बड़ी योजनाओं में बैठता है ।
ख. मासिक या सहमत की हुई सभाए और दूसरे संपर्क आवश्यक हैं ।
१. व्यक्तिगत जरूरतों को संबोधित किया जाता है ।
२. निष्पादन का मूल्यांकन होता है । उन्हें कुछ सही करते हुए पकडे ।
३. संबंधों का विकास होना चाहिए ।

पालन - पोषण

क. पालन - पोषण के लिए परमेश्वर हमारा उदाहरण है वह पालन - पोषण का आरंभ करता है । यशायाह २६ : २-३
ख. पालन - पोषण वास्तविक मित्रता से होती है, सलाह और प्रार्थना के द्वारा व्यक्तिगत की जरूरतों की पूर्ति और मूल्य देना ।
ग. यीशु मसीह का आर्दश जब उसने शिष्यों का पालन - पोषण किया । लूका १० : १-२०
१. यीशु उनके लिए समय निकालता थ ।
२. यीशु उनके कार्य पूर्ति से खुश होता था ।
३. उसका समय देना एक प्रकार से "तुमको धन्यवाद" कहना होता था ।

दुबारा सोचें : संसार को अगुवों की जरूरत है :

जिन्हें खरीदा नहीं जा सकता ;
जिनका वचन उनका बंधन होता है ;
जो चरित्र को धन से ज्यादा महत्व देते हैं;
जो राय और ईच्छा के हकदार है;
जो उनके पेशे से बड़े हैं;
जो जोखिम उठाने से झिककते नहीं है;
जो अपने असत्त्वि को खो नहीं देते है;
जो छोटी बातों में उतने ही ईमानदार रहते है जैसे बड़ी बातों में;

जो गलत बातो के साथ समझौता नहीं रखते; जिनकी उच्चाकांक्षाएँ स्वयं के स्वार्थी ईच्छाओं तक सीमित नहीं रहते;
जो ऐसा नहीं कहते की "क्योकि ऐसा सब करते हैं इसलिए मैं भी ऐसा करता हूँ ;
जो अपने दोस्तो के प्रति सच्चे हों अच्छे या बुरी बातों में, विपरीत या संपन्न परिस्थियों में;
जो यह विश्वास नहीं करने कि समझदारी, चालाकी और जिददी स्वभाव सफलता प्राप्त करने के लिए उत्तम है;
जो सच्चाई के लिए खड़े रहने में शर्माते या डरते नहीं जब उसका कोई नाम नहीं होता, जो प्रमुखता से "नही" कहते हों, भले ही सारा संसार 'हां' कहता हो;

<u>अगुवाई के लिए पूर्वपेक्षित</u>

१. यीशु मसीह को जानने के लिए सच्चा प्रेम और क्रियाकलाप जिसे व्यक्तिगत आराधना, वचन पर मनन, प्रार्थना के द्वारा धनिष्ठता से दर्शाया जाता हो । फिलिप्पियों ३ : ७-१०
२. कलीसिया के निगमित ढांचे में अगुवाई एक सक्रिय कार्य होती है जो सिर्फ एक शीर्षक या स्थान नहीं होता । अगुवाई सेवा के परमेश्वर के प्रति एहसानमंद होना होता है और स्वंय - बलिदान जो कार्य के वजह से सेवकाई नहीं करता, परंतु ईच्छा से, और स्वेच्छापूर्वक प्रेम के कारण कार्य करता है । १ पतरस ५ : २
३. उद्देश्य, मूल्य, अग्रताएँ, प्रथाएँ, और कलीसिया के अंगीकार में एकता और समर्पण होना चाहिए - दोनो चलन और स्थानीय कलीसिया आवश्यक है । यह एकता और समर्पण कलीसिया के कार्यक्रमों, सम्मेलन और सुसमाचार सेवकाई में नियमित भाग लेने के द्वारा यह एकता और समर्पण दर्शाया जा सकता है सभी अगुवों से चरवाहों के प्रति ईमानदारी की अपेक्षा की जाती है । व्यक्तिगत ईमानदारी जो पासबान और उसकी पत्नी के प्रति होना चाहिए, वह सहकार्यकर्ताओं और अगुवों के लिए उच्चतम योग्यता होता है । इफिसियों ४ : ३
४. अगुवों को यीशु मसीह और लोगो के प्रति समर्पण और प्रेम होना चाहिए बिना व्यक्तिगत लाभ की इच्छा रखते हुए । यूहन्ना २१:२७; यहेजकेल ३४
५. एक अगुवों को विश्वास योग्य होना चाहिए । विश्वासयोग्यता कलीसिया सेवकाई से संबंधित कार्यो में, पवित्र आत्मा के बातों में साबित दर्ज की हुई बातों का परिणाम होता है । अगुवाओं में यह क्षमता होनी चाहिए कि वे खरीदे, धूस लेना, कौशल से काम चलाना, या धमकी देने का सामना करने की क्षमता होनी चाहिए उनके द्वारा जो कलीसिया में विभाजन या नाश की सोचते हैं । २ कुरिन्थियों ४ : २
६. अगुवों को समूह खिलाड़ी होना चाहिए और सहभागियों को सफलता प्राप्त करने में मदद करना चाहिए । फिलिप्पियों २ : ३ - ४
७. अगुवों को क्षशम और आदरणीय होना चाहिए, विश्वासी प्रकृति, साबित किया गया सेवकाई में क्षशमता । १ तीमुथियुस : ३ - २
८. अगुवों का व्यवाहिक जीवन प्रेम से भरा और बलवन्त होना चाहिए जहां दोनो पति और पत्नी को सेवकाई की बुलाहट के प्रति एहसास होना चाहिए । जोडी बनकर सेवकाई और समूह में सेवकाई को प्रभावशाली बनाने में पूर्ण होता है । प्रेरितों के काम १८ : २६; १ तीमुथियुस ३ : २
९. अगुवों को शिक्षा प्राप्त करने की और सुधार लेने की क्षमता होनी चाहिए । किसी भी अगुवे में चरित्र की सच्ची परीक्षा उनके निर्देशन और सुधार को प्राप्त करने की क्षमता होती है । किसी भी विद्यार्थी को परमेश्वर के राज्य का विद्यार्थी होने के लिए आधारभूत जरूरतो को स्वीकारने की क्षमता होनी चाहिए ।
१०. अगुवे दूसरो को सेवकाई में उनकी तैयारी सक्रियता से भरती करना, प्रशिक्षण देना, विकास करना, लोगो की देखरेख, उनका पालन - पोषण करने में समर्पित होते हैं । मरकुस ३ : १३ - १५
११. अगुवे समर्पित, प्रसन्नता से दशवांस और स्थानीय संगति को नियमित रूप से देने वाले होते है । मलाकी ३ : ८ - १०
१२. बरनबास के प्रति समर्पन (उत्साहना का बेटा) अगुवे की शैली । वह शैली खुला और प्रेम से बातचीत करने वाला होता है, जो रिश्ते-संबंधित जो क्रोध को रचनात्मक रूप से अलग करता हो, जो एक दूसरे का उत्साहित करते हो और बनाते हो और सख्ती से भरोसा बनाए रखते हों ।

१३.	उच्चाकांक्षा से आजाद हो ("एक अत्यधिक इच्छा प्रोन्नति, आदर, श्रेष्ठता, सामर्थ या व्यक्तिगत सफलता; इत्यादि के लिए, नाम के लिए तीव्र इच्छा हो") फिलिप्पियों २ : ३-४, याकूब ३: ३-१८

१४.	हृदय और चरित्र की शुद्धता जैसे तीमुथियुस तीतुस और गलातियों ५ : १६ - २५ में दिया गया है । इनमें से बाते शामिल है ।

क.	ऊपर दिया गया स्वभाव होना ।

ख.	आत्मसंवमी

ग.	स्वंयनियंत्रित

घ.	आदरणीय

ड.	खातिर करने वाला

च.	जो शराब का लति न हो (या किसी आदत से बंधा न हो)

छ.	जो हिंसापूर्ण नहीं परंतु कोमल हो

ज.	जो पैसों के प्रेम से आजाद हो

झ.	जो झगडालू न हो

ञ.	जिसका घर व्यवस्थित हो

१५.	अगुवाई के लिए हमारी ऐसी जरूरतें क्यों हैं ?

क.	प्रभु हमें दायित्व सौंपता है कि हम सावधान रहें याकूब ३ : १; १ तीमुथियुस ३

ख.	भेड़ के लिए पासबान प्रभु के प्रति जिम्मेदार होता है, इसलिए उसे इस बात को निश्चिंत करना है कि उनका ध्यान रखा जा रहा है या नहीं । १ पतरस ५ : २-३

ग.	शत्रु एक अगुवा पर आ□मण करेगा जब वह असुरक्षित होगा । १ पतरस ५ : ८-९

घ.	अगुवे सेवकाई, मूल्य और कलीसिया के लिए परमेश्वर के राज्य का आदर्श बनते है । हम कौन है और क्या करते हैं, वह हमारे बोलने से ज्यादा महत्व रखता है १ कुरिन्थियों ४ : १५ - १६

ड.	पूर्वपेक्षित और जरूरतें उन लोगों को अलग करती है जो सही में बुलाए गए और योग्यता प्राप्त हैं और जो स्थान प्राप्त करने के द्वारा जरूरतों को पूरा करने की खोज करते हैं ।

च.	ध्यान दे : ये अगुवाई के लिए आधारभूत, सामान्य जरूरत है । व्यक्तिगत सेवकाई क्षेत्रो में ज्यादातार जरूरतें हो सकती हैं ।

गृह - कलीसिया के तीन बातें

तीन शब्द जो गृह - कलीसिया का सारांश देते है गृह, लोग, और खुशी मनाना । इन तीनों में सबसे महत्वपूर्ण गृह होता है । ऐसे लोगो के लिए जो ऐसा सोचते हैं कि लोग कलीसिया जीवन के केंद्रबिन्दु हैं, उनके लिए आधारभूत समायोजन की जरूरत है ।

क.	मनाना

उत्सव मनाना लोगो का इकट्ठा होना होता है जहा□कलीसिया के गृह सदस्य इकट्ठे होते हैं ताकि परमेश्वर की आराधना करने में उनके जीवन को दर्शाया जाए । यह क्षेत्र के अनुसार शहर भर सभा होती है जहा□स्तुति और आराधना, सुसमाचार प्रचार, और महत्वपूर्ण रूप से परमेश्वर के लोगो की गवाही होती है । इसमें आकार की कोई सीमा नहीं होती । संगीत ई

श्वत्व के आराधना पर केंद्रित होता है यहा पर काफी गाना होता है । वह जगह खुशी से भर जाता है एक धंटे का स्तुति - आराधना कभी - कभी काफी नहीं होता ।

ख. लोग

एक सामान्य कलीसिया के सदस्य को मित्रों की जरूरत होती है । यहा पर मुख्य शब्द है : संगति । यह एक ऐसा स्थान जहाँ पचास से सौ के बीच के आकार के लिए कार्य संगठित किए जाते है । यहा पर एक बडे समूहके साथ पारस्परिक व्यवहार होता है । लोगों की शिक्षा और सूचनाए देना यहा पर प्रभाव रूप से होता है । लोग यहा पर आधी रात या कई दिन यहा पर प्रार्थना के लिए समय बीता सकते हैं । यहा पर अगुवे को आत्मिक प्रौढ़ता के लिए जो जवान सेवको को दिशा प्रदान करती है उसके लिए प्रेम और आदर दिया जाता है यह पासबान एक व्यक्ति होता है जिसे गृह - कलीसियाओं की सेवकाई के लिए निर्धारित किया जाता है, वह सलाह के क्षेत्र में, शासन और सुसमाचार के क्षेत्रों में भेंट पाया हुआ रहता है परंतु प्रचार या शिक्षा के लिए नहीं । किसी भी मायने में वह क्षेत्र की कलीसियाओं और जिन लोगों की सेवा करता है । उसका वरिष्ठ पासबान नहीं होता । उसकी सेवकाई लोगो से संबंधित होती है न कि मंच से संबंधित होती है ।

ग. गृह

गृह, हर प्रकार के जीवन के लिए मूलभूत इमरत होती है । पवित्र शास्त्रीय नमूनों के अनुसार चलते हुए गृह कलीसिया के मूलभूत जीवन का एक रूप होता है । इन गृह कलीसियाओं में भागीदारी गृहों को जोडने के द्वारा होता है । एक गृह समूह ऐसा स्थान होता है जहा लोगो का पालन - पोषण, सेवा के लिए तैयार किया जाना, और जहा सदस्य एक दूसरे को बनाते (उन्नति) करते हों । यह एक ऐसा समाज

बनाता है जहा विश्वासी एक दूसरे का लेखा देनेवाला कहलाया जाता है, और जहा वे पूर्ण रूप से एक दूसरे के साथ पारदर्शी होते हैं । एक गृह कलीसिया में कार्यो के लिए कुछ सीमा होती है । जहा उसकी शुरूवात अल्पकालिक स्तुति और आराधना के अधिवेशन से शुरू होती है, वह उसका प्राथमिक उद्देश्य नहीं होता हैं । जहा पवित्र शास्त्र का उपयोग जीवन शैली के लिए हो, वह पवित्र शास्त्र अध्ययन के लिए नहीं । इन जरूरतों की पूर्ति कलीसिया के जीवन में अलग-अलग स्थर पर होती है । इसलिए यह जरूरी नही कि गृह का अगुवा महान पवित्र शास्त्र शिक्षक हो, या अच्छा सूचक । गृह कलीसिया के अगुवे को लोगो के लिए प्रेम और उनके जरूरत की सेवकाई की इच्छा होनी चाहिए । वह पासवान के स्तर की सेवा करता है, भेड की जरूरतों का ख्याल रखता है । गृह कलीसिया का प्राथमिक कार्य उन्नति, एक-दूसरे को बनाना होता है । यह जुड़ा हुआ सेवकाई पवित्र आत्मा के द्वारा संकेत पाता है और उस पवित्र शास्त्रीय शिक्षा पर बना होता है जिसे लोगो या कलिसिया ने स्वीकार किया हो । चूंकि, धनिष्ठ मित्रता था किसी के हृदय का उंडेला जाना एक बढ़े समूह में नहीं होता, एक गृह कलीसिया इस संभव को पूरा करती है । यहा मुख्य शब्द है : रिश्तेदारी । समूह गति-विज्ञान खोज यह बताता है कि दो आलोचनात्मक संख्याए हैं जो गुणन पद्धति पर प्रभाव छोड़ती है एक समूह का अत्यधिक का आकार १५ नियमित सदस्यों से ज्यादा नहीं होना चाहिए । सदस्यों के बीच बातचीत बहुत पेचीदा हो जाता है जब सदस्य १५ से ज्यादा हो । एक समूह को प्रभावशाली करने से पहले आलोचनात्मक लोगो की भी जरूरत होती है जब समूह १५ सदस्यों पर आकर स्थिर होती है, तब उन्हें दो अलग समूह, सात और आठ सदस्यों का एक अगुवे के साथ बनाना चाहिए ।

कलीसिया - बढ़ोत्री के सिद्धांत

परिचय

परमेश्वर मनुष्यों को चुनता है । ऐसे मनुष्य जिन्हें नम्र किया जाता है, तोड़ा जाता है और फिर पवित्र आत्मा उनका मार्ग दर्शन करता है । ऐसे मनुष्य फिर परमेश्वर के प्रेम के आवेश में उसकी इच्छा को करने की हिम्मत रखते है । आखिरकार, हर विरोधी परेशान परिस्थितियों के विरूद्ध ये मनुष्य आगे बढ़ते है और परमेश्वर के कार्य को पूरा करते है, परमेश्वर के तरीके से, परमेश्वर की महिमा के लिए ।

इतिहास ऐसे लोगो से चमकता है और पवित्र शास्त्र इनसे भरा है । वे आनेवाले पीढ़ी के लिए गवाहों के बादल को बनाते हैं । मनुष्य चलन के जन्म देते हैं और चलन लोगों के जीवन को बदलता है और राष्ट्रों को हिलाता है । परमेश्वर हर पीढ़ी में उसकी इच्छा और उद्देश्यों को उसके कलीसिया के लोगों के हृदयों और जीवनों में पूरा करने के लिए ऐसा करता है । चलन को जन्म देने की जरूरत है और दार्शनिक आवेश में नहाए जाने की जरूरत है, और उसके वचन के दूध और मांस से उठाए जाने की जरूरत है; ऐसी एक कलीसिया पवित्र आत्मा का चलन बनता है जो राष्ट्रों को छूता है और उनपर प्रभाव छोड़ता है । यह रातों -रात नहीं होगा सालो की कडी मेहनत और टूटे दिल की प्रार्थना, विश्वास और आशा से मिला हुआ, और उसकी योजना में कदम-दर-कदम उठाना । हर कदम एक चमत्कार बन जाता है । हर चमत्कार पवित्र आत्मा के विद्यालय के भिन्न दृष्टिकोण द्वारा भिक्षा का पाठ बन जाता है । ये सब बाते आपको एक ऐसे स्थान पर लाएगा जहाँ परमेश्वर के राज्य के सामर्थी सिद्धांत प्रभावपूर्ण रूप से कार्य करना शुरू करते हैं । हम ऐसे सूत्र और विचार का दावा नहीं कर सकते जो कलीसियाओं को बढ़ने और गुणन का कारण होता है । हमारे पास कोई फूर्तिला और छोटा मार्ग का उपचार नहीं होता जिससे अगुवों की बढ़ोत्री और विकास हो । हमारे पास सिर्फ वो ही है जो इतने सालो में पवित्र आत्मा ने प्रदान किया है । ये परमेश्वर के सिद्धांत है, जो उसने हमें दिखाया है जैसे हम सिखने के लिए विश्वास योग्य और उसमें कदम-दर-कदम चले ।

<u>इन थोडे अद्भूत सिद्धांतों को हम आपके साथ बाँटते है :</u>

१. <u>पहला सिद्धांत जो प्रभु ने हमें दिखाया था : कि हम खोए हुओं के आवेश भर दर्शन रखें, तुमको यीशु मसीह के लिए जीत ले, फिर उन्हें गृह कलीसिया में डालें ।</u>

प्रमुख बात यह है कि अगुवों और सदस्यों को प्रभावशाली रूप से दर्शन प्रदान करना । हबक्कूक ने सही प्रकार से हमें शिक्षा दिया है । दर्शन को स्पष्ट करे, उसे सामान्य रूप से लिखें, ताकि जो कोई भी उसे पढ़ता है वह उत्साहित होकर दर्शन को पूरा करता है !!!

* एक स्पष्ट दर्शन परमेश्वर की ओर से आती है जब हम उसकी बाट जोहते हैं ।

* स्पष्ट दर्शन हमें वास्तव की बातों के लिए साकारात्मक रूप से सोचने लगाती है और उन चुनौतियों को स्वीकार करती है जिनका हम सामना करते हैं ।

* एक स्पष्ट दर्शन उन शक्तियों को उत्साहित करती है जो हमारे साथ खड़े होते हैं ।

* एक स्पष्ट दर्शन परमेश्वर के हृदय के उद्देश्यों को जो खोए हुओं के लिए है उसे पूरा करती है

* एक स्पष्ट दर्शन परमेश्वर के प्रयोजन को लाती है ।

हमारे पास एक बहुत ही स्पष्ट तीन - मुख्य दर्शन है जिसे पूरा करने के लिए कार्य जारी रहता है ।

१. **राष्ट्रों को सुसमाचार सूनाना** (प्रजाति संबंधी समूहों को) हमारे भूमि और सीमा के पार ।

२. **स्थानीय, पवित्र आत्मा से भरा,** स्वदेशी, स्वयं-सहयोग देती हुई शहरों की, कज्बों, गांवों की और राष्ट्र भर में आदिवासी क्षेत्रों की कलीसियाओं को स्थापित करना ।

३. **संतो को तैयार करना ताकि वे प्रभावशाली,** फलवंत और परिणाम संबंधी शिष्य बन सके परमेश्वर के राज्य के कार्य को करने में ।

जैसे हम प्रार्थना और उपवास में प्रभु की खोज के लिए समय बिताते हैं, परमेश्वर ने हमें शहर के दसवें भाग को छूने के लिए गृह समूह में निकलने के लिए दर्शन दिया । जैसे पहला गृह कलीसिया शुरू हुआ हमारे हृदय में दर्शन ज्वलंत होता गया । छोटे अवधि और लंबे के लक्ष्यों ने जन्म लिया, और पूरी कलीसिया उस बात को करने में उत्साहित हो गए जो प्रभु ने स्पष्ट रूप से हमें दिखाया था । परमेश्वर ने चमत्कारी रूप से हमें अलग-अलग भाषा के साहित्य हमें प्रदान किया । व्यवस्थित रूप से समूह बाहर जाकर शहर में सुसमाचार और पर्चे बाटें । नए गृह कलीसियाएं शुरू हुई, और जल्द ही हमारे बीच चिन्ह और चमत्कार धटना शुरू हुआ । परमेश्वर कार्य कर रहा था और हम अचभ्मित थे । गृह कलीसिया की बढ़ोत्री ने हमारे हृदयों में परमेश्वर के वचन को सुलगाया । लोगो को यीशु मसीह के देह में स्थान पाने के लिए तसल्ली मिली । जल्द बढ़ोत्री के बावजूद भी, रिश्तों का विकास और हमारे बीच परिवार जैसे ख्याल रखना और बांटना शुरू हुआ ।

हमारे सदस्यों को कार्यरत करते हुए और अनुवर्ती कारीबाई के साथ तीव्र सुसमाचार प्रचार के कार्य में हुए । इस प्रकार कलीसिया बढ़ी जिस प्रकार आत्माओं की बड़ी संख्या जोड दी गई, प्रतिदिन के आधार पर । फिर परमेश्वर ने हमसे स्पष्ट रूप से सप्ताह में गृह कलीसियाएं और रविवार को कलीसिया लेने के विषय में बातचीत किया । गृह कलीसियाओं ने सचमूच लोगो को दृढ़ किया । हमने ऊंचे दर्जे के समर्पण को देखा, सुसमाचार प्रचार के लिए ज्यादा जोश, और दशंवास तथा भेंट में तीव्र बढ़ोत्री को देखा अगुवे उठ खडे होने लगे और हाथ थाम कर कटनी के लिए लोगो को सामर्थ देने लगे परमेश्वर ने हमसे वादा किया था मुझ से मांग, और मैं जाति- जाति के लोगों को तेरी सम्पति होने के लिए, और दूर - दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिए दे दूंगा । भजन संहिता २ : ८

आज, प्रतिदिन सुसमाचार प्रचार द्वारा कई लोग मसीह के विश्वास में लाए जाते हैं । परमेश्वर का सामर्थ लोगों में देखा जाता है । नशीला पदार्थ लेनेवाले, कचरा उठानेवाले, गुण्डे और अल्पाधिकार प्राप्त और मूलतः परमेश्वर के द्वारा बदले गए । टूटे जीवन और उजाड पडे परिवारों फिर से वापस आ रहे हैं; यह हमारे हृदय करे रोमांचित्र करता है कि हम लोगों को जीवन में यीशु के सामर्थ को देखते हैं । चंगाई एक शहर में आ रही है । हम भी मनुष्य के कार्यक्षमता के दूसरे दृष्टिकोण को छूते हैं । स्वास्थय, शिक्षा, रोज़गार और आवासन ऐसे संबंधित क्षेत्र में जहां परमेश्वर हमारा उपयोग खोए हुओं तक पहुंचने के लिए उपयोग करता है । दूसरे मसीही संस्थाओं को मिलकर हम मानव शक्ति, वस्तु और प्रगतिशील पैसों के लिए परिश्रम पूर्वक प्रभु की ओर देखते हैं ताकि अधिदेश और संदेश की पूर्ति हो महान बुलाहट के लिए । परमेश्वर के साथ हर बात संभव है । हमारे पास लंबे अवधि के लक्ष्य भी हैं, और हम ऊचे बुलाहट के लिए उस लक्ष्य की ओर बढ़ते जाते हैं । हम आगे बढ़ने के लिए चुनौती प्राप्त करते हैं जिसके लिए परमेश्वर ने हमें भूमि को पाने के लिए अभिषेक किया है । वर्तमान में हमने शहर को टुकड़ो में विभाजित किया है हर टुकड़े में कुछ जनसंख्या है । फिर हमने हर जनसंख्या के टुकडे को मेत्र-बिन्दु में विभाजित किया है और, उसे प्रखंड में विभाजित किया है । जनसंख्या के ये टुकड़े एक दूसरे के साथ जुड़े होगे ताकि वे सामर्थी मध्यस्थी के प्रार्थना घर बनकर कार्य करे । किसी भी क्षण सौ मध्यस्थी करनेवालो को कार्यरत किया जा सकता है ताकि वो शत्र के विरूद्ध एक ऊचे आत्मिक युद्ध में जा सके । सही और बुद्धिमानी से की गई मध्यस्थी जो पवित्र त्मा के द्वारा मार्गदर्शित और अधिकृत हो, चमत्कारी कार्य कर सकता है !! सिर्फ मनुष्य अधिदेश के लिए ढूंढता है । आवेश से भरे हुए मनुष्य, दर्शन प्राप्त मनुष्य, ऐसे मनुष्य जो ईश्वरीय दर्शन को लेकर राष्ट्रों को ज्वलंत कर सकता है । उठो और प्रकाशमान हो ! हम यीशु मसीह के लिए अपने राष्ट्र में पहुंच सकते हैं ।

२. दूसरा सिद्धांत जो परमेश्वर ने हम पर प्रकाशित किया है वह यह था कि : अगुवों को जीवनशैली में तीव्र बदलाव मानसिकता और प्रशिक्षण की जरूरत है ।

आज संसार में नेतृत्व के लिए हृदय से पुकार है । नेतृत्व का प्रश्न आँखों के सामने इतना ज्यादा क्यों मंडराता है कई राष्ट्रों के इतिहास के मोड पर ?

* हमारे संस्कृति के सडन ने अगुवाई में खालीपन लाया है । इसमें काफी सद्‌गुण या चरित्र नहीं जिसके उत्पादन के वजह से स्त्री और पुरूष को राष्ट्रों के कार्य में मार्गदर्शन मिल सके । समय आ गया है कि सद्‌गुण और चरित्र के अगुवे हमारे राष्ट्रों पर प्रभाव डालने के लिए खडे हो जाए।

* नए सदी के चुनौती ने संसार के नेतृत्व और जिस प्रकार का समाज वे उत्पन्न करते हैं उसके लिए वर्तमानकालिक शैलियों की परीक्षा के लिए प्रोत्साहित किया है । क्या राष्ट्रीय अगुवा समाज को राष्ट्रीय रूप में बदलने के लिए प्रभाव डालने में सक्षम है ? हाँ! यह संभव है । हमें अपना नींव को पहलें मजबूत करना है, फिर एक वाचाबद्ध एकता में आना है, और सद्‌गुण नेतृत्व के साथ आगे बढ़ना है ताकि भूमि पर विजय पाए।

* “सूचना युग” हमपर है, और वह महान बदलाव और उपजाऊपन और प्रगति के लिए सक्षम है । उत्तम नेतृत्व जो संसार ने नहीं जाना है उस मार्गदर्शन की हमें जरूरत होगी इस युग के जरिए और नए आविष्कार होंगे जो मनुष्य ने न देखा हो । यह सच है कि अगुवे एक राष्ट्र के मौसम का निश्चय करते हैं । कलीसिया होने के नाते समय आ गया है कि जोश, शुद्धता और परिश्रम करने वाले अगुवों को उत्पन्न करे । हम ऐसे मनुष्यों को जो परमेश्वर के दिए हुए भेंट से भरे हों और अभिषेक से उन्हें पहचानते हैं उन्हें नीति और पवित्र शास्त्रीय सिद्धांतों में प्रशिक्षण देते हैं, और उन्हें उनके योग्य क्षेत्रों में कार्य करने के लि्ए भेजते हैं ।

इस कार्य को करने में एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि जिन स्त्री और पुरूषों को हम प्रशिक्षण देते हैं उनके पास निश्चित लक्ष्य और दूरदृष्टि होती है । उनकी रूचि आने वाली बातों के लिए होता है न की बीती बातों में, उन संभावनाओं में और सुवअवसर में विश्वास करते हैं जो समय की सीमा में हो न की ऐसी बातों में जिनकी पूर्ति हो गई हों । वेहतर करने की तीव्र इच्छा, ऊँचा लक्ष्य रखना और जोर से फेंकना एक ऐसा पद्धति है जिसे चार कदमों में रखा जा सकता हो:

- अपने सामर्थ और शक्ति को पहचानना ।
- इस बात को देखें कि आप उनकी उपेक्षा, दुरूपयोग या उनका उपयोग कर रहे हों ।
- सही शिक्षा पाएँ या क्षमताओं के विकास के लिए प्रभावशाली तरीकों को उपयोग में लाए।
- अपने कौशल्य में सुधार लाने की कोशिश करें, अपने क्षमताओं को बढाएँ और अपने परिणाम को हर कार्य के द्वारा वेहतर बनाए।

अगुवों को प्रशिक्षण देने की जरूरत में, शिष्यत्व प्रशिक्षण केंद्र जन्मा । देश के भिन्न - भिन्न भागों से कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण और तैयार किया गया । चरित्र को बदलने वाले व्यावहारिक पाठ्यक्रमों को तैयार किया गया, दूसरे कई छोटे-अवधि के पाठ्यक्रम हैं, साधारण व्यक्ति के लिए तैयार किया गया जो शहर के प्रशिक्षण केंद्र और राष्ट्र के दूसरे भाग से आए हों । हमने उन्हें उनकी भेंट को खोजने में शिक्षा दिया, फिर प्रौढ़ता में उन्हें विकसित होने दिया, वचन के व्यवस्थित - अध्ययन द्वारा और आखिरकार, उन्हें यह शिक्षा देना कि किस प्रकार विश्वासी लोगों को प्रभावशाली रूप से प्रदान करना और जिम्मेदारी सौंपना ।

समूह में कार्य करना आसान नहीं होता । एक दूसरे के साथ एकता में चलने के लिए प्रयत्न करना चाहिए । हम अपने आप को अभिषिक्त लोगों का समूह समझते हैं जिनको परमेश्वर ने पवित्र आत्मा में महत्वपूर्ण रूप से जोड़ा है । हर मनुष्य के ऊपर एक बुलाहट है जो पहचाना जाता है और एक दूसरे को पूरी तरह कार्य करने के लिए उसके व्यक्तिगत अभिषेक के क्षेत्र में जगह दिया जाता है । हमने यह निर्णय लिया है कि अगुवो के रूप में हमें उत्तीर्ण होना है ।

३ . <u>तीसरा सिद्धांत है : अगुवे जो कार्य करते हैं या क्षेत्र में होते हैं उन्हें नियमित प्रोत्साहन की जरूरत है ।</u>
हमने सीखा है कि प्रोत्साहन कार्य कभी भी एक बार में खत्म नहीं होता । अगुवों का महत्वपूर्ण कार्य है कि नियमित रूप से :

* बढ़ोत्री, अग्रता और समर्पण को बार - बार दोहराना,
* नींव, आवेश और दान में सहायता देना चाहिए ।
* लक्ष्य और सफलताओं को फिर से परिभाषित करना ।

कठिन समय में दर्शन मुरझाते हुए दिखाता है और उमंग को उत्तेजित करने की जरूरत है । बदलते हुए परिस्थितियों में परमेश्वर ने हमें शिक्षा दिया है कि लक्ष्य को भिन्न रूप से पुर्नकथन करें और अनुभव के ज्योति में हमारे लक्ष्य को संशोधित किया जाए । नक्शे पर पाठ्यक्रम करना यह हो सकता है कि हम रेखक से रखा बनाए, परन्तु वास्तव में भूमि पर यात्रा इस प्रकार नहीं होता, परन्तु वह जारी रहनेवाले कदम होते हैं जो शुरू होता है और रूकावटों के प्रति समायोजन करता है ।

दर्शन का प्रस्तुतीकरण या लक्ष्य दिशा को दिखाने के लिए नक्शा बनाना होता है, परन्तु वास्तविक संस्थात्मक लक्ष्य में नियमित रूप से सुधार की जरूरत होती है ।

प्रोत्साहन "हमारी सुरक्षा" को नियमित रूप से मदद करता है । हमारे सुरक्षा को बदलना हमारे सोच, एक शारीरिक बदलाव को लाना होता है जहाँ हम दूसरे जगह जाते हैं, एक नया स्थान पाते हैं, या फिर एक नया समझ जो पवित्र आत्मा द्वारा इस समय में कार्य करता है । योनातन दाऊद से प्रेम करता था और वह उसके साथ वाचा के संबंध में था

(१ शमूएल १८:१) फिर भी, वह प्राण का वाचा था । जब परमेश्वर ने सुरक्षा के लिए शाऊल को जगह दाऊद को रखा तो योनातन पुराने सुरक्षा के जगह ठहरकर उसके साथ मर गया । कलीसिया को भविष्यद्वक्ता के रूप में देखना चाहिए और उसके अगुवों को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे अपने "पहरूए"/सुरक्षा" को बदलें: यदि कोई नई बात की तरफ न बढ़े तो उसका मतलब होता है मृत्यु । दर्शन की मृत्यु, रिश्ते की मृत्यु और अपने जीवन की मृत्यु ।

परमेश्वर ने हमें शिक्षा दिया है कि प्रोत्साहन के स्तर को ऊँचा रखा जाए । हमें सफलता के लिए सृजा गया है । हम थोडे लडाईयॉं खो सकते हैं परन्तु हमने युद्ध पहले से जीत लिया है । नबी ने उचित कहा है, "देखो, पहली बातें तो हो चुकी है, अब मैं नई बातें बताता हूँ; उनके होने से पहले मैं तुमको सुनाता हूँ ।" यशायाह ४२ : ९

४. <u>चौथा सिद्धांत यह है कि : अगुवों को "आत्मिक पिता" बनने की अत्यन्त आवश्यकता उन लोगों के लिए जो आगे भेजे गए हैं ।</u>

प्रेरित पौलुस ने उचित रूप से कहा है कि शिक्षा कई हैं परन्तु पिता थोडे हैं ! पिता के पास रहस्यमयी तरीका होता है जिससे वे बच्चों को प्रदान कर सकें । हम बच्चों के पिता बनते हैं । जैसे कि उत्पति १ में हर बीज उसके प्रकार को उत्पन्न करता है, उसी प्रकार हम भी प्रभु में बच्चों को जन्म देंगे । शारीरिक पुत्र भी निश्चित रूप से परमेश्वर के सेवक के लिए मूल्यवान होता है, परन्तु यह देखना आशीष का कारण होता है कि कई आत्मिक बच्चे हर साल में उत्पन्न हो रहे हैं । आत्मिक पिता" बनने का सिद्धांत सच्चे रूप से परमेश्वर की ओर से होता है ।

<u>पितृत्व की कुंजी रिश्तेदारी में होती है । हम रिश्ते पर महत्व देते हैं और शिक्षा भी देते हैं कि प्रभावशाली रूप से बातचीत और नेतृत्व के अलग-अलग स्तर में सैन्यीकरण के लिए कुंजी रिश्ता रखने से होता है ।</u>

हर रिश्ते में चार तत्व होते हैं जो जन्म देने और परमेश्वर में बढ़ते हुए बच्चों के लिए आधारभूत इमरत होती है । वे हैं;

१. **भरोसा**

मनुष्यों पर भरोसा रखना और उन्हें कार्य के लिए छोडना हर समय हमारी इच्छा रही है । कई बार हम असुरक्षित महसूस करते हैं और चोट भी खाए होते हैं विशेष कर जब हम जिन पर भरोसा करते हैं वे हमें नीचे गिराते हों ।भरोसा जोखिम उठाना होता है, भरोसा एक ऐसा चुनाव होता है जो हम स्वयं होकर करते हैं ।

२. **<u>प्रेम</u>**

हमारे अगुवों की देखरेख करना उनके कठिन परिस्थितियों में, उनके अकेलेपन और परेशानियों में उनका साथ देना । उनके कमजोरी और विफलता के बावजूद उनसे प्रेम करना । उन्हें एक अवसर देना ताकि वे स्वंय को साबित कर सके और उनके साथ प्रौढ़ होता हुआ रिश्ता बनाए रख सके । उनसे प्रेम करना उन्हें जवाबदेह और निष्ठावान बनाता है । हमने सीखा है कि किस प्रकार अगुवों के परिवारों की देखरेख की जाए, उनके घर में जो व्यक्तिगत जरूरतें है उसकी देखरेख करना, और यह देखना कि वे शिष्ट और आराम से जीते हो । परमेश्वर ने हमें सिखाया है कि किस प्रकार हम आर्थिक रूप से अपने अगुवों की मदद करे । इसलिए हमारे अगुवे अच्छा वस्त्र पहनते हैं, अच्छे रूप से जीते हैं और कठिन परिश्रम करते हैं ।

३. **<u>आदर और सम्मान</u>**

इसका मतलब है कि हम एक - दूसरे को स्वीकार करते हैं । हर किसी को यह बात महसूस करना कि वह हमारे बीच पहचान गया है । इसलिए नहीं कि हमारे लोगों को बुरा लगे परंतु उनके सामर्थ और क्षमताओं को प्रमाणित करना ताकि एकजूट होकर कार्य करे, न कि सत्तावादी निरीक्षक हमने सीखा है कि हमारे अगुवों को सराहना कितना महत्वपूर्ण होता है । इससे बहतर भागीदारी बनती है और दर्शन को हर समय संभव बनाती है । आखिर कार हम उन्हें उनके भले और कठिन परिश्रम के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में, उसके कार्य और बोल चाल में उनको पहचानते हैं ।

४. **<u>एक - दूसरे को समझना</u>**

यीशु मसीह बार - बार इस रिश्ते को जो भेंड और चरवाहे के बीच में है उसे महत्व देता है; उसने अपने ही नेतृत्व में इस बात को नमूना बनाया है । (यूहन्ना १० : १४)

मैं उन पॉच मुख्य बातो को बाटूंगा जो प्रभु ने मुझे सिखाया है, ताकि हम उन व्यक्तियों के प्रकृति को समझ सके जिन्होंने परमेश्वर की ओर से भेंट प्राप्त किया हो ।

* हर व्यक्ति अद्वितीय होता है और उसे बक्से में बंद करके या उसे किसी श्रेणी में नहीं रखा जा सकता ।
* एक व्यक्ति के जीवन में परमेश्वर की भेंट का चिन्ह यह है कि वे कार्यशील होते हैं । परमेश्वर के भेंट के बिना कोई प्रभावशाली कार्य नहीं हो सकता ।
* सफल लोव वे लोग होते हैं जिन्होंने स्वयं के सामर्थ को जाना है और उसमें वे उत्तीर्ण होते हैं जिसे करने में वे अच्छे हैं । हम में से हर एक उसके उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सृजा गया है ।
* परमेश्वर ने हमें इस प्रकार सृजा है कि जब हम परमेश्वर के दिए हुए क्षमताओं के साथ उसकी सेवा करते हैं, तो उसमें हमारे लिए आनन्द बना रहता है ।
* जब हम किसी कार्य को करने में परिपूर्ण होते हैं तो सबसे ज्यादा उत्पन्न कर सकते हैं । जब हम प्रेम और एकता में चलने की खोज करते हैं, जिस प्रकार पिता अपने बच्चों को समझता है, इस प्रकार परमेश्वर ने हमें समझ में चलने खुले हृदय से एक - दूसरे की सेवा करने के लिए बुलाया है ।

<u>सारांश</u>

मैं सार रूप से कलीसिया के गुणन के लिए अंतरणीय सिद्धांत को जो परमेश्वर ने हमें दिखाया है बाटता हूं: १. खोए हुओ तक पहुचने के लिए आवेशभरा दर्शन होना चाहिए; (२) आपके नेतृत्व में तीव्र बदलाव लाए; (३) उन लोगों को उत्साहित करें और प्रोत्साहन दें जो क्षेत्र में कड़ी मेहनत कर रहे हों; और (४) जो आपके नीचे हैं; उनके ऊपर 'पिता' बनें । उनसे प्रेम करें, उनकी सेवा करें और उनका पालन-पोषण करें; क्योंकि वे परमेश्वर की ओर से भेंट हैं ।

गृह कलीसिया के पर्यवेक्षक का लिखित विवरण कृपया लिखित विवरण अगले हफ्ते अपने कलीसिया के अगुवे को सौंप दें ।

आपका नाम ------------------------------

हफ्ता : रविवार से ------------------------------ शनिवार तक ------------------------------

क. आपके जीवन के विषय में

दिन	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शानिवार
प्रार्थना में समय (मिनटो में)							
वचन के साथ समय (मिनटो में)							

हफ्ते में जो महत्वपूर्ण बातें घटी : ---

प्रभु ने आपसे क्या बातचीत किया है ? --

आपने हर हफ्ते किसे गवाही दी ? --

क्या आपने ईश्वरीय रूप से आर्थिक बातों का व्यवहार किया ? --

क्या आपके पास बिना निपटाया हुआ कोई संबंधी मुद्दा है ? ---

आपका संबंध पत्नी और बच्चों के प्रति कैसा है ? (यदि यह आपके ऊपर लागू हो) -------------------------

----

ख. जिस गृह - कलीसिया में आपने भाग लिया था ---

कलीसिया जहा जाते हैं : -------------------- अगुवे का नाम : ---------------------------------

दिनांक :- ---------------------------------

<u>गृह-कलीसिया के अगुवे पर आपका चल विवरण और निरीक्षण :</u>

क्या वह समयपालाक था ? ---

क्या उसने नेतृत्व लिया ? ---

क्या वह सभा पर हावी हुआ ? ---

क्या वह तैयार था ? ---

क्या वह अपने सदस्यों के प्रति संवेदनशील था ? ---

क्या उसने सबको शामिल किया ? ---

क्या उसने लोगों को प्रभु की तरफ खींचा ? ---

क्या वह अपने बल और कमज़ोरी में खुलासा देता था ? ---

क्या सभा के उद्देश्य में वह सफल रहा ? ---

कलीसिया के अगुवे की पत्नी और परिवार पर आपका चल-विवरण (यदि लागू हो तो):

क्या उसकी पत्नी ने सहयोग दिया ? ---

क्या आपने परिवार में कोई तनाव देखा ? ---

उसके बच्चों का स्वभाव कैसा था ? ---

क्या इस क्षेत्र में आप चिन्तित हैं ? ---

<u>गृह - कलीसिया सभा के लिए आपका चल - विवरण</u>

संपूर्ण रूप से वातावरण कैसा था ? ---

क्या आप परमेश्वर की उपस्थिति को महसूस करते हैं ? ---

क्या वहाहोना लोगों को अच्छा लग रहा था ? ---

क्या सभा चुनौतियों से भरा था ? ---

आनेवाले लोगों के साथ किस प्रकार व्यवहार किया गया ? ---

क्या कुछ भाग दूसरों को प्रतिनिधि करने दिया गया था ? --

यदि हां, तो आप अपना चल-विवरण दें कि किस प्रकार उन्होंने इसके साथ काम किया ।

ग. आप जिस गृह - कलीसिया के अगुवे हैं उसके विषय में लिखें :
आप अपना संबंध और कार्य का चल-विवरण दें जो आप गृह-कलीसिया के अगुवों के साथ बनाए रखते हैं और जिनके ऊपर पर्यवेक्षक हैं । किसी अतिथि - सत्कार, विशेष उत्साहना, आमने - सामने सलाह जो हुआ उसके बारे में लिखें :

कलीसिया अगुवा :	विवरण :
१.	
२.	
३.	
४.	
५.	
६.	

पिछले हफ्ते के हाजिरी-संख्या जिस गृह - कलीसियाओं का आप ध्यान रखते हों, लिखें :

कलीसिया - अगुवे का नाम :	वयरक	बच्चे	भेंट करनेवाले
१.			
२.			
३.			
४.			
५.			
६.			

गृह - कलीसिया के अगुवे का लिखित विवरण कृपया अगले हफ्ते कलीसिया के अगुवे को लिखित - विवरण दें ।

आपका नाम : -------------------------------

हफ्ता : रविवार से : ------------------------------- शनिवार तक : -------------------------------

क.	आपके जीवन के विषय में लिखें

दिन रविवार सोमवार मंगलवार बुधवार गुरूवार शु□वार शानिवार

प्रार्थना में समय (मिनटो में)

वचन के साथ समय (मिनटो में)

जो हफ्ता बीत गया उसमें आपके लिए महत्वपूर्ण बातें : --

प्रभु ने आपसे क्या बातचीत किया है ? --

आपने इस हफ्ते किसको गवाही दी है ? --

आपका संबंध पत्नी और बच्चों के साथ कैस है ? (यदि लागू होता हो) ----------------------------------

क्या आपका संबंध आपके कलीसिया के पर्यवेक्षक के साथ बढ़ रहा है ? ----------------------------------

----

ख. <u>वढ़ोत्री समूह सभा के विषय में</u>

दिनांक : ---------------------------- समय जो वीत गया : ----------------------------

घंटे : ---------------------------- मिनट : ----------------------------

आपका उद्देश्य क्या था ? ---

सब कुछ मिलाकर, सभा कैसा था ? ----------------------------

नीचे दिए गए हर खंडन का विवरण दें :

स्वागत : ----------------------------

आराधना: ----------------------------

वचन : ----------------------------

गवाही : ----------------------------

अगले हफ्ते की योजना और उद्देश्य : ---

क्या आपने अगले हफ्ते के सभा के खंडन के लिए किसी को जिम्मेदारी सौंपी है ? उसका नाम नीचे लिखें :

स्वागत आराधना वचन गवाही

अगले आध्यत्मिक पाठय□म के लिए नाम : ---

जवाबदेरी

नाम --

महीना और साल --

नीचे दिए प्रश्नों का जवाब इमानदारी से करें, क,ख,ग,घ हर हफ्ते के लिए जहा□

क - हा□ निश्चित रूप से

ख - सब कुछ मिलाकर, मुझे लगता है कि मैं ठीक हू□

ग - मुझे लगता है कि यह एक समस्या होगी

घ - नहीं, मुझे मदद की जरूरत है ।

महीने में हफ्ता
१ २ ३ ४ ५ ६

१. क्या आपने परमेश्वर के साथ इस हफ्ते कीमती समय बिताया है ?

२. क्या प्रभु ने व्यक्तिगत रूप से इस हफ्ते आपसे बातचीत किया है ?

३. क्या आप समझदारी में उस भलाई में जिए□ जो प्रभु ने आपसे कहा है ?

४. क्या आपने इस हफ्ते अपने पत्नी के साथ बातचीत में काफी समय बिताया है ?

५. क्या आप बातचीत, प्रशिक्षण और बच्चों के अनुशासन के लिए स्थिर रहे हैं ?

६. क्या आप कार्य के दिन और दूसरे समय में समय के उपयोग के लिए समझदार रहे हैं ?

७. क्या आप लोगों के साथ मेल-मिलाप का भावना रखते हैं "जहा□ तक वह आप पर निर्भर हो ?"

८. परमेश्वर की मदद से क्या आप यौन दृष्टि से बातों को, परिस्थितियों और वस्तुओं को प्रतिज्ञापूर्वक जाना है ?

९. क्या आपने आर्थिक बातों को ईश्वरीय रूप से व्यवहार किया है ? उदाहरण दशवांस, भेंट, ज्यादा खर्च नहीं करना, कर्ज से दूर रहना इत्यादि ।

१0. क्या आपने आत्मिक अधिकार को कोमलता से उपयोग किया है न कि कौशलतापूर्वक या किसी को धमकी देकर ?

११. क्या आपने जाने हए पाप के विषय में अंगीकार किया है ?

१२. क्या आपने सम्पूर्ण सच बताया है ?

नए साल का निश्चय

बातों को व्यवस्थित रखने के लिए स्वयं-जाँच नए साल में प्रवेश के लिए उत्तम तैयारी होती है ।
इस कार्य के लिए एक या दो दिन विशेषकर रखें, नीचे दिए गए प्रश्नावाली के उपयोग द्वारा ।

१ . व्यक्तिगत जीवन

क्या हमने पिछले साल के गुप्त पापों से स्वयं को छुपा रखा है ? क्या मैंने कोई बुरी आदतें सीखी हैं ? क्या मैंने पवित्र आत्मा को शोकित किया है मेरे शरीर को दूषित/अपवित्र करके ? क्या मैंने अपने मन को बुरे विचार या कामुक इच्छाओं की तरफ झुकाया है ? क्या मैंने बहस करने में समय गँवाया है ?

२ . श्रद्धालु जीवन

क्या हमने प्रतिदिन का प्रभु के साथ समय को नाकारा है ? क्या ऐसे दिन थे जहाँ पवित्र शास्त्र वचन और प्रार्थना जल्दबाजी में किए जाते हैं ? क्या मैं उपवास में अनियमित था ? क्या मैं अपना हृदय कठोर किया उसके प्रति जिसमें परमेश्वर मुझे गलती के लिए दोषी ठहरा रहा था ? क्या मैं धमंडी था ?

३ . पारिवारिक जीवन

क्या मेरे साथी के साथ पिछले साल अविश्वास की घटनाएँ घटी हैं ? क्या मैंने पारिवारिक प्रार्थना और दूसरे जिम्मेदारियों को नाकारा है ? क्या मैं बच्चों को समय देने में असफल रहा ? क्या मैंने परिवार में कोई समस्या को खड़ा किया है ? क्या मैंने अपने माता - पिता का निरादर किया या उनके पीछे बात किया है ? क्या मैं धरेलू कामकाज में मदद करने में असफल रहा ? क्या घर में नाराज़गी के लिए मैं जिम्मेदार हूँ ?

४ . सामाजिक जीवन

क्या मैं अपने पड़ोसियों के समझ मुस्कराने में विफल रहा ? क्या मैंने गलती के बदले गलती किया ? क्या मैंने दूसरों की बातें सुनने की कोशिश की ? क्या मैं दूसरों के विषय में जानने की जिज्ञासा रखता हूँ ? क्या में अपने पड़ोसियों के उद्धार प्राप्त करने में चिन्तित था ? क्या जब कोई बीमार होता था तो उनका ख्याल रखता था ? क्या मेरा जुबान बहुत ढ़ीला है ? क्या मैंने झूठ बोला है या आधा सच कहा है ?

५ . कार्य

क्या पिछले साल मैं अपने कार्य में अनियमित था ? क्या मैंने अपने बड़ों का निरादर किया ? क्या मैंने अपने सहकर्मी को तुच्छ जाना था उसे शोषित किया है ? क्या मैंने अपने अधीन में रहनेवालों के साथ बुरा वर्ताव किया है ? क्या मैंने कार्यालय या फैक्टरी से कुछ चुराया है ? क्या मैंने बड़बड़ किया जब कोई मेहनत का काम मुझ पर सौंपा गया ? क्या मैं मसीही बनकर आदर्श बनने में विफल रहा ? क्या मैंने दूसरे कार्यकर्त्ताओं के साथ ईर्ष्या की ? क्या पैसों के लिए प्रेम और चीजों के लिए अभिलाषा थी ? क्या मैंने व्यवास में बैमानी की ?

६ . देश

क्या मैंने प्रार्थना में अपने राष्ट्रीय नेताओं को याद किया ? क्या मैंने दूसरों के हक का निरादर किया यात्रा और जनता के प्रवंध कार्यो में ? क्या मैंने सरकार को कर-देने में धोखा दिया ? क्या मैंने किसी नागरिक नियम को तोड़ा है ?

७ . कलीसिया

क्या मैंने कलीसिया का तिरस्कार किया है ? क्या मैंने किसी ईश्वरीय सलाह को नाकारा है ? क्या कडुवाहट मेरे हृदय में सह-विश्वासी के विरोध में निवास करता है ? क्या मैंने जिसके साथ गलत किया था उसके साथ मेल-मिलाप किया ? क्या मैंने किसी परमेश्वर के दास के साथ बुरा व्यवहार किया वजाए इसके कि प्रार्थना करें ? क्या मैंने अपने पासबां या किसी सेवक का निरादर किया है ? क्या मैंने कभी भी मैं - तुमसे - वेहतर हूँ मनोवृत्ति को दर्शाया है ? क्या मैंने ढ़ोग किया है ?

८. सेवकाई

क्या मैंने सुसमाचार प्रचार करने के लिए सुस्ती महसूस किया ? क्या मैं परमेश्वर को देने में कंजूस था ? क्या मैं परमेश्वर को देने में कंजूस था ? क्या मैं नियमित रूप से प्रार्थना करने में विफल रहा ? क्या किसी मिशन कार्य के प्रति मेरे समर्पण में विफल हुआ ? क्या मैं गरीब या वृद्ध को उनके पीड़ा में देने को नाकारा ?

९. विद्यार्थियों के लिए

क्या मैने परीक्षा में किसी का नकल किया या गलत तरीका अपनाया ? क्या मैंने अपने शिक्षकों का निरादर किया ? क्या मैंने झूठ बोला या वास्तविकता को मरोड़ा है ? क्या मैं अपने से छोटों के साथ दुर्व्यवहार किया है ? क्या मैं सुस्त था ? क्या मैने अपने माता - पिता के पैसे बर्बाद किया है ? क्या मैने शिक्षा के इमरत के किसी चीज को हानी पहुँचाई है ? क्या मैने अपने बोध को मित्रों को प्रसन्न रखने के लिए शांत किया है ? क्या मैं पढ़ा या कुछ गलत देखा ?

१०. स्त्रियों के लिए

क्या मैने पुरूषों को लालायित करने के लिए पहनावा करती हूँ या बाल बनाती हूँ? क्या मैं घर को बनाने में लापरवाही की है ? क्या मैंने खुशी से अपने पति के नेतृत्व को अपनाने में नाकामयाब रही हूँ? क्या मैं बकवादी हूँ और रहस्यों का खुलासा किया है ? क्यों परमेश्वर के प्रयोजन से में मैं असंतुष्ट थी ?

कोई साकारात्मक जवाब इन प्रश्नों के प्रति यदि हो तो वहा पाप को दर्शाता है । ईमानदारी से अंगीकार करना यीशु मसीह के लहू से पाप को धोता है (१ यूहन्ना १ : ७-९)

स्वयं जाँच के प्रश्न

१. **व्यक्तिगत शुद्धता**

क्या मैं स्वयं को साफ पात्र के नाई रखता हूँ ताकि प्रभु से उपयोगी ठहरू ?
क्या मैं कोई रहस्यमयी पाप में जीता हूँ? क्या मैं पूरे हृदय से पवित्रता की इच्छा रखता हूँ? क्या मैं परीक्षा के हर स्त्रोत से भागता हूँ? क्या मेरा बोध स्पष्ट है ?

२. **श्रद्धालु आदतें**

क्या मैं अपना समय नियमित रूप से पवित्र शास्त्र अध्ययन और प्रार्थना के लिए रखता हूँ? क्या मैं परमेश्वर के वचन से आनन्द रखता हूँ? क्या मैं अपने सह-कर्मियों और दूसरे विश्वासियों के साथ प्रार्थना को मूल्य देता हूँ? क्या मैं आराधना के बदल कार्य करता हूँ?

३. **सामाजिक संबंध**

क्या मैं एक ऐसा व्यक्ति हूँ जिसके साथ जिया जा सके ?
क्या मेरी आदत नुक्ताचीनी और आलोचनात्मक है ?
क्या मैं स्वयं-इच्छा से सुधार स्वीकार करता हूँ या हमेशा स्वयं को न्यायोचित करता हूँ? क्या मैं दूसरों को खुले रूप से सराहने में दिक्कत करता हूँ?
क्या मैं इन बातों के प्रति मृतक हूँ जब जाति, धर्म या सामाजिक स्तर में भेदभाव हो ताकि आत्मा में एकता पाई जाए ?

४. **पारिवारिक जीवन**

क्या मैं अपनी साथी के प्रति विश्वासयोग्य हूँ?
क्या मैं विपरीग लिंग के लोगों के साथ दूरी रखता हूँ?
क्या मैं अपना कीमती समय अपने जीवन - साथी के साथ बिताता हूँ ताकि बढ़ोत्री में मदद कर सकूँ?
क्या मैं अपने परिवार की सेवकाई करता हूँ?
क्या मैं अपने बच्चों के साथ आजाद और मित्र - जैसा हूँ?
क्या मैं अपने बच्चों वचन या कार्य के द्वारा प्रोत्साहित करता हूँ कि मिशनरी कार्य को अपनाए यदि मैं यह विश्वास करता हूँ कि राजाओं के राजा की सेवा हर व्यवसाय या सौभाग्य से महान है ?

५. **परमेश्वर की सेवकाई**

क्या मैं प्रभु की सेवकाई पहले जैसा प्रेम के साथ करता हूँ और अपने शुरूवात के उत्साह को बनाए रखता हूँ?
क्या मैं सुस्त हो रहा हूँ?
क्या मैं सेवकाई में कोई फल न दिखने के कारण आसानी से निरूसाहित हो जाता हूँ?
क्या मैं लोगों के प्रति धीरज रखता हूँ और दयालु हूँ?
क्या मैं लोगों को खुश - करनेवाले जैसा हूँ?

६. **व्यवहार में ईमानदारी**

क्या मैं लिखित विवरण देने में ईमानदार हूँ या बढ़ा - चढ़ाकर बात करता हूँ?
क्या मैं आर्थिक मामलों में विश्वासयोग्य हूँ?
क्या मेरे शब्द निर्भरता दिखाते हैं ?
क्या मेरे सहकर्मी और सह-विश्वासी मुझपर भरोसा करते हैं कि मैं किसी भी परिस्थिति में उनके साथ खड़ा रहूँगा ?
क्या दूसरों की नेक-नामी मेरे हाथों में सुरक्षित है ?

७. **आत्मिक बढ़ोत्री**

क्या मैं अपने आत्मिक जीवन का मूल्यांकन करता हूँ?
क्या मैं अपने सह-कर्मियों, सह-विश्वासियों, कनिष्ठ या वरिष्ठ को मुझे सुधारने से और मेरे विकास में उन्हें आजादी देता हूँ?
क्या मैं परमेश्वर के आवाज की आज्ञा को मानता हूँ जब वह व्यक्तिगत मनन, संदेश या साहित्य के द्वारा आता है ?
क्या मैं बहुत घमंड़ी हो गया हूँ कि अपने कमजोरियों और विफलताओं के विषय में अंगीकार कर सकूँ?
क्या मैं व्यक्तिगत इच्छा को बलिदान करने में तैयार हूँ ताकि सह-कर्मियों को उन्नति और सामर्थ मिले ?

८. **संस्थात्मक ईमानदारी**

क्या मैं अपने संस्था के प्रति ईमानदार हूँ?
क्या मैं अगुवो के प्रति इच्छा से समर्पित होता हूँ?
क्या मैं अपने अगुवों के पीछे बातें करता हूँ?
जब उनके निर्णय मुझे ख़ुशी नहीं दिलाता ?
क्या मुझमें लोगों के साथ रहने की आत्मा है ?
क्या मैं परमेश्वर और संस्था के प्रति आभारी हूँ सारे आशीषों के लिए या मैं बड़बड़ाता हूँ?

९. **स्थानीय कलीसिया का दर्शन**

क्या मैं कलीसिया के दर्शन को समझता हूँ?
क्या मैं एकरूप होकर कलीसिया के दर्शन को पूरा होने के लिए प्रार्थना करता हूँ?
उनके पूर्ति के लिए मेरा क्या सहयोग है ?
क्या मैं अपने आत्मिक भेंट को परमेश्वर की महिमा के लिए उपयोग करता हूँ?

१०. **मिशनरी दर्शन**

क्या मेरा हृदय परमेश्वर के बोझ को रखता है उन लोगों के लिए जिन्होंने कभी सुसमाचार नहीं सुना ?
क्या मैं उन बातों की सूचि रखने में दिलचस्पी रखता हूँ कि परमेश्वर पृथ्वी-भर में क्या कर रहा है ?
क्या मैं उन लोगों के लिए प्रार्थना करता हूँ जो कलीसिया में सताए जा रहे हैं या जिनके साथ अन्याय हो रहा है ?
क्या गरीबों के प्रति मेरी चिन्ता व्यावहारिक है ?
क्या मैं दूसरे संस्थाओं द्वारा किए गए अच्छे कार्य को सराहता हूँ और जितना संभव हो उनके साथ सहयोग देता हूँ।

११. **भविष्य की आशा**

क्या मैं अपने भविष्य के लिए चिन्ता करता हूँ या परमेश्वर पर भरोसा करता हूँ?
क्या मैं धनी लोगों के साथ मेरी तुलना करता हूँ और वस्तु-निष्ठ बन जाता हूँ?
क्या मैं गलतफहमी और अकेलेपन के [illegible]ूस को लेने में स्वयं को रोकता हूँ?
क्या मैं उन आवाजों के प्रति बहरा हो जाता हूँ जो मुझे मिशनरी दर्शन और समर्पण से नीचे बुलाते हैं ?
क्या मैं उस बात का जानकारी रखता हूँ कि स्वर्ग में मेरे लिए स्वागत और ईनाम रखा गया है कटनी के प्रभु की सेवा अंत तक विश्वासयोग्यता से करने के द्वारा ।

क्या मैं उसके पदचिन्हों का अनुकरण करता हूँ?

भले ही यीशु मसीह के जैसा जीने के लिए पवित्र शास्त्र के नए नियम में बताया गया है, ऐसा सिर्फ एक ही जगह है जहाँ हमें खास रूप से "उसके पदचिन्हों का अनुकरण करने" कहा गया है । यह दुख उठाने को दर्शाता है । जिसने यह लिखा है उसका नाम पतरस है, शिष्य जिसने यीशु मसीह को करीबी से उनके परीक्षा और मृत्यु में देखा । १ पतरस २ : २१, "तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर, तुम्हें एक आर्दश दे गया है ताकि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो ।" यहाँ पर कुछ प्रश्न दिए गए है ताकि हम स्वयं को जाँचें।

<u>परमेश्वर के समीप कुछ घंटे शांति में बिताएँ इस प्रश्नावली को पढ़ने से पहले, और अपने जीवन को नए प्रकार से जाँचें।</u>

१. **क्या मैं अपने मित्रों के साथ दुखी हो जाता हूँ जब वे मेरे दर्द या दुख में मुझसे अलग रीति से बर्ताव करते हैं ?**
जब यीशु मसीह के ऊपर से गतसामने बाग में लहू का पसीना बह रहा था तो उसके करीबी शिष्य सो रहे थे । कई बार निवेदन करने के बावजूद भी उसके दर्द को वे बाँट न सके । परन्तु वह उनपर क्रोधित नहीं हुआ । वह उनसे प्रार्थना में सावधान रहने को कहा और बोला, "उठो, चलें । देखो, मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुँचा है ।" (मत्ती २६:३६-४६)

२. **क्या मैं प्रार्थना में आकस्मिक हूँ? क्या मैं दूसरों पर या परिस्थितियों पर दोष लगाता हूँ मेरे विफलताओं या प्रार्थना नहीं करने के कारण के लिए ?**
यीशु मसीह ईश्वरीय सद्गुण के बलिदान के लिए हमेशा परीक्षा का विषय बन जाता था जब उसके साथ शोषण और दुर्व्यवहार हुआ था । परन्तु उसने गतसमने में प्रार्थना के द्वारा युद्ध जीता । दूसरे तरफ उसके शिष्य हर बार निफल रहे । एक "इच्छुक आत्मा" "कमजोर शरीर" पर विजय नहीं पा सकता जब तक प्रार्थना में सावधानी न बरती जाए (मरकुस १४: ३५-३९)

३. **क्या मैं जिद करता हूँ कि मेरे तरीके से परमेश्वर मेरे प्रार्थनाओं का जवाब दे ? क्या मैं इस बात को कहने से डरता हूँ कि "मेरी इच्छा नहीं, बल्कि आपकी इच्छा पूरी हो, प्रभुजी ?"**
यीशु मसीह के लिए वह आसान नहीं था कि सम्पूर्ण हृदय से वह प्याले को स्वीकार करे बिना यह जाने कि वह कितना कड़ुवा है । वह सच है कि उसने तीन बार प्रार्थना की कि उसे बताया जाए, परन्तु हर समय उसकी प्रार्थना इस निष्कर्ष पर पहुँचती थी, "तो भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तु चाहता है वैसा ही हो ।" (मत्ती २६: ३९,४२,४४) परमेश्वर पिता इस प्रकार के समर्पण से इतना खुश था कि उसने तुरन्त एक विशेष स्वर्गदूत को स्वर्ग से भेजा ताकि उसके बेटे को सामर्थ मिल सके (लूका २२: ४२-४३)

४. **क्या मुझे किसी की कमज़ोरी का प्रचार या आलोचना करना चाहिए बजाए इसके कि मैं उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना करूँ?**
पतरस की कमजोरी उसके इच्छा से ज्यादा बलवन्त थी यीशु मसीह ने न ही उसे पहले से सावधान किया परन्तु उसके लिए सच्चे रूप प्रार्थना भी किया । उसने उसे भविष्य की सेवकाई के लिए उत्साहित किया (लूका २२: ३१-३४)

५. **क्या मैं किसी से धृणा करता हूँ क्योंकि उसने मुझे धोखा दिया है ? क्या मैं यह भूल जाता हूँ कि मनुष्य-मनुष्य ही होता है और सिर्फ परमेश्वर ही १००% विश्वासयोग्य होता है ?**
यीशु मसीह यहूदा इस्करियोती को पैसों की थैली के साथ विश्वास करता था भले ही वह एक चोर था । यहूदा ने उस अवसर को काम में नहीं लाया जो यीशु मसीह ने उसके हृदय को बदलने के लिए दिया था । तो भी, जब यहूदा ने यीशु को झूठा चुम्बन देकर उसे धोखा दिया, यीशु मसीह ने उसे "मित्र" कहकर पुकारा । (यूहन्ना १२: ४-६; मत्ती २६:५०)

६. **क्या मैं शत्रुओं के विरोध में शारीरिक औजार का इस्तेमाल करता हूँ? क्या मैं महसूस करता हूँ कि कोई भी मनुष्य मेरे विरूद्ध कार्य नहीं कर सकता जितना परमेश्वर ने उसे करने की आज्ञा दी हो ?**

यीशु मसीह के द्वारा मलखुस की चंगाई, पतरस के शारीरिक कार्य जो कि कान काटना था - यीशु के तरफ से खुली डाँट के समान था । भले ही हमारे पास तलवार रहे, परन्तु उसके इस्तेमाल को नाकारना ही सच्ची आत्मिकता है (यूहन्ना १८: १०-११); (मत्ती २६:५१-५२) यीशु मसीह ने पीलातुस से कहा, "यदि आपको ऊपर से न दिया जाता तो आपका मुझ पर कुछ अधिकार न होता" (यूहन्ना १८: १०-११)

७. **क्या अपराध के प्रति प्रतिक्रिया अपराधी को दोषी ठहराता है या उसकी निंदा करता है ?**

जो यीशु ने पतरस के विषय में कहा वैसा ही हुआ । पतरस ने उसे सिर्फ इन्कार ही नहीं परन्तु उसे बाप भी दिया । कल्पना कीजिए कि यीशु मसीह के लिए यह कितना दर्द नाक होगा ! परन्तु पतरस के तरफ उसका नज़र समझ और करूणा से इतना भरा था कि इससे पतरस को स्मरण और पछताव के आँसू से टूट गया (लूका २२: ६१-६२)

८. **जब मुझ पर गलत आरोप लगाया जाता है, तो क्या मैं अपना बचाव करता हूँ या परमेश्वर को मेरे युद्ध लडने देता हूँ?**

जब महायाजक ने यीशु मसीह से पूछा, "ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही दे रहे हैं ?" वह शांत रहा (मत्ती २६: ६२-६३) जब पीलातुस ने उससे फिर वही प्रश्न पूछा तो यीशु मसीह ने एक शब्द नहीं कहा । (मत्ती २७: १३-१४) बजाए, उसने परमेश्वर के गवाही उसे दी और सच्चाई के विषय में कहा (यूहन्ना १२: १८-३६-३७; १ तीमुथियुस ६:१३)

९. **क्या मैं परमेश्वर से अपने शत्रु को सजा देने के लिए मांगता हूँ कि उन्हें प्रभु आशीष दे ?**

यीशु मसीह ने जो गलील पर्वत पर प्रचार किया वही उसने गोलगाथा पहाड़ पर व्यावहारिक रूप से किया । (मत्ती ५: ४४; लूका २३:३४)

१०. **क्या मैं दूसरों की जरूरतें और दर्द भूला जाता हूँ क्योंकि मुझे खुद पर दया आता है ?**

यीशु मसीह ने उस स्त्री से कहा जो विलाप कर रही थी, उनसे कहा, "मेरे लिए मत रोओ, परन्तु अपने और अपने बच्चों के लिए रोओ" जिन पर निकट दिन आने वाले थे (लूका २३:२७-२९) यीशु मसीह के गहरे दुख तकलीफ के बावजूद भी उसने चोर के आत्मिक जरूरत को पूरा किया जिसे उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया था (लूका २३:३९-४३) उसने अपनी माता के लिए ध्यान रखनेवाले पुत्र का भी प्रयोजन किया (यूहन्ना १९:२५-२७)

११. **क्या मैं प्रार्थना और आत्मिक भेंट का उपयोग लोगों पर प्रभाव डालने के लिए करता हूँ या परमेश्वर को महिमा देने के लिए ?**

यदि यीशु मसीह उसके पिता से स्वर्गदूतों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना किया होता, तो स्वर्ग से उसके लिए स्वर्ग दूतों का फौंज भेजा जाता । परंतु तब पवित्र शास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, कैसे पूरी होंगी ? (मत्ती २६:५३-५४) यह उसके लिए असंभव नहीं होता कि ठट्ठा करने वालो की चुनौती को स्वीकार कर क्रूस से नीचे आए। पिता के सम्मुख पाप के लिए सिद्ध बलिदान किस प्रकार होता ?

१२. **जब मैं परीक्षा या सकंट काल से सफलता पूर्वक बाहर निकालता हूँ, क्या मैं उन लोगों को जिन्होंने मुझे सहयोग नहीं दिया था उन्हें भददा या अपराधी ठहराता हूँ?**

इस वास्तविक्ता के बावजूद भी कि यीशु मसीह के शिष्यों ने उसे धोखा दिया, इनकार किया, उसे श्रापित किया, और उसे त्याग दिया, उसने एक बार भी पुनरूत्थान के बाद उनके विफलताओं को स्मरण नहीं किया था, "तुम वही हो जो मेरी परीक्षाओं में लगातार मेरे साथ रहे । जैसे मेरे पिता ने मेरे लिए राज्य ठहराया है वैसे ही मैं तुम्हारे लिए ठहराता हूँ ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पीओ; और सिंहासनो पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो ।" (लूका २२:२८-३०) यीशु ने उन्हें संसार पर भेज दिया और उनके साथ गया (मरकुस १६:१५-२०)

क्या मैं प्रभु यीशु मसीह का सच्चा शिष्य हूँ?

<u>नीचे दिए गए आयतों पर सोच-विचार करे इससे पहले की आप सच्चे रूप से आधारभूत, ईमानदार, और प्रभु यीशु मसीह के विश्वास योग्य शिष्य बनने का निर्णय ले :</u>

- दाऊद ने इस बात पर विचार किया
  "प्रभु ने मेरे जितने उपकार किये उसका बदल मैं उसको क्या दूँ ?" (भजन संहिता ११६:१२)

- यीशु मसीह ने उसके शिष्यों से कहा "जो कोई मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आप से इनकार करे और अपना क्रूस उठाकर मेरे पीछे हो ले । जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा, वह उसे खोएगा पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिए अपना प्राण खोएगा वह उसे बचाएगा । (मरकुस ८:३४-३५) "यदि कोई मेरे पास आए और अपने पिता तथा माता पत्नी और संतान भाइयों और बहिनों तथा अपने प्राण को अप्रिय न माने तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता । जो कोई अपना क्रूस न उठाए और मेरे पीछे न आए वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता ।" (लूका १४:२६-२७)

- यीशु मसीह ने पतरस को चुनौती दिया ।
  "हे शिमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इन शिष्यों से बढ़कर मुझ से प्रेम करता है"? (यूहन्ना २१:१५ ब)

- पौलुस ने सर्मपण में ऐसा कहा :
  मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है । मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आपको दे दिया ।" (२ कुरिन्थियों ५:१५)

  इसलिए ऊपर दिए गए बातों के प्रकाश में :

  आपका सही प्रति उत्तर क्या है ?

उदाहरण : विश्वास के कथन

पहला उदाहरण

जब हम एकसाथ करते हैं कि विश्वास के कुछ चीजों से हम परमेश्वर को बंद नहीं कर सकते, हम यह भी पहचानते हैं कि इन दिनों सिद्धांत का कितना महत्व होता है जब लोग गलत शिक्षा द्वारा प्रभु से दूर जाते हैं । सिद्धांत की हवा में बहने से स्वयं को बचाने के लिए, यह हर विश्वासी के लिए जरूरी है कि वह आधारभूत पवित्र शास्त्रीय सिद्धांत में उसका मजबूत नींव हों । हम नीचे दिए गए कथन को सारांश के रूप में प्रदान कर रहे हैं :

१. हम विश्वास करते हैं कि पवित्रशास्त्र, जो पुराने और नए नियम को मिलाकर बयासठ पुस्तकों में पाई जाती है, वह परमेश्वर की ओर से प्रेरित है, और अचूक तथा आधिकारिक परमेश्वर का वचन है २ तीमुथियुस ३ : १६, २ पतरस २१ : २०-२१; मत्ती ५:१८; १ कुरिन्थियों २ : १३

२. हम विश्वास करते हैं कि एक ही परमेश्वर है, जो विश्व का सृष्टिकर्ता है, जो अन्तकाल से तीन व्यक्तियों में विद्यमान है : परमेश्वर पिता, परमेश्वर-पवित्र आत्मा, स्पष्ट किंतु अविभाज्य । व्यवस्थाविवरण ६ : ४; यशायाह ४४ : ५-८, मत्ती २८:१९; २ कुरिन्थियों २ : १३

३. हम विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह प्रभु है जिसने मनुष्य का रूप धारण किया, पवित्र आत्मा के द्वारा जगत में आया और कुँवारी मरियम के कोख से पैदा हुआ, जो सच्चा मनुष्य था । वह कलवरी क्रूस पर मरा ताकि मनुष्यत्व के पापो के बलिदान के लिए प्रतिनिधिान बने । वह गाढ़ा गया शारीरिक रूप से मृतको में सी जी उठा, और स्वर्ग में उठाया गया, जहाँ पर वह अभी मध्यस्थी करनेवाला महायाजक है, जो पिता के दाहिने ओर बैठा है । यूहन्ना १ : १४; लूका १:३४-३५; यूहन्ना ३ : १६; फिलिप्पियों २:५-८; कुरिन्थियों १५: ३-५

४. हम विश्वास करते हैं कि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में सृजा गया । वह पाप में पडा और परिणाम स्वरूप परमेश्वर से अलग किया गया । सब मनुष्य पापी है जन्म से और चुनाव के द्वारा । परिणाम मनुष्य स्वभाव से पतित है, बुराई में जीता है और अलौकिक धार्मिकता को प्राप्त करने के योग्य नहीं होता । उत्पत्ति १ : २६; यहेजकेल १८:४; रोमियों ३:१०-१८; ५:१२-१८ ।

५. हम विश्वास करते हैं कि पापियों का उद्धार अनुग्रह के द्वारा होता है पश्चाताप के द्वारा और कलवरी क्रूस पर यीशु मसीह के सिद्ध और परिपूर्ण कार्य में विश्वास के द्वारा । यीशु मसीह का लहू ही सिर्फ पापों की क्षमा के लिए आधार होता है (इफिसियों २:८-९; इब्रानियों ९:१२, २२; रोमियों ५ : ११; प्रेरितों के काम ४:१२) जबकि यह महत्वपूर्ण रूप से स्वभाव में आत्मिक होता है, उद्धार का लाभ मनुष्य के हर जरूरत को पूरा करता है - आत्मा, प्राण और शरीर । (१ पतरस २:२४; ३ यूहन्ना २:२; २ कुरिन्थियों ८:९; १ थिस्सु.५:२३)

६. हम विश्वास करते हैं कि पवित्र आत्मा इन बातों के लिए माध्यम ठहराता है :
    * नवीन रूप - हर मनुष्य का नया जन्म जो परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देता और मसीह के उद्धारकर्ता प्रभु स्वीकार करता है । यूहन्ना ३ : ३-८; रोमियों १० : ९- १०
    * पवित्र आत्मा में बपतिस्मा का अनुभव । प्रेरितों के काम २ : १-४; १९:१-६
    * पवित्रीकरण - संसार के जीवन का अलगाव ताकि पवित्रता में जीवन व्यतीत किया जा सके, आत्मा के फल का उत्त्पादन हो सके । इब्रानियों १२ : १४; २ कुरिन्थियों ७ : १; गलातियों ५ :

२२-२३ पवित्र आत्मा के वरदान और सेवकाई में कार्य करना जैसे पूर्व-कालीन कलीसिया में होता था ।

* आत्मा, प्राण और शरीर में अलौकिक चंगाई । याकूब ५ : १४; मरकुस १६ : १८
* दुष्टात्माओं के प्रभाव और सामर्थ से छुटकारा । मरकुस १६ : १७

७. हम शैतान के व्यक्तित्व और सच्चाई तथा उसके और स्वर्गदूतों पर अन्तकाल के न्याय पर विश्वास करते हैं । लूका ४ : १ - १३; इफिसियों ६:१२; मत्ती २४:४१

८. हम विश्वास करते हैं कि कलीसिया :
   * हर समय परमेश्वर के लोगों का छुड़ाया हुआ समाज है
   * सभी विश्वासियों का महायाजक यीशु मसीह है जो अधिपति तथा मुख्य कलीसिया का कोने का पत्थर है ।

९. हम विश्वास करते हैं कि कलीसिया के महत्वपूर्ण कार्य यें है :
   * प्रभु की आराधना आत्मा और सच्चाई में करना । यूहन्ना ४ : २३-२४
   * स्वयं को विश्वास में प्रेम और एकता में बनाना और मसीह में हर पहलू में बढ़ना, जो कि कलीसिया का सिर है इफिसियों ४ : ११ - १६
   * राष्ट्रों में यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाने के लिए सक्रिय रूप से कार्य करना । प्रेरितों के काम १ : १८; मत्ती २८:१९-२0

१0. हम विश्वास करते हैं कि विश्वासियों के लिए पानी का बपतिस्मा आवश्यक है जो पानी में डुबाने के द्वारा होता है । मत्ती २८ : १९; प्रेरितों के काम २ : ३६ - ३८; ८:१६; १0:४८; १९:१-१५

११. हम सहभागिता में विश्वास करते हैं, जो कि प्रभु भोज से जाना जाता है, या रोटी का तोडना जिस प्रकार विश्वासियों के लिए प्रभु ने ठहराया है । मत्ती २६:२६-२९; १ कुरिन्थियों ११:२३-३0

१२. हम विश्वास करते हैं कि आत्मिक आराधना के एक भाग जानते हुए प्रभु को हमारा तत्व देना । पवित्र शास्त्र हमें सिखाती है कि हमारा दशवांश प्रभु के घर में लाया जाए (स्थानीय कलीसिया) जो सेवकाई के कार्य और सहयोग के लिए उपयोग किया जाता है । १ इतिहास १६ : २८; मलाकी ३:१0; १ कुरिन्थियों १६ : २; मत्ती २३:२३

१३. हम विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह इस धरती पर व्यक्तिगत रूप से वापस आएगा, शारीरिक रूप में सामर्थ और महिमा से परिपूर्ण होकर ताकि उसका राज्य स्थापित हो सके । यूहन्ना १४:३; १ थिस्सु ४ : १६-१७; प्रेरितों के काम १ : ११

<u>दूसरा उदाहरण :</u>

१. हम विश्वास करते हैं कि परिपूर्ण शाब्दिक प्रेरणा जो पवित्रशास्त्र के नियमों को स्वीकार्य है वह सचमुच परमेश्वर की ओर से दिया गया है पवित्रशास्त्र अचूक, गलत नहीं करनेवाला और विश्वास और कार्य में परिपूर्ण अधिकार रखता है । (२ तीमुथियुस ३:१६; १ कुरिन्थियों २ : १३)

२. हम विश्वास करते हैं कि अनन्तकाल का ईश्वरत्व जिसने स्वयं को प्रकाशित जैसे एक परमेश्वर तीन व्यक्तियों में विधमान है : पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, विशिष्ट परंतु अविभाज्य (मत्ती २८:१९; २ कुरिन्थियों १३ : १४)

३. हम सृष्टि पर विश्वास करते है जैसे की उत्पत्ति में परीक्षा और मनुष्य के पाप में गिरने का विवरण है; उसका संपूर्ण आत्मिक गिरावट और अलौकिक धार्मिकता को प्राप्त करने में सक्षम नहीं होने को दिखाता है। (रोमियों ५:१२, १८)

४. हम प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करते हैं जो मनुष्यों का उद्धारकर्ता है जो पवित्र आत्मा के द्वारा दिया गया और कुंवारी मरियम के कोख से पैदा हुआ, पूरा परमेश्वर और पूरा मनुष्य (लूका १ : २६-३५; यूहन्ना १ : १४-१८; यशायाह ७ : १४; ९:६)

५. हम विश्वास करते हैं कि मसीह हमारे पापों के लिए मारा गया, गाढ़ा गया और तीसरे दिन फिर जी उठा, और उसके शिष्यों को व्यक्तिगत रूप से दिखा। (१ कुरिन्थियों १५ : १-४; रोमियों ४ : २५)

६. हम विश्वास करते हैं कि यीशु मसीह को शारीरिक रूप से स्वर्ग में उठाया गया था और दुसरी बार कलीसिया के लिए यीशु मसीह शारीरिक रूप से आएगा। (यूहन्ना १४ : २-३; १ थिस्सु १३ : १८)

७. हम विश्वास करते हैं कि अनुग्रह के द्वारा पापी उद्धार पाते हैं पश्चाताप के द्वारा और कलवरी क्रूस पर सिद्ध और पूर्ण कार्य में विश्वास जिससे हम पापों का क्षमा पाते हैं। (इफिसियों २ : ८-९; इब्रानियों ९ : १२ - २२)

८. हम पानी के बपतिस्मा की आवश्यक पर विश्वास करते हैं जो अनन्तकाल के ईश्वरत्व के नाम से पानी में डुबकी लगाने से होती है ताकि प्रभु यीशु मसीह की आज्ञा की पूर्ति (मत्ती २८ : १९; प्रेरितों के काम ३ : ३४; १९:१-६)

९. हम पवित्र आत्मा के बपतिस्मा में विश्वास रखते हैं जैसे वो सच्चा अनुभव हो जो उद्धार के बाद होता है पवित्र शास्त्र के अनुसार जैसे अन्य भाषाओं में बाते करना जैसा आत्मा उच्चारण देता है। (प्रेरितों के काम २ : १-४; ८ : १४-१६; १0:४४-४६; गलातियों ३:१४-१५)

१0. हम पवित्र आत्मा के वरदानों के कार्य में विश्वास करते हैं जैसे की १ कुरिन्थियों १२:१४ में लिखा गया है जैसे पूर्व कालीन कलीसिया में प्रकट होता था।

११. हम पवित्र आत्मा से भरा हुआ जीवन पर विश्वास करते है, एक ऐसा जीवन जो संसार से अलग किया गया है तथा प्रभु के भय में पवित्रता को सिद्ध करता है जैसे सच्चे मसीही विश्वास की अभिव्यक्ति। (इफिसियों ५ : १८; २ कुरिन्थियों ६ : १४; ७-१)

१२. हम विश्वास करते हैं कि अलौकिक सामर्थ द्वारा शरीर को चंगाई मिलती है या अलौकिक चंगाई उसके अनेक प्रकार की पहलुओं में जैसे पूर्वकालीन कलीसिया में होती थी (प्रेरितों के काम ४ : ३0; रोमियों ८ : ११; १ कुरिन्थियों १२:९; याकूब ५:१४)

१३. हम प्रभु भोज पर विश्वास करते हैं जो कि विश्वासियों के लिए सहभागिता लेना कहा गया है (१ कुरिन्थियों ११ : २८- ३२; मत्ती २६: २६:२८)

१४. हम शैतान के अस्तित्व और व्यक्तित्व के बारे में और उसका तथा स्वर्गदूतों का आग के कुंड में अनंतकालीन न्याय पर विश्वास करते हैं।(मत्ती २५ : ४१; प्रकाशितवाक्य २0 : १४-१५)

१५.   हम विश्वासियों के अन्तकालीक जीवन पर विश्वास है (यूहन्ना ५ : २४; ३ : १६), और अविश्वासियों के लिए अनन्तकालीक सजा । (मरकुस ९ : ४३-४८; २ थिस्सु १ : ९; प्रकाशिवाक्य २०:१०-१५)

१६.   हम विश्वास करते हैं कि एक ही सच्चा विश्वव्यापी कलीसिया है, जो सच्चे विश्वासियों से बना है, और कई क्षेत्रों के स्थानीय कलीसियाओं से बनी है । ये कलीसियाए प्रभु यीशु मसीह के शास्तच में बने हैं जो स्वायत्त शासन का प्रयोग करती है और उसके स्थानीय कार्य और सेवकाई तथा सुसमाचार का प्रचार यीशु मसीह के प्रशासन में करती है (प्रेरितों के काम १५ : २२; मत्ती १६:   १८; १५-२०)

यह कुल 16 पुस्तकों के एक सेट की पुस्तक क्र. 9 है

इसका अध्ययन मिनिस्ट्री और ट्रेनिंग कोर्स में होना है, जो "केवल एक बार" का कोर्स है - Project of M.L.T.C. Ministries.

(केवल निजि वितरण के लिए!! - बिक्री के लिए नहीं!! - "केवल एक बार" प्राजक्ट का एक अंश)

==========

दॅ डायरेक्टर आफ एमएलटीसी,
पी. ओ. बॉक्स 19106,
वरली,
मुम्बई - 400 030

+ या ईमेल करें : mltc_ministries@yahoo.com